वार्षिक रिपोर्ट
1987–88

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

विषय सूची

आभार ज्ञापन

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् अपने अध्यक्ष, केंद्रीय मानव संसाधन विकास मंत्री, भारत सरकार, द्वारा मार्गदर्शन दिए जाने के लिए उनकी ऋणी है। परिषद् अपने शासी निकाय के अन्य विशिष्ट सदस्यों के प्रति भी आभारी है जिन्होंने परिषद् के मामलों में गहरी रुचि और सहायता प्रदान की । परिषद् उन विशेषज्ञों को भी धन्यवाद देती है जिन्होंने इसकी विभिन्न समितियों में काम करने के लिए अपना बहुमूल्य समय दिया और कई अन्य तरीकों से भी सहायता की । राज्य शिक्षा विभागों व राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषदों/संस्थानों/राज्य शिक्षा संस्थानों सहित वे सभी संगठन व संस्थाएं धन्यवाद की पात्र हैं जिन्होंने राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् के साथ सहयोग किया तथा उनकी गतिविधियां चलाने में पूरी सहायता दी । यू०एन०डी०पी०, यूनेस्को, यूनीसेफ, यू०एन०एफ०पी०ए०, जी०टी०जेड०, तथा ब्रिटिश काउंसिल द्वारा प्रायोजित कार्यक्रमों के कार्यान्वयन हेतु प्राप्त सहयोग के लिए भी परिषद् अपना आभार व्यक्त करती है । परिषद् अपने स्टाफ के सभी स्तरों के सदस्यों द्वारा किए गए कार्य की भी प्रशंसा करती है जिनके योगदान व निष्ठा के अभाव में इसके कार्यक्रम सफलतापूर्वक कार्यान्वित न हो पाते । परिषद् उन हज़ारों अध्यापकों, विद्यार्थियों, अभिभावकों व जनता के सदस्यों के प्रति भी आभार ज्ञापित करती है जिन्होंने वर्ष 1987–88 में परिषद् के प्रकाशनों व कार्यक्रमों के बारे में अपने विचार व्यक्त करते हुए परिषद् के विभिन्न घटकों को पत्र भेजे जो कि और बेहतर कार्य-निष्पादन के लिए सतत् प्रेरणास्रोत सिद्ध हुए ।

1987-88

एक

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् : भूमिका और संरचना

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्(रा०शै०अनु०प्र०परि०) जिसकी स्थापना 1 सितंबर, 1961 को की गई, संस्था पंजीकरण अधिनियम (1860) के अन्तर्गत एक स्वायत्त संगठन है ।

भूमिका और प्रकार्य

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् (रा०शै०अनु०प्र०परि०) मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार, के एक अकादमिक सलाहकार के रूप में कार्य करती है । शिक्षा क्षेत्र में और विशेषकर स्कूली शिक्षा में रा०शै०अनु०प्र०परि० मानव संसाधन विकास मंत्रालय को सहायता तथा सलाह प्रदान करती है । स्कूली शिक्षा तथा अध्यापक शिक्षा में नीतियों तथा कार्यक्रमों के प्रतिपादन और कार्यान्वयन में मंत्रालय बहुधा रा०शै०अनु०प्र०परि० की विशेषज्ञता पर निर्भर रहता है । परिषद् की सारी धनराशि भारत सरकार वहन करती है ।

स्कूली शिक्षा और अध्यापक शिक्षा में गुणात्मक सुधार लाना रा०शै०अनु०प्र०परि० का एक प्रमुख लक्ष्य है । शिक्षा में गुणात्मक सुधार लाने के अपने प्रयास के लिए परिषद् :

- स्कूली शिक्षा की सभी शाखाओं में अनुसंधान करती है, उसमें सहायता पहुंचाती है, उसे प्रोन्नत करती है और उसे समन्वित करती है :
- मुख्यतः उच्चस्तर पर सेवापूर्व और सेवा–दौरान प्रशिक्षण आयोजित करती है :
- शैक्षिक पुनर्निर्माण में रत संस्थाओं, संगठनों व अभिकरणों के लिए विस्तार सेवाएं व्यवस्थित करती है :
- परिष्कृत शैक्षिक प्रविधियों, अभ्यासों और खोजों से विकास व प्रयोग करती है :
- शैक्षिक सूचना को एकत्र, संकलित, संसाधित तथा प्रसारित करती है :
- स्कूली शिक्षा में गुणात्मक सुधार लाने के लिए वह राज्यों, राज्यस्तर की संस्थाओं, संगठनों और अभिकरणों के कार्यक्रम कार्यान्वित एवं विकसित करने के लिए सहायता प्रदान करती है:
- यूनेस्को, यूनीसेफ आदि अन्तर्राष्ट्रीय संगठनों तथा अन्य देशों की राष्ट्रीय स्तर की शैक्षिक संस्थाओं से वह सहयोग स्थापित करती है :
- वह दूसरे देशों के शैक्षिक कार्मिकों को प्रशिक्षण व अध्ययन की सुविधाएं प्रदान करती है, और
- वह राष्ट्रीय अध्यापक परिषद् एवं एशिया व प्रशांत शैक्षिक विकास खोज कार्यक्रम के राष्ट्रीय विकास दल, यूनेस्को, बैंकाक के लिए अकादमिक सचिवालय के रूप में कार्य करती है ।

कार्यक्रम और गतिविधियां

अपने लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु परिषद् निम्नलिखित कार्यक्रमों और गतिविधियों को हाथ में लेती है :

अनुसंधान

स्कूली शिक्षा के अनुसंधान में एक शिखर राष्ट्रीय संस्था होने के नाते रा०शै०अनु०प्र०परि० अनुसंधान को संगठित करने तथा उसे समर्थन प्रदान करने एवं शैक्षिक अनुसंधान में कार्मिकों को प्रशिक्षित करने के लिए अनेक महत्वपूर्ण प्रकार्य निष्पादित करती है ।

राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान के विभिन्न विभागों, क्षेत्रीय शिक्षा कालेजों तथा केंद्रीय शैक्षिक प्रौद्योगिकी संस्थान ने पाठ्यचर्या योजना व विकास संबंधी अनुसंधान, अनुदेशी सामग्रियों का विकास, बाल विकास, शैक्षिक मनोविज्ञान और मार्गदर्शन, शैक्षिक प्रौद्योगिकी, शिक्षण सहायक सामग्रियां, अध्यापक शिक्षा और शैक्षिक मूल्यांकन, इत्यादि कार्यक्रमों को हाथ में लिया है ।

व्यक्तियों और संगठनों को वित्तीय सहायता तथा अकादमिक आदान–प्रदान द्वारा रा०शै०अनु०प्र०परि० अनुसंधान कार्यक्रमों को बल प्रदान करती है । पी–एच० डी० शोधप्रबंधों को प्रकाशित करने के लिए विद्वानों को सहायता प्रदान की जाती है । परिषद् कनिष्ठ और वरिष्ठ अनुसंधान अध्येतावृत्तियां भी प्रदान करती है ताकि शैक्षिक समस्याओं की जांच–पड़ताल की जा सके और योग्य अनुसंधान कार्यकर्ताओं का एक दल सृजित किया जा सके । देश में शिक्षा के अनेक पहलुओं पर आंकड़े उपलब्ध कराने के लिए यह शैक्षिक सर्वेक्षण भी समय–समय पर संचालित करती है । आकड़ों को जमा करने, उन्हें पुनः प्राप्त करने तथा उन्हें संसाधित करने के लिए परिषद् के पास एक टर्मिनल कम्प्यूटर है । अन्तर्देशीय अनुसंधान परियोजनाओं में यह अन्तर्राष्ट्रीय अभिकरणों से भी सहयोग स्थापित करती है ।

विकास

स्कूली शिक्षा में विकासात्मक गतिविधियों का परिषद् के प्रकार्यों में एक महत्वपूर्ण स्थान है । राष्ट्रीय शिक्षा नीति (रा० शि० नी० 1986) के कार्यान्वयन के लिए यह प्रकार्य और अधिक दायित्वपूर्ण हो गया है ।

इनमें उल्लेखनीय हैं स्कूली शिक्षा के विभिन्न स्तरों पर पाठ्यक्रमों व अनुदेशी सामग्रियों का विकास तथा उनसे संबंधित समाज और बच्चों की बदलती तथा बढ़ती हुई आवश्यकताएं । परिषद् की खोजपरक विकासात्मक गतिविधियों में अनौपचारिक शिक्षा, शिक्षा व्यवसायीकरण और अध्यापक शिक्षा के क्षेत्रों में पाठ्यचर्या और अनुदेशी सामग्रियों का विकास भी शामिल है । विकासात्मक गतिविधियां शैक्षिक प्रौद्योगिकी, जनसंख्या शिक्षा, अपंग शिक्षा क्षेत्रों में भी हाथ में ली जाती है ।

प्रशिक्षण

विभिन्न स्तरों जैसे प्राथमिक-पूर्व, प्रारंभिक और माध्यमिक स्तरों पर और ऐसे क्षेत्रों में भी जैसे व्यावसायिक शिक्षा, मार्गदर्शन और विशिष्ट शिक्षा में सेवा-पूर्व और सेवा-दौरान प्रशिक्षण प्रदान करना परिषद् की गतिविधियों में भी महत्वपूर्ण स्थान रखता है । क्षेत्रीय शिक्षा कालेजों में सेवा पूर्व अध्यापक शिक्षा कार्यक्रमों में कुछ खोजपरक विशिष्टताएं सम्मिलित की गई हैं, जैसे विषयवस्तु का एकीकरण और शिक्षण क्रियाविधि, वास्तविक क्लासरूम सेटिंग में अध्यापक-प्रशिक्षणार्थियों की दीर्घकालिक स्थानबद्धता तथा समुदाय कार्य में विद्यार्थियों व संकायों की सहभागिता । राज्यों तथा राज्यस्तर संस्थाओं के मूल कार्मिकों तथा अध्यापक शिक्षकों व सेवा-दौरान अध्यापकों के प्रशिक्षण पर भी बल दिया जाता है ।

विस्तार

शिक्षा-विस्तार में रा०शै०अनु०प्र०परि० का एक वृहत् कार्यक्रम है जिसमें राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान के विभिन्न विभाग, क्षेत्रीय शिक्षा कालेज, केंद्रीय शैक्षिक प्रौद्योगिकी संस्थान तथा राज्यों के क्षेत्र सलाहकारों के अधिकारी अनेक प्रकारों से रत हैं । राज्यों में परिषद् विभिन्न अभिकरणों तथा संस्थाओं से निकट सहयोग स्थापित करके कार्य करती है और विभिन्न श्रेणियों के कार्मिकों, जैसे अध्यापकों, शैक्षिक प्रशासकों, प्राश्निकों और पाठ्यपुस्तक लेखकों आदि को सहायता प्रदान करने हेतु विस्तार सेवा विभागों और स्कूलों व कालेजों के अध्यापक प्रशिक्षण केन्द्रों के साथ विस्तारपूर्वक कार्य करती है । सम्मेलन, संगोष्ठियां, कार्यशालाएं और प्रतियोगिताएं नियमित रूप से चलने वाले कार्यक्रमों की भांति आयोजित किये जाते हैं । अनेक कार्यक्रम ग्रामीण और पिछड़े इलाकों में आयोजित किये जाते हैं जहां कि अपनी विशेष समस्याएं हैं और जहां विशेष प्रयासों की आवश्यकता है । विकलांगों तथा समाज के लाभवंचित वर्गों की शिक्षा हेतु परिषद् के पृथक कार्यक्रम हैं । परिषद् के विस्तार कार्यक्रम देश के सभी राज्यों और संघशासित क्षेत्रों के लिए हैं ।

प्रकाशन तथा प्रसार

रा०शै०अनु०प्र०परि० पहली से बारहवीं कक्षाओं के लिए विभिन्न स्कूली विषयों में पाठ्यपुस्तकें प्रकाशित करती है । वह कार्यपुस्तकें, अध्यापक मार्गदर्शिकाएं, पूरक पाठमालाएं, अनुसंधान प्रतिवेदन आदि भी प्रकाशित करती हैं । इनके अतिरिक्त परिषद् अध्यापक शिक्षकों, अध्यापक प्रशिक्षणार्थियों और सेवा-दौरान अध्यापकों के प्रयोग के लिए अनुदेशी सामग्रियां भी प्रकाशित करती है । अनुसंधान और विकासात्मक कार्य के बाद तैयार अनुदेशी सामग्रियां राज्यों तथा संघशासित क्षेत्रों के विभिन्न अभिकरणों के लिए आदर्श सामग्री का कार्य करती है । फिर इन्हें राज्यस्तर अभिकरणों को ग्रहण व रूपांतरण हेतु उपलब्ध कराया जाता है । पाठ्यपुस्तकों को अंग्रेज़ी, हिंदी और उर्दू में प्रकाशित किया जाता है ।

शैक्षिक सूचना के प्रसार हेतु रा०शै०अनु०प्र०परि० पांच पत्रिकाएं प्रकाशित करती है : (1) प्राथमिक अध्यापक पत्रिका (अंग्रेज़ी और हिंदी दोनों में प्रकाशित) का लक्ष्य है क्लासरूम में सीधे प्रयोग के लिए प्राथमिक स्कूल अध्यापकों को अर्थपूर्ण और प्रासंगिक सामग्री प्रदान करना, (2) स्कूल साइंस पत्रिका: यह विज्ञान-शिक्षा के विभिन्न पहलुओं पर चर्चा हेतु एक खुला मंच प्रदान करती है, (3) जरनल आफ इंडियन एजुकेशन: यह चर्चा द्वारा वर्तमान शैक्षिक समस्याओं पर मौलिक और समीक्षात्मक सोच विचार के लिए मंच प्रदान करता है, (4) दि इंडियन एजुकेशनल रिव्यू में अनुसंधान लेख होते हैं और अनुसंधान कार्यकर्ताओं के लिए मंच प्रदान करता है, (5) आधुनिक भारतीय शिक्षा पत्रिका (हिंदी में प्रकाशित) समकालीन समस्याओं पर शिक्षा विषयक समीक्षात्मक सोचविचार को प्रोत्साहन देने के लिए मंच प्रदान करती है तथा शैक्षिक समस्याओं एवं प्रक्रियाओं के लिए विचारों को प्रसारित करती है । इनके अलावा एक कार्यालय पत्रिका, जिसे समाचार-पत्र कहा जाता है, भी हर मास प्रकाशित की जाती है । इनके साथ-साथ प्रत्येक क्षेत्रीय शिक्षा कालेज अपनी-अपनी पत्रिका स्वयं प्रकाशित करता है ।

शैक्षिक मूल्यांकन

विशेषकर राष्ट्रीय एकता के दृष्टिकोण से पाठ्यपुस्तकों और दूसरी सामग्रियों का मूल्यांकन निरंतर चलने वाली प्रक्रिया के आधार पर किया जाता है । इसी उद्देश्य से प्रक्रियाओं, उपकरणों और प्रविधियों को विकसित किया गया है । स्कूली पाठ्यपुस्तकों के अकादमिक व भौतिक पक्षों के मूल्यांकन के लिए मूल्यांकन संबंधी मार्गदर्शक सिद्धांतों और प्रक्रियाओं को भी निर्मित किया गया है । स्कूल प्रयोक्ताओं से प्राप्त फीडबैक पाठ्यपुस्तकों के संशोधन में सहायक सिद्ध होती है ।

विनिमय कार्यक्रम

विशिष्ट शैक्षिक समस्याओं के अध्ययन तथा विकासशील राष्ट्रों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम व्यवस्थित करने के लिए रा०शै०अनु०प्र०परि०, यूनेस्को, यूनीसेफ, यू०एन०डी०पी० और यू०एन०एफ०पी०ए० जैसे अन्तर्राष्ट्रीय संगठनों के साथ पारस्परिक आदान-प्रदान करती है । बैंकाक में यूनेस्को क्षेत्रीय कार्यालय द्वारा ए०पी०ई०आई०डी० के तहत प्रायोजित सहचारी केंद्रों में से यह एक है । यह एशियाई शैक्षिक खोज और विकास केंद्र के राष्ट्रीय विकास दल के सचिवालय के रूप में भी कार्य करती है । परिषद् सामान्यतः कार्यशालाओं में अपने को सम्बद्ध करके या सहभागिता द्वारा विकासशील देशों के शैक्षिक कार्यकर्ताओं को प्रशिक्षण सुविधाएं देती रही है ।

स्कूली शिक्षा और अध्यापक शिक्षा के क्षेत्र में भारत सरकार और दूसरे देशों के मध्य किए जानेवाले द्विपक्षीय सांस्कृतिक विनिमय कार्यक्रमों के कार्यान्वयन हेतु रा०शै०अनु०प्र०परि० मुख्य अभिकरण के रूप में कार्य

करती है और इस प्रकार भारतीय आवश्यकताओं के अनुरूप विशिष्ट शैक्षिक समस्याओं के अध्ययन हेतु शिष्ट मंडल भेजती है तथा दूसरे देशों से आने वाले विद्वानों के लिए अध्ययन यात्राएं व प्रशिक्षण की व्यवस्था करती है। परिषद् दूसरे देशों के साथ शैक्षिक सामग्रियों का विनिमय भी करती है। अनुरोधों के प्राप्त होने पर परिषद् अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलनों, संगोष्ठियों, कार्यशालाओं, बैठकों, परिसंवादों आदि में भाग लेने हेतु अपने संकाय सदस्यों को नामित करती है।

संरचना और प्रशासन

केन्द्रीय मानव संसाधन विकास मंत्री रा०शै०अनु०प्र०परि० की महापरिषद् के अध्यक्ष हैं। सभी राज्यों तथा संघशासित क्षेत्रों के शिक्षा मंत्री महापरिषद् के सदस्य हैं। महापरिषद् के अन्य सदस्य हैं — विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (वि० अनु० आ०) के अध्यक्ष, भारत सरकार के मानव संसाधन विकास मंत्रालय के शिक्षा विभाग के सचिव, विश्वविद्यालयों के चार कुलपति (प्रत्येक क्षेत्र से एक), केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा मंडल के अध्यक्ष, केंद्रीय विद्यालय संगठन के आयुक्त, कार्यकारिणी के सभी सदस्य (जो ऊपर सम्मिलित नहीं हैं) और ऐसे व्यक्ति (बारह से अधिक नहीं) जिन्हें अध्यक्ष समय-समय पर नामित (कम से कम चार स्कूल अध्यापक होने चाहिए) करें।

रा०शै०अनु०प्र०परि० की मुख्य शासी परिषद् कार्यकारिणी समिति है जिसके केंद्रीय मानव संसाधन विकास मंत्री अध्यक्ष (पदेन) हैं और जिसमें सम्मिलित हैं। मानव संसाधन विकास मंत्रालय में शिक्षा और संस्कृति राज्यमंत्री (पदेन उपाध्यक्ष के रूप में), मानव संसाधन विकास मंत्रालय के शिक्षा विभाग के सचिव, परिषद् के निदेशक, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के अध्यक्ष, स्कूली शिक्षा में रुचि रखने वाले चार शिक्षाविद (जिनमें दो स्कूल अध्यापक होंगे), परिषद् के संयुक्त निदेशक, परिषद् के संकाय के तीन सदस्य (जिनमें कम-से-कम दो प्रोफेसर और विभागाध्यक्षों के स्तर के होंगे) मानव संसाधन विकास मंत्रालय के एक प्रतिनिधि तथा वित्त मंत्रालय का एक प्रतिनिधि (जो परिषद् का वित्तीय सलाहकार होगा)।

कार्यकारिणी समिति को अपने कार्य में सहायता देने के लिए निम्नलिखित स्थायी समितियां हैं :-

1. वित्त समिति
2. स्थापना समिति
3. भवन और निर्माण समिति
4. क्षेत्रीय शिक्षा कालेजों की प्रबंध समिति
5. कार्यक्रम सलाहकार समिति
6. शैक्षिक अनुसंधान और खोजपरक समिति

परिषद् के मुख्यालय में हैं :-

1. परिषद् का सचिवालय
2. लेखा शाखा

चार वरिष्ठ पदाधिकारी जो सरकार द्वारा नियुक्त किये जाते हैं, वे हैं निदेशक, संयुक्त निदेशक, सी०आई०ई०टी० के संयुक्त निदेशक तथा सचिव। संदर्भाधीन वर्ष में निम्नलिखित अधिकारियों ने ये पद संभाले :-

डा० पी० एल० मल्होत्रा, निदेशक
डा० ए० के० जलालुद्दीन, संयुक्त निदेशक
डा० एम० एम० चौधरी, संयुक्त निदेशक, सी०आई०ई०टी०
श्री ओ० पी० केलकर, आई०ए०एस०, सचिव

अकादमिक कार्यों में निदेशक के सहायतार्थ तीन डीन हैं :-

डीन (अकादमिक) :	प्रो० पी० एन० दवे (दिसम्बर 1987 तक) डा० एच० एस० श्रीवास्तव (दिसंबर 1987 से)
डीन (अनुसंधान) :	प्रो० ए० के० शर्मा (सितम्बर 1987 तक) बाकर मेहदी (दिसंबर 1987 से)
डीन (समन्वयन) :	प्रो० बी० मेहदी (दिसंबर 1987 तक) प्रो० ए० के० शर्मा (दिसंबर 1987 से)

डीन अकादमिक एन० आई० ई० के विभागों के अकादमिक कार्य का समन्वय करते हैं। डीन अनुसंधान अनुसंधान कार्यक्रमों का समन्वय करते हैं तथा शैक्षिक अनुसंधान और खोजपरक समिति ई०आर०आई०सी० के कार्य को देखते हैं। डीन समन्वयन सेवा/उत्पादन विभागों, क्षेत्र कार्यालयों तथा क्षेत्रीय शिक्षा कालेजों की गतिविधियों का समन्वय करते हैं।

1987-88 में परिषद् निम्नलिखित का संचालन कर रही थी :-
राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान एन०आई०ई०
केन्द्रीय शैक्षिक प्रौद्योगिकी संस्थान सी०आई०ई०टी०
चार क्षेत्रीय शिक्षा कालेज आर०सी०ईज़०
17 क्षेत्र एकक

राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान एन०आई०ई०

वर्ष 1987-88 में राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान एन०आई०ई नई दिल्ली, अनुसंधान, विकास, प्रशिक्षण, विस्तार, मूल्यांकन और प्रसार संबंधी अपने-अपने विशिष्ट क्षेत्रों में निम्नलिखित विभाग/एकक रखती थी :-

1. सामाजिक विज्ञान और मानविकी शिक्षा विभाग डी०ई०एस० एस०एच०
2. विज्ञान और गणित शिक्षा विभाग डी०ई०एस० व एम०
3. स्कूलपूर्व और प्रारंभिक शिक्षा विभाग डी०पी०एस०ई०ई०
4. शिक्षा व्यवसायीकरण विभाग डी०वी०ई०
5. अध्यापक शिक्षा, विशेष शिक्षा और प्रसार सेवा विभाग डी०टी० ई०एस०ई० व ई०एस०
6. मापन, मूल्यांकन, सर्वेक्षण औरआंकड़ा संसाधन विभाग डी०एम० ई०एस० व डी०पी०
7. शैक्षिक मनोविज्ञान, परामर्श और मार्गदर्शन विभाग डी०ई०पी० सी० व जी०
8. क्षेत्र सेवाएं, विस्तार और समन्वय विभाग डी०एफ०एस०ई० सी०
9. नीति अनुसंधान, नियोजन और कार्यक्रम विभाग डी०पी०आर० पी० पी०

10. पुस्तकालय, प्रलेखन और सूचना विभाग (डी०एल०डी०आई०)
11. प्रकाशन विभाग (पी०डी०)
12. कार्यशाला विभाग (डब्ल्यू०डी०)
13. पत्रिका प्रकोष्ठ (जे०सी०)
14. अन्तर्राष्ट्रीय संबंध एकक (आई०आर०यू०)
15. महिला अध्ययन एकक (डब्ल्यू०एस०यू०)

केंद्रीय शैक्षिक प्रौद्योगिकी संस्थान (सी०आई०ई०टी०)

केंद्रीय शैक्षिक प्रौद्योगिकी संस्थान संयुक्त निदेशक की अध्यक्षता में पर्याप्त स्वायत्तता के साथ रा०शै०अनु०प्र०परि० के एक अंग के रूप में कार्य करता है । अपने कार्यक्रमों व गतिविधियों के बारे में संस्थान के मार्गदर्शन के लिए एक सलाहकार परिषद् है । सी०आई०ई०टी० के निम्नलिखित प्रमुख प्रभाग हैं :

1. शैक्षिक प्रौद्योगिकी व प्रशिक्षण प्रभाग, टी०वी० प्रभाग और सुदूर शिक्षा प्रभाग (ई०टी०टी०डी०)
2. अनुसंधान, शिक्षा और समन्वय प्रभाग (आर०ई०सी०डी०)
3. तकनीकी नियोजन, संचालन और रखरखाव प्रभाग (टी०पी० ओ०एम०डी०)
4. लेखाचित्र कला, प्रदर्शनी और मुद्रण प्रभाग (जी०ई०पी०डी०)
5. पुरालेख, सूचना व प्रलेखन प्रभाग (ए०आई०डी०डी०)
6. फिल्म और फोटो प्रभाग (एफ०पी०डी०)
7. श्रव्य-रेडियो प्रभाग (ए०आर०डी०)

क्षेत्रीय शिक्षा कालेज (आर०सी०ई़ज़०)

क्षेत्रीय शिक्षा कालेज, अजमेर, भोपाल, भुवनेश्वर और मैसूर में स्थित हैं । रा०शै०अनु०प्र०परि० के नियमों के अन्तर्गत प्रबंध समिति कालेज के कार्यों के सामान्य सर्वेक्षण के लिए उत्तरदायी है । प्रबंध समिति के अध्यक्ष उस विश्वविद्यालय के कुलपति हैं जिसके साथ कालेज सम्बद्ध है । प्रिंसिपल प्रबंध समिति के उपाध्यक्ष के रूप में कार्य करते हैं । प्रबंध समिति की बैठकें वर्ष में कम-से-कम दो बार होती हैं और अध्यक्ष चाहे तो आवश्यकतानुसार किसी भी समय विशेष बैठक भी बुला सकते हैं । निर्देशों के डीन अकादमिक प्रकार्यों में कालेज प्रिंसिपल की सहायता करते हैं ।

ये कालेज आवासीय संस्थाएं हैं और उनमें प्रयोगशाला, पुस्तकालय और अन्य सुविधाओं की पर्याप्त व्यवस्था है । प्रत्येक कालेज के साथ एक निदर्शन बहुद्देश्य स्कूल सम्बद्ध है जहां विकसित क्रियाविधियों को वास्तविक कक्षा स्थितियों में परीक्षित किया जाता है ।

क्षेत्र सलाहकार (रा०शै०अनु०प्र०परि०कार्यालय) एफ० एज़०

राज्य शिक्षा प्राधिकारियों तथा राज्यस्तर संस्थाओं, जिन्हें शिक्षा प्रणाली में अकादमिक और प्रशिक्षण निवेश प्रदान करने हेतु स्थापित किया गया है, के साथ प्रभावी तालमेल रखने के लिए निम्नलिखित स्थानों पर 17 क्षेत्र कार्यालय स्थापित किये गये हैं :

1. अहमदाबाद
2. इलाहाबाद
3. बेंगलूर
4. भोपाल
5. भुवनेश्वर
6. कलकत्ता
7. चंडीगढ़
8. गुवाहाटी
9. हैदराबाद
10. जयपुर
11. मद्रास
12. पटना
13. पुणे
14. शिलांग
15. शिमला
16. श्रीनगर
17. त्रिवेन्द्रम

एन०सी०ई०आर०टी की संरचना
सामान्य परिषद्
कार्यकारी समिति
निदेशक, एन सी ई आर टी
संयुक्त निदेशक, एन सी ई आर टी
सचिव, एन सी ई आर टी
राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान
संयुक्त निदेशक, सी आई ई टी
प्रशासन
लेखा और लेखा परीक्षा
जनसंपर्क
अकादमिक समन्वय
अकादमिक विभाग
सेवा उत्पादन
एकक/सैल
प्रभाग
उपसचिव–3
सी०ए०ओ० और आई०एफ०ए०
पी०आर०ओ०
डी०पी०आर० पी०पी०
डी०एफ०सी०सी०
स्थापना
नियुक्ति
केम्पस और कल्याण
समिति और संसद
पूर्ति और सेवा
आर०सी०ई०ज़ और एफ० एज़०
सतर्कता और कानूनी कार्य
पी०सी०ई०यू०
कार्यक्रम अनुभाग
आर०सी० इज़–4
एफ०एज़०–17
अजमेर
भोपाल
भुवनेश्वर
मैसूर
अहमदाबाद
भोपाल
चंडीगढ़
जयपुर
पूना
श्रीनगर
इलाहाबाद
भुवनेश्वर
गुवाहाटी
मद्रास
शिलांग, त्रिवेन्द्रम, बंगलौर, कलकत्ता,
हैदराबाद, पटना, शिमला
डी०आई०एस०एस०एच०
डी०आई०एस०एस०
डी०पी०एस०ई०ई०
डी०टी०एस०ई०ई०एस०
डी०आई०पी०सी०जी०
डी०एम०ई०एस०डी०पी०
डी०वी०ई०
पी०डी०
डब्ल्यू०डी०
डी०एल०डी०आई०
जे०सी०
आई०आर०
एस०ई०पी०
हिन्दी सैल
ई०टी०टी०डी०
आर०ई०सी०डी०
टी०पी०ओ०
एम०डी०
जी०ई०पी०डी०
ए०आई०डी०डी०
एफ०पी०डी०
ए०आर०डी०

1987-88

दो

वर्ष 1987–88 की गतिविधियों पर एक विहंगम दृष्टि

संदर्भाधीन अवधि में परिषद् ने राष्ट्रीय शिक्षा नीति–1986 के कार्यान्वयन की दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की तथा देश में स्कूली शिक्षा और अध्यापक शिक्षा में गुणात्मक सुधार लाने के लिए सतत और नियोजित प्रयास किए । वर्ष 1987–88 में परिषद् के कार्यक्रमों और परियोजनाओं के प्रतिपादन एवं कार्यान्वयन से संबंधित कुछ महत्वपूर्ण पहलू इस प्रकार थे — शैशवकालीन शिक्षा, प्रारंभिक शिक्षा का सर्वीकरण, स्कूल स्तर पर विषयवस्तु तथा शिक्षा प्रक्रियाओं का अभिविन्यास, स्कूलों में विज्ञान शिक्षा का सुधार, कम्प्यूटर साक्षरता और स्कूल अध्ययन, उच्चतर माध्यमिक स्तर पर शिक्षा का व्यवसायीकरण, अध्यापक शिक्षा का पुनर्गठन एवं पुनर्संरचना, अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति तथा शैक्षिक दृष्टि से पिछड़े अल्पसंख्यकों के लिए समान शैक्षिक अवसर प्रोन्नत करना, विकलांगों के लिए समेकित शिक्षा, शैक्षिक प्रौद्योगिकी का प्रभाव उपयोग, नवोदय विद्यालयों की स्थापना एवं प्रबंध, शैक्षिक नियोजन के लिए डेटाबेस का सृजन, प्रतिभा की पहचान व संवर्धन, शैक्षिक अनुसंधान और शैक्षिक तथा व्यावसायिक मार्ग–दर्शन की प्रोन्नति । शिक्षा सेक्टर में विभिन्न राज्यों और संघशासित क्षेत्रों में कार्यान्वित की जा रही यूनीसेफ–सहायता प्राप्त परियोजनाओं, राष्ट्रीय जनसंख्या शिक्षा परियोजना, विज्ञान उपकरण निर्माण तथा कम्प्यूटर साक्षरता और स्कूल अध्ययन (क्लास) हेतु इंडो–एफ० आर० जी० परियोजना तथा साथ ही इन्हीं परियोजनाओं के तहत सभी गतिविधियों को समन्वित तथा अनुवीक्षित करने के लिए परिषद् ने तकनीकी सहायता प्रदान करना जारी रखा । परिषद् ने अपने क्षेत्र सलाहकारों और क्षेत्रीय शिक्षा कालेजों के व्यापक नेटवर्क के माध्यम से राज्यों/संघशासित क्षेत्रों के विभागों/शिक्षा निदेशालयों (एस०सी०ई०आर०टीज) तथा इसी प्रकार के अन्य अभिकरणों द्वारा आयोजित विभिन्न कार्यक्रमों में पूरा सहयोग देकर सभी राज्यों/संघशासित क्षेत्रों की सरकारों से निकट सम्पर्क बनाए रखा ।

शैशवकालीन शिक्षा

शैशवकालीन शिक्षा कार्यक्रम को मज़बूत करने की दिशा में परिषद् ने कई गतिविधियों को हाथ में लिया । शिशु माध्यम प्रयोगशाला (सी० एम० एल०) परियोजना के अन्तर्गत 3 से 8 वर्ष के आयुवर्ग के बच्चों में शैक्षिक व मनोरंजक मूल्यवाली सामग्रियों के विकास से संबंधित गतिविधियां जारी रखी गईं । शैशवकालीन शिक्षा (ई०सी०ई०) परियोजना के अन्तर्गत ; शैशवकालीन शिक्षा एककों की स्थापना और उन्हें मज़बूत बनाने, अध्यापक शिक्षकों व स्कूलपूर्व अध्यापकों के प्रशिक्षण तथा शैशवकालीन शिक्षा के लिए सीखने व खेलने की सामग्री के विकास के लिए दस राज्यों को सहायता प्रदान की गई । शैशवकालीन प्रेरणा की एक वैकल्पिक कार्य नीति विकसित करने के प्रयास के रूप में बाल विकास में एक गृह–आधारित कार्यक्रम उड़ीसा के जनजातीय और शहरी गंदी बस्तियों में परीक्षित किया गया । बाल–बालकार्यक्रम संबंधी गतिविधियों के तहत बड़े बच्चों को उचित ज्ञान द्वारा स्वस्थ रहने की शिक्षा प्रदान करके फिर उन्हें परिवार व समुदाय के छोटे बच्चों में शिक्षकों की भूमिका अदा कर उन्हें स्वस्थ रहने के बारे में शिक्षित करते हैं । इनके अतिरिक्त स्कूल–पूर्व तथा आरंभिक प्राथमिक स्टेजों पर अध्यापकों के मध्य खिलौनों की महत्ता और शैक्षिक खेलों और खेल द्वारा शिक्षण–विधि की जागृति विकसित करने के लिए खिलौने बनाने संबंधी एक राष्ट्रीय कार्यशाला आयोजित की गई । इस कार्यशाला में वे स्कूलपूर्व और प्राथमिक स्कूल के अध्यापक उपस्थित थे जो परिषद् द्वारा आयोजित खिलौना बनाना प्रतियोगिताओं में राज्यस्तर पर प्रथम पुरस्कार विजेता थे ।

प्रारंभिक शिक्षा

मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा चालू की गई "आप्रेशन ब्लैक बोर्ड" योजना के अधीन देश में प्राथमिक स्कूलों को दी जाने वाली अनिवार्य वस्तुओं के मानदंडों और विनिर्देशनों के विकास का दायित्व परिषद् ने अपने हाथ में लिया । विभिन्न वस्तुओं से संबंधित मानदंड और विनिर्देशन रा० शै०अनु०प्र०परि० द्वारा भारतीय मानक ब्यूरो के सहयोग से विकसित किए गए और उन्हें "प्राथमिक स्तर पर अनिवार्य सुविधाएं–– मान–दंड और विनिर्देशन" नामक प्रलेख के रूप में किया गया । परिषद् ने प्राथमिक स्कूल भवनों के विनिर्देशनों पर एक दिन की संगोष्ठी भी आयोजित की । इनके अतिरिक्त, केन्द्र प्रायोजित आप्रेशन ब्लैकबोर्ड योजना के अन्तर्गत धन प्राप्त करने के लिए परिषद् ने राज्यों/संघशासित क्षेत्रों को परियोजना प्रस्तावों को प्रतिपादित करने के लिए तकनीकी सहायता प्रदान की ।

प्राथमिक शिक्षा पाठ्यचर्या पुनर्नवीकरण परियोजना के अधीन लिए गए "नामांकन, अवरोधन, प्रगतिरोध और शिष्य उपलब्धि अध्ययन" के अंग के रूप में 22 राज्यों से प्राप्त आंकड़ों का विश्लेषण किया गया और प्राथमिक स्तर पर शिष्य उपलब्धि पर एक अंतरिम तकनीकी रिपोर्ट तैयार की गई ।

राज्यों/संघशासित क्षेत्रों में कार्यान्वित पोषण, स्वास्थ्य शिक्षा व पर्यावरण स्वच्छता (एन०एच०ई०ई०एस०) नामक परियोजना के अधीन "शिष्य उपलब्धियों का अध्ययन" तथा "सामुदायिक सम्पर्क कार्यक्रम के प्रभाव का अध्ययन" पर आंकड़ा–संकलन का कार्य पूरा किया गया ।

अनौपचारिक शिक्षा कार्यक्रम से संबंधित अनुसंधान और विकास गतिविधियों तथा इन कार्यक्रमों के कार्यान्वयन में रत कार्मिकों का प्रशिक्षण/अभिविन्यास परिषद् का एक महत्वपूर्ण कार्यक्षेत्र रहा है । परिषद् ने केंद्र प्रायोजित अनौपचारिक शिक्षा कार्यक्रम में सहायक होने के लिए कई गतिविधियों को हाथ में लिया । इन गतिविधियों का मुख्य बल अनुदेशी सामग्रियों तथा अनौपचारिक शिक्षा कार्यक्रमों के अनुकूल उचित

1987-88

शिक्षण/अधिगम मूल्यांकन कार्यनीतियों का विकास रहा है । शैक्षिक दृष्टि से पिछड़े हुए नौ राज्यों में अनौपचारिक शिक्षा के अकादमिक पक्षों के अध्ययन का कार्य पूरा किया गया तथा अंतिम जांचें दर्शाते हुए मानव संसाधन विकास मंत्रालय को रिपोर्ट प्रस्तुत की गई । हाथ में ली गई अन्य गतिविधियों में सम्मिलित हैं अनौपचारिक शिक्षा केंद्रों में नामांकित किए गए बच्चों की उपलब्धियों का मूल्यांकन करने के लिए मानकीकृत उपकरणों और प्रविधियों का निर्माण और अनौपचारिक शिक्षा की प्रशासनिक संरचनाओं का अध्ययन और पर्यवेक्षण व अनुवीक्षण की योजना ।केन्द्र प्रायोजित योजना के कार्यान्वयन की समीक्षा के लिए तथा विचारों और अनुभव के विनिमय के लिए परिषद् ने राज्यों के अनौपचारिक शिक्षा कार्यक्रम के प्रभारियों की एक बैठक भी की तथा अनौपचारिक शिक्षा कार्यक्रम में रत कार्मिकों के लिए अभिविन्यास प्रशिक्षण पाठ्यक्रम आयोजित किए ।

स्कूली शिक्षा में विषयवस्तु तथा प्रक्रियाओं का पुनरभिविन्यास

राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अनुरूप परिषद् ने स्कूली शिक्षा में विषयवस्तु तथा प्रक्रियाओं के पुनरभिविन्यास हेतु अनेक समन्वित उपाय हाथ में लिए। इन उपायों का मुख्य दबाव था—समान कोर अवयवों वाले पाठ्यचर्या ढांचे का विकास, राष्ट्रीय पाठ्यचर्या ढांचा आधारित पाठ्यचर्या मार्गदर्शन सिद्धांतों और पाठ्यविवरणों का विकास, स्कूली शिक्षा के विभिन्न स्टेजों के लिए न्यूनतम अधिगम स्तरों के मानदंडों को लागू करना, संशोधित पाठ्यविवरणों पर आधारित संशोधित पैकेजों का विकास, बाल–केंद्रित अधिगम कार्यनीतियों और खेल–खेल में तथा गतिविधि आधारित शिक्षण–पद्धतियों का विकास, व्यावसायिक सक्षमता सुधारने के लिए अध्यापकों तथा अन्य शैक्षिक कार्मिकों का प्रशिक्षण और परीक्षा सुधार तथा शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया सुधारने के लिए सतत और व्यापक मूल्यांकन लागू करना । स्कूल स्तर पर शिक्षा में विषयवस्तु तथा प्रक्रियाओं के पुनरभिविन्यास के लिए रा०शै०अ०प्र०परि० द्वारा लिए गए मुख्य पग निम्न प्रकार हैं :

(क) "प्राथमिक और माध्यमिक शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या—एक ढांचा" जिसे परिषद् ने 1986 में शिक्षा विभागों/निदेशालयों, एस०सी०ई०आर०टीज़/एस०आई०ईज़०, स्कूल/माध्यमिक शिक्षा मंडलों, विश्वविद्यालय के शिक्षा विभागों तथा राज्यस्तर के अन्य अभिकरणों की सहायता से विकसित किया गया था, उसे राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 के प्रकाश में संशोधित किया गया । संशोधित प्रलेख "प्रारंभिक और माध्यमिक शिक्षा हेतु राष्ट्रीय पाठ्यचर्या एक ढांचा" 11 – 12 मार्च 1988 को हुई केंद्रीय शिक्षा परामर्श मंडल (सी०ए०बी०ई०) की बैठक में परिचालित किया गया । उच्चतर माध्यमिक शिक्षा के लिए भी पाठ्यचर्या संबंधी ढांचे का एक प्रारूप तैयार किया गया था । इस पाठ्यचर्या प्रारूप पर 1987 में हैदराबाद में हुए राष्ट्रीय सम्मेलन में चर्चा की गई । सम्मेलन में दिए गए सुझावों के आधार पर पाठ्यचर्या प्रारूप को संशोधित किया गया ।

(ख) परिषद् द्वारा 1986–87 में तैयार प्राथमिक स्टेज के पाठ्यचर्या विकास के लिए अंतिम मार्गदर्शी सिद्धांतों को देश के विभिन्न अभिकरणों से प्राप्त सुझावों के प्रकाश में संशोधित किया गया । संशोधित प्रलेख "प्राथमिक स्टेज पर न्यूनतम अधिगम स्तर — समान कोर अवयवों सहित पाठ्यविवरण" में प्राथमिक स्टेज की सभी कक्षाओं एवं प्रत्येक पाठ्यचर्या क्षेत्र के बारे में न्यूनतम अधिगम स्तर निर्दिष्ट किये गए हैं । इनके अलावा पाठ्यचर्या मार्गदर्शी सिद्धांत और पाठ्यविवरण उच्च प्राथमिक व माध्यमिक स्टेज के सभी पाठ्यचर्या क्षेत्रों के लिए विकसित किए गए । परिषद् द्वारा विकसित पाठ्यचर्या मार्गदर्शी सिद्धांतों और पाठ्यविवरणों को राज्य–स्तर के अभिकरणों को भेजा गया ताकि वे विभिन्न पाठ्यचर्या क्षेत्रों में आसानी से अनुदेशी पैकेजों को विकसित कर सकें ।

(ग) वर्ष 1987 में पहली, तीसरी ओर छठी कक्षाओं के लिए पाठ्यपुस्तकों सहित संशोधित अनुदेशी पैकेज प्रकाशित किए गए और अकादमिक सत्र 1987–88 में स०बी०एस०ई० से संबद्ध स्कूलों और केंद्रीय विद्यालयों में इन्हें लागू किया गया । अकादमिक सत्र 1988–89 में केंद्रीय विद्यालयों में लागू करने के लिए दूसरी, चौथी, सातवीं, नौवीं और ग्यारहवीं कक्षाओं के लिए नई पाठ्यपुस्तकें भी तैयार की गई थीं । पाठ्यपुस्तकों के विन्यास, डिजाइन, चित्रों और जिल्दबंदी में पर्याप्त सुधार लाया गया ताकि छोटे बच्चे उनकी साज–सज्जा से आकर्षित हो सकें । विज्ञान और गणित में उच्च प्राथमिक, माध्यमिक और उच्चतर माध्यमिक स्टेजों की पाठ्यपुस्तकें एक टीम, जिसमें विश्वविद्यालयों, रा०शै०अनु०प्र०परि० और अन्य राष्ट्रीय तथा राज्यस्तर की संस्थाओं के प्रसिद्ध वैज्ञानिक और गणितज्ञ सम्मिलित थे, ने तैयार की । पाठ्यपुस्तकों की पाण्डुलिपियों को प्रकाशित करने से पहले इनका प्रसिद्ध विद्वानों, कार्यरत अध्यापकों, अध्यापक शिक्षकों और पाठ्यचर्या विशेषज्ञों के दलों से बड़ी बारीकी से पुनरीक्षण कराया गया ।

(घ) राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 1986 में निर्दिष्ट समान कोर अवयवों के आधार पर उत्कृष्ट अनुदेशी सामग्रियों के विकास के लिए विशेष प्रयास किये गये । समान कोर अवयवों से संबंधित विषयों पर कुछ उत्कृष्ट अनुदेशी सामग्रियां तैयार तथा प्रकाशित की गई । इनके अलावा, भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास के शिक्षण हेतु स्कूली शिक्षा के सभी स्तरों के लिए पाठ्यविवरण व मार्गदर्शी सिद्धांत विकसित किए गए । स्कूली शिक्षा में मूल्य अभिविन्यास को बढ़ावा देने के लिए दो पूरक पाठमालाएं "थिंकिंग टुगेदर" और "कान्टूर आफ करेज" एक प्रयास के रूप में प्रकाशित की गई ।

(ङ) स्कूलों में संशोधित कार्य अनुभव कार्यक्रम शुरू करने के लिए कृषि, वाणिज्य, गृह विज्ञान और प्रौद्योगिकी संबंधी 20 कार्य अनुभव गतिविधियों पर अनुदेशी समितियां विकसित की गई । इनमें से पांच शिक्षा के उच्च प्राथमिक स्टेज से संबंधित हैं और 15 माध्यमिक स्टेज से । परिषद् ने कार्य अनुभव पर राज्य कर्मचारियों/प्रिंसिपलों/शिक्षा अधिकारियों के लिए अभिविन्यास कार्यक्रम आयोजित किए । नवोदय विद्यालयों को विशेष रूप से संदर्भित करते हुए परिषद् ने कार्य अनुभव कार्यक्रम तथा शिष्य

मूल्यांकन के कार्यान्वयन हेतु मार्गदर्शी सिद्धांत भी विकसित किए तथा राज्यों/संघशासित क्षेत्रों से स्कूलों के प्रिंसिपलों, शिक्षा अधिकारियों तथा अन्य मूल व्यक्तियों के लिए 11 अभिविन्यास कार्यक्रम आयोजित किए ।

(च) स्कूल स्टेज पर शिक्षा की विषयवस्तु और प्रक्रियाओं को पुनरभिविन्यस्त करने के प्रयास के रूप में स्कूलों में मूल्यांकन अभ्यासों को सुधारने हेतु उपाय शुरू किए गए । शिशु संवर्धन और विकास के सभी पहलुओं को समाविष्ट करते हुए सतत और व्यापक मूल्यांकन की योजना की रूपरेखा निर्मित की गई। परीक्षाओं में अनुमापन और श्रेणीकरण लागू करने के लिए मार्गदर्शी सिद्धांत भी तैयार किए गए और जुलाई 1987 में परिषद् द्वारा अनुमापन और श्रेणीकरण पर एक राष्ट्रीय संगोष्ठी आयोजित की गई । इनके अतिरिक्त, स्कूली शिक्षा के विभिन्न स्टेजों पर छात्रों के रिकार्डों को बनाने हेतु मार्गदर्शी सिद्धांतों और प्रक्रियाओं को तैयार करने का कार्य भी शुरू किया गया। स्कूलों में मूल्यांकन अभ्यासों को सुधारने हेतु परिषद् ने शैक्षिक मूल्यांकन संबंधी संकल्पनात्मक सामग्रियों के विकास, प्रक्रिया संदर्भित परीक्षणों की तैयारी और विभिन्न विषय क्षेत्रों में लेखकीय विषय परीक्षण का कार्य भी हाथ में लिया ।

(छ) परिषद् द्वारा विकसित पाठ्यपुस्तकों सहित अनुदेशी सामग्रियों को संबंधित राज्य स्तर के अभिकरणों को ग्रहण/रूपांतरण/संशोधन हेतु परिचालित किया गया ताकि राज्य चरणबद्ध पद्धति से स्कूल प्रणाली में संशोधित अनुदेशी सामग्रियों को लागू कर सकें । राज्यों/संघशासित क्षेत्रों से विशिष्ट अनुरोधों के प्राप्त होने पर परिषद् ने राष्ट्रीय पाठ्यचर्या ढांचे पर आधारित पाठ्यविवरणों और अनुदेशी सामग्रियों के विकास के लिए राज्य स्तर के अभिकरणों को तकनीकी सहायता प्रदान की ।

(ज) केन्द्र प्रायोजित स्कूल अध्यापक जन अभिविन्यास कार्यक्रम के अंतर्गत राष्ट्रीय शिक्षा नीति के कार्यान्वयन की दिशा में अध्यापकों की अभिप्रेरणा तथा व्यावसायिक क्षमता बढ़ाने के लिए तथा स्कूली शिक्षा में विषयवस्तु और प्रक्रियाओं के पुनरभिविन्यास प्रक्रिया में अपनी भूमिका अधिक कुशलतापूर्वक अदा करने के लिए 1986 से रा०शै०अनु०प्र०परि० तथा राज्य सरकारों द्वारा लगभग पांच लाख स्कूली अध्यापकों के लिए अभिविन्यास कार्यक्रम आयोजित किये जा रहे हैं । 1987 में इस कार्यक्रम के तहत 4.55 लाख अध्यापकों को अभिविन्यस्त किया गया ।

1986 और 1987 से प्राप्त अनुभव के आधार पर अभिविन्यास कार्यक्रमों की विषयवस्तु को पुनरीक्षित किया गया । फीडबैक की प्राप्ति के आधार पर स्कूल स्टेज संबंधी शिक्षा की विषयवस्तु और प्रक्रियाओं के अभिविन्यास की ओर विशेष ध्यान देते हुए राष्ट्रीय शिक्षा नीति में विचारित मुख्य दबावों के बारे में भी जागरूकता उत्पन्न करने संबंधी अवयवों के अतिरिक्त विभिन्न पाठ्यचर्या क्षेत्रों में शैक्षणिक व्यावसायिक क्षमताओं को बढ़ाने संबंधी अवयवों को सम्मिलित करने के लिए भी कार्यक्रम को पुनर्डिज़ाइन किया गया । इसी प्रयोजन के लिए प्राथमिक स्कूल अध्यापकों और माध्यमिक स्कूल अध्यापकों के लिए अलग-अलग खंडों वाले संशोधित प्रशिक्षण पैकेज तैयार किए गए । इनके अतिरिक्त अभिविन्यास प्रशिक्षण शिविरों के आयोजन में सम्मिलित किये जानेवाले संकाय/स्रोत व्यक्तियों के लिए मार्गदर्शी सिद्धांत भी तैयार किए गए । उदित पाठ्यचर्या चिंताओं के कुछ नये कार्यक्रमों को शामिल करके इस कार्यक्रम को टेलीविज़न सहायता और ज़्यादा मज़बूत कर दी गई ।

(झ) पहली और दूसरी कक्षाओं के लिए अनुदेशी सामग्रियों का नया सेट समुचित रूप से कार्यान्वित करने के लिए केंद्रीय विद्यालयों के लगभग 1400 प्राथमिक अध्यापकों का प्रशिक्षण-कार्य परिषद् ने अपने हाथ में लिया । अगस्त-अक्तूबर 1987 में केंद्रीय विद्यालय संगठन के सहयोग से संचालित प्रशिक्षण कार्यक्रमों में बालकेंद्रित और गतिविधि-आधारित शिक्षण कार्यनीतियां इसलिए प्रदर्शित की गई ताकि यह दर्शाया जा सके कि अधिगम को बालकों के लिए कैसे हर्षप्रद अनुभव बनाया जा सकता है ।

शिक्षा की विषयवस्तु और प्रक्रिया के पुनरभिविन्यास हेतु राज्यों/संघशासित क्षेत्रों को तकनीकी और वित्तीय सहायता

स्कूल स्टेज पर शिक्षा की विषयवस्तु और प्रक्रियाओं के पुनरभिविन्यास संबंधी कार्यान्वयन कार्यों को आसान बनाने के प्रयास के रूप में परिषद् ने योजना प्रतिपादित की जिसके तहत विभिन्न पाठ्यचर्या क्षेत्रों में अनुदेशी सामग्रियों सहित पाठ्यपुस्तकों के विकास तथा पाठ्यचर्या के पुनर्नवीकरण संबंधी गतिविधियों को हाथ में लेने के लिए राज्यों/संघशासित क्षेत्रों को वित्तीय सहायता प्रदान की गई । इस योजना के तहत 16 राज्यों/संघशासित क्षेत्रों तथा केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा मंडल को (क) राष्ट्रीय पाठ्यचर्या ढांचा के परिप्रेक्ष्य में वर्तमान पाठ्यचर्या के संशोधन हेतु विशेषज्ञों/पाठ्यचर्या समितियों की बैठक (ख) अनुदेशी पैकेजों सहित पाठ्यपुस्तकों और अध्यापक मैनुअलों के विकास हेतु कार्यशालाओं (ग) पाठ्य पुस्तकों और अध्यापक मैनुअलों की पाण्डुलिपियों के पुनरीक्षण के लिए कार्यशालाओं (घ) कार्य अनुभव, कला शिक्षा और स्वास्थ्य व शारीरिक शिक्षा संबंधी अनुदेशी सामग्रियों के विकास हेतु कार्यशाला के आयोजन के लिए वित्तीय सहायता प्रदान की गई । 1987-88 वर्ष में आन्ध्र प्रदेश, महाराष्ट्र, मणिपुर, मिजोरम, उड़ीसा, पंजाब, तमिलनाडु, उत्तर प्रदेश और पश्चिमी बंगाल राज्यों को तथा संघशासित दिल्ली को वित्तीय सहायता प्रदान की गई । संवर्द्धन और सहायक सामग्रियों के विकास संबंधी गतिविधियों को हाथ में लेने के लिए केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा मंडल को भी वित्तीय सहायता प्रदान की गई । राष्ट्रीय पाठ्यचर्या ढांचे पर आधारित पाठ्यचर्या नवीकरण और अनुदेशी सामग्रियों के विकास संबंधी गतिविधियों को हाथ में लेने के लिए केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा मंडल को भी वित्तीय सहायता प्रदान की गई । राष्ट्रीय पाठ्यचर्या ढांचे पर आधारित पाठ्यचर्या नवीकरण और अनुदेशी सामग्रियों के विकास संबंधी गतिविधियों को सम्पन्न करने के लिए परिषद् ने राज्यों/संघशासित क्षेत्रों को तकनीकी सहायता भी प्रदान की ।

1987-88

स्कूलों में विज्ञान शिक्षा को मज़बूत करना

1988 में परिषद् ने स्कूली शिक्षा के सभी स्तरों पर विज्ञान शिक्षा में सुधार हेतु एक कार्ययोजना डिज़ाइन करने के लिए एक कार्यदल जिसमें सुप्रसिद्ध वैज्ञानिक और विज्ञानशिक्षक सदस्य के रूप में थे और विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के अध्यक्ष इसके अध्यक्ष थे, की स्थापना की । कार्यदल की सिफ़ारिशों के आधार पर स्कूलों में विज्ञान शिक्षा के सुधार हेतु एक केंद्र प्रायोजित योजना मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा तैयार की गई । योजना में प्रस्तावित था, उच्च माध्यमिक स्कूलों को विज्ञान किट प्रदान करना, माध्यमिक और उच्चतर माध्यमिक में विज्ञान प्रयोगशालाओं को उच्च स्तर देना तथा मज़बूत करना, माध्यमिक व उच्चतर माध्यमिक स्कूलों में पुस्तकालय सुविधाएं सुधारने के लिए वित्तीय सहायता प्रदान करना, विज्ञान अध्यापकों को प्रशिक्षण देना, विज्ञान अध्यापकों के प्रशिक्षण तथा अनुदेशी सामग्रियों के विकास के लिए विज्ञान शिक्षा संबंध जिला स्रोत केंद्रों की स्थापना तथा विज्ञान शिक्षा में खोजपरक परियोजनाओं और स्रोत सहायता गतिविधियों को हाथ में लेने हेतु स्वैच्छिक संगठनों को सहायता प्रदान करना । योजना संबंधी कार्य के रूप में उच्च माध्यमिक स्कूलों के लिए परिषद् ने एक कार्यसाधक विज्ञान किट डिज़ाइन किया तथा विज्ञान किटों के प्रयोग के लिए एक मार्गदर्शिका तैयार की । परिषद् ने स्कूल पुस्तकालयों को उच्चस्तर प्रदान करने के लिए राज्यों के लिए संस्तुत पुस्तकों की एक सूची मार्गदर्शी सिद्धांत के रूप में तथा इन स्कूलों में विज्ञान प्रयोगशालाओं को मज़बूत करने के लिए योजना के अधीन माध्यमिक और उच्चतर माध्यमिक स्कूलों को दिए जाने हेतु एक उपकरण सूची तैयार की । योजना के कार्यान्वियन हेतु विभिन्न कार्यों को देखने के लिए परिषद् ने एक शीर्ष दल स्थापित किया तथा योजना के अन्तर्गत संचालित किए जाने वाले विभिन्न प्रशिक्षण कार्यक्रमों के लिए एक मैनुअल तैयार किया ।

स्कूलों में विज्ञान शिक्षण को मज़बूत करने के अपने प्रयास के रूप में परिषद् ने अध्यापक मार्गदर्शिकाएं, प्रयोगशाला मैनुअल तथा पूरक पाठ सामग्रियां विकसित कीं । अन्य गतिविधियां जो परिषद् ने सम्पन्न कीं, उनमें शामिल थीं -- विज्ञान में रुचि बढ़ाने तथा वैज्ञानिक मिज़ाज उत्पन्न करने हेतु लोकप्रिय विज्ञान सामग्रियों का विकास, विज्ञान और गणित में प्रतिभा विकसित करने के लिए स्कूल के बाहर विज्ञान और गणित संबंधी गतिविधियों का आयोजन, स्कूलों में विज्ञान प्रयोगशालाओं के प्रभावी उपयोग का अध्ययन, तथा "विज्ञान सब के लिए" संदर्भ में मुक्त सक्षमता विकसित करने के लिए विज्ञान अध्यापकों तथा अध्यापक शिक्षकों की अनुवर्ती शिक्षा पर यूनेस्को प्रायोजित उच्चस्तरीय राष्ट्रीय कार्यशाला का आयोजन ।

जबलपुर में रा०शै०अनु०प्र०परि० द्वारा मध्यप्रदेश सरकार के सहयोग से आयोजित 16वीं राष्ट्रीय बालविज्ञान प्रदर्शनी का उद्घाटन 12 नवम्बर 1987 को राष्ट्रपति श्री आर० वेंकटरामन द्वारा किया गया । प्रदर्शनी का सार था "विज्ञान तथा जीवन का गुण" । प्रदर्शनी में लगभग 2000 वस्तुएं भिन्न-भिन्न राज्यों/संघशासित क्षेत्रों की शामिल की गईं ।

स्कूलों में कम्प्यूटर साक्षरता और अध्ययन

"स्कूलों में कम्प्यूटर साक्षरता और अध्ययन (क्लास)" परियोजना के अंतर्गत रा०शै०अनु०प्र०परि० तथा अन्य स्रोत केंद्रों द्वारा स्कूली अध्यापकों के लिए अनेक उच्चस्तरीय प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए गए । 1987-88 वर्ष में इस परियोजना का विस्तार कर 685 स्कूलों को इसके अधीन लाया गया । परिषद् ने पांच प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए और इन कार्यक्रमों के द्वारा 103 स्कूली अध्यापकों को प्रशिक्षित किया गया । क्लास परियोजना के अंतर्गत न आनेवाले स्कूलों के अध्यापकों को बी० बी० सी० माइक्रो साफ्टवेयर पैकेज दिखाने के लिए परिषद् ने पांच अभिविन्यास कार्यक्रम भी आयोजित किए । परियोजना में सहभागी स्कूलों को तकनीकी सहायता प्रदान करने के लिए अजमेर, भोपाल और भुवनेश्वर क्षेत्रीय शिक्षा कालेजों में तीन और स्रोत केन्द्र स्थापित किए गए । इस परियोजना के अधीन सभी स्रोत केंद्रों ने अध्यापकों को प्रशिक्षित करने के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम भी आयोजित किए और स्कूलों को तकनीकी सहायता प्रदान की । कुल मिलाकर स्रोत केंद्रों द्वारा 1300 अध्यापकों को प्रशिक्षित किया गया । 1987-88 वर्ष में क्लास परियोजना में सहभागी स्कूलों और स्रोत केंद्रों को नई देशज तकनीक से विकसित साफ्टवेयर प्रेषित किए गए ।

शिक्षा का व्यावसायीकरण

उच्चतर माध्यमिक स्टेज पर शिक्षा-व्यवसायीकरण से संबंधित विभिन्न कार्यक्रमों के नियोजन और कार्यान्वियन हेतु परिषद् ने राज्यों को आवश्यक तकनीकी सहायता प्रदान करने के लिए अनेक गतिविधियों को हाथ में लिया । राज्यों के उन मूल कार्मिकों के लिए जो उच्चतर माध्यमिक स्टेज पर पहले से ही व्यावसायिक पाठ्यक्रम लिए हुए हैं तथा उन राज्यों के मूल कार्मिकों के लिए जो उच्चतर माध्यमिक स्टेज पर शिक्षा के व्यवसायीकरण हेतु कार्यक्रम शुरू करने के लिए योजना बना रहे हैं, इन सबके लिए 13 अभिविन्यास कार्यक्रम आयोजित किए गए । इन अभिविन्यास कार्यक्रमों के माध्यम से गुजरात, हिमाचल प्रदेश, महाराष्ट्र, उड़ीसा, पंजाब, राजस्थान, उत्तर प्रदेश तथा पश्चिमी बंगाल राज्यों के 450 मूल व्यक्तियों को उच्चतर माध्यमिक स्टेज के शिक्षा-व्यवसायीकरण संबंधी कार्यक्रमों के कार्यान्वियन के विभिन्न पहलुओं में अभिविन्यस्त किया गया । परिषद् ने विभिन्न व्यावसायिक पाठ्यक्रमों हेतु न्यूनतम व्यावसायिक सक्षमता आधारित पाठ्यचर्याओं के विकास तथा शिक्षा-व्यवसायीकरण के कार्यक्रमों के विभिन्न पहलुओं के कार्यान्वियन हेतु व्यापक मार्गदर्शी सिद्धांतों के विकास संबंधी अपनी गतिविधियों को जारी रखा । शिक्षा-व्यवसायीकरण संबंधी समस्याओं और मसलों की पहचान हेतु तथा उच्चतर माध्यमिक स्टेज के शिक्षा-व्यवसायीकरण के कार्यक्रमों के प्रभावी कार्यान्वियन हेतु समुचित कार्यनीतियां विकसित करने के लिए शिक्षा के व्यवसायीकरण पर एक राष्ट्रीय संगोष्ठी भी आयोजित की गई ।

अध्यापक शिक्षा

अध्यापक शिक्षा के क्षेत्र में परिषद् ने बी०एड० छात्रों के मूल्य अभिविन्यास से संबंधित अनुसंधान परियोजनाओं, आत्म-धारणा प्रवृत्तियों का अध्ययन, अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति व गैर-अनुसूचित जाति/गैर अनुसूचित जनजाति के अध्यापक प्रशिक्षणार्थियों की उपलब्धि के साथ प्रवृत्ति

व समायोजना, भारत में अध्यापकों की स्थिति का अध्ययन तथा शिक्षा कालेजों में छात्र शिक्षक तथा अन्य प्रायोगिक कार्य के पर्यवेक्षण के लिए, उपकरणों का विकास नामक अपनी गतिविधियां जारी रखीं। अध्यापक शिक्षा के विभिन्न पहलुओं पर अनुसंधान को बढ़वा देने के प्रयास के रूप में परिषद् ने अनुसंधान परियोजनाओं के नियोजन व रूपांकन पर एक कार्यशाला, प्रारंभिक अध्यापक शिक्षा में अनुसंधान को बढ़ावा देने के लिए मूल व्यक्तियों के लिए एक अभिविन्यास कार्यक्रम तथा प्रारंभिक अध्यापक शिक्षा में अनुसंधान को बढ़ावा देने हेतु विशेषज्ञों की एक बैठक आयोजित की। अन्य महत्वपूर्ण गतिविधियां थीं – अध्यापक शिक्षा पाठ्यचर्या के पुनर्नवीकरण संबंधी मसलों की पहचान तथा अध्यापक शिक्षकों और अध्यापक प्रशिक्षणार्थियों के प्रयोग के लिए अनुदेशी सामग्रियों का विकास। परिषद् ने अध्यापक शिक्षा के विभिन्न पहलुओं पर अध्यापक शिक्षकों के लिए छः अभिविन्यास पाठ्यक्रम भी आयोजित किए। इन पाठ्यक्रमों में 191 अध्यापक शिक्षकों ने भाग लिया। परिषद् ने राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद् सचिवालय के रूप में कार्य करना जारी रखा तथा एन०सी०टी० ई० की सामान्य परिषद् की बैठक एवं एन०सी०टी०ई० की अकादमिक स्थायी समितियों की बैठकों संबंधी गतिविधियों के समन्वित किया। परिषद् ने अध्यापकों के लिए व्यावसायिक आचारशास्त्र संहिता के विकास के लिए, अध्यापक शिक्षा पाठ्यचर्या ढांचे के विकास के लिए, अध्यापकों की जवाबदेही, सामाजिक और व्यावसायिक उत्तरदायित्वों के अनुमापन के लिए मानदंडों और उपकरणों के विकास के लिए तथा एन०सी०टी०ई० को स्वायत्त संस्था का दर्जा दिलाने हेतु संकल्प का प्रारूप तैयार करने के लिए एन०सी०टी०ई० को तकनीकी सहायता भी प्रदान की।

परिषद् द्वारा चलाए जा रहे चार क्षेत्रीय शिक्षा कालेजों ने चार वर्षीय समेकित अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम बी०ए० एड्० या बी०ए०बी०एड्० डिग्री और बी०एस-सी० एड्० या बी०एस-सी० (आनर्स/पास) बी०एड्० डिग्री प्राप्त करने हेतु तथा एक वर्षीय बी० एड्० पाठ्यक्रम और एक-वर्षीय एम० एड्० पाठ्यक्रम जारी रखा। भुवनेश्वर और मैसूर के क्षेत्रीय शिक्षा कालेजों ने दो वर्षीय एम० एस-सी० एड् पाठ्यक्रम प्रदान किए। अकादमिक सत्र 1987-88 में चार-वर्षीय समेकित पाठ्यक्रम में कुल नामांकन संख्या अजमेर, भोपाल, भुवनेश्वर तथा मैसूर के क्षेत्रीय शिक्षा कालेजों में क्रमशः 217, 385, 542 और 366 थी जबकि बी०एड्० कोर्स में कुल नामांकन संख्या क्रमशः 174, 140, 202 और 78 थी। एम० एड् कोर्स में नामांकन संख्या अजमेर, भोपाल, भुवनेश्वर और मैसूर क्षेत्रीय शिक्षा कालेजों में क्रमशः 19, 14, 22 और 30 थी। एम० एस-सी (जीव विज्ञान) में नामांकन संख्या क्षेत्रीय शिक्षा कालेज भुवनेश्वर में 42 थी जबकि भौतिकी, रसायन और गणित विषयों के एम० एस-सी० एड् कोर्स के क्षेत्रीय शिक्षा कालेज, मैसूर में नामांकन संख्या 111 थी। इनके अतिरिक्त ग्रीष्म स्कूल व पत्राचार कोर्स में बी० एड्० डिग्री प्राप्त करने हेतु भोपाल और भुवनेश्वर क्षेत्रीय शिक्षा कालेजों में क्रमशः नामांकन संख्या 320 और 377 थी जबकि क्षेत्रीय शिक्षा कालेज, भुवनेश्वर, द्वारा सहायता प्राप्त इम्फाल के उपकेंद्र में 220 प्रत्याशी नामांकित किए गए।

क्षेत्रीय शिक्षा कालेजों ने स्कूली शिक्षा और अध्यापक शिक्षा के विभिन्न पहलुओं पर अनेक विस्तार कार्यक्रम/कार्यशालाएं/बैठकें/संगोष्ठियां भी आयोजित कीं। अजमेर, भोपाल, भुवनेश्वर और मैसूर में स्थित क्षेत्रीय शिक्षा कालेजों ने क्रमशः कुल 9, 26, 12 और 26 कार्यक्रम आयोजित किए। इनके अतिरिक्त प्रत्येक क्षेत्रीय शिक्षा कालेज ने स्कूली शिक्षा और अध्यापक शिक्षा संबंधी अनुसंधान अध्ययन भी हाथ में लिए। क्षेत्रीय शिक्षा कालेजों ने अनेक विद्वानों को विज्ञान शिक्षा की पी-एच० डी० डिग्री के अनुसंधान कार्य में मार्गदर्शन भी प्रदान किया।

अनुसूचित जातियों/अनुसूचित जनजातियों की शिक्षा

परिषद् ने अनुसूचित जातियों/अनुसूचित जनजातियों की शिक्षा संबंधी अनुसंधान और विकासात्मक गतिविधियों को जारी रखा। अनुसंधान अध्ययन जो रिपोर्टाधीन वर्ष में जारी रखे गए उनमें शामिल हैं – उत्तर प्रदेश में दसवीं कक्षा के अनुसूचित जाति तथा गैर अनुसूचित जाति विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन, क्षीण और सबल बिन्दुओं के निर्धारण हेतु प्राथमिक स्टेज पर जनजातीय विद्यार्थियों का विषयवार कार्यनिष्पादन का अध्ययन तथा अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति हेतु मैट्रिक-पूर्व छात्रवृत्ति योजना का मूल्यांकनकारी अध्ययन/परिषद् ने आंध्र प्रदेश में गोंडी जनजातीय बच्चों के लिए पहली कक्षा के प्राइमर को तैयार करने हेतु एक कार्यदल की बैठक आयोजित की। तेलुगू लिपि को प्रयुक्त करते हुए गोंडी जनजातीय बोली में लिखित प्राइमर को बैठक में अंतिम रूप दिया गया। परिषद् ने जन-जातीय क्षेत्रों में स्थित प्रारंभिक अध्यापक प्रशिक्षण संस्थाओं के अध्यापक शिक्षकों के लिए जनजातीय शिक्षा की समस्याओं पर दो प्रशिक्षण पाठ्यक्रम तथा जनजातीय क्षेत्रों में अनौपचारिक शिक्षा कार्यक्रम में रत मूल व्यक्तियों के लिए एक अभिविन्यास पाठ्यक्रम भी आयोजित किया।

शैक्षिक दृष्टि से पिछड़े अल्पसंख्यकों की शिक्षा

शैक्षिक दृष्टि से पिछड़ी जातियों, विशेषकर मुसलमानों और नवबौद्धधर्मियों, द्वारा प्रबंधित स्कूलों में शैक्षिक मानकों को सुधारने के लिए परिषद् ने तकनीकी तथा वित्तीय सहायता प्रदान करने हेतु कई पग उठाए। परिषद् तथा क्षेत्रीय स्रोत केंद्रों (चुने हुए विश्वविद्यालयों में स्थापित) ने शैक्षिक दृष्टि से पिछड़े अल्पसंख्यकों द्वारा कायम स्कूलों के प्रिंसिपलों व प्रबंधकों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम इन स्कूलों के अध्यापकों के लिए पेशा मार्गदर्शन प्रशिक्षण कार्यक्रम, विभिन्न विषय क्षेत्रों से संबंधित शिक्षण क्रियाविधि पर कार्यशाला तथा क्षेत्रीय स्रोत केंद्रों के अवैतनिक निदेशकों तथा स्रोत व्यक्तियों के लिए प्रशिक्षण क्रियाविधि पर कार्यशाला आयोजित की। परिषद् द्वारा किए गए कार्यक्रमों में सम्मिलित हैं शैक्षिक दृष्टि से पिछड़े अल्पसंख्यकों द्वारा कायम स्कूलों के अध्यापकों के लिए एक प्रशिक्षण कार्यक्रम तथा क्षेत्रीय स्रोत केंद्रों के अवैतनिक निदेशकों तथा स्रोत व्यक्तियों हेतु प्रशिक्षण क्रियाविधि पर एक कार्यशाला। शैक्षिक दृष्टि से पिछड़े अल्पसंख्यकों द्वारा कायम स्कूलों में शैक्षिक मानकों के सुधारोन्मुख विभिन्न कार्यक्रमों के आयोजन हेतु अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय, जामिया मिलिया इस्लामिया और ओस्मानिया विश्वविद्यालय में स्थित क्षेत्रीय स्रोत केंद्रों को वित्तीय सहायता प्रदान की गई।

1987-88

महिला समानता संबंधी शिक्षा

सेक्स–पक्षपात के निवारण के दृष्टिकोण से परिषद् स्कूली शिक्षा के विभिन्न स्टेजों पर विहित पाठ्यपुस्तकों और पूरक पाठ्मालाओं के मूल्यांकन संबंधी अपनी गतिविधियों को जारी रखा। एक दो–दिवसीय अभिविन्यास कार्यक्रम जोधपुर में महिला समानता और स्कूल पाठ्यचर्या पर आयोजित किया गया। 65 अध्यापकों ने इस कार्यक्रम में भाग लिया तथा सेक्स–पक्षपात निवारण हेतु 85 हिंदी में लिखित पुस्तकों का मूल्यांकन तथा पुनरीक्षण किया गया। भाषा की पाठ्यपुस्तकों में सेक्स–पक्षपात के निवारण के दृष्टिकोण से एक पांच दिवसीय कार्यशाला दयावती मोदी अकादमी, मोदीपुरम में आयोजित की गई ताकि अकादमी के अध्यापकों को पाठ्य सामग्रियों के मूल्यांकन की क्रियाविधि में प्रशिक्षित किया जा सके। परिषद् ने विज्ञान, गणित और सामाजिक विज्ञानों के शिक्षण द्वारा महिला अधिकार–शक्ति संबंधी अपनी गतिविधियों को भी जारी रखा। "महिलाओं की छवियां और मातृभाषा में पाठ्यचर्या" नामक पुस्तक के निर्माण के अपने कार्य के एक अंग के रूप में दो कार्यशालाएं पुस्तक की पाण्डुलिपि के सम्पादन तथा इसे अंतिम रूप देने हेतु आयोजित की गई। पाठ्य सामग्रियों में महिला समानता और स्थिति के अनुरूप मूल्यों को सम्मिलित करने के दृष्टिकोण से परिषद् ने अंग्रेजी की आदर्श स्रोत सामग्रियों के विकास संबंधी विभिन्न गतिविधियों को भी अपने हाथ में लिया। दो सात–दिवसीय कार्यशालाएं इन आदर्श स्रोत सामग्रियों के विकास हेतु आयोजित की गई। पूर्व आयोजित कार्यशालाओं के सहभागियों द्वारा विकसित पाठों से सामग्रियों के चयन हेतु मराठवाड़ा विश्वविद्यालय, औरंगाबाद, में निरीक्षण दल की एक बैठक भी आयोजित की गई।

महिला समानता संबंधी शिक्षा के प्रति जागरूकता उत्पन्न करने के प्रयास के अंश के रूप में दक्षिणी क्षेत्र के राज्यों/संघशासित क्षेत्रों के मूल व्यक्तियों के लिए महिला समानता संबंधी शिक्षा के प्रति जागरूकता पैदा करने के लिए एक क्षेत्रीय कार्यशाला आयोजित की गई। इस कार्यशाला में विश्वविद्यालय के महिला अध्ययन एककों के विशेषज्ञों, शैक्षिक प्रशासकों और स्कूलों के प्रिंसिपलों ने भाग लिया। कार्यशाला के दौरान महिला समानता की शिक्षा पर कार्य अनुसंधान परियोजनाएं विकसित की गई। इनके अतिरिक्त परिषद् ने अनौपचारिक शिक्षा कर्यक्रमों हेतु पाठ्यचर्या समृद्ध करने के उद्देश्य से और इसे लड़कियों की आवश्यकताओं के लिए प्रासंगिक बनाते हुए 6 – 14 वर्ष के आयुवर्ग की लड़कियों की शैक्षिक आवश्यकताओं की पहचान हेतु एक अध्ययन भी शुरू किया।

परिषद् ने अक्तुबर 1987 में महिला समानता की शिक्षा संबंधी कार्यक्रमों के प्रभावी कार्यान्वयन हेतु एक अलग महिला अध्ययन एकक की स्थापना की। वर्ष 1988–89 में शिक्षा माध्यम से महिलाओं की अधिकार–शक्ति संबंधी अनेक कार्यक्रमों/परियोजनाओं को कार्यान्वयन के लिए प्रतिपादित किया गया। इन कार्यक्रमों/परियोजनाओं के प्रतिपादन के लिए महिला अध्ययन क्षेत्र के स्रोत व्यक्तियों और विशेषज्ञों का सहयोग प्राप्त किया गया।

विकलांगों की शिक्षा

विकलांग बालकों के लिए समेकित शिक्षा के कार्यक्रम के कार्यान्वयन संबंधी अनेक कार्यों को हाथ में लिया। समेकित और विशेष स्कूलों के श्रवण–विकृत बालकों की भाषा वैज्ञानिक सक्षमताओं के अन्वेषण पर एक अध्ययन–कार्य के अंश के रूप में श्रवण–विकृत बच्चों के लिए एक व्यापक उपकरण विकसित किया गया। विकलांगों हेतु विशेष रूप से समेकित शिक्षा संबंधी शिक्षण–क्षमता की पहचान के लिए एक परियोजना हाथ में ली गई। विशेष शिक्षा में अनुसंधान को बढ़ावा देने के लिए विशेषज्ञों की एक कार्यशाला आयोजित की गई ताकि विशेष शिक्षा में अनुसंधान क्षेत्रों की पहचान की जा सके। परिषद् ने समेकित सेटिंग में विकलांग बालकों को पढ़ाने वाले प्राथमिक स्कूल अध्यापकों के लिए एक गुटका तथा सामान्य शीर्षक "दिशाएं" के अन्तर्गत वीडियो कार्यक्रमों की एक श्रृंखला विकसित की। विकलांगों के लिए समेकित शिक्षा पर राज्यों/संघशासित क्षेत्रों के मूल व्यक्तियों के लिए एक तीन मास का प्रशिक्षण कार्यक्रम भी इसने आयोजित किया। इस पाठ्यक्रम में बिहार, गुजरात, कर्नाटक, केरल, तमिलनाडु, उत्तर प्रदेश और दिल्ली के 18 मूल व्यक्ति उपस्थित थे। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के सहयोग से विशेष शिक्षा में प्रशिक्षण आवश्यकताओं संबंधी एक सम्मेलन भी आयोजित किया गया। इनके अलावा एक त्रैमासिक समाचार पत्र "विकलांगों के लिए संचार समान शैक्षिक अवसर" भी प्रकाशित किया गया ताकि इस प्रकार विकलांगों हेतु समेकित शिक्षा के कार्यक्रम रखने वालों स्कूलों से सूचना का आदान–प्रदान हो सके।

शैक्षिक प्रौद्योगिकी का उपयोग

राज्य शैक्षिक प्रौद्योगिकी संस्थाओं के सहयोग से केंद्रीय शैक्षिक प्रौद्योगिकी संस्थान ने शैक्षिक प्रौद्योगिकी की उपयोगिता संबंधी अनेक गतिविधियां, जिनमें शिक्षा में गुणवत्ता सुधार लाने हेतु रेडियो तथा टेलीफोन का प्रयोग तथा शिक्षा के प्रति व्यापक पहुंच शामिल हैं, हाथ में ली गई। अप्रैल 1987 से इनसेट– 1 बी सुविधाओं के उपयोग द्वारा संचारण हेतु ई०टी०वी० कार्यक्रमों के उत्पादन का दायित्व सरासर सी०आई०ई०टी० और एस०आई०ई०टीज० का है। सी०आई०ई०टी० और एस०आई०ई०टीज० वर्ष में 210 कार्यदिवसों पर प्रातः 3 घंटे 45 मिनट अपने कार्यक्रमों का संचारण करते हैं। हैदराबाद (आंध्र प्रदेश) अहमदाबाद (गुजरात) पटना (बिहार) लखनऊ (उत्तर प्रदेश) और पुणे (महाराष्ट्र) में स्थित पांच एस०आई०ई०टीज ने संचारण हेतु अपने कार्यक्रम दिए। भुवनेश्वर (उड़ीसा) स्थित एस०आई०ई०टी० वर्ष 1988–89 में संभवतः ई०टी०वी० कार्यक्रम निर्मित करने शुरू कर देगा।

सी०आई०ई०टी० ने वर्ष 1987–88 में 80 ई०टी०वी० कार्यक्रम निर्मित किए। इनमें से 13 कार्यक्रम 5–8 वर्ष के आयुवर्ग के बच्चों के लिए थे, 35 कार्यक्रम 9–11 वर्ष के आयुवर्ग के बच्चों के लिए थे, 10 कार्यक्रम अध्यापकों के लिए तथा 33 सामान्य कार्यक्रम थे। ई०टी०वी० कार्यक्रम पांच भाषाओं में सभी कार्य दिवसों में लगभग 3 घंटे 45 मिनट संचारित किए जाते हैं। इस परियोजना में मूलतः समाविष्ट छः राज्यों के अतिरिक्त हरियाणा, मध्यप्रदेश, पंजाब, राजस्थान और चण्डीगढ़ ये सभी एच०पी०टीज और एल०पी०टीज द्वारा ई०टी०वी० कार्यक्रम रिले किए जाते हैं। संध्या में बालकों के कार्यक्रम के प्रसारण के अंश के रूप में सी०आई०ई०टी० द्वारा निर्मित कुछ ई०टीवी० कार्यक्रम दूरदर्शन केंद्र दिल्ली तथा दूरदर्शन के अन्य केंद्रों से संचारित किए गए। सी०आई०ई०टी०

1987-88

द्वारा 9 – 11 वर्ष के आयुवर्ग के बच्चों के लिए निर्मित एक कार्यक्रम "एयर अराउंड अस" ने 1987 में टोकियो में एन०एच० के द्वारा आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय शैक्षिक फिल्म प्रतियोगिता में एक विशेष पुरस्कार जीता । इन कार्यक्रमों के अतिरिक्त यूनेस्को, बैंकाक द्वारा प्रायोजित एक परियोजना जो माध्यमिक स्कूल अध्यापकों के लिए पर्यावरणीय शिक्षा पर बहुसंचार पैकेज निर्माण से संबंधित है, के अन्तर्गत सी०आई०ई०टी० द्वारा चार वीडियो कार्यक्रम निर्मित किए गए । इन कार्यक्रमों में से दो दूरदर्शन द्वारा राष्ट्रीय नेटवर्क पर प्रदर्शित किए गए ।

सी०आई०ई०टी० ने 63 श्रव्य कार्यक्रम भी निर्मित किए । इनमें समान कोर अवयवों वाले श्रव्य कार्यक्रम भी शामिल हैं जैसा कि राष्ट्रीय पाठ्यचर्या ढाँचे में दर्शाया गया है । इनके अतिरिक्त 35 श्रव्य आलेख और 102 नर्सरी तुकांत कविताएं विकसित की गईं । क्षेत्रीय शिक्षा कालेज, मैसूर द्वारा भी कुछ श्रव्य कार्यक्रम विकसित किए गए । राजस्थान के दो रेडियो स्टेशनों द्वारा संचारित सी०आई०ई०टी० का भाषा शिक्षण रेडियो कार्यक्रम को मध्यप्रदेश तक विस्तृत कर दिया गया ताकि प्राथमिक स्टेज पर हिंदी को प्रथम भाषा के रूप में पढ़ाया जा सके । टु–इन–वन सेट तथा श्रव्य कैसेटों का सेट, जिनमें पहली कक्षा के लिए श्रव्य कार्यक्रम थे, मध्यप्रदेश में होशंगाबाद जिले के 450 स्कूलों को प्रदान किए गए । सी० आई०ई०टी ने राज्य स्तर के कार्मिकों के लिए शैक्षिक प्रौद्योगिकी के विभिन्न पहलुओं पर 11 प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए । 1987–88 वर्ष में आयोजित किए गए कार्यक्रमों में सम्मिलित थे टी०वी० कैमरा संचालन संबंधी प्रशिक्षण पाठ्यक्रम, ई०टी०वी० उपकरण रखरखाव, इ०टी०वी० उत्पादन व तकनीकी संचालन शैक्षिक रेडियो कार्यक्रमों के निर्माण हेतु आलेख लेखन, दूरदर्शन लेखचित्र आदि । इनके अतिरिक्त समेकित दूरस्थ अधिगम सामग्रियों के डिज़ाइन और विकास पर एक अभिविन्यास पाठ्यक्रम और अध्यापक शिक्षकों के लिए शैक्षिक प्रौद्योगिकी पर एक अभिविन्यास पाठ्यक्रम भी आयोजित किया गया ।

नवोदय विद्यालयों को तकनीकी सहायता

परिषद् ने नवोदय विद्यालयों में छात्रों को प्रवेश देने के लिए चयन परीक्षण आयोजित किए तथा नवोदय विद्यालयों के अध्यापकों के लिए अभिविन्यास/प्रशिक्षण पाठ्यक्रम आयोजित किए । 1987–88 में कुल 209 नवोदय विद्यालय थे । चयन परीक्षण 26 राज्यों/संघशासित क्षेत्रों के 2789 सामुदायिक विकास खंडों के 209 जिलों में आयोजित किए गए । परीक्षा की कुल संख्या 2656 थी । परीक्षण 18 भाषाओं में किए गए तथा 262591 प्रत्याशी परीक्षण में बैठे । कुल मिलाकर 13804 प्रत्याशी नवोदय विद्यालयों में प्रवेश के लिए चुने गए । इनमें से 10934 (79 प्रतिशत) प्रत्याशी ग्रामीण क्षेत्रों से जबकि 2870 (21 प्रतिशत) शहरी क्षेत्रों से थे । चुने हुए प्रत्याशियों में से 11298 (82 प्रतिशत) लड़के और 2506 (18 प्रतिशत) लड़कियां थीं । नवोदय विद्यालयों में प्रवेश के लिए चुने गए 3804 प्रत्याशियों में से 2360 (17 प्रतिशत) अनुसूचित जातियों के थे जबकि 1602 (12 प्रतिशत) अनुसूचित जनजातियों के थे । परिषद् ने नवोदय विद्यालयों के लिए नए भर्ती किए गए अध्यापकों के लिए चार सामान्य अधिष्ठापन पाठ्यक्रम भी आयोजित किए, अंग्रेजी और हिंदी अध्यापकों के लिए दो अभिविन्यास पाठ्यक्रम, विज्ञान और गणित के शिक्षण हेतु दो अभिविन्यास पाठ्यक्रम तथा नवोदय विद्यालयों के प्रिंसिपलों के लिए दो अभिविन्यास पाठ्यक्रम । इनके अतिरिक्त रा०शै०अनु०प्र०परि० के क्षेत्रीय कार्यालयों ने राज्यों/संघशासित क्षेत्रों के विभिन्न ज़िलों में नवोदय विद्यालयों की स्थापना हेतु स्थानों के चयन संबंधी कार्यों में सहायता प्रदान की ।

शैक्षिक सर्वेक्षण

पाँचवें अखिल भारतीय शैक्षिक सर्वेक्षण संबंधी अनेक गतिविधियों को परिषद् ने अपने हाथ में लिया । सर्वेक्षण में हर जिले में वास सहित हर एक गाँव की गणना तथा प्राथमिक स्टेज से उच्चतर माध्यमिक स्टेज तक के हर स्कूल की गणना शामिल थी । आंकड़ा संकलन पूरा किया गया । खंड स्तर पर आंकड़ों की आरंभिक तालिका बनाई गई तथा समेकित तालिकाएं जिला स्तर पर तैयार की गईं । राज्य स्तर पर समेकित तालिकाएं तैयार करने का कार्य भी शुरू किया गया । मार्च 1988 के अंत तक अरुणाचल प्रदेश, गुजरात, हरियाणा, मिज़ोरम और सिक्किम राज्यों तथा संघशासित अण्डमान निकोबार द्वीप और लक्षद्वीप के लिए समेकित तालिकाएं तैयार करने का कार्य पूरा किया गया । पांचवें अखिल भारतीय शैक्षिक सर्वेक्षण के अतिरिक्त परिषद् ने कुछ अनुसंधान परियोजनाओं संबंधी गतिविधियां जारी रखीं । इनमें सम्मिलित थीं पुस्तकालय सुविधाओं का नमूना अध्ययन तथा चार चुने हुए राज्यों के माध्यमिक तथा उच्चतर माध्यमिक स्कूलों में उनकी उपयोगिता, माध्यमिक तथा उच्चतर माध्यमिक स्कूलों में विज्ञान प्रयोगशालाओं का गहन अध्ययन, चार चुने हुए राज्यों के माध्यमिक तथा उच्चतर माध्यमिक स्कूल भवनों का गहन अध्ययन तथा उच्च प्राथमिक और माध्यमिक स्कूलों में शिक्षण सहायक सामग्रियों का गहन अध्ययन ।

राष्ट्रीय प्रतिभा खोज

परिषद् ने 10 मई 1987 को राष्ट्रीय प्रतिभा खोज छात्रवृत्ति प्रदान किए जाने के संबंध में द्वितीय स्तर परीक्षा आयोजित की । प्रथम स्तर परीक्षा राज्यों/संघशासित क्षेत्रों द्वारा आयोजित की गई । सारे भारत में फैले हुए 29 केंद्रों में द्वितीय स्तर परीक्षा की गई । परिषद् द्वारा आयोजित द्वितीय स्तर परीक्षा में 3065 विद्यार्थी बैठे । इनमें से 750 विद्यार्थी, जिनमें से 70 अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाती के थे, छात्रवृत्ति के लिए चुन लिए गए ।

शैक्षिक अनुसंधान

रा०शै०अनु०प्र०परि० की शैक्षिक अनुसंधान व खोजपरक समिति (ई० आर०ई०सी) ने स्कूली शिक्षा और अध्यापक शिक्षा के विभिन्न पहलुओं पर अनुसंधान के अग्रता क्षेत्रों की पहचान तथा अनुसंधान परियोजनाओं के संचालन एवं प्रायोजन संबंधी अपना कार्य जारी रखा । वर्ष 1987–88 में ई०आर०आई०सी० द्वारा प्रायोजित दो अनुसंधान अध्ययन पूरे किए गए और 13 अनुसंधान परियोजनाओं की मसौदा रिपोर्टें प्राप्त हुईं। ई०आर०आई०सी० द्वारा दो अनुसंधान परियोजनाएं वित्तीय सहायता के लिए

1987-88

अनुमोदित की गई । ई०आर०आई०सी० ने शिक्षा में अनुसंधान के प्रबंध व प्रोन्नति के लिए एक विशेषज्ञ दल स्थापित किया तथा शिक्षा व्यवसायीकरण में दबाव क्षेत्रों की पहचान एवं समस्याओं संबंधी एक संगोष्ठी व कार्यशाला आयोजित की ।

देश में सक्षम अनुसंधानकर्ताओं का निकाय सृजित करने के लिए परिषद् ने तीन अनुसंधान क्रियाविधि पाठ्यक्रम आयोजित किए, जिनमें 69 प्रतिभागी उपस्थित थे । परिषद् ने इस वर्ष चुने हुए पी-एच०डी० शोधप्रबंधों/ प्रबंधों के प्रकाशन हेतु अपनी वित्तीय सहायता प्रदान करने वाली योजना को भी जारी रखा ।

शैक्षिक व व्यावसायिक मार्गदर्शन

परिषद् ने शैक्षिक और व्यावसायिक मार्गदर्शन क्षेत्र में अपनी गतिविधियां जारी रखीं । रिपार्टधीन वर्ष में पूरे किए गए अनुसंधान अध्ययनों में शामिल हैं माध्यमिक स्टेज पर अनुसूचित जाति बच्चों की मनोवैज्ञानिक विशेषताओं और साथ-ही-साथ शैक्षिक और व्यावसायिक नियोजन संबंधी अध्ययन एवं माध्यमिक स्टेज पर जनजातीय विद्यार्थियों के बारे में शैक्षिक और व्यावसायिक नियोजन, अकादमिक उपलब्धि और चुनी हुई मनोवैज्ञानिक और गृह-परिप्रेक्ष्य अस्थिरताओं संबंधी अध्ययन । 29 व्यक्तियों, जिनमें चार अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति प्रशिक्षणार्थी शामिल हैं, को शैक्षिक और व्यावसायिक मार्गदर्शन में नौ मास डिप्लोमा पाठ्यक्रम द्वारा शैक्षिक और व्यावसायिक मार्गदर्शन के विभिन्न पहलुओं में प्रशिक्षण प्रदान किया गया । इनमें से 8 प्रशिक्षणार्थी बिहार, कर्नाटक, नागालैंड और पंजाब और चण्डीगढ़ प्रशासन द्वारा भेजे गए थे ।

जन-संख्या शिक्षा

परिषद् ने राष्ट्रीय जनसंख्या शिक्षा परियोजना के कार्यान्वयन को बढ़ावा देने के लिए कई उपाय शुरू किए । वर्ष 1987-88 में अनेक विकासात्मक और प्रशिक्षण गतिविधियां सम्पन्न की गईं । इनमें शामिल हैं आदर्श सामग्रियों का तैयार किया जाना, उच्चतर माध्यमिक स्टेज तथा प्रारंभिक अध्यापक शिक्षा पाठ्यक्रमों हेतु जनसंख्या शिक्षा संबंधी पाठ्यचर्या का विकास, अनौपचारिक शिक्षा कार्यक्रमों में प्रयोग के लिए शिक्षण-अधिगम सामग्रियों का तैयार किया जाना, जनसंख्या शिक्षा संबंधी सारों पर राष्ट्र स्तरीय निबंध प्रतियोगिता का आयोजन तथा अनौपचारिक शिक्षा कार्यक्रमों के कार्यान्वयन में रत मूल व्यक्तियों के लिए जनसंख्या शिक्षा पर राष्ट्र स्तरीय प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन ।

अन्तर्राष्ट्रीय संबंध

स्कूली शिक्षा और अध्यापक शिक्षा क्षेत्र में द्विपक्षीय सांस्कृतिक विनियम कार्यक्रमों के प्रावधानों के कार्यान्वयन में परिषद् ने एक प्रमुख अभिकरण के रूप में अपनी भूमिका जारी रखी । वर्ष 1987-88 में 18 देशों के शिष्टमंडलों और विशेषज्ञों ने रा०शै०अनु०प्र०परि० को देखा । परिषद् ने अफ़गानिस्तान, मालद्वीप, मारिशस, नेपाल, पाकिस्तान, श्रीलंका और सोमालिया के कार्मिकों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए । इसने चार यूनेस्को प्रायोजित परियोजनाओं/अध्ययनों/कार्यक्रमों को अपने हाथ में लिया और एशिया व प्रशांत शैक्षिक खोज विकास कार्यक्रम के सह केंन्द्र के रूप में तथा राष्ट्रीय शैक्षिक खोज विकास दल के सचिवालय के रूप में मुख्य भूमिका अदा की । रिपोर्टाधीन वर्ष में परिषद् द्वारा लिए यूनेस्को प्रायोजित परियोजनाओं/अध्ययनों में शामिल हैं ग्रामीण क्षेत्रों में विज्ञान और प्रौद्योगिकी पर माड्यूल तैयार करने की एक परियोजना, अन्तर्राष्ट्रीय मेलमिलाप, सहयोग और शांति शिक्षा संबंधी शिक्षा हेतु प्रायोगिक मार्गदर्शिकाओं के विकास की परियोजना, सार्वभौम प्राथमिक शिक्षा के संदर्भ में लड़कियों की शिक्षा को बढ़ावा देने संबंधी कार्यशाला का आयोजन तथा माध्यमिक शिक्षा की नई प्रवृत्तियों और प्रक्रियाओं संबंधी ए०पी०ई०आई०डी० बैठक की अनुवर्ती कार्रवाई के रूप में सामान्य माध्यमिक शिक्षा के समेकित संतुलन तथा प्रासंगिकता संबंधी एक राष्ट्रीय कार्यशाला का आयोजन ।

वर्ष 1987-88 में राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान के विभिन्न विभागों तथा रा० शै०अनु०प्र०परि० के संघटक एककों द्वारा सम्पन्न की गई गतिविधियों/कार्यक्रमों के विवरण आगामी अध्यायों में दिए गए हैं ।

1987-88

तीन

स्कूल पूर्व और प्रारंभिक शिक्षा

प्राथमिक स्टेज पर शिक्षा में गुणवत्ता सुधार लाना स्कूलपूर्व और प्रारंभिक शिक्षा विभाग (डी०पी०एस०ई०ई०) का प्रमुख कार्य रहा है । वर्ष 1987–88 में यह विभाग प्राथमिक स्टेज पर शिक्षा की विषयवस्तु और प्रक्रियाओं का अभिविन्यास, अनौपचारिक शिक्षा कार्यक्रम का कार्यान्वयन, क्षेत्र–गहन शैक्षिक कार्यक्रमों का विकास तथा शैशवकालीन शिक्षा कार्यक्रमों के सुधार संबंधी अनेक गतिविधियों में कार्यरत रहा । विभिन्न राज्यों और संघशासित क्षेत्रों में प्रारंभिक शिक्षा के सर्वीकरण के कार्यक्रम के संदर्भ में शिक्षा सेक्टर में कार्यान्वित की जा रही यूनीसेफ – सहायता प्राप्त परियोजनाओं के लिए इस विभाग ने केंद्रीय, तकनीकी और समन्वय अभिकरण के रूप में अपना कार्य जारी रखा ।

प्राथमिक स्टेज पर शिक्षा की विषयवस्तु और प्रक्रियाओं का पुनरभिविन्यास

राष्ट्रीय शिक्षा नीति – 1986 में निर्दिष्ट शिक्षा की विषयवस्तु और प्रक्रियाओं के पुनरभिविन्यास के प्रयासों के संदर्भ में पहली से पांचवीं कक्षाओं हेतु पाठ्यचर्या के विकास एवं पहली व दूसरी कक्षाओं के लिए अनुदेशी सामग्रियों को तैयार करना इस विभाग की प्रमुख गतिविधियों में से हैं । यूनीसेफ – सहायता प्राप्त परियोजना "प्राथमिक शिक्षा पाठ्यचर्या पुनर्नवीकरण (पी०ई०सी०आर०) " के अन्तर्गत औपचारिक स्कूल शिक्षा की प्रासंगिकता और गुण में सुधार लाने के लिए प्राथमिक शिक्षा पाठ्यचर्या तथा अनुदेशी सामग्रियों के नवीकरण संबंधी गतिविधियां जारी रखी गईं । इनके अतिरिक्त यूनीसेफ – सहायता प्राप्त परियोजना "पोषण, स्वास्थ्य शिक्षा और पर्यावरणीय सफाई" के अंतर्गत पोषण और स्वास्थ्य शिक्षा संबंधी सहायक गतिविधियां भी जारी रखी गईं ।

पहली और दूसरी कक्षाओं के लिए अनुदेशी सामग्रियों का विकास

स्कूल स्टेज पर शिक्षा की विषयवस्तु और प्रक्रियाओं के पुनरभिविन्यास के प्रयास के अंग के रूप में इस विभाग ने 1986–87 में प्राथमिक स्टेज पर पाठ्यचर्या के विकास के लिए मसौदा मार्गदर्शी सिद्धांत विकसित किए । देश की विभिन्न संस्थाओं और अभिकरणों से प्राप्त सुझावों के आधार पर मार्गदर्शी सिद्धांतों को संशोधित किया गया और मार्च 1988 में एक संशोधित प्रलेख "प्राथमिक स्टेज पर अधिगम के न्यूनतम स्तर – समान कोर अवयवों सहित पाठ्यविवरण" प्रकाशित किया गया । इस प्रलेख में विभिन्न पाठ्यचर्या क्षेत्रों में अधिगम के न्यूनतम स्तर, जैसे प्राथमिक स्तर पर मातृभाषा (प्रथम भाषा) गणित, पर्यावरणीय अध्ययन, कला शिक्षा तथा कार्य अनुभव का विस्तारपूर्वक विवरण उपलब्ध है जैसा कि प्राथमिक स्टेज के प्रत्येक ग्रेड/कक्षा के नौसिखियों के लिए न्यूनतम अधिगम उपलब्धियों के संदर्भ में अपेक्षा की जाती है ।

वर्ष 1987–88 में इस विभाग का प्रमुख कार्य संशोधित पाठ्यविवरण के आधार पर दूसरी व चौथी कक्षाओं के लिए पाठ्यपुस्तकों सहित अनुदेशी सामग्रियों का विकास था । दूसरी व चौथी कक्षाओं के लिए पाठ्यपुस्तकों और अध्यापक मैनुअलों की पाण्डुलिपियों के विकास एवं पुनरीक्षण के लिए कई बैठकें/ कार्यशालाएं आयोजित की गई । इन बैठकों/कार्यशालाओं के विवरण तालिका 3.1 में दिए गए हैं ।

मार्च 1988 के अंत तक हिंदी, गणित, पर्यावरणीय अध्ययन कार्य अनुभव तथा कला शिक्षा की 17 पाठ्यपुस्तकों और अध्यापक मार्ग–दर्शिकाओं की पाण्डुलिपियों को अंतिम रूप दिया गया, इनमें शामिल हैं:

1. भाषा किरण (दूसरी कक्षा के लिए हिंदी में पाठ्यपुस्तक)
2. भाषा किरण (चौथी कक्षा के लिए हिंदी में पाठ्यपुस्तक)
3. लेट अस लर्न मैथमैटिक्स बुक–2 (दूसरी कक्षा के लिए गणित में पाठ्य पुस्तक)
4. आइए गणित सीखें – किताब दो (दूसरी कक्षा के लिए गणित में पाठ्यपुस्तक का हिंदी रूपांतरण)
5. लेट अस लर्न मैथमैटिक्स बुक – 4 (चौथी कक्षा के लिए गणित में पाठ्यपुस्तक)
6. आइए गणित सीखें – किताब चार (चौथी कक्षा के लिए गणित में पाठ्यपुस्तक का हिंदी रूपांतरण)
7. हमारा देश भारत (पर्यावरणी अध्ययनों में पाठ्यपुस्तक का हिंदी रूपांतरण – चौथी कक्षा के लिए सामाजिक अध्ययन)
8. एक्सप्लोरिंग एन्वायरनमेंट (पर्यावरणीय अध्ययनों में पाठ्यपुस्तक – बुक– 2 चौथी कक्षा के लिए विज्ञान)
9. परिवेश अन्वेषण किताब दो (पर्यावरणीय अध्ययनों में पाठ्यपुस्तक का हिंदी रूपांतरण – चौथी कक्षा के लिए विज्ञान)
10. टीचर्स गाइड – दूसरी कक्षा के लिए पर्यावरणीय अध्ययन
11. अध्यापक दर्शिका – परिवेश अध्ययन (दूसरी कक्षा के लिए पर्यावरणीय अध्ययनों में टीचर्स गाइड का हिंदी रूपांतरण)
12. चौथी और पाँचवी कक्षाओं के लिए, रिसोर्स बुक इन वर्क एक्सपीरिएंस
13. शिक्षक संसाधन पुस्तक – कार्य अनुभव (चौथी और पांचवी कक्षाओं के लिए रिसोर्स बुक इन वर्क एक्सपीरिएंस का हिंदी रूपांतरण)
14. आर्ट एजुकेशन – दूसरी कक्षा के अध्यापकों के लिए हैंड बुक
15. कला शिक्षा की शिक्षक पुस्तिका (दूसरी कक्षा के लिए टीचर्स हैंडबुक इन आर्ट एजुकेशन का हिंदी रूपांतरण)

1987-88

तालिका 3.1

अनुदेशी सामग्रियों के विकास के संबंध में आयोजित बैठकें/कार्यशालाएं

क्र० सं०	कार्यक्रम का शीर्षक	तिथियां/अवधि	सहभागियों की संख्या	
1.	गणित सलाहकार समिति की बैठक	24 व 25 अगस्त 1987 (दो दिन)	एन० सी० ई० आर० टी०	5
2.	दूसरी कक्षा के लिए हिंदी की पाठ्पुस्तक की विस्तृत रूपरेखाओं पर चर्चा हेतु सलाहकार समिति की बैठक	17 व 18 सितम्बर 1987 (दो दिन)	एन० सी ई० आर० टी०	5
3.	सृजनात्मक अभिव्यक्ति में अध्यापक मार्गदर्शिका की सलाहकार समिति की बैठक	19 से 23 सितम्बर, 1987 (पांच दिन)	एन० आई० ई० कैम्पस एन० सी० ई० आर० टी०	5
4.	चौथी कक्षा के लिए सामाजिक अध्ययनों की सलाहकार समिति की बैठक	28 व 29 सितम्बर, 1987 (दो दिन)	एन० आई० ई० कैम्पस एन० सी० ई० आर० टी०	3
5.	चौथी और पांचवीं कार्य अनुभव कक्षाओं के लिए अध्यापक स्रोत पुस्तक हेतु सलाहकार समिति की बैठक	5 व 6 अक्तूबर, 1987 (दो दिन)	एन० आई० ई० कैम्पस एन० सी० ई० आर० टी०	6
6.	चौथी कक्षा की हिंदी पाठ्यपुस्तक की रूपरेखाओं को अंतिम रूप देने हेतु सलाहकार समिति की बैठक	6 व 7 अक्तूबर, 1987 (दो दिन)	एन० आई० ई० कैम्पस एन० सी० ई० आर० टी०	2
7.	चौथी कक्षा के लिए पर्यावरणीय अध्ययनों में पाठ्यपुस्तक के आकार और डिज़ाइन को अंतिम रूप देने के लिए सलाहकार मंडल की बैठक	5 व 6 अक्तूबर, 1987 (दो दिन)	एन० आई० ई० कैम्पस एन० सी० ई० आर० टी०	12
8.	चौथी और पांचवीं कक्षाओं हेतु कार्य अनुभव में अध्यापक स्रोत पुस्तक के निरीक्षण हेतु पुनरीक्षण समिति की बैठक	6 से 10 अक्तूबर, 1987, (पांच दिन)	एन० आई० ई० कैम्पस एन० सी० ई० आर० टी०	8
9.	चौथी कक्षा में सामाजिक अध्ययनों में पाठ्यपुस्तक के प्रथम मसौदे को तैयार करने हेतु विशेषज्ञ समिति की बैठक	7 से 16 अक्तूबर, 1987 (10 दिन)	एन० आई० ई० कैम्पस एन० सी० ई० आर० टी०	12
10.	चौथी और पांचवी कक्षाओं के लिए कार्य अनुभव के क्षेत्रों की पहचान के लिए विशेषज्ञ समिति की बैठक	7 से 11 अक्तूबर, 1987 (5 दिन)	एन० आई० ई० कैम्पस एन० सी० ई० आर० टी०	8
11.	चौथी कक्षा के लिए गणित में पाठ्यपुस्तक की पाण्डुलिपि के पुनरीक्षण के लिए कार्यशाला	12 से 18 अक्तूबर, 1987 (7 दिन)	कोयम्बतूर	9
12.	चौथी ई० वी० एस० (एस–सी०) कक्षा में पाठ्य पुस्तक की पाण्डुलिपि के पुनरीक्षण के लिए सलाहकार समिति और विषय–विशेषज्ञों की बैठक	2 से 6 नवम्बर, 1987 (6 दिन)	एन० आई० ई० कैम्पस एन० सी० ई० आर० टी०	16
13.	चौथी कक्षा के लिए सामाजिक अध्ययनों में पाठ्यपुस्तक के प्रथम मसौदे के पुनरीक्षण के लिए सलाहकार समिति की बैठक	5 से 7 नवम्बर, 1987 (3 दिन)	एन० आई० ई० कैम्पस एन० सी० ई० आर० टी०	2
14.	चौथी कक्षा के लिए सामाजिक अध्ययनों में पाठ्यपुस्तक की पाण्डुलिपि को अंतिम रूप देने के लिए कार्यदल की बैठक	6 से 11 नवम्बर, 1987 (6 दिन)	एन० आई० ई० कैम्पस एन० सी० ई० आर० टी०	3
15.	चौथी कक्षा के लिए सामाजिक अध्ययनों में पाठ्यपुस्तक के प्रथम मसौदे को संशोधित करने हेतु विशेषज्ञ समिति की बैठक	8 से 11 नवम्बर, 1987 (4 दिन)	एन० आई० ई० कैम्पस एन० सी० ई० आर० टी०	2
16.	दूसरी कक्षा के लिए हिंदी में पाठ्यपुस्तक के प्रथम मसौदे को पुनरीक्षित करने के लिए विषय विशेषज्ञों की बैठक	3 से 8 दिसम्बर, 1987 (6 दिन)	एन० आई० ई० कैम्पस एन० सी० ई० आर० टी०	3
17.	चौथी कक्षा के लिए हिंदी में पाठ्यपुस्तक के प्रथम मसौदे को पुनरीक्षित करने के लिए विषय विशेषज्ञों की बैठक	17 से 22 दिसम्बर, 1987 (6 दिन)	एन० आई० ई० कैम्पस एन० सी० ई० आर० टी०	2
18.	चौथी कक्षा के लिए सामाजिक अध्ययनों में पाठ्यपुस्तक की पाण्डुलिपि के पुनरीक्षण के लिए कार्यदल की बैठक	20 से 24 दिसम्बर, 1987 (6 दिन)	एन० आई० ई० कैम्पस एन० सी० ई० आर० टी०	5
19.	दूसरी कक्षा के लिए गणित में पाठ्यपुस्तक की पाण्डुलिपि के पुनरीक्षण के लिए कार्यशाला	21 से 26 दिसम्बर, 1987 (6 दिन)	एन० आई० ई० कैम्पस एन० सी० ई० आर० टी०	13
20.	दूसरी कक्षा के लिए हिंदी में पाठ्यपुस्तक के मसौदे को पुनरीक्षित तथा अंतिम रूप देने के लिए सलाहकार समिति की बैठक	28 से 30 दिसम्बर, 1987 (3 दिन)	एन० आई० ई० कैम्पस एन० सी० ई० आर० टी०	6
21.	चौथी कक्षा के लिए हिंदी में पाठ्यपुस्तक के मसौदे को पुनरीक्षित तथा अंतिम रूप देने के लिए सलाहकार समिति की बैठक	2 से 5 फरवरी, 1988 (4 दिन)	एन० आई० ई० कैम्पस एन० सी० ई० आर० टी०	6

तालिका 3.2

केंद्रीय विद्यालयों के स्रोत अध्यापकों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम

क्र० सं०	कार्यक्रम का शीर्षक	तिथि/अवधि	स्थान	सहभागियों की संख्या
1.	केंद्रीय विद्यालयों के स्रोत अध्यापकों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम	17 से 22 अगस्त, 1987 (6 दिन)	देहली	49
2.	"	28 अगस्त से 2 सितंबर 1987 (6 दिन)	बंगलौर	27
3.	"	9 से 14 सितम्बर, 1987 (6 दिन)	भोपाल	28
4.	"	9 से 14 सितम्बर, 1987 (6 दिन)	कलकत्ता	34

16. आर्ट एजूकेशन चौथी कक्षा के लिए टीचर्स हैंडबुक
17. कला शिक्षा की शिक्षक पुस्तिका
(चौथी कक्षा के लिए टीचर्स हैंडबुक इन आर्ट एजूकेशन का हिंदी रूपांतरण)

केन्द्रीय विद्यालयों के प्राथमिक स्कूल अध्यापकों का प्रशिक्षण

प्राथमिक स्टेज के संशोधित पाठ्यविवरण के आधार पर विकसित अनुदेशी सामग्रियों के नये सेट के समुचित कार्यान्वयन हेतु केन्द्रीय विद्यालयों के अध्यापकों को प्रशिक्षत करने के लिए एक विशेष कार्योन्मुखी कार्यक्रम हाथ में लिया गया। इन प्रशिक्षण कार्यक्रमों में बालकेन्द्रित और गतिविधि आधारित शिक्षण क्रियाविधियां प्रदर्शित की गई। इस विभाग ने केंद्रीय विद्यालयों के स्रोत अध्यापकों के लिए चार प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए। इनके अनुसरण में देश के विभिन्न भागों के केंद्रीय विद्यालयों के प्राथमिक अध्यापकों के लिए तीस प्रशिक्षण कार्यक्रम किए गए। इन कार्यक्रमों में लगभग 1300 अध्यापकों ने भाग लिया। स्रोत अध्यापकों संबंधी प्रशिक्षण कार्यक्रम के विवरण तालिका 3.2 में दिए गए हैं।

इनके अतिरिक्त दिल्ली नगर निगम द्वारा चलाए जा रहे प्राथमिक स्कूलों के अध्यापकों के लिए खेल-खेल में तथा गतिविधि आधारित शिक्षण क्रियाविधि संबंधी तीन प्रशिक्षण/अभिविन्यास कार्यक्रम आयोजित किए गए। इन पाठ्यक्रमों के विवरण तालिका 3.3 में दर्शाए गए हैं।

तालिका 3.3

दिल्ली नगर निगम द्वारा चलाए जा रहे प्राथमिक स्कूलों के अध्यापकों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम

क्र० सं०	कार्यक्रम का शीर्षक	तिथियां/अवधि	स्थान	सहभागियों की संख्या
1.	दूसरी कक्षा के लिए शिक्षण के प्रति खेल-खेल में और गतिविधि आधारित दृष्टिकोण संबंधी अभिविन्यास कार्यक्रम।	26 से 30 अक्तूबर, 87 (5 दिन)	एम० सी० डी० स्कूल, भीमनगर	29
2.	"	6 से 11 नवम्बर, 87 (6 दिन)	"	29
3.	दिल्ली नगर निगम द्वारा चलाए जा रहे प्राथमिक स्कूलों में पहली कक्षा के अध्यापकों के लिए शिक्षण के प्रति खेल-खेल में और गतिविधि आधारित दृष्टिकोण पर पुनश्चर्या पाठ्यक्रम।	16 से 18 मार्च, 1988, (3 दिन)	एन०आई०ई०कैम्पस एन०सी०ई०आर०टी०	27

1987-88

प्राथमिक शिक्षा पाठ्यचर्या नवीकरण (पी०ई०सी०आर०)

प्राथमिक शिक्षा की प्रासंगिकता और गुणवत्ता में सुधार लाने के प्रयासों के अंश के रूप में "प्राथमिक शिक्षा पाठ्यचर्या नवीकरण (पी० ई०सी०आर०)" नामक परियोजना में पाठ्यचर्या का नवीकरण, अनुदेशी सामग्रियों का विकास तथा अध्यापकों और शैक्षिक प्रशासकों की अभिविन्यास संबंधी गतिविधियां जारी रखी गईं । वर्ष 1987 में यह परियोजना 11 राज्यों और एक संघशासित क्षेत्र में चालू थी । इस परियोजना में सहभागी राज्यों/संघशासित क्षेत्रों ने लगभग 120 कार्यक्रम, जिनमें अध्यापकों और शैक्षिक प्रशासकों के लिए अभिविन्यास कार्यक्रम और अनुदेशी सामग्रियों के लेखकों और पुनरीक्षकों की कार्यशालाएं/बैठकें शामिल हैं, आयोजित किए गए । लगभग 2760 सहभागियों ने इन कार्यक्रमों में भाग लिया और राज्यों/संघशासित क्षेत्रों द्वारा लगभग 120 प्रकाशन निकाले गए । 1987 के अंत तक हरियाणा, राजस्थान और पश्चिमी बंगाल राज्यों ने अनुदेशी सामग्रियों के निर्माण का चक्र पूरा किया । इस विभाग ने अनुदेशी सामग्रियों के विकास तथा उनके पुनरीक्षण के लिए राज्यों को तकनीकी सहायता प्रदान की ।

वर्ष में पी०ई०सी०आर० परियोजना के अंतर्गत आनेवाले स्कूलों में "नामांकन, अवरोधन, प्रगतिरोध और शिष्य उपलब्धि" संबंधी कार्य जारी रखा गया । 22 राज्यों से प्राप्त आंकड़ों को कम्प्यूटरीकृत किया गया तथा प्राथमिक स्टेज की शिष्य उपलब्धि संबंधी अंतरिम तकनीकी रिपोर्ट तैयार की गई । इसके अतिरिक्त "पी०ई०सी०आर० परियोजना के तहत तैयार हिंदी पाठ्यपुस्तकों में प्रयुक्त शब्द-संग्रह का अध्ययन" नामक कार्य के एक हिस्से के रूप में इस परियोजना में सहभागी सभी हिंदभाषी राज्यों की चौथी कक्षा की पाठ्यपुस्तकों के शब्दसंग्रह का विश्लेषण प्राप्त रिपोर्टों के आधार पर किया गया तथा शब्दसंग्रह की एक मास्टर कापी सभी राज्यों के लिए तैयार की गई । प्रत्येक शब्द की बारंबारता निर्धारित की गई तथा शब्दसूची का व्याकरणिक तथा अर्थगत विश्लेषण किया गया ।

पी०ई०सी०आर० परियोजना के अन्तर्गत इस विभाग द्वारा आयोजित प्रमुख कार्यक्रम तालिका 3.4 में दिए गए हैं ।

तालिका 3.4

पी०ई०सी०आर० परियोजना के अन्तर्गत आयोजित कार्यक्रम

क्र० सं०	कार्यक्रम का शीर्षक	अवधि	स्थान	सहभागियों की संख्या
1.	हिंदी में शब्दसंग्रह पढ़ने के अध्ययन के संबंध में कार्यदल की बैठक	6 से 16 अप्रैल, 1987 (8 दिन)	एन०आई०ई० कैम्पस एन०सी०ई०आर०टी०	14
2.	सृजनात्मक अभिव्यक्ति में शिष्य मूल्यांकन संबंधी अभिविन्यास कार्यक्रम	28 अप्रैल से 5 मई, 1987 (8 दिन)	एस०सी०ई०आर०टी० मद्रास	13
3.	प्राथमिक स्कूल विद्यार्थियों के हिंदी में शब्दसंग्रह पढ़ने के अध्ययन पर कार्यदल की बैठक ।	22 से 29 सितम्बर, 87 (8 दिन)	एन०आई०ई० कैम्पस एन०सी०ई०आर०टी०	20
4.	पी०ई०सी०आर० परियोजना के अंतर्गत हिंदी में शब्दसंग्रह पढ़ने के अध्ययन पर कार्यदल बैठक	3 से 10 नवम्बर, 1987 (8 दिन)	एन०आई०ई० कैम्पस एन०सी०ई०आर०टी०	15
5.	1988 के लिए कार्य योजनाएं विकसित करने हेतु समन्वयकर्ताओं की बैठक	30 नवम्बर, से 2 दिसंबर, 1987 (3 दिन)	एन०आई०ई० कैम्पस एन०सी०ई०आर०टी०	10
6.	पी० ई०सी०आर० परियोजना के अंतर्गत हिंदी में शब्दसंग्रह पढ़ने के अध्ययन पर कार्यदल की बैठक	22 से 29 दिसम्बर, 1987 (8 दिन)	एन०आई०ई० कैम्पस एन०सी०ई०आर०टी०	27

पोषण, स्वास्थ्य शिक्षा और पर्यावरणीय सफाई (एन०एच०ई०ई०एस)

चल रही यूनीसेफ – सहायता प्राप्त परियोजना "पोषण स्वास्थ्य शिक्षा और पर्यावरणीय सफ़ाई" के अन्तर्गत दो अनुसंधान अध्ययन "शिष्य उपलब्धियों का अध्ययन" तथा "सामुदायिक संपर्क कार्यक्रम के प्रभाव का अध्ययन" वर्ष 1987-88 में हाथ में लिए गए । वर्ष 1987 के दौरान एन०एच०ई० ई०एस० परियोजना में सहभागी हर राज्य के 30 प्रतिशत प्रोजेक्ट स्कूलों और 10 प्रोजेक्टविहीन स्कूलों के शिष्य उपलब्धि परीक्षण किए गए । इन शिष्यों के बारे में सामाजिक, आर्थिक सांस्कृतिक आंकड़े भी संकलित किए गए हैं । अधिकतर सहभागी राज्यों ने इन अध्ययनों के बारे में आकड़े संकलन, परीक्षा पत्रों में अंक-प्राप्ति तथा आंकड़ों का समेकन कार्य पूरा कर लिया । वर्ष 1987 के दौरान एन०एच०ई०ई० एस० परियोजना असम, बिहार, कर्नाटक, मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र, मिजोरम, उड़ीसा, राजस्थान और उत्तर प्रदेश में चालू रही और इस परियोजना के कार्यान्वयन हेतु प्रत्येक राज्य के 100 प्राथमिक स्कूल लिए गए । इस विभाग ने 1987 में परियोजना समन्वयकर्ताओं की दो बैठकें आयोजित कीं, जिनका विवरण तालिक 3.5 में दर्शाया गया है ।

अनौपचारिक शिक्षा कार्यक्रम

अनौपचारिक और सामुदायिक शिक्षा कार्यक्रम एवं इन कार्यक्रमों में रत कार्मिकों का प्रशिक्षण/अभिविन्यास संबंधी अनुसंधान तथा विकास गतिविधियां इस विभाग का महत्वपूर्ण कार्यक्षेत्र हैं । सम्पन्न की गई प्रमुख गतिविधियों में निम्नलिखित शामिल हैं :

तालिका 3.5

एन०एफ०ई०ई०एम० परियोजना के अंतर्गत आयोजित बैठकें

क्र० सं०	कार्यक्रम का शीर्षक	तिथियां/अवधि	स्थान	सहभागियों की संख्या
1.	शिष्य उपलब्धियों के अध्ययन हेतु उत्कृष्ट तालिका शीटों को अंतिम रूप देने तथा सामुदायिक संपर्क कार्यक्रम के प्रभाव संबंधी राज्यों के परियोजना समन्वयकर्ताओं की बैठक ।	21 से 24 जुलाई, 1987 (चार दिन)	एन०आई०ई० कैम्पस एन०सी०ई०आर०टी०	7
2.	वर्ष 1988 के लिए कार्य योजना को अंतिम रूप देने हेतु राज्यों के परियोजना समन्वयकर्ताओं की बैठक ।	30 नवम्बर से 2 दिसम्बर, 1987 (तीन दिन)	एन०आई०ई०कैम्पस एन०सी०ई०आर०टी०	9

केंद्र प्रायोजित अनौपचारिक शिक्षा कार्यक्रम को सहायता

राज्यों/संघशासित क्षेत्रों द्वारा कार्यान्वित किए जा रहे अनौपचारिक शिक्षा कार्यक्रमों के लिए प्रोटोटाइप अनुदेशी सामग्रियों के विकास में यह विभाग कार्यरत है । मिडल स्तर (छठी से आठवीं कक्षाओं के बराबर) के अनौपचारिक शिक्षा कार्यक्रम के लिए अनुदेशी सामग्रियां एन०एफ०ई० केंद्रों में प्रयोग के लिए विकसित की गई । एन०एफ०ई० केन्द्रों में नौसिखियों तथा अनुदेशकों के प्रयोग के लिए अधिगम पैकेज और सहायक सामग्रियों के रूप में ये सामग्रियां विकसित की गईं । इस विभाग द्वारा विकसित सामग्रियां राज्यों/ संघशासित क्षेत्रों को ग्रहण/अनुकूलन के लिए भेजी गई । एन० एफ० ई० केंद्रों में नामांकित बच्चों का प्रवेश स्तर व्यवहार और उपलब्धि मूल्यांकित करने के लिए इस विभाग ने उपकरण व परीक्षण भी विकसित किए । बच्चों की उपलब्धि के मूल्यांकन हेतु अनुदेशी/प्रशिक्षण सामग्रियां और उपकरण तथा परीक्षण विकसित करने के लिए इस विभाग द्वारा अनेक बैठकें/ कार्यशालाएं आयोजित की गईं । इन बैठकों/कार्यशालाओं के विवरण तालिका 3.6 में दिए गए हैं ।

एन. एफ. ई. कार्यक्रमों के कार्यान्वयन में संलग्न कार्मिकों के लिए इस विभाग ने कुछ अभिविन्यास/प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए । इन प्रशिक्षण/अभिविन्यास कार्यक्रमों के विवरण तालिका 3.7 में दिए गए हैं ।

इनके अतिरिक्त राज्यों द्वारा कार्यान्वित एन. एफ. ई. कार्यक्रम की समीक्षा के लिए तथा कार्यान्वयन अभिकरणों के सामने पेश आ रही कठिनाइयों के निवारण हेतु उपचारी उपाय विकसित करने हेतु 22 और 23 फरवरी 1988 को अनौपचारिक शिक्षा पर एक वार्षिक सम्मेलन आयोजित किया गया ।

"एन. एफ. ई. केंद्रों में नामांकित बच्चों की उपलब्धियों के मूल्यांकन हेतु मानकीकृत उपकरणों और प्रविधियों के निर्माण" नामक परियोजना के अंतर्गत आनेवाली गतिविधियां पूरी की गईं । अनुसंधान परियोजनाओं "एन०एफ०ई० के प्रशासनिक ढांचों तथा पर्यवेक्षण के अनुवीक्षण योजना के अध्ययन" और "नौ शैक्षिक दृष्टि से पिछड़े राज्यों में एन. एफ. ई. के अकादमिक पहलुओं का मूल्यांकनकारी अध्ययन" संबंधी कार्य भी इसी वर्ष पूरा किया गया ।

प्राथमिक शिक्षा के प्रति व्यापक पहुंच (सी.ए.पी.ई.)

यूनीसेफ सहायता प्राप्त परियोजना "प्राथमिक शिक्षा के प्रति व्यापक पहुंच (सी. ए. पी. ई.)" के अधीन अधिगम सामग्रियों का विकास (अधिगम घटनाएं) और प्रशासन में प्रोजैक्ट टीम सदस्यों का अभिविन्यास तथा अधिगम केंद्रों का अनुवीक्षण संबंधी गतिविधियां जारी रखी गईं । वर्ष 1987–88 में यह परियोजना 17 राज्यों में कार्यान्वित की गई । 1987–88 में इस विभाग ने परियोजना के अंतर्गत 17 कार्यक्रम आयोजित किए । इन कार्यक्रमों के विवरण तालिका 3.8 में दिए गए हैं ।

सी. ए. पी. ई. परियोजना के अंतर्गत इस विभाग ने राज्यों को विभिन्न कार्यक्रमों को चलाने हेतु तकनीकी सहायता प्रदान की । अधिगम सामग्रियों के विकास, अधिगम केंद्रों के सुविधादाताओं के प्रशिक्षण तथा प्रश्न बैंकों के विकास हेतु राज्यों को सहायता प्रदान की गई ।

सामुदायिक शिक्षा और सहभागिता में विकासात्मक गतिविधियां (डी.ए.सी.ई.पी.)

यूनीसेफ सहायता प्राप्त परियोजना "सामुदायिक शिक्षा और सहभागिता में विकासात्मक गतिविधियां" के अंतर्गत 3–6, 6–14 और 15–35 आयुवर्गों के लिए अनौपचारिक शिक्षा कार्यक्रम जारी रखे गए । वर्ष 1987 में यह परियोजना 13 राज्यों/संघशासित क्षेत्रों में चालू थी और इस योजना के तहत 61 सामुदायिक शिक्षा केंद्रों ने कार्य किया । राज्य/संघशासित स्तर पर इस परियोजना के कार्यान्वयन में संलग्न कार्मिकों के लिए इस विभाग ने एक राष्ट्रीय स्तर का सम्मेलन आयोजित किया । इस सम्मेलन में राज्यों/संघशासित क्षेत्रों द्वारा अपने साधनों से चलाए जा रहे सामुदायिक शिक्षा केंद्रों के विभिन्न पहलुओं पर चर्चा की गई । राज्यों के अनौपचारिक शिक्षा केंद्रों में इस परियोजना से प्राप्त अनुभव तथा उपलब्धियों की उपयोगिता के विभिन्न पहलुओं पर भी चर्चा की गई । राज्यों/संघशासित क्षेत्रों में कार्यान्वित किए जा रहे अनौपचारिक शिक्षा कार्यक्रमों के बारे में कुछ सहभागी राज्यों ने डी. ए. सी. ई. पी. परियोजना में सामूहिक शिक्षा केंद्रों तथा साथ ही साथ परियोजना की उपलब्धियों के उपयोग के लिए पग भी उठाए ।

तालिका 3.6

एन०एफ०ई० कार्यक्रम के लिए अनुदेशी सामग्रियों के विकास हेतु आयोजित बैठकें/कार्यशालाएं

क्र० सं०	कार्यक्रम का शीर्षक	अवधि/तिथियां	स्थान	सहभागियों की संख्या
1.	ज्ञानात्मक पहलुओं (प्रवेश बिन्दु) के मूल्यांकन के लिए उपकरणों के विकास से संबंधित कार्यशाला	15 से 19 जून, 1987 (5 दिन)	एन०सी०ई०आर०टी०	8
2.	एन०एफ०ई० के सेमिस्टर-2 के लिए अनुदेशी सामग्रियों के विकास से संबंधित कार्यशाला	11 से 17 अगस्त, 1987 (7 दिन)	एन०आई०ई० कैम्पस एन०सी०ई०आर०टी०	24
3.	एन०एफ०ई० अनुदेशक प्रशिक्षण के लिए सामग्रियों के पुनरीक्षण हेतु कार्यदल बैठक	12 से 16 अक्टूबर, 1987 (5 दिन)	एन०सी०ई०आर०टी०	
4.	मिडल स्तर एन. एफ. ई. के लिए गणित में अनुदेशी सामग्रियों के विकास हेतु कार्यशाला	16 से 22 नवम्बर, 1987 (7 दिन)	एन०आई०ई० कैम्पस एन०सी०ई०आर०टी०	6
5.	एन०एफ०ई० के सेमिस्टर – 2 के लिए अनुदेशी सामग्रियों के विकास हेतु कार्यशाला	14 से 18 दिसम्बर, 1987 (5 दिन)	एन०आई०ई० कैम्पस, एन०सी०ई०आर०टी०	10
6.	प्राथमिक स्तर के लिए प्रवेश व्यवहार तथा आइटम बैंक हेतु परीक्षणों के विकास संबंधी कार्यशाला	21 से 24 दिसम्बर, 1987 (4 दिन)	एन०आई०ई० कैम्पस, एन०सी०ई०आर०टी०	11
7.	ज्ञानात्मक पहलुओं पर परीक्षणों को अंतिम रूप देने हेतु कार्यशाला	18 से 22 जनवरी, 1988 (5 दिन)	एन०सी०ई०आर०टी०	5
8.	प्रवेश स्तर व्यवहार के मूल्यांकन हेतु परीक्षणों के विकास संबंधी कार्यशाला	18 से 22 जनवरी, 1988 (5 दिन)	एन०सी०ई०आर०टी०	9
9.	सामाजिक विज्ञान में अध्यापक दर्शिका और गतिविधि पुस्तक के विकास हेतु कार्यशाला	27–31 जनवरी, 1988 (5 दिन)	आर०सी०ई० अजमेर	5
10.	मिडल स्तर की अध्यापक दर्शिका और विज्ञानों की गतिविधि पुस्तक तथा भाषा पुस्तकों के विकास हेतु कार्यशाला	25 फरवरी से 1 मार्च, 1988 (6 दिन)	एस०आई०ई०आर०टी० उदयपुर	10
11.	एन०एफ०ई० के सेमिस्टर-2 के लिए अनुदेशी सामग्रियों के विकास हेतु कार्यशाला	7 से 11 मार्च 1988 (5 दिन)	एन०आई०ई० कैम्पस, एन०सी०ई०आर०टी०	11
12.	मिडल स्तर पर एन. एफ. ई. के लिए गणित पुस्तकों के विकास हेतु कार्यशाला	15 से 18 मार्च, 1988 (4 दिन)	एन०आई०ई० कैम्पस, एन०सी०ई०आर०टी०,	7
13.	प्रवेश स्तर व्यवहार के मूल्यांकन हेतु परीक्षण के विकास संबंधी कार्यशाला	22 से 26 मार्च, 1988 (5 दिन)	लखनऊ	8
14.	मिडिल स्तर पर अध्यापक दर्शिका तथा सामाजिक विज्ञानों की गतिविधि पुस्तक और भाषा पुस्तकों के विकास के लिए कार्यशाला	30 मार्च से 6 अप्रैल 1988 (8 दिन)	आर०सी०ई० भोपाल	10

तालिका 3.7

एन०एफ०ई० कार्मिकों के लिए आयोजित प्रशिक्षण/अभिविन्यास कार्यक्रम

क्र० सं०	कार्यक्रम का शीर्षक	अवधि/तिथियां	स्थान	सहभागियों की संख्या
1.	सोमालिया में क्षेत्रीय समन्वयकर्ताओं के लिए अनौपचारिक शिक्षा पर प्रशिक्षण कार्यक्रम	15 फरवरी से 15 अगस्त 1988 (6 महीने)	देहली	4
2.	स्वैच्छिक संस्थाओं के स्रोत व्यक्तियों के लिए प्रशिक्षण/अभिविन्यास कार्यक्रम	21 से 23 मार्च, 1988 (3 दिन)	जयपुर	35
3.	स्रोत व्यक्तियों (एन०एफ०ई०) राज्य के लिए प्रशिक्षण/अभिविन्यास कार्यक्रम	28 से 31 मार्च, 1988 (4 दिन)	इलाहाबाद	30

तालिका 3.8

सी०ए०पी०ई० परियोजना के अंतर्गत आयोजित बैठकें/कार्यशालाएं/प्रशिक्षण कार्यक्रम

क्र० सं०	कार्यक्रम का शीर्षक	अवधि	स्थान	सहभागियों की संख्या
1.	सी०ए०पी०ई० परियोजना के अधीन स्थापित अधिगम केंद्रों के अनुवीक्षण तथा प्रशासन हेतु उपकरण कार्यनीतियों को पुनरीक्षित करने तथा अंतिम रूप देने हेतु राज्यों के प्रोजेक्ट टीम सदस्यों की बैठक	6 से 9 अप्रैल, 1987 (4 दिन)	एन. आई. ई. कैम्पस एन. सी. ई. आर. टी.	23
2.	स्तर-1 के लिए ई०वी० एस० में अधिगम सामग्रियों को विकसित करने हेतु कार्यदल बैठक	10 से 16 अप्रैल, 1987 (7 दिन)	एन. आई. ई. कैम्पस एन. सी. ई. आर. टी.	7
3.	गणित में अधिगम सामग्रियों को परिष्कृत करने हेतु कार्यशाला	20 से 24 अप्रैल, 1987 (5 दिन)	एन. आई. ई. कैम्पस एन. सी. ई. आर. टी.	5
4.	स्तर -1 के लिए ई. वी. एस. में अधिगम सामग्रियों के परिष्कार हेतु कार्यदल बैठक	4 से 11 मई, 1987 (8 दिन)	एन. आई. ई. कैम्पस, एन.. सी. ई. आर. टी.	5
5.	सी. ए. पी. ई. अधिगम केंद्रों के अनुवीक्षण और प्रशासन हेतु उपकरण तथा कार्यनीतियां पुनरीक्षित और अंतिम रूप देने हेतु टीम सदस्यों की बैठक	12 से 14 मई 1987 (3 दिन)	एन. आई. ई. कैम्पस एन. सी. ई. आर. टी.	8
6.	शैक्षिक चार्टों को अंतिम रूप देने हेतु कार्यदल बैठक	22 से 26 जून, 1987 (5 दिन)	एन. आई. ई. कैम्पस एन. सी. ई. आर. टी.	6
7.	जम्मू व कश्मीर राज्य के सहयोग से विकसित साक्षरता सामग्रियों हेतु चित्रों और सुलेखन कार्य को अंतिम रूप देने संबंधी कार्यशाला	6 से 9 जुलाई, 1987 (4 दिन)	एन. आई. ई. कैम्पस एन. सी. ई. आर. टी.	4
8.	स्तर-II के लिए हिंदी में माड्यूलों को अंतिम रूप देने हेतु कार्यशाला	10 से 14 अगस्त, 1987 (5 दिन)	एन. आई.. ई. कैम्पस एन. सी. ई. आर. टी.	8
9.	शैक्षिक चार्टों को अंतिम रूप देने हेतु कार्यशाला	31 अगस्त से 11 सितम्बर, 1987 (12 दिन)	एन. आई. ई. कैम्पस एन. सी. ई. आर. टी.	4
10.	एस. सी. ई. आर. टी. पुणे, द्वारा विकसित साक्षरता और गणन सामग्री को अंतिम रूप देने हेतु बैठक	11 से 18 सितम्बर 1987 (5 दिन)	एन. आई. ई. कैम्पस एन. सी. ई. आर. टी.	7
11.	एस. सी. ई. आर. टी., राजस्थान द्वारा तैयार किए गए माड्यूलों पर आधारित कोश के विकास के लिए कार्यदल बैठक	29 सितम्बर 1987 (1 दिन)	एन. आई. ई. कैम्पस एन. सी. ई. आर. टी.	2
12.	स्तर-1 के लिए ई. वी. एस. में अधिगम सामग्रियों के विकास हेतु विशेषज्ञ दल की बैठक	12 से 16 अक्टूबर, 1987 (5 दिन)	एन. आई. ई. कैम्पस एन. सी. ई. आर. टी.	7
13.	जम्मू व कश्मीर राज्य के सहयोग से विकसित उर्दू में कार्य पुस्तक को अंतिम रूप देने हेतु समन्वयकर्ताओं की बैठक	26 से 31 अक्टूबर, 1987 (6 दिन)	श्रीनगर	19
14.	1988 के बजट अनुमानों तथा वार्षिक कार्ययोजना को अंतिम रूप देने हेतु समन्वयकर्ताओं की बैठक	17 से 19 नवम्बर, 1987 (3 दिन)	एन. आई. ई. कैम्पस एन. सी. ई. आर. टी.	23
15.	बजट अनुमानों और वार्षिक कार्य योजना को अंतिम रूप देने हेतु एस. सी. ई. आर. टी. उदयपुर के प्रोजेक्ट समन्वयकर्ताओं की बैठक	8 से 9 दिसंबर, 1987 (2 दिन)	एन. आई. ई. कैम्पस एन. सी. ई. आर. टी.	3
16.	गणन में अधिगम सामग्रियों को अंतिम रूप देने हेतु कार्यशाला	28 जनवरी से 3 फरवरी, 1988 (7 दिन)	एन. आई. ई. कैम्पस, एन. सी. ई. आर. टी.	5
17.	हिंदी में तैयार किए गए माड्यूलों के पुनरीक्षण के लिए विशेषज्ञ दल बैठक	28 से 30 मार्च, 1988 (3 दिन)	एन. आई. ई. कैम्पस एन. सी. ई. आर. टी.	5

मानव संसाधन विकास संबंधी क्षेत्र-गहन शिक्षा (ए०आई०ई०पी०)

1986 में इस विभाग ने एक नई यूनीसेफ-सहायता प्राप्त परियोजना "मानव संसाधन विकास संबंधी क्षेत्र-गहन शिक्षा" शुरू की। राज्यों/संघशासित क्षेत्रों में विभिन्न विकासात्मक अभिकरणों द्वारा कार्यान्वित की जा रही विभिन्न शैक्षिक परियोजनाओं का समेकन तथा समन्वयन इस प्रोजेक्ट का लक्ष्य है। क्षेत्र में कुल जनसंख्या की सामाजिक तथा विकासात्मक आवश्यकताओं की पूर्ति संबंधी एक व्यापक शैक्षिक दृष्टिकोण यह परियोजना प्रस्तावित करती है। समुदाय में स्कूलपूर्व, प्राथमिक, अनौपचारिक तथा प्रौढ़ अधिगम गतिविधियों के समेकन को बढ़ावा देना तथा प्रारंभिक शिक्षा का सर्वीकरण प्राप्त करना इस परियोजना का ध्येय है। केंद्रीय और राज्य सरकारों के सभी सामाजिक, आर्थिक और विकासात्मक निवेशों के अभिकरण, सामुदायिक सहभागिता के लिए विकास

और परीक्षण पद्धतियों का प्रचार तथा परियोजना के अनुभवों को दीर्घकालिक विश्वव्यापी कार्यनीतियों में समाविष्ट करने पर भी यह परियोजना बल देती है । औपचारिक और अनौपचारिक शिक्षा मार्गों द्वारा तथा शैक्षिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए यह परियोजना 9–14 वर्ष के आयुवर्ग की लड़कियों की शिक्षा के लिए विशेष बल देती है ।

परियोजना कार्यान्वयन के मूल अवयवों में शामिल हैं क्षेत्र–गहन दृष्टिकोण, गतिविधियों और स्रोत निवेशों का अभिसरण, विकेन्द्रीकृत नियोजन और प्रबंध में सामुदायिक सहभागिता, कार्यान्वयन के सभी पहलुओं में इसकी लोचशीलता तथा शैक्षिक दृष्टि से पिछड़े क्षेत्रों और जनसंख्या सैक्टरों को प्राथमिकता । 1987 में यह परियोजना 7 खंडों में शुरू की गई और 1988 इस परियोजना को 6–10 और खंडों में पहुंचाने का प्रस्ताव है । समुदाय के शैक्षिक पिछड़ेपन को देखते हुए खंडों का चयन किया गया है ।

1987–88 में "परियोजना प्रलेख" तैयार किया गया तथा सभी राज्यों और संघशासित क्षेत्रों को भेजा गया ताकि उनके द्वारा ली जाने वाली परियोजना को वे विकसित कर सकें ।

चूंकि राज्यों और संघशासित क्षेत्रों द्वारा विकसित परियोजना प्रस्ताव पर्याप्त सूचना प्रदान नहीं कर रहे थे, इसलिए प्रलेखों के संशोधन हेतु विस्तृत मार्गदर्शी सिद्धांत उन्हें भेजे गए । सितंबर 1987 में संशोधित प्रलेख जांचे गए और एक बैठक में उन पर चर्चा की गई । इस बैठक में आठ राज्यों, एक संघशासित क्षेत्र, यूनीसेफ, मानव संसाधन विकास मंत्रालय और एन०सी०ई०आर०टी० के 28 व्यक्ति उपस्थित थे ।

पांच राज्यों और एक संघशासित क्षेत्र मिजोरम, उड़ीसा, राजस्थान, उत्तर प्रदेश, तमिलनाडु और दादर व नगर हवेली के प्रोजैक्ट प्रलेखों को एन०सी०ई०आर०टी० में संशोधित किया गया तथा संबंधित राज्यों/संघशासित क्षेत्र को भेजा गया । इस विभाग ने खंडों के सर्वेक्षण हेतु उपकरण विकसित किए । ये उपकरण बाद में एक कार्यशाला में अंतिम किए गए परियोजना के कार्यान्वयन हेतु सहभागी राज्यों और संघशासित क्षेत्रों ने आवश्यक आधारिक संरचना की स्थापना हेतु समुचित कार्रवाई शुरू की ।

शैशवकालीन शिक्षा

यूनीसेफ सहायता प्राप्त परियोजनाओं "बाल संचार प्रयोगशाला (सी. एम. एल.)" और "शैशवकालीन शिक्षा" (ई०सी०ई०.) के अंतर्गत शैशवकालीन शिक्षा कार्यक्रमों में संलग्न स्कूलपूर्व अध्यापकों और अध्यापक शिक्षकों और पर्यवेक्षण कार्मिकों के प्रयोग के लिए शैशवकालीन शिक्षा संबंधी अनुदेशी सामग्रियों के विकास का कार्य जारी रखा गया । वर्ष 1987–88 में 10 राज्यों में ई०सी०ई० परियोजना कार्यान्वित की गई । वर्ष 1987–88 में सी०एम०एल० और ई०सी०ई० परियोजनाओं के अंतर्गत इस विभाग ने अनेक गतिविधियां सम्पन्न कीं। इन गतिविधियों के विवरण तालिका 3.9 में दर्शाए गए हैं ।

तालिका 3.9

सी. एम. एल. और ई. सी. ई. परियोजनाओं के अंतर्गत किए गए कार्यक्रम

क्र० सं०	कार्यक्रम का शीर्षक	अवधि	स्थान	सहभागियों की संख्या
1.	राज्यों में ई. सी. ई. परियोजना के समन्वयकर्ताओं की बैठक	21 अप्रैल, 1987 (एक दिन)	एन. आई. ई. कैम्पस एन. सी. ई. आर. टी.	8
2.	शैशवकालीन शिक्षा पर राष्ट्रीय अध्ययन दल की बैठक	22 से 24 अप्रैल, 1987 (3 दिन)	एन. आई. ई. कैम्पस एन. सी. ई. आर. टी.	61
3.	छोटे बच्चों के लिए श्रव्य कार्यक्रमों पर एक राष्ट्रीय संगोष्ठी	8 से 10 सितम्बर, 1987 (3 दिन)	आर. सी. ई. मैसूर	35
4.	राज्यों/संघशासित क्षेत्रों में ई. सी. ई. परियोजना के समन्वय–कर्त्ताओं की बैठक	2 से 4 नवम्बर, 1987 (3 दिन)	एन. सी. ई. आर. टी.	10
5.	दिल्ली के प्राथमिक स्कूल तथा स्कूलपूर्व अध्यापकों द्वारा प्रदर्शनी एवं खिलौने बनाने की प्रतियोगिता	14 से 15 जनवरी, 1988 (दो दिन)	एन. आई. ई. कैम्पस एन. सी. ई. आर. टी.	45
6.	खिलौना बनाने पर राष्ट्रीय कार्यशाला	25 से 29 जनवरी, 1988 (5 दिन)	एन. आई. ई. कैम्पस एन. सी. ई. आर. टी.	8
7.	स्कूलपूर्व शिक्षा पर वीडियो कार्यक्रमों संबंधी कार्यशाला	25 से 26 फरवरी, 1988 (दो दिन)	एन. आई. ई. कैम्पस एन. सी. ई. आर. टी.	10
8.	बालकों के लिए खिलौनों/खेलों के फोल्डर तैयार करने पर कार्यशाला	27 फरवरी से 2 मार्च, 1988 (3 दिन)	एन. आई. ई. कैम्पस एन. सी. ई. आर. टी.	5
9.	स्कूलपूर्व प्रसारण हेतु आकाशवाणी प्राधिकारियों से बैठक	1 मार्च, 1988 (1 दिन)	एन. आई. ई. कैम्पस एन. सी. ई. आर. टी.	3
10.	छोटे बच्चों से निपटने हेतु वीडियो खेल तैयार करना	14 मार्च, 1988 (1 दिन)	एन. आई. ई. कैम्पस एन. सी. ई. आर. टी.	8

ई०सी०ई० परियोजना के कार्यान्वयन की प्रगति का लेखा–जोखा लेने तथा कार्यन्वयन अभिकरणों के सामने आ रही समस्याओं के समाधान हेतु ई०सी०ई० परियोजना के समन्वयकर्ताओं की बैठक आयोजित की गई । राज्यों में ई. सी. ई. की वर्तमान स्थिति का पुनरीक्षण करने तथा राज्यों/संघशासित क्षेत्रों में ई. सी. ई. कार्यक्रमों को मजबूत करने हेतु मार्गदर्शी सिद्धांत विकसित करने तथा ई. सी. ई. कार्यक्रमों में पोषण और स्वास्थ्य अवयवों को प्रेरित करने हेतु राष्ट्रीय अध्ययन दल की बैठक आयोजित की गई ।

1986 में शुरू की गई दो अनुसंधान परियोजनाओं "बाल–विकास में गृह आधारित कार्यक्रम का एक परीक्षण" तथा "बाल–से–बाल कार्यक्रम" पर कार्य जारी रखा गया ।

बाल विकास में गृह आधारित कार्यक्रम का ध्येय है शैशवकालीन प्रेरणा हेतु एक वैकल्पिक कार्यनीति विकसित करना । बाल अधिगम को बढ़ाने हेतु यह परिवार (बड़े सदस्य – माता, पिता या दादी आदि) में अपेक्षित विश्वास करता है ताकि वह शिक्षक की भूमिका अदा कर सके । अभिभावकों में एक सशक्त शिक्षक की जागृति को बढ़ावा देने तथा उनमें आवश्यक कौशलों के विकास संबंधी गृह–आधारित अनुदेशी पैकेज में बच्चों का स्वास्थ्य, पोषण और शिक्षा शामिल है । इस कार्यक्रम ने भागबतीपुर जनजातीय क्षेत्र के 65 गृहों को तथा भुवनेश्वर (उड़ीसा) की शहरी गंदी बस्तियों के 100 गृहों को समाविष्ट किया । वर्ष 1987–88 में हाथ में ली गई गतिविधियों में शामिल हैं – अनुदेशी पैकेज को अंतिम रूप देना, बालसेविकाओं का प्रशिक्षण, माताओं से मध्यस्थता कार्यक्रम का आयोजन, सहयोगी अभिकरणों तथा निधिदाता अभिकरण (यूनीसेफ) (रूचिका और रीच) के साथ बैठक का आयोजन तथा स्लाइडों, श्रव्य टेपों, रिपोर्टों, आदि द्वारा अध्ययन का प्रलेखन ।

बाल–से–बाल कार्यक्रम एक कार्य अनुसंधान अध्ययन है जो दिल्ली नगर निगम के 14 प्राथमिक स्कूलों में किया जाता है । प्राथमिक रूप से यह एक स्वास्थ्य और पोषण शिक्षा अध्ययन है जिसमें अध्यापकों तथा चौथी और पांचवीं कक्षा के बच्चों को सम्मिलित किया जाता है जो फिर पारी में पहली और दूसरी कक्षा के बच्चों के साथ कार्य करते हैं । 1987–88 में ली गई गतिविधियों में सम्मिलित थीं पोषण और स्वास्थ्य शिक्षा हेतु खेलों, कठपुतली खेलों, गानों आदि को डिज़ाइन करना, स्कूलों में समुदाय उत्सवों को आयोजित करना तथा एक प्रयोगात्मक नियंत्रित समूह डिज़ाइन प्रयुक्त करते हुए सहभागी स्कूलों के बच्चों द्वारा अर्जित ज्ञान के अध्ययन का आयोजन करना ।

अन्य गतिविधियां

दिसंबर 1987 तक डीन (अकादमिक) के कार्यालय विभाग से अपना कार्य करना जारी रखा । राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 के प्रकाश में पहली से दसवीं कक्षाओं के पाठ्यचर्या के विकास हेतु रा०शै०अनु०प्र०परि० की गतिविधियों का समन्वयन जारी रखा गया । 1988–89 वर्ष हेतु रा०शै०अनु०प्र०परि० के अकादमिक कार्यक्रमों पर चर्चा करने के लिए तथा उन्हें अनुमोदन प्रदान करने के लिए डीन के कार्यालय ने अकादमिक समिति की बैठक भी आयोजित की । अरूणाचल प्रदेश के सहयोगी अभिकरणों तथा निधिदाता अभिकरण (यूनीसेफ) (रूचिका और रीच)एस०सी० ई०आर०टी० अकादमिक स्टाफ के लिए डीन के कार्यालय ने एक सप्ताह का विशेष अभिविन्यास कार्यक्रम भी आयोजित किया ।

तालिका 3.10

क्र० सं०	पुस्तक का शीर्षक	प्रकाशन मास	प्रतियों की संख्या
शैशवकालीन शिक्षा			
1.	अतिथि कौन	–	5000
2.	बंदर जी की दुम	सितंबर, 1987	5000
3.	प्री–नंबर कानसेप्ट किट	सितंबर, 1987	5000
4.	कलर सेलेक्शन किट	सितंबर, 1987	5000
5.	15 आडियो टेप्स डुप्लीकेटड	सितंबर, 1987	–
6.	3 स्लाइड टेप्स प्रेग्राम	सितंबर, 1987	–
7.	ई. सी. ई. अनुदेशी सामग्री शैशवकालीन शिक्षा का महत्त्व	अगस्त, 1987	3000
अनौपचारिक कार्यक्रम			
8.	जीवन और विज्ञान, पुस्तक– 3	जून, 1987	5000
9.	उर्दू पुस्तक – 2	–	–
10.	मार्गदर्शी पुस्तक – 2 (उर्दू)	–	–
प्राथमिक शिक्षा के प्रति व्यापक दृष्टिकोण			
11.	हमारे शरीर के अंग तथा दैनिक उपयोग की कुछ वस्तुएं । हमारे घर तथा हमारे घर की कुछ वस्तुएं ।	मई, 1987	40,000
12.	कुछ संयुक्ताक्षर पढ़ना–लिखना सीखें	नवंबर, 1987	40,000
13.	कुछ और संयुक्ताक्षर पढ़ना–लिखना सीखें	मई, 1987	40,000
14.	चित्र बनाएं, लिखना सीखें	मई, 1987	20,000
15.	हम और हमारा परिवार	अप्रैल, 1987	30,000
16.	हमारे पास–प्रदेश का जनजीवन	जून, 1987	30,000

1987-88

मानव संसाधन विकास मंत्रालय के अनुरोध पर "आप्रेशन ब्लैक बोर्ड" योजना के अधीन इस विभाग ने "प्राथमिक स्कूलों को प्रदान किए जानेवाले अनिवार्य विषयों के मानदंडों और विनिर्देशनों का दायित्व अपने ऊपर लिया। भारतीय मानक ब्यूरो के सहयोग से एक प्रलेख "प्राथमिक स्टेज पर अनिवार्य सुविधाएं – मानदंड और विनिर्देशन" तैयार किया गया। इस विभाग ने प्राथमिक स्कूल भवनों के विनिर्देशनों" पर एक दिन की संगोष्ठी भी आयोजित की। इस संगोष्ठी में वरिष्ठ वास्तुकारों, इंजीनियरों और शिक्षाविदों ने भाग लिया।

प्रकाशन

वर्ष 1987–88 में डी०पी०एस०ई० द्वारा निकाले गए प्रकाशन तालिका 3.10 में उल्लिखित हैं।

उपर्युक्त प्रकाशनों के अतिरिक्त रिपोर्टाधीन अवधि में केप परियोजना के अंतर्गत छः माड्यूल मुद्रित तथा प्रकाशित किए गए। बिहार, मध्यप्रदेश, राजस्थान तथा उत्तर प्रदेश में स्थापित अधिगम केंद्रों को इन माड्यूलों की लगभग 12–12 हजार प्रतियां भेजी गईं।

केप परियोजना के अधीन विकसित की गई अधिगम सामग्रियां छः प्रसिद्ध स्वैच्छिक संस्थाओं को भी भेजी गई ताकि एन. एफ. ई. द्वारा चलाए जा रहे केंद्रों के इन संगठनों द्वारा इनका प्रयोग हो सके। वर्ष 1987–88 में प्रकाशित इन माड्यूलों की चार–चार हज़ार प्रतियां इन संगठनों को भेजी गईं।

परामर्श

इस विभाग ने निम्नलिखित संस्थाओं/अभिकरणों के सम्मुख दर्शाए गए क्षेत्रों में उन्हें परामर्श प्रदान किया :

शैशवकालीन शिक्षा

1. केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा मंडल + 2 स्टेज पर नर्सरी प्रशिक्षण और क्रेश में व्यावसायिक पाठ्यक्रम हेतु पाठ्यविवरण तैयार करना।
2. राष्ट्रीय लोक सहयोग तथा बाल विकास संस्थान–शैशवकालीन शिक्षा और प्रेरणा।
3. महिला तथा बाल विकास मंत्रालय–शैशवकालीन शिक्षा और आई. सी. डी. एस.

अनौपचारिक शिक्षा

1. दिल्ली विश्वविद्यालय – प्रौढ़ तथा अनौपचारिक शिक्षा संबंधी स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम में व्याख्यान।
2. प्रशासनिक प्रशिक्षण संस्थान नैनीताल (उ. प्र.) – डी. ई. ओज़, क्षेत्रीय शिक्षा उपनिदेशकों, मौलिक शिक्षा अधिकारियों, इंटरमीडिएट कालेजों के प्रिंसिपलों तथा प्रदेशीय सिविल सेवा परिवीक्षकों संबंधी आयोजित पाठ्यक्रमों में मार्गदर्शन।
3. स्वैच्छिक संस्थाएं बनवासी सेवा आश्रम, उ. प्र., कार्यरत बच्चों की संस्था, कर्नाटक चिथड़ा–लत्ता शिक्षा और विकास सोसाइटी, कर्नाटक समन्वय आश्रम, बिहार चेतना विकास, महाराष्ट्र, गांधी विद्या मंदिर, सरदारशहर, राजस्थान।
4. शैक्षिक परामर्शदाता इंडिया लि०, सोमाली क्षेत्रीय समन्वयकर्ताओं का प्रशिक्षण।
5. मानव संसाधन विकास मंत्रालय, – प्रशासनिक प्रशिक्षण संस्थान (उ. प्र.) महिला निरक्षरता उन्मूलन अखिल भारतीय समिति, संजय गांधी दलित उद्धार शिक्षा समिति (जयपुर) और राष्ट्रीय साक्षरता मिशन में प्रौद्योगिकी प्रदर्शन दल – एन. एफ. ई. में कार्यक्रमों का विकास।

पोषण और स्वास्थ्य शिक्षा

1. राज्यों/संघशासित क्षेत्रों की परियोजना टीमों – मार्गदर्शन
2. कम्पूचिया, लाउस, नेपाल, मारिशस से प्रतिनिधि – ई. बी. एस. में परियोजना गतिविधियों, पाठ्यचर्या विकास और अनुदेशी सामग्री संबंधी अभिविन्यास्त होना तथा परिचय प्राप्त करना।

चार

सामाजिक विज्ञान और मानविकी शिक्षा

स्कूली शिक्षा की सभी स्टेजों पर सामाजिक विज्ञान और मानविकी संबंधी विभिन्न विषय–क्षेत्रों में पाठ्यचर्या और अनुदेशी सामग्रियों का विकास तथा स्कूल स्टेज पर पाठ्यचर्या के कार्यान्वयन में रत अध्यापकों और अध्यापक शिक्षकों का प्रशिक्षण सामाजिक विज्ञान और मानविकी शिक्षा विभाग (डी० ई० एस० एस० एच०) की वर्ष 1987 – 88 में प्रमुख गतिविधियां रही हैं। यह विभाग कुछ विशेष परियोजनाओं के कार्यान्वयन में भी संलग्न रहा है तथा राष्ट्रीय जनसंख्या शिक्षा परियोजना के कार्यान्वयन में एक केंद्रीय तकनीकी समन्वयकारी और अनुवीक्षण अभिकरण के रूप में कार्य करता रहा है।

पाठ्य विवरण और अनुदेशी सामग्री का विकास

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 के प्रस्तावानुसार स्कूल स्टेज पर शिक्षा की विषयवस्तु और प्रक्रियाओं को पुनरभिविन्यास करने के प्रयासों के अंश के रूप में इस विभाग ने दूसरी, चौथी, सातवीं, नौवीं, और ग्यारहवीं कक्षाओं के पाठ्य विवरण, पाठ्यपुस्तकों, पूरक पाठमालाओं तथा अन्य अनुदेशी सामग्रियों और अध्यापक मैनुअलों के विकास संबंधी अनेक गतिविधियों को अपने हाथ में लिया।

इस वर्ष "सीखने के लिए पढ़ना" परियोजना के अंतर्गत अनुदेशी सामग्रियों के निर्माण संबंधी कार्य को जारी रखा गया। इस परियोजना के तहत 14 शीर्षकों को अंतिम रूप दिया गया तथा प्रकाशनार्थ भेजा गया तथा 10 और प्रकाशनों की मसौदा पाण्डुलिपियों को विकसित किया गया। इस विभाग ने पाठ्यपुस्तकों सहित विशेष अनुदेशी सामग्रियां नवोदय विद्यालयों के लिए तैयार कीं।

इस विभाग द्वारा ली गई दूसरी महत्वपूर्ण गतिविधि भी राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 में उल्लिखित समान कोर अवयवों पर आदर्श अनुदेशी सामग्रियां तथा राष्ट्रीय पाठ्यचर्या ढांचा तैयार करना। "कुछ कोर पाठ्यचर्या क्षेत्रों संबंधी आदर्श सामग्रियां" नामक प्रकाशन निकाला गया तथा विभिन्न राज्य स्तर अभिकरणों को ग्रहण/अनुकूलन के लिए भेजा गया ताकि राज्यों/संघशासित क्षेत्रों में विकसित अनुदेशी सामग्रियों में समाविष्ट समान कोर अवयवों संबंधी विचारों से अनुप्राणित किया जा सके। आदर्श सामग्रियां सारांशों से संबंध रखती हैं जैसे भारत का स्वतंत्रता संग्राम, राष्ट्रीय चिह्न, राष्ट्रीय त्यौहार, राष्ट्रीय उद्देश्य, प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण, पर्यावरण बचाव, सेक्स समानता तथा छोटे परिवार के मापदंड का पालन आदि।

इस विभाग ने पाठ्य विवरण, पाठ्यपुस्तकों, पूरक पाठमालाओं, अध्यापक मैनुअलों तथा अन्य अनुदेशी सामग्रियों के विकास तथा उन्हें अंतिम रूप देने हेतु अनेक बैठकें/कार्यशालाएं आयोजित कीं। इन कार्यशालाओं/बैठकों के विवरण तालिका 4.1 में दिए गए हैं।

इनके अतिरिक्त विभाग ने 21 से 23 दिसंबर 1987 तक सामान्य माध्यमिक शिक्षा के संतुलन तथा प्रासंगिकता पर यूनेस्को प्रायोजित अध्ययन के तहत एक राष्ट्रीय कार्यशाला आयोजित की। इसने बच्चों, अध्यापकों और अभिभावकों के लिए सृजनात्मक सप्ताह तथा क्लब भी स्थापित किया। जून–जुलाई 1988 में क्लब द्वारा अनेक कला शिक्षा गतिविधियां आयोजित की गईं।

उच्चतर माध्यमिक शिक्षा हेतु एक राष्ट्रीय पाठ्यचर्या ढांचा तैयार करने का काम शुरू किया गया। 22 और 23 अगस्त 1987 को हैदराबाद में हुई उच्चतर माध्यमिक शिक्षा हेतु पाठ्यचर्या संबंधी राष्ट्रीय संगोष्ठी में पाठ्यचर्या ढांचे के मसौदे पर चर्चा हुई। संगोष्ठी में प्राप्त सुझावों के आधार पर प्रलेख का अंतिम मसौदा "उच्चतर माध्यमिक शिक्षा हेतु पाठ्यचर्या – एक ढाँचा" तैयार किया गया।

स्कूल स्टेज पर पाठ्यचर्या कार्यान्वयन में रत अध्यापकों तथा अध्यापक शिक्षकों के लिए चार अभिविन्यास/प्रशिक्षण कार्यक्रम इस विभाग ने आयोजित किए। प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रमों के कार्यान्वयन में संलग्न मूल कार्मिकों के लिए भी दो अभिविन्यास कार्यक्रम आयोजित किए गए। स्कूल अध्यापकों के जन अभिविन्यास कार्यक्रम (पी०एम०ओ०एस०टी०) के अंतर्गत प्रशिक्षण अध्यापकों के लिए एन०सी०ई०आर०टी० द्वारा विकसित प्रशिक्षण पैकेज के लिए विभाग ने अनेक माड्यूल प्रदान किए। राज्यों/संघशासित क्षेत्रों से आए मूल कार्मिकों के प्रशिक्षण कार्यक्रमों के लिए इस विभाग के संकाय सदस्यों ने स्रोत व्यक्तियों के रूप में कार्य किया तथा पी०एम०ओ०एस०टी० के अंतर्गत राज्यों/संघशासित क्षेत्रों में आयोजित प्रशिक्षण शिविरों के मूल्यांकन कार्य में भी शामिल हुए। इस विभाग द्वारा आयोजित प्रशिक्षण/अभिविन्यास कार्यक्रमों के विवरण तालिका 4.2 में दिए गए हैं।

1987-88

तालिका 4.1

पाठ्य विवरण तथा अनुदेशी सामग्रियों के विकास हेतु आयोजित कार्यशालाएं/बैठकें

क्र० सं०	कार्यक्रम का शीर्षक	तिथियां/अवधि	स्थान
1.	नौवीं कक्षा के लिए हिंदी पाठ्यपुस्तक तैयार करने हेतु कार्यशाला	18 से 22 अप्रैल, 1987 (5 दिन)	हैदराबाद
2.	अरुण भारती भाग–4 हेतु कार्य पुस्तक तैयार करने के लिए कार्यशाला	20 से 26 अप्रैल, 1987 (7 दिन)	हैदराबाद
3.	सातवीं कक्षा हेतु हिंदी में पाठ्यपुस्तक तैयार करने के लिए कार्यशाला	27 अप्रैल से 1 मई, 1987 (5 दिन)	एन० आई० ई० कैम्पस एन० सी० ई० आर० टी
4.	नौवीं कक्षा के लिए हिंदी में पाठ्यपुस्तक तैयार करने हेतु कार्यशाला	11 से 15 मई, 1987 (5 दिन)	एन० आई० ई० कैम्पस एन० सी० ई० आर० टी
5.	दूसरी कक्षा के लिए अंग्रेजी में अध्यापक मैनुअल के विकास के लिए कार्यशाला	11 से 16 मई 1987 (6 दिन)	भुज
6.	संस्कृत में पाठ्यविवरण के संशोधन तथा अपग्रेडेशन हेतु कार्यदल बैठक	18 से 22 मई, 1987 (5 दिन)	एन० आई० ई० कैम्पस एन० सी० ई० आर० टी
7.	सातवीं कक्षा के लिए हिंदी में पाठ्यपुस्तक तैयार करने हेतु कार्यशाला	18 से 22 मई, 1987 (5 दिन)	एन० आई० ई० कैम्पस एन० सी० ई० आर० टी
8.	सातवीं कक्षा के लिए हिंदी में पाठ्यपुस्तक तैयार करने हेतु कार्यशाला	25 से 29 मई, 1987 (5 दिन)	नैनीताल
9.	नवसाक्षर जनजातीय/ग्रामीण महिलाओं के लिए अनुदेशी सामग्रियों के निर्माण हेतु कार्यशाला	25 से 31 मई, 1987 (7 दिन)	अमरकैन्टक
10.	"सीखने के लिए पढ़ना (हिंदी) परियोजना के अंतर्गत अनुदेशी सामग्रियों के विकास हेतु विशेषज्ञों/लेखकों की बैठक	8 से 11 जून, 1987 (4 दिन)	नैनीताल
11.	सातवीं और ग्यारहवीं कक्षाओं के लिए संस्कृत में पाठ्यपुस्तकों के संशोधन हेतु कार्यशाला	15 से 20 जून, 1987 (6 दिन)	श्रीनगर
12.	बारहवीं कक्षा के लिए समाजशास्त्र में पाठ्यपुस्तक के पुनरीक्षण के लिए बैठक	15 से 19 जून, 1987 (5 दिन)	उदयपुर
13.	छठी कक्षा के लिए हिंदी में संवर्द्धन सामग्रियों के तैयार करने हेतु कार्यशाला (नवोदय विद्यालयों के लिए)	1 से 7 जुलाई, 1987 (7 दिन)	श्रीनगर
14.	दूसरी और चौथी कक्षाओं के लिए हिंदी में पाठ्यपुस्तकें तैयार करने हेतु कार्यशाला	20 से 24 जुलाई 1987 (5 दिन)	एन० आई० ई० कैम्पस एन० सी० ई० आर० टी
15.	नवसाक्षर ग्रामीण महिलाओं के लिए अनुदेशी सामग्रियों के तैयार करने संबंधी कार्यशाला	21 से 27 जुलाई, 1987 (7 दिन)	चंडीगढ़
16.	सातवीं कक्षा के लिए हिंदी में पाठ्यपुस्तक तैयार करने हेतु कार्यशाला	27 जुलाई से 3 अगस्त 1987 (8 दिन)	एन० आई० ई० कैम्पस एन० सी० ई० आर० टी
17.	पहली कक्षा के लिए पाठ्यपुस्तक की पाण्डुलिपि के पुनरीक्षण हेतु बैठक	28 और 29 जुलाई, 1987 (2 दिन)	एन० आई० ई० कैम्पस एन० सी० ई० आर० टी
18.	सातवीं और नौवी कक्षाओं के लिए संस्कृत में पाठ्यपुस्तकों के संशोधन हेतु कार्यशाला	10 से 14 अगस्त, 1987 (5 दिन)	एन० आई० ई० कैम्पस एन० सी० ई० आर० टी
19.	आठवीं कक्षा के लिए अंग्रेजी में पाठ्यपुस्तकों के विकास हेतु, कार्यशाला (नवोदय विद्यालयों के लिए)	11 से 13 अगस्त, 1987 (3 दिन)	एन० आई० ई० कैम्पस एन० सी० ई० आर० टी
20.	वैकल्पिक सामाजिक विज्ञान पाठ्यचर्या के विकास पर चर्चा करने हेतु बैठक	25 से 28 अगस्त, 1987 (4 दिन)	एन० आई० ई० कैम्पस एन० सी० ई० आर० टी
21.	+2 स्टेज पर वाणिज्य और लेखा पर पाठ्य विवरण के विकास हेतु वाणिज्य सलाहकार समिति की बैठक	27 व 28 अगस्त, 1987 (2 दिन)	एन० आई० ई० कैम्पस एन० सी० ई० आर० टी
22.	नौवीं कक्षा के लिए हिंदी में पाठ्यपुस्तक तैयार करने हेतु कार्यशाला	31 अगस्त से 1 सितम्बर 1987 (2 दिन)	एन० आई० ई० कैम्पस एन० सी० ई० आर० टी
23.	सातवीं कक्षा के लिए नागरिक शास्त्र में पाठ्यपुस्तक तैयार करने हेतु कार्यशाला	15 से 18 सितम्बर, 1987 (4 दिन)	एन० आई० ई० कैम्पस एन० सी० ई० आर० टी
24.	नौवीं कक्षा के लिए अंग्रेजी में पाठ्यपुस्तक के संशोधित संस्करण के पुनरीक्षण हेतु कार्यदल बैठक	17 व 18 सितम्बर, 1987 (2 दिन)	एन० आई० ई० कैम्पस एन० सी० ई० आर० टी

1987-88

क्र० सं०	कार्यक्रम का शीर्षक	तिथियाँ/अवधि	स्थान
25.	ग्यारहवीं कक्षा के लिए हिंदी में पाठ्यपुस्तक तैयार करने हेतु कार्यशाला	21 से 25 सितम्बर, 1987 (5 दिन)	एन० आई० ई० कैम्पस एन० सी० ई० आर० टी
26.	उर्दू में माडल पाठ्यपुस्तक तैयार करने हेतु कार्यशाला	21 से 26 सितम्बर, 1987 (6 दिन)	उदयपुर
27.	संस्कृत में पाठ्यपुस्तकों के विकास हेतु बैठक	5 से 10 अक्तूबर, 1987 (6 दिन)	एन० आई० ई० कैम्पस एन० सी० ई० आर० टी
28.	संस्कृत में लेखकों तथा ग्रंथों पर पुस्तिकाएं तैयार करने हेतु बैठक	9 से 13 अक्तूबर, 1987 (5 दिन)	एन० आई० ई० कैम्पस एन० सी० ई० आर० टी
29.	ग्यारहवीं कक्षा के लिए हिंदी में पाठ्यपुस्तकों के विकास हेतु कार्यशाला	10 से 19 अक्तूबर, 1987 (10 दिन)	हैदराबाद
30.	सीखने के लिए पढ़ना (हिंदी) नामक परियोजना संबंधी बैठक	10 अक्तूबर, 1987 (1 दिन)	एन० आई० ई० कैम्पस एन० सी० ई० आर० टी
31.	सातवीं कक्षा के लिए हिंदी में पाठ्यपुस्तक "हमारी हिंदी, भाग-2" तैयार करने हेतु कार्यशाला (नवोदय विद्यालयों के लिए)	12 से 19 अक्तूबर, 1987 (8 दिन)	एन० आई० ई० कैम्पस एन० सी० ई० आर० टी
32.	भूगोल में पाठ्यपुस्तक की पाण्डुलिपि के पुनरीक्षण के लिए बैठक	13 से 16 अक्तूबर, 1987 (4 दिन)	एन० आई० ई० कैम्पस एन० सी० ई० आर० टी
33.	स्वतंत्रता संग्राम परियोजना के तहत स्कूलों के लिए राष्ट्रीय जीवनी कोश तैयार करने हेतु बैठक	14 से 15 अक्तूबर, 1987 (2 दिन)	एन० आई० ई० कैम्पस
34.	नौवीं और दसवीं कक्षाओं के लिए नागरिक शास्त्र में पाठ्यपुस्तक तैयार करने हेतु कार्यशाला	26 से 30 अक्तूबर, 1987 (5 दिन)	एन० आई० ई० कैम्पस एन० सी० ई० आर० टी
35.	ग्यारहवीं और बारहवीं कक्षाओं के लिए भूगोल में पाठ्यपुस्तक की पाण्डुलिपि को अंतिम रूप देने हेतु कार्यशाला	26 से 30 अक्तूबर, 1987 (5 दिन)	एन० आई० ई० कैम्पस एन० सी० ई० आर० टी
36.	विद्यार्थियों के प्रयोग के लिए अंग्रेजी में श्रव्य -दृश्य सामग्रियों के विकास हेतु बैठक	26 से 30 अक्तूबर, 1987 (5 दिन)	एन० आई० ई० कैम्पस एन० सी० ई० आर० टी
37.	दूसरी और चौथी कक्षाओं के लिए हिंदी में पाठ्यपुस्तकों के तैयार करने हेतु कार्यशाला	26 से 30 अक्तूबर, 1987 (5 दिन)	एन० आई० ई० कैम्पस एन० सी० ई० आर०टी०
38.	आठवीं कक्षा के लिए अंग्रेजी में अनुदेशी सामग्रियों के तैयार करने हेतु कार्यशाला	2 से 4 नवम्बर, 1987 (3 दिन)	एन० आई० ई० कैम्पस एन० सी० ई० आर० टी
39.	ग्यारहवीं कक्षा के लिए समाजशास्त्र में पाठ्यपुस्तक तैयार करने हेतु बैठक	9 से 12 नवम्बर, 1987 (4 दिन)	रोहतक
40.	नौवीं कक्षा के लिए भूगोल में पाठ्यपुस्तक की पाण्डुलिपि को अंतिम रूप देने हेतु कार्यशाला	10 से 13 नवम्बर, 1987 (4 दिन)	मदुरै
41.	नौवीं और ग्यारहवीं कक्षाओं के लिए हिंदी में पाठ्यपुस्तकों के तैयार करने हेतु बैठक	13 से 15 नवम्बर, 1987 (3 दिन)	कुरुक्षेत्र
42.	सातवीं कक्षा के लिए हिंदी में पाठ्यपुस्तक तैयार करने हेतु कार्यशाला	22 से 27 नवम्बर, 1987 (5 दिन)	वाराणसी
43.	विद्यार्थियों के लिए अंग्रेजी में श्रव्य-भाषा सामग्रियों के विकास हेतु कार्यशाला	1 से 3 दिसम्बर, 1987 (3 दिन)	एन० आई० ई० कैम्पस एन० सी० ई० आर० टी
44.	ग्यारहवीं और बारहवीं कक्षाओं के लिए लेखाविज्ञान में पाठ्य-विवरण के विकास हेतु कार्यशाला	1 से 5 दिसम्बर, 1987 (5 दिन)	गोवा
45.	छठी और आठवीं कक्षाओं के लिए पाठ्यचर्या गतिविधि मार्गदर्शिकाएं तैयार करने हेतु कार्यशाला	21 से 28 दिसम्बर, 1987 (8 दिन)	नटसरहर
46.	सातवीं कक्षा के लिए "हमारी हिंदी – भाग-2" हिंदी में पाठ्यपुस्तक हेतु कार्यपुस्तक तैयार करने के लिए कार्यशाला	24 से 31 दिसम्बर, 1987 (8 दिन)	एन० आई० ई० कैम्पस एन० सी० ई० आर० टी
47.	ग्यारहवीं कक्षा के लिए नागरिक शास्त्र में पाठ्यपुस्तक की पाण्डुलिपि को अंतिम रूप देने के लिए कार्यशाला	26 से 30 दिसम्बर, 1987 (5 दिन)	एन० आई० ई० कैम्पस एन० सी० ई० आर० टी
48.	संस्कृत में कोश तैयार करने हेतु कार्यदल बैठक	28 दिसम्बर से 2 जनवरी, 1988 (6 दिन)	जबलपुर
49.	दूसरी और चौथी कक्षाओं के लिए हिंदी में पाठ्यपुस्तकें तैयार करने हेतु कार्यशाला	23 दिसम्बर से 1 जनवरी, 1988 (5 दिन)	एन० आई० ई० कैम्पस एन० सी० ई० आर० टी
50.	उर्दू में मॉडल पाठ्पुस्तक तैयार करने हेतु कार्यशाला	4 से 9 जनवरी, 1988 (6 दिन)	त्रिवेन्द्रम

1987-88

क्र० सं०	कार्यक्रम का शीर्षक	तिथियां/अवधि	स्थान
51.	ग्यारहवीं और बारहवीं कक्षा के लिए प्रबंध में पाठ्यविवरण विकसित करने हेतु कार्यशाला	27 से 31 जनवरी, 1988 (5 दिन)	अजमेर
52.	+ 2 स्टेज पर संस्कृत में पाठ्यविवरण को अंतिम रूप देने हेतु कार्यदल बैठक	2 से 3 फरवरी, 1988 (5 दिन)	एन० आई० ई० कैम्पस एन० सी० ई० आर० टी
53.	नौवीं कक्षा के लिए हिंदी में पाठ्यपुस्तक तैयार करने हेतु कार्यशाला	2 से 7 फरवरी, 1988 (6 दिन)	इलाहाबाद
54.	+ 2 स्टेज के लिए वाणिज्य और लेखा विज्ञान में पाठ्यविवरण को अंतिम रूप देने हेतु वाणिज्य सलाहकार समिति की बैठक	23 फरवरी, 1988 (1 दिन)	एन० आई० ई० कैम्पस एन० सी० ई० आर० टी
55.	ग्यारहवीं और बारहवीं कक्षाओं के लिए शारीरिक शिक्षा में पाठ्यविवरण को अंतिम रूप देने हेतु विशेषज्ञों की बैठक	22 से 27 फरवरी, 1988 (6 दिन)	एन० आई० ई० कैम्पस एन० सी० ई० आर० टी
56.	भूगोल में स्थानीय क्षेत्र अध्ययनों से संबंधित सामग्रियों की पहचान तथा ग्रेडेशन के लिए कार्यशाला	23 से 26 फरवरी, 1988 (4 दिन)	पोरबन्दर
57.	संस्कृत कोश तैयार करने हेतु कार्यदल बैठक	26 फरवरी से 3 मार्च, 1988	गया
58.	मिडल स्कूलों के लिए विद्यार्थी कोश तैयार करने हेतु बैठक	29 फरवरी व 1 मार्च, 1988 (2 दिन)	एन० आई० ई० कैम्पस एन० सी० ई० आर० टी
59.	"हमारी अर्थ–व्यवस्था" नामक अर्थशास्त्र की पाठ्यपुस्तक के अनुदित रूपांतरण के पुनरीक्षण हेतु बैठक	14 से 18 मार्च, 1988 (5 दिन)	एन० आई० ई० कैम्पस एन० सी० ई० आर० टी
60.	छठी, सातवीं और आठवीं कक्षाओं में उर्दू को तीसरी भाषा के रूप में पढ़ाने हेतु पाठ्यपुस्तकें तैयार करने संबंधी बैठक	15 से 17 मार्च, 1988 (3 दिन)	अजमेर
61.	"सीखने के लिए पढ़ना (हिंदी परियोजना)" के तहत अनुदेशी सामग्रियों के विकास हेतु बैठक	15 से 19 मार्च, 1988 (5 दिन)	पुणे
62.	प्राथमिक कक्षाओं के लिए हिंदी में व्याकरण पुस्तक तैयार करने हेतु कार्यशाला	21 से 24 मार्च, 1988 (4 दिन)	एन० आई० ई० कैम्पस एन० सी० ई० आर० टी
63.	अन्तर्राष्ट्रीय मेलमिलाप के लिए शिक्षा संबंधी एक प्रायोगिक मार्गदर्शिका को अंतिम रूप देने हेतु कार्यशाला	22 से 24 मार्च, 1988 (3 दिन)	एन० आई० ई० कैम्पस एन० सी० ई० आर० टी
64.	पहली से बारहवीं कक्षाओं के लिए उर्दू में मॉडल पाठ्यपुस्तकें तैयार करने से संबंधित बैठक	24 मार्च, 1988 (1 दिन)	एन० आई० ई० कैम्पस एन० सी० ई० आर० टी
65.	भारत में शारीरिक शिक्षा के सर्वेक्षण हेतु प्रश्नावली विकसित करने हेतु कार्यशाला	25 से 29 मार्च, 1988 (5 दिन)	राई
66.	वैकल्पिक सामाजिक विज्ञान पाठ्यचर्या विकसित करने हेतु विशेषज्ञों की बैठक	28 से 30 मार्च, 1988 (3 दिन)	एन० आई० ई० कैम्पस एन० सी० ई० आर० टी

तालिका 4.2

क्र० सं०	कार्यक्रम का शीर्षक	तिथियां/अवधि	स्थान
1.	प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम के कार्यान्वयन में रत मूल व्यक्तियों के लिए अभिविन्यास कार्यक्रम	19 से 22 नवम्बर, 1987 (4 दिन)	बिलासपुर
2.	प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम के कार्यान्वयन में संलग्न मूल व्यक्तियों के लिए अभिविन्यास कार्यक्रम	8 से 14 दिसम्बर, 1987 (7 दिन)	जबलपुर
3.	अरुणाचल प्रदेश के हिंदी अध्यापकों के लिए अभिविन्यास पाठ्यक्रम	18 से 23 जनवरी, 1988 (7 दिन)	चंगतंग
4.	उच्च प्राथमिक स्टेज के हिंदी अध्यापकों जम्मू के लिए भिविन्यास पाठ्यक्रम	16 से 25 फरवरी, 1988 (10 दिन)	जम्मू
5.	अंग्रेजी में टी० जी० टीज के लिए अभिविन्यास पाठ्यक्रम	7 से 11 मार्च, 1988 (5 दिन)	लखनऊ
6.	हिंदी अध्यापकों के लिए अभिविन्यास पाठ्यक्रम	10 से 17 मार्च, 1988 (8 दिन)	राँची

विशेष परियोजनाएं

सामाजिक विज्ञान और मानविकी क्षेत्रों में पाठ्यचर्या विकास तथा अनुदेशी सामग्रियों के विकास से संबंधित कुछ विशेष परियोजनाओं के कार्यान्वयन में भी यह विभाग संलग्न रहा है । 1987–88 में इन परियोजनाओं के कार्य के अंश के रूप में अनेक गतिविधियां सम्पन्न की गई। इनमें निम्नलिखित शामिल हैं —

(i) राष्ट्रीय आंदोलन के नेताओं की जीवनियां तैयार करना । पंडित गोविंद बल्लभ पंत पर एक पुस्तक प्रकाशित की जा चुकी है।

(ii) कमल श्रृंखला के अन्तर्गत "महात्मा गांधी का एक ऐतिहासिक परीक्षण" नामक पुस्तक का निर्माण एवं प्रकाशन/दूसरी पुस्तक "जवाहलाल नेहरू के जिंदा विचार" प्रकाशनार्थ भेजी गई ।

(iii) उर्दू में मौलाना अबुल कलाम आज़ाद की जीवनी का तैयार किया जाना ।

(iv) एशिया और प्रशांत देशों में माध्यमिक शिक्षा की गंभीर समस्याओं के संयुक्त अध्ययन के रूप में "भारत में माध्यमिक शिक्षा' पर एक रिपोर्ट का तैयार किया जाना ।

(v) माध्यमिक शिक्षा की प्रासंगिकता, संतुलन और समेकन हेतु यूनेस्को प्रायोजित राष्ट्रीय कार्यशाला पर रिपोर्ट तैयार करना ।

(vi) मन, मस्तिष्क और चेतना तथा इनके शिक्षा से संबंध हेतु एक संगोष्ठी का आयोजन ।

(vii) "अन्तर्राष्ट्रीय मेलमिलाप तथा मानव अधिकारों के लिए शिक्षा" नामक यूनेस्को प्रायोजित परियोजना पर रिपोर्ट तैयार करना ।

(viii) यूनेस्को, पैरिस, द्वारा प्रायोजित सामान्य शिक्षा की विषयवस्तु के वितरण तथा संतुलन पर राष्ट्रीय केस अध्ययन के बारे में रिपोर्ट का तैयार किया जाना ।

राष्ट्रीय जनसंख्या शिक्षा परियोजना

राष्ट्रीय जनसंख्या शिक्षा परियोजना के तहत ये प्रयास किए गए कि इस परियोजना को उन राज्यों तक पहुँचाया जाए जिन्होंने अभी इसमें प्रवेश नहीं पाया है । अरुणाचल प्रदेश तथा जम्मू व कश्मीर राज्यों ने इस परियोजना के अधीन आने हेतु पग उठा लिए हैं । वर्ष 1987–88 में इस परियोजना के अंतर्गत अनेक प्रशिक्षण तथा विकासात्मक गतिविधियां ली गई। इनमें शामिल हैं, आदर्श सामग्रियों का निर्माण, + 2 स्टेज तथा प्रारंभिक अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम हेतु जनसंख्या शिक्षा संबंधी पाठ्यचर्याएं, अनौपचारिक शिक्षा सेक्टर हेतु शिक्षण अधिगम सामग्रियों का निर्माण, राष्ट्रीय स्तर की निबंध प्रतियोगिता का आयोजन तथा अनौपचारिक शिक्षा कार्यक्रम के कार्यान्वयन में संलग्न मूल व्यक्तियों के लिए राष्ट्रीय स्तर का एक प्रशिक्षण कार्यक्रम ।

1987-88

पाँच

विज्ञान और गणित शिक्षा

स्कूल स्टेज पर विज्ञान और गणित शिक्षा में सुधार लाना विज्ञान और गणित शिक्षा विभाग (डी०ई०एस०एम०) का मुख्य ध्येय रहा है । यह विभाग विज्ञान और गणित प्रशिक्षण तथा विस्तार गतिविधियों में अनुदेशी सामग्रियों के विकास के साथ-साथ स्कूल स्टेज पर विज्ञान और गणित शिक्षा की ओर उन्मुख अनुसंधान तथा विकास संबंधी गतिविधियों में भी संलग्न रहा है । "स्कूलों में कम्प्यूटर साक्षरता तथा अध्ययन (सी०एल० ए०एस०एस०)" तथा "स्कूलों में विज्ञान शिक्षा के सुधार की योजना" के कार्यान्वयन हेतु यह विभाग राष्ट्रीय स्तर पर एक मुख्य अभिकरण के रूप में भी कार्य करता है । वर्ष 1987-88 में इस विभाग द्वारा सम्पन्न की गई प्रमुख गतिविधियों में शामिल हैं – सातवीं, नौवीं और ग्यारहवीं कक्षाओं के लिए पाठ्यपुस्तकों सहित अनुदेशी पैकेजों का विकास ।

- नई पाठ्यपुस्तकों के प्रभावी क्लास रूम सम्पादन को सुकर बनाने हेतु अध्यापक मार्गदर्शिकाओं, प्रयोगशाला मैनुअलों, पूरक पाठ्य सामग्रियों, शिक्षण सहायक सामग्रियों आदि का विकास ।
- विज्ञान में रुचि को बढ़ावा देने तथा वैज्ञानिक मिज़ाज़ स्थापना हेतु लोकप्रिय विज्ञान सामग्रियों का विकास ।
- राष्ट्रीय शिक्षा नीति के कार्यान्वयन के अंश के रूप में लिए गए विभिन्न विज्ञान और गणित सुधार कार्यक्रमों के प्रभावी कार्यान्वयन में सहायता देने के लिए विभिन्न स्तरों के राज्य पदाधिकारियों के लिए मार्गदर्शी सिद्धांतों का विकास ।
- स्कूलों में विज्ञान और गणित शिक्षा सुधार के लिए एक व्यापक योजना का विकास ।
- बालकों में वैज्ञानिक गतिविधि को प्रोत्साहित करने के लिए जबलपुर में बच्चों के लिए 16वीं राष्ट्रीय विज्ञान प्रदर्शनी का आयोजन ।
- विज्ञान और गणित में अभिरुचि तथा प्रतिमा उत्पन्न करने के लिए विज्ञान और गणित में स्कूल से बाहर गतिविधियों का आयोजन ।
- स्कूल प्रणाली में प्रयोगशालाओं के बेहतर ढंग से कार्य करने हेतु विज्ञान प्रयोगशालाओं के प्रभावी उपयोगिता संबंधी अध्ययन ।
- राष्ट्रीय शिक्षा नीति के प्रस्तावानुसार स्कूलों में कम्प्यूटर साक्षरता और जागरूकता (क्लास परियोजना के अधीन) को फैलाने हेतु कम्प्यूटर साफ्टवेयर पैकेजों का विकास ।
- कम्प्यूटर साक्षरता फैलाने हेतु कम्प्यूटरों के प्रयोग हेतु अध्यापकों का प्रशिक्षण ।

उपर्युक्त प्रमुख कार्यक्रमों के अतिरिक्त इस विभाग ने दूसरे विभागों एन०आई०ई० एककों और क्षेत्रीय शिक्षा कालेजों को उनके विज्ञान तथा गणित शिक्षा संबंधी कार्यक्रमों में सहयोग प्रदान किया । इन कार्यक्रमों में कुछ में शामिल है स्कूल अध्यापकों हेतु जन अभिविन्यास का कार्यक्रम (पी०एम०ओ०एस०टी०), नवोदय विद्यालयों के अध्यापकों का प्रशिक्षण तथा शैक्षिक दृष्टि से पिछड़ी अल्पसंख्यक जातियों की संस्थाओं के अध्यापकों का प्रशिक्षण ।

इस विभाग ने विज्ञान और गणित में पाठ्यविवरण तथा अनुदेशी सामग्रियों के विकास हेतु कुछ राज्यों/संघशासित क्षेत्रों को तकनीकी सहायता भी प्रदान की ।

अनुदेशी सामग्रियों का विकास

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 के प्रस्तावानुसार स्कूल स्टेज पर शिक्षा की विषयवस्तु और प्रक्रियाओं को पुनरभिविन्यस्त करने के प्रयासों के संदर्भ में सातवीं, नौवीं तथा ग्यारहवीं कक्षाओं के लिए विज्ञान और गणित में पाठ्यपुस्तकों सहित अनुदेशी सामग्रियों का विकास इस विभाग का वर्ष 1987-88 में प्रमुख कार्य रहा है । अनुदेशी सामग्रियों के विकास के लिए प्रो० सी०एन०राव, अध्यक्ष, प्रधान मंत्री की विज्ञान सलाहकार समिति तथा निदेशक, भारतीय विज्ञान संस्थान, बंगलौर, की अध्यक्षता में एक समिति गठित की गई । इसके बाद पांच उपसमितियां– एक समेकित विज्ञान (सातवीं से दसवीं कक्षाओं के लिए) एक गणित में (छठी से बारहवीं कक्षाओं के लिए), एक भौतिकी में (ग्यारहवीं और बारहवीं कक्षाओं के लिए), एक रसायन में (ग्यारहवीं और बारहवीं कक्षाओं के लिए) और एक जीवविज्ञान में (ग्यारहवीं और बारहवीं कक्षाओं के लिये) अनुदेशी सामग्रियों के विकास के लिए स्थापित की गई । विभिन्न लेखन टीमों तथा विषय समितियों द्वारा विकसित अनुदेशी सामग्रियों के विवरण तालिका 5.1 में दिए गए हैं ।

तालिका 5.1

अनुदेशी सामग्रियां विकसित

क्र० सं०	पुस्तक का शीर्षक	कक्षा	लेखन टीम के अध्यक्ष
1.	विज्ञान पाठ्यपुस्तक	सातवीं	डा० डी० बालसुब्रमण्यन, उपनिदेशक, सी० सी० एम० बी० हैदराबाद ।
2.	गणित पाठ्यपुस्तक	सातवीं	प्रो० जे० एन० कपूर, प्रोफेसर, आई० आई० टी० कानपुर (अवकाश प्राप्त)
3.	विज्ञान पाठ्यपुस्तक	नौवीं	डा० डी० बालसुब्रमण्यम, उपनिदेशक, सी० सी० एम० बी० हैदराबाद ।
4.	गणित पाठ्यपुस्तक	नौवीं	प्रो० यू० एन० सिंह, भूतपूर्व कुलपति, इलाहाबाद विश्वविद्यालय
5.	गणित पाठ्यपुस्तक	ग्यारहवीं	प्रो० सी० एन० राव, निदेशक, भारतीय विज्ञान संस्थान, बंगलौर
6.	भौतिकी पाठ्यपुस्तक	ग्यारहवीं	प्रो० वी० जी० भिड़े, कुलपति, पुणे विश्वविद्यालय, पुणे ।
7.	जीवविज्ञान पाठ्यपुस्तक	ग्यारहवीं	प्रो० मोहन राम, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली ।
8.	गणित पाठ्यपुस्तक	ग्यारहवीं	प्रो० इज़हर हुसैन, अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय अलीगढ़ (उ० प्र०)

1987–88 में विकसित की गई अन्य अनुदेशी सामग्रियों में निम्नलिखित शामिल हैं :–

1. छठी कक्षा के लिए विज्ञान में अध्यापक मार्गदर्शिका
2. छठी कक्षा के लिए गणित में अध्यापक मार्गदर्शिका
3. छठी कक्षा के लिए गणित में पूरक समस्या पुस्तक
4. ग्यारहवीं कक्षा के लिए भौतिकी में प्रयोगशाला मैनुअल
5. छठी कक्षा के लिए गणित पाठ्यपुस्तक का हिंदी रूपांतरण
6. छठी कक्षा के लिए गणित पाठ्यपुस्तक का हिंदी रूपांतरण
7. ग्यारहवीं कक्षा के लिए रसायन में अध्यापक मार्गदर्शिका
8. सातवीं कक्षा के लिए विज्ञान में कार्य पुस्तक
9. राष्ट्रीय विकास संबंधी दबाव क्षेत्रों हेतु गतिविधि हैंडबुक (खंड–1)
10. राष्ट्रीय विकास संबंधी दबाव क्षेत्रों हेतु गतिविधि हैंडबुक (खंड–2)
11. विज्ञान शिक्षण हेतु विभिन्न स्तर के पदाधिकारियों हेतु मार्गदर्शी सिद्धांत

इनके अतिरिक्त स्कूल स्टेज पर विज्ञान और गणित शिक्षा के सुधार की ओर उन्मुख कार्यक्रम के प्रभावी कार्यान्वयन संबंधी मार्गदर्शी सिद्धांत भी विकसित किए गए । इन मार्गदर्शी सिद्धांतों का संबंध है– विज्ञान में पाठ्यचर्या का विकास, विज्ञान अध्यापकों का प्रशिक्षण, शिक्षण–अधिगम कार्यनीतियों का रूपांकन, विज्ञान में प्रयोगात्मक कार्य तथा विज्ञान शिक्षण का मूल्यांकन । ये मार्गदर्शी सिद्धांत राज्य स्तर के पदाधिकारियों के लाभ के लिए तैयार किए गए हैं जो स्कूलों में विज्ञान शिक्षा के सुधार संबंधी कार्यक्रमों के कार्यान्वयन में संलग्न हैं ।

विज्ञान और गणित में पाठ्यपुस्तकों सहित अनुदेशी सामग्रियों के विकास हेतु अनेक कार्यशालाएं तथा बैठकें आयोजित की गईं । लेखन टीमों के सदस्यों के अलावा, इन कार्यशालाओं/बैठकों में विश्वविद्यालय प्रोफेसर, क्लासरूम अध्यापक, अध्यापक शिक्षक, पाठ्यचर्या विशेषज्ञ तथा शैक्षिक प्रशासक भी उपस्थित थे । अनुदेशी सामग्रियों के संबंध में आयोजित कार्यशालाओं/बैठकों के विवरण तालिका 5.2 में दिए गए हैं ।

तालिका 5.2

विज्ञान और गणित में अनुदेशी सामग्रियों के विकास हेतु की गई कार्यशालाएं/बैठकें

क्र० सं०	कार्यक्रम का शीर्षक	तिथियां/अवधि	स्थान
1.	छठी कक्षा के लिए विज्ञान पाठ्यपुस्तक के हिंदी रूपांतरण के विकास हेतु कार्यशाला	13 से 16 अप्रैल, 1987 (4दिन)	एन० आई० ई० कैम्पस एन० सी० ई० आर० टी
2.	सातवीं, नौवीं और ग्यारहवीं कक्षाओं के गणित अनुदेशी सामग्रियों (चरण-1) के विकास हेतु कार्यशाला	13 से 16 अप्रैल 1987 (4 दिन)	एन० आई० ई० कैम्पस एन० सी० ई० आर० टी
3.	नौवीं कक्षा के लिए विज्ञान पाठ्पुस्तकों के लिखाने हेतु लेखन दल की प्रथम बैठक	27 अप्रैल से 7 मई, 1987 (10 दिन)	हैदराबाद
4.	सातवीं कक्षा के लिए विज्ञान पाठ्यपुस्तक लिखाने के लिए लेखन दल की प्रथम बैठक	3 से 14 मई 1987 (12 दिन)	हैदराबाद
5.	ग्यारहवीं, बारहवीं कक्षाओं के लिए जीवविज्ञान पुस्तकों के हेतु लेखन दल की बैठक	16 से 18 मई 1987 (3 दिन)	आई० आई० एस० बंगलौर
6.	सातवीं और नौवीं कक्षाओं के लिए विज्ञान पाठ्यपुस्तक के अध्यक्ष के साथ बैठक	18 से 19 मई 1987 (2 दिन)	एन० आई० ई० कैम्पस एन० सी० ई० आर० टी०
7.	सातवीं और नौवीं कक्षाओं के लिए विज्ञान पाठ्यपुस्तक के अध्यक्ष के साथ बैठक	25 से 26 मई 1987 (2 दिन)	एन० आई० ई० कैम्पस एन० सी० ई० आर० टी
8.	नौवीं कक्षा के लिए विज्ञान में पाठ्यपुस्तक की पांडुलिपि के पुनरीक्षण हेतु कार्यशाला	15 से 18 जून 1987 (4 दिन)	सी० सी० एम० बी० हैदराबाद
9.	ग्यारहवीं और बारहवीं कक्षाओं हेतु जीव-विज्ञान पुस्तकें हेतु लेखन दल की बैठक	25 से 28 जून 1987 (4 दिन)	आई० एन० एस० ए० नई दिल्ली
10.	सामग्री के पुनरीक्षण हेतु सातवीं कक्षा के लिए विज्ञान में पाठ्यपुस्तकों के अध्यक्ष के साथ बैठक	3 जून, 1987	एन० आई० ई० कैम्पस एन० सी० ई० आर० टी
11.	भौतिकी लेखन टीम हेतु प्रायोगिक कार्य के लिए पाठ्यचर्या के विकास संबंधी कार्यशाला	30 जून, 1987 से 1 जुलाई, 1987 (2 दिन)	एन० आई० ई० कैम्पस एन० सी० ई० आर० टी०
12.	नौवीं कक्षा के लिए विज्ञान पाठ्पुस्तक लिखाने हेतु कोर दल की बैठक	28 जून से 8 जुलाई, 1987 (11 दिन)	सी० सी० एम० बी० हैदराबाद
13.	नौवीं कक्षा के लिए गणित अनुदेशी सामग्रियों के विकास हेतु कार्यशाला (चरण-2)	7 से 10 जुलाई 1987 (4 दिन)	एन० आई० ई० कैम्पस एन० सी० ई० आर० टी०
14.	नौवीं कक्षा के लिए विज्ञान पाठ्यपुस्तक की पांडुलिपि को अंतिम रूप देने हेतु कार्यशाला	14 से 18 जुलाई 1987 (5 दिन)	सी० एस० आई० आर नई दिल्ली
15.	सातवीं कक्षा के लिए विज्ञान पाठ्यपुस्तक की पांडुलिपि के परिष्कार हेतु बैठक	20 से 28 जुलाई 1987 (9 दिन)	सी० सी० एम० बी० हैदराबाद
16.	जीवविज्ञान पुस्तकों के लिए लेखन टीम की बैठक (ग्यारहवीं-बारहवीं कक्षाओं के लिए)	8 से 10 अगस्त, 1987 (3 दिन)	आई० एन० एस० ए० नई दिल्ली
17.	सातवीं कक्षा के लिए गणित में अनुदेशी पैकेजों के विकास हेतु कार्यशाला (चरण-2)	12 से 13 अगस्त 1987 (2 दिन)	एन० आई० ई० कैम्पस एन० सी० ई० आर० टी
18.	नौवीं कक्षा के लिए गणित अनुदेशी सामग्री के विकास हेतु बैठक (चरण-3)	19 से 21 अगस्त, 1987 (3 दिन)	एन० आई० ई० कैम्पस एन० सी० ई० आर० टी
19.	नौवीं और दसवीं कक्षाओं के लिए विज्ञान में अनुदेशी सामग्रियों के विकास हेतु लेखन दल की बैठक	21 से 28 अगस्त 1987 (3 दिन)	सी० सी० एम० बी० हैदराबाद
20.	सातवीं कक्षा के लिए गणित में पाठ्यपुस्तक हेतु लेखन दल की बैठक	19 से 20 अगस्त 1987, 27 से 28 अगस्त, 1987 (4 दिन)	एन० आई० ई० कैम्पस एन० सी० ई० आर० टी
21.	सातवीं कक्षा के लिए गणित में अनुदेशी पैकेजों के विकास हेतु बैठक (चरण-3)	31 अगस्त से 1 सितम्बर, 1987 (2 दिन)	एन० आई० ई० कैम्पस एन० सी० ई० आर० टी
22.	जीवविज्ञान पुस्तकों के लिए लेखन दल की बैठक	7 से 9 सितम्बर, 1987 (3 दिन)	आई० आई० एस० सी० बंगलौर
23.	माध्यमिक स्टेज पर विज्ञान प्रयोगशाला के प्रभावी उपयोग हेतु कार्यशाला	17 से 11 सितंबर 1987 (5 दिन)	गुहाटी
24.	राज्य पदाधिकारियों के विभिन्न स्तरों हेतु विज्ञान शिक्षण संबंधी मार्गदर्शी सिद्धांतों के विकास हेतु बैठक	16 से 17 सितम्बर 1987 (2 दिन)	एन० आई० ई० कैम्पस एन० सी० ई० आर० टी०

1987-88

क्र० सं०	कार्यक्रम का शीर्षक	तिथियां/अवधि	स्थान
25.	ग्यारहवीं कक्षा के लिए रसायन में पाठ्यपुस्तक को अंतिम रूप देने हेतु लेखन टीम की बैठक	11 से 14 सितम्बर 1987 (4 दिन)	भारतीय विज्ञान संस्थान, बंगलौर
26.	प्रायोगिक कार्य हेतु अनुदेशी सामग्री तैयार करने के लिए लेखन टीम की बैठक	14 से 18 सितम्बर 1987 (5 दिन)	एन० डी० एम० सी० नवयुग स्कूल, नई दिल्ली
27.	ग्यारहवीं कक्षा के लिए जीवविज्ञान पाठ्यपुस्तक की मसौदा पाण्डुलिपि के पुनरीक्षण हेतु राष्ट्रीय कार्यशाला ।	21 से 25सितम्बर 1987 (5 दिन)	एन० आई० ई० कैम्पस एन० सी० ई० आर० टी
28.	भौतिकी भाग-1 में पाठ्यपुस्तक की पाण्डुलिपि हेतु पुनरीक्षण व संशोधन राष्ट्रीय कार्यशाला	21 से 27 सितम्बर 1987 (7 दिन)	आर०सी०ई०मैसूर
29.	सातवीं कक्षा के लिए विज्ञान पाठ्यपुस्तक के मसौदे के पुनरीक्षण तथा संशोधन हेतु राष्ट्रीय कार्यशाला	15 से 19 सितम्बर 1987 (5 दिन)	एन० आई० ई० कैम्पस एन० सी० ई० आर० टी०
30.	सातवीं कक्षा के लिए गणित में अनुदेशी पैकेजों के विकास के लिए लेखन दल की बैठक	5 से 9 अक्तूबर 1987 (5 दिन)	एन० आई० ई० कैम्पस एन० सी० ई० आर० टी०
31.	नौवीं कक्षा के लिए गणित अनुदेशी सामग्री के विकास हेतु लेखन दल की बैठक (चरण-4)	5 से 8 अक्तूबर 1987 (4 दिन)	एन० आई० ई० कैम्पस एन० सी० ई० आर० टी०
32.	नौवीं कक्षा की विज्ञान पाठ्यपुस्तक की पाण्डुलिपि के पुनरीक्षण हेतु कार्यशाला	14 से 18 अक्तूबर 1987 (5 दिन)	एन०आई०ई०कैम्पस एन० सी० ई० आर० टी०
33.	ग्यारहवीं कक्षा के लिए रसायन पाठ्यपुस्तक के विकास हेतु बैठक	29 अक्तूबर से 3 नवम्बर, 1987	एन० आई० ई० कैम्पस एन० सी० ई० आर० टी०
34.	नौवीं कक्षा के लिए गणित में अनुदेशी पैकेजों के विकास हेतु बैठक	2 से 5 नवम्बर 1987 (4 दिन)	एन० आई० ई० कैम्पस एन० सी० ई० आर० टी०
35.	नौवीं कक्षा के लिए विज्ञान पाठ्य-पुस्तक की पाण्डुलिपि के पुनरीक्षण हेतु राष्ट्रीय स्तर की कार्यशाला	2 से 9 नवम्बर 1987 (8 दिन)	ओ० सी० एम० बी हैदराबाद
36.	सातवीं कक्षा के लिए गणित में अनुदेशी पैकेजों के विकास हेतु बैठक ।	10 से 11 नवम्बर 1987 (2 दिन)	एन० आई० ई० कैम्पस एन० सी० ई० आर० टी०
37.	गणित की ग्यारहवीं कक्षा की मसौदा पांडुलिपि के संशोधन हेतु कार्यशाला	25 से 27 नवंबर 1987 (3 दिन)	एन० आई० ई० कैम्पस एन० सी० ई० आर० टी
38.	नौवीं कक्षा के लिए गणित में अनुदेशी पैकेजों के विकास हेतु बैठक	26 से 29 नवम्बर 1987 (4 दिन)	एन०आई०ई०कैम्पस एन० सी० ई० आर० टी
39.	ग्यारहवीं कक्षा के गणित पाठ्यपुस्तक हेतु पाठ्य सामग्रियों के विकास हेतु कार्यशाला	8 से 11 दिसंबर 1987 (4 दिन)	हैदराबाद विश्वविद्यालय, हैदराबाद
40.	+ 2 स्टेज पर विज्ञान में प्रायोगिक कार्य हेतु अनुदेशी सामग्रियों के तैयार करने के लिए लेखन टीम की बैठक	9 से 14 मार्च 1988 (6 दिन)	मदर्स इंटरनेशनल स्कूल, नई दिल्ली
41.	ग्यारहवीं कक्षा के लिए विज्ञान पाठ्यपुस्तक (भाग-1) की पांडुलिपि के पुनरीक्षण हेतु कार्यशाला	10 से 13 दिसंबर 1987 (4 दिन)	भारतीय विज्ञान संस्थान, बंगलौर
42.	जीव-प्रौद्योगिकी विषय पर पूरक पाठमाला के लिखाने हेतु बैठक	26 नवम्बर, 1987 (1 दिन)	जीव प्रौद्योगिकी भवन, लोधी रोड नई दिल्ली
43.	विज्ञान शिक्षण हेतु मार्गदर्शी सिद्धांतों के विकास के लिए कार्यशाला	7 से 12 जनवरी 1988 (6 दिन)	भौतिकी विभाग, ओस्मानिया विश्वविद्यालय, हैदराबाद
44.	ग्यारहवीं कक्षा के लिए पाठ्य सामग्रियों को अंतिम रूप देने हेतु बैठक	25 से 26दिसंबर, 1987 (2 दिन)	आई० आई० टी० मद्रास
45.	जी०बी०एo के अधीन गणित में अनुदेशी सामग्रियों के विकास हेतु बैठक	2 से 5 जनवरी 1988 (4 दिन)	एन० आई० ई० कैम्पस एन० सी० ई० आर० टी०
46.	वी०एच०सी० को विज्ञान शिक्षण देने हेतु खोजपरक विचार सामग्रियों और अभ्यासों के पुनरीक्षण हेतु बैठक ।	3 से 8 फरवरी 1988 (6 दिन)	तिरुचिरापल्ली
47.	नौवीं कक्षा पाठ्यपुस्तक हेतु गणित में अनुदेशी पैकेजों के विकास हेतु कार्यशाला	2 से 6 फरवरी 1988 (5 दिन)	एन० आई० ई० कैम्पस एन० सी० ई० आर० टी०
48.	मिडल स्टेज हेतु शिक्षण सहायक सामग्रियों के विकास के लिए कार्यशाला	21 से 25 मार्च, 1988 (5 दिन)	एन० आई० ई० कैम्पस एन० सी० ई० आर० टी

1987-88

क्र० सं०	कार्यक्रम का शीर्षक	तिथियां/अवधि	स्थान
49.	माध्यमिक स्टेज पर विज्ञान प्रयोगशालाओं के प्रभावी उपयोग हेतु कार्यशाला	30 मार्च से 6 अप्रैल, 1988 (8 दिन)	नरोरा (यू० पी०)
50.	सातवीं कक्षा के लिए गणित में अनुदेशी पैकेजों के विकास हेतु बैठक	7 मार्च, 1988 (1 दिन)	एन० आई० ई० कैम्पस एन० सी० ई० आर० टी
51.	सातवीं कक्षा के लिए गणित में अनुदेशी पैकेजों के विकास हेतु बैठक	15 से 18 मार्च, 1988 (4 दिन)	एन० आई० ई० कैम्पस एन० सी० ई० आर० टी
52.	नौवीं कक्षा के लिए गणित में अनुदेशी पैकेजों के विकास हेतु बैठक	15 से 18 मार्च, 1988 (4 दिन)	एन० आई० ई० कैम्पस एन० सी० ई० आर० टी
53.	सातवीं कक्षा के लिए विज्ञान में कार्य पुस्तक के विकास हेतु कार्यशाला	25 से 30 मार्च, 1988 (6 दिन)	एन० आई० ई० कैम्पस एन० सी० आर० टी०
54.	ग्यारहवीं कक्षा के लिए गणित में अनुदेशी पैकेजों के विकास हेतु बैठक	29 से 30 मार्च, 1988 (2 दिन)	एन० आई० ई० कैम्पस एन० सी० ई० आर० टी

प्रशिक्षण कार्यक्रम

यह विभाग स्कूल अध्यापकों के जन–अभिविन्यास कार्यक्रम (पी० एम०ओ०एस०टी) में सक्रिय रूप से संलग्न रहा । अध्यापकों के प्रयोग के लिए इस विभाग द्वारा विज्ञान और गणित शिक्षण संबंधी माड्यूलों को विकसित किया गया । राज्यों/संघशासित क्षेत्रों के मूल कार्मिकों के लिए आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रमों में इस विभाग के संकाय ने स्रोत व्यक्तियों के रूप में कार्य किया ।

नवोदय विद्यालयों के विज्ञान और गणित अध्यापकों के प्रशिक्षण में इस विभाग ने एन०सी०ई०आर०टी० के नवोदय विद्यालय एकक को निकट का सहयोग प्रदान किया । इसी उद्देश्य से इस विभाग द्वारा कुछ प्रशिक्षण सामग्रियां विकसित की गई । इस विभाग ने विभिन्न स्तरों पर विज्ञान शिक्षण की प्रभावी पद्धतियों में सैनिक स्कूलों के अध्यापकों को भी प्रशिक्षित किया।

विस्तार गतिविधियां

इस विभाग ने जबलपुर, मध्यप्रदेश, में 12 से 19 नवम्बर, 1987 तक 16 वीं राष्ट्रीय प्रदर्शनी आयोजित की । इसका उद्घाटन भारत के राष्ट्रपति श्री आर० वेंकटरामन ने किया । प्रदर्शनी का केंद्रीय सार था "विज्ञान तथा जीवन की गुणवत्ता" । प्रदर्शनी में 29 राज्यों तथा संघशासित क्षेत्रों की लगभग 2000 प्रदर्शनी सामग्रियां शामिल की गई । इन प्रदर्शन सामग्रियों के अतिरिक्त मध्यप्रदेश के 50 स्कूलों ने भी प्रदर्शनी में अपनी प्रदर्शन सामग्रियां रखीं । लगभग 15000 लोगों ने प्रतिदिन प्रदर्शनी देखी। प्रदर्शनी के दौरान, बच्चों के लिए अनेक और कार्यक्रम भी किए गए, जैसे प्रसिद्ध विद्वानों द्वारा लोकप्रिय व्याख्यान, शैक्षिक यात्राएं तथा स्थानीय सांस्कृतिक संगठनों तथा स्वयं सहभागियों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम ।

इस विभाग ने 27 राज्यों तथा संघशासित क्षेत्रों को अपनी राज्य स्तर की विज्ञान प्रदर्शनियां आयोजित करने के लिए सहायता प्रदान की । वित्तीय सहायता के अलावा प्रदर्शनियों के लिए सारों तथा उपसारों के चयन हेतु राज्यों/संघशासित क्षेत्रों को अकादमिक सहायता प्रदान की गई । सिद्धांत तथा प्रदर्शन सामग्रियों के मूल्यांकन हेतु मार्गदर्शी सिद्धांत भी प्रदान किए गए । इस विभाग ने "प्रदर्शनियां आयोजन हेतु हैंडबुक" की मसौदा पाण्डुलिपि भी विकसित की ।

यूनेस्को क्षेत्रीय कार्यालय, बैंकाक के सहयोग से इस विभाग ने "विज्ञान सब के लिए" संदर्भ में मुक्त सक्षमता विकसित करने के लिए अध्यापकों तथा अध्यापक शिक्षकों के लिए विज्ञान संबंधी अनवर्ती शिक्षा पर एक उच्चस्तरीय राष्ट्रीय कार्यशाला आयोजित की ।

इस विभाग ने भारत सरकार के विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग की राष्ट्रीय विज्ञान और प्रौद्योगिकी संचार परिषद् के साथ संयुक्त–रूप से बच्चों के लिए एक राष्ट्रीय विज्ञान लेखन प्रतियोगिता आयोजित की । कार्यक्रम के प्रमुख ध्येय थे– बच्चों की सृजनात्मक लेखन प्रतिभा को प्रोत्साहित करना तथा बालकों के लेखन द्वारा विज्ञान को लोकप्रिय बनाना । तीन–चरणीय प्रणाली– ज़िला, राज्य और राष्ट्रीय स्तर– में निबंध तथा सृजनात्मक लेखन श्रेणियों संबंधी स्थलीय लेखन प्रतियोगिता आयोजित की गई । कार्यक्रम में 23 राज्यों तथा संघशासित क्षेत्रों ने भाग लिया ।

विज्ञान क्लबों को सक्रिय करने हेतु विभाग ने कार्रवाई शुरू की । विज्ञान क्लब समाचारपत्र का प्रथम अंक विभाग द्वारा एन०सी०एस०टी० सी० के सहयोग से प्रकाशित किया गया और इसे विज्ञान क्लबों में व्यापक रूप से बांटा गया ।

"विज्ञान और गणित में स्कूल से बाहर गतिविधियां" विज्ञान और गणित शिक्षा को दृढ़ करने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती हैं । इस विभाग ने एन०आई०ई० विज्ञान क्लब शुरू किया । इस विज्ञान क्लब ने सप्ताह में पांच दिन कार्य किया तथा पांचवीं से नौवीं कक्षाओं के बच्चों की आवश्यकताएं पूरी कीं । प्रत्येक सप्ताह में लगभग 160 बच्चे विज्ञान क्लब में गए । इस परियोजना से प्राप्त अनुभव का लाभ अन्य स्कूलों को भी प्रदान किया जाएगा और विज्ञान तथा गणित क्लबों को मजबूत करने के प्रयास किए जाएंगे ।

विश्वेश्वरैया औद्योगिक तथा प्रौद्योगिकीय संग्रहालय, बंगलौर, के सहयोग से इस विभाग ने विज्ञान क्लब किटों के प्रयोग हेतु अध्यापकों के लिए एक प्रशिक्षण कार्यक्रम भी आयोजित किया । यह विभाग डी०एस०ई० आर०टी०, बंगलौर के साथ संयुक्त कार्यक्रम रखता है ।

अनेक स्कूलों के अनुरोधों पर इस विभाग के संकाय सदस्यों ने विस्तार व्याख्यान "नेत्र विकलांगों के लिए विज्ञान शिक्षण की गतिविधियों की भूमिका", "विज्ञान सीखने के लिए खिलौने", "विज्ञान के प्रभावी शिक्षण हेतु प्रयोगों तथा शिक्षण सहायक सामग्रियों का प्रयोग" आदि सारों पर दिए।

विभिन्न अभिकरणों द्वारा आयोजित कई कार्यशालाओं/संगोष्ठियों में संकाय सदस्यों ने भाग लिया और स्रोत व्यक्तियों के रूप में कार्य किया। विज्ञान और गणित शिक्षा के अनेक पहलुओं के साथ-साथ उन्होंने कम्प्यूटर शिक्षा पर भी अपने लेख प्रस्तुत किए।

अनुसंधान और विकास

डा० एस० एम० नायर, निदेशक, राष्ट्रीय प्राकृतिक इतिहास संग्रहालय, की अध्यक्षता में राष्ट्रीय और राज्य-स्तर की विज्ञान प्रदर्शनियों की योजना का मूल्यांकन-कार्य पूरा किया गया।

माध्यमिक स्टेज पर विज्ञान प्रयोगशाला के प्रभावी उपयोग संबंधी एक दीर्घकालिक अनुसंधान परियोजना इस विभाग द्वारा अपने हाथ में ली गई। 1987-88 में उत्तरी और पूर्वी क्षेत्रों के विभिन्न राज्यों/संघशासित क्षेत्रों में विज्ञान शिक्षा और विज्ञान कक्ष/ प्रयोगशाला के उपयोग के बारे में प्रश्नावली द्वारा तथा अध्यापकों एवं प्रशासकों से व्यक्तिगत साक्षात्कारों द्वारा सूचना एकत्र की गई। इस मकसद के लिए देश के उत्तरी-पूर्वी क्षेत्र के कुछ राज्यों/संघशासित क्षेत्रों की विज्ञान प्रयोगशालाओं का नमूना सर्वेक्षण किया गया।

इस विभाग द्वारा एक बहुउद्देश्य मर्करी बैरोमीटर विकसित किया गया और इसके भारतीय मानक विनिर्देशन को भारतीय मानक ब्यूरो द्वारा अंतिम रूप दिया गया। यह मूलतः वातावरणीय दबाव के प्रदर्शन एवं अनुमापन हेतु टेरीसेल्ली के प्रयोग का सुधरा रूप है। इससे व्यक्ति अपने आप टेरीसेलियन वैकूम बिना मर्करी को छुए बड़ी जल्दी और आसानी से बना सकता है और इस प्रकार वातावरणीय दबाव को लगभग एक मिलीमीटर मर्करी से शुद्धतापूर्वक माप सकता है। कम मर्करी प्रयुक्त होने से यह औज़ार का दाम कम कर देता है। इसके प्रयोग के संबंध में मैनुअल निर्माणाधीन है।

इस विभाग ने एक सी०एस०आई०आर० प्रोजैक्ट "वरिष्ठ माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों की ज्ञानात्मक योग्यता पर आधारित रसायन पाठ्य विवरण का विकास" पूरा किया। परियोजना का मूल उद्देश्य था वरिष्ठ माध्यमिक स्तर पर रसायन में अनेक संकल्पनाओं संबंधी विद्यार्थियों की संकल्पनात्मक समझ का निर्णय लेना। इस अध्ययन से यह प्रकट हुआ कि कुछेक संकल्पनाएं, जो वरिष्ठ माध्यमिक स्टेज पर पाठ्य विवरण में सम्मिलित हैं, विद्यार्थियों के बोध-स्तर में नहीं आती हैं। यह अध्ययन एक नया रसायन पाठ्यविवरण के डिज़ाइन करने में सहायक सिद्ध हुआ।

डी०ई०एस०एम०। ने वरिष्ठ माध्यमिक स्टेज पर रसायन के प्रभावी शिक्षण हेतु रसायन में 65 त्रिविमितीय संरचनात्मक मॉडल भी विकसित किए। वे मॉडल, जिनमें अनेक प्रकार के अणु (साधारण और जटिल), आमनिक क्रिस्टल, आणविक ज्यामितियां थीं, कम दाम पर स्थानीय रूप से उपलब्ध सामग्रियों से विकसित किए गए।

तालिका 5.3

क्लास परियोजना के अंतर्गत आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम

क्र. सं०	कार्यक्रम का शीर्षक	तिथियां/अवधि	स्थान	सहभागियों की संख्या
1.	क्लास परियोजना के अंतर्गत अध्यापक प्रशिक्षण कार्यक्रम	1 से 21 अप्रैल, 1987 (21 दिन)	के० वी० जनकपुरी नई दिल्ली	24
2.	-वही-	-वही-	के० वी० अन्ड्र्यूसगंज नई दिल्ली	29
3.	क्लास परियोजना के अधीन हरियाणा के नये अध्यापकों हेतु अध्यापक प्रशिक्षण कार्यक्रम	5 से 22 अक्तूबर, 1987 (18 दिन)	एन० आई० ई० कैम्पस एन० सी० ई० आर० टी०	23
4.	प्रशिक्षण कार्यक्रम	21 दिसम्बर, 1987 से 2 जनवरी, 1988	एन० आई० ई० कैम्पस एन० सी० ई० आर० टी०	17
5.	-वही-	4 से 22 जनवरी, 1988	एन० आई० ई० कैम्पस एन० सी० ई० आर० टी०	10
6.	क्लास परियोजना के बाहर स्कूलों को निम्नलिखित रूपकों पर बी०बी० सी० माइक्रोसाफ्टवेयर पैकेजों के प्रदर्शन हेतु अल्पकालीन अभिविन्यास कार्यक्रम-			
(I)	इलैक्ट्रानिक स्प्रेडशीट	9 से 12 फरवरी, 1988	बिरला विद्या निकेतन, नई दिल्ली	17
(II)	डेटा बेसेस	26 फरवरी से 3 मार्च, 1988	सप्रिंगडेल स्कूल, नई दिल्ली	18
(III)	ग्राफिक्स एंड सेमुलेशन	21 से 25 मार्च 1988 (5 दिन)	नवल पब्लिक स्कूल, नई दिल्ली	11
(IV)	बी० बी० सी० एक्सेज़रीज़ एण्ड क्वेशचन बैंक	23 से 29 मार्च, 1988 (7 दिन)	एन० आई० ई० कैम्पस एन० सी० ई० आर० टी०	11
(V)	कम्प्यूटर विज्ञान पर उच्चस्तरीय अध्यापक प्रशिक्षण कार्यक्रम	15 से 29 फरवरी, 1988	दिल्ली पब्लिक स्कूल, आर० के० पुरम, नई दिल्ली	16

1987-88

स्कूलों में कम्प्यूटर साक्षरता और अध्ययन (सी०एल० ए०एस०एस०) (क्लास)

वर्ष 1987–88 में विद्यार्थियों में कम्प्यूटर साक्षरता तथा जागरूकता फैलाने संबंधी कम्प्यूटर साफ्टवेयर पैकेजों का विकास इस विभाग की महत्वपूर्ण गतिविधि थी ।

शैक्षिक मकसदों के लिए कम्प्यूटरों के प्रयोग में अध्यापकों को प्रशिक्षित करने संबंधी अनेक प्रशिक्षण कार्यक्रम इस विभाग ने क्लास परियोजना के अंतर्गत आयोजित किए । इस विभाग द्वारा आयोजित विभिन्न प्रशिक्षण कार्यक्रम के विवरण, तालिका 5.3 पर दिए गए हैं ।

विभाग के संकाय सदस्यों की व्यावसायिक सक्षमता बढ़ाने हेतु उन्हें अनेक प्रशिक्षण कार्यक्रमों में भेजा गया । कुछ कार्यक्रम निम्न प्रकार हैं–

1. एपलेल और मैसिनतोष कम्प्यूटरों का परिचय प्राप्त करने हेतु प्रशिक्षण कार्यक्रम ।
2. कम्प्यूटर शिक्षा – वर्तमान स्थिति तथा भविष्य प्रवृत्तियां (सूचना प्रौद्योगिकी संवर्धन सोसाइटी)
3. साफ्टवेयर प्रोजेक्ट प्रबंध पर कार्यशाला (टाटा परामर्शी सेवाएं, बम्बई, द्वारा आयोजित)
4. सी–लैंग्वेज और यूनिक्ससिस्टम में प्रशिक्षण कार्यक्रम (एन०आई०सी० दिल्ली द्वारा आयोजित)
5. कृत्रिम बुद्धि के प्रति परिचय – लिस्प और प्रोलोग (एन०आई०सी०, दिल्ली द्वारा आयोजित)
6. कोबल–7 में प्रोग्रामिंग (एन०आई०ई० दिल्ली द्वारा आयोजित)
7. कम्प्यूटर और विज्ञान शिक्षा में साफ्टवेयर प्रोग्रामिंग संबंधी अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन

अन्य गतिविधियां

यू०एस०एस०आर में भारतीय उत्सव की विज्ञान और प्रौद्योगिकी प्रदर्शनी में शैक्षिक पैविलयन के लिए इस विभाग ने प्रदर्शन सामग्रियां एकत्र तथा प्रदान कीं । इसने पैरिस प्रदर्शनी के लिए प्राचीन भारतीय संख्या पद्धतियों संबंधी प्रदर्शन सामग्रियां एकत्र एवं प्रदान कीं । इस विभाग ने अनेक विदेशी विद्वानों को अंतरंग सुविधाएं प्रदान कीं । इसने श्रीनिवास रामानुजन, एक महानतम गणितज्ञ, की जन्म शताब्दी के अवसर पर उनके ग्रंथों पर लोकप्रिय व्याख्यान आयोजित किए ।

स्कूलों के लिए विज्ञान उपकरण

कार्यशाला विभाग (डब्ल्यू०डी) ने डिज़ाइन, विकास तथा स्कूलों के विज्ञान उपकरण के प्रोटोटाइप उत्पादन में अपना नेतृत्व प्रदान करना जारी रखा । अपने औपचारिक प्रकार्यों के अतिरिक्त 1986 से यह विभाग इंडो–एफ०आर०जी० प्रोजेक्ट "म०प्र० और उ०प्र० में प्राथमिक और मिडल स्कूलों में तात्कालिक विज्ञान शिक्षा" के कार्यान्वियन में संलग्न है । यह विभाग अनुसंधान और विकास कार्य, सर्वेक्षण, परीक्षण आदि में कार्यरत है । दो एफ०आर०जी विशेषज्ञ अकादमिक और तकनीकी मामलों में सहायता प्रदान कर रहे हैं ।

यह विभाग शिक्षा के विभिन्न स्तरों हेतु विज्ञान किटों, इलेक्ट्रानिक किटों और उपकरण किटों के विकास में रत है । इनमें से प्राथमिक विज्ञान किट तथा मिनी उपकरण किट "आप्रेशन ब्लेक बोर्ड योजना" के तहत प्राथमिक स्कूलों को दी जाने वाली न्यूनतम अनिवार्य सुविधाओं का अंग हैं । केंद्र प्रायोजित योजना के अन्तर्गत मिडल स्कूलों में विज्ञान शिक्षा के सुधार में समेकित विज्ञान किट को पैकेज का एक बहुत ही महत्वपूर्ण अवयव माना गया है । एन०सी०ई०आर०टी० के लिए यह विभाग फरनीचर उपकरण तथा वाहनों की खरीद और रखरखाव का कार्य करता है । यह यूनेस्कों सहित अन्तर्राष्ट्रीय अभिकरणों द्वारा प्रायोजित शिक्षार्थियों और विदेशी कार्मिकों को भी प्रशिक्षण प्रदान करता रहा है । साथ ही यह राज्यों तथा संघशासित क्षेत्रों में स्थित संस्थानों के कार्मिकों को भी डिजाइन–विकास, प्रौद्योगिकी निर्माण आदि में भी प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करता रहा है तथा राज्यों/संघशासित क्षेत्रों को अपनी विशेषज्ञता उपलब्ध करता रहा है ।

वर्ष 1987–88 में ली गई प्रमुख गतिविधियां

वर्ष 1987–88 में इस विभाग के प्रमुख कार्य अनुसंधान और विकास संबंधी गतिविधियां रहा है । इनमें निम्नलिखित शामिल हैं :

किटों के पूर्व रूपांतरणों को परिष्कृत किया गया "प्रारंभिक स्तर हेतु मिनी उपकरण किट" नामक पुस्तक तैयार की गई तथा प्राथमिक विज्ञान किट और समेकित किट के लिए किट मैनुअलों को अंतिम रूप दिया गया तथा प्रकाशनार्थ भेजा गया ।

इंडो–एफ०आर०जी० परियोजना के अंतर्गत एक नई प्राथमिक किट को विकसित किया गया । किट की मदों को आप्रेशन ब्लेकबोर्ड योजना की आवश्यकतानुसार तथा कम दाम, टिकाऊपन और परिष्कृत उत्पादन प्रौद्योगिकी को दृष्टिगत रखते हुए, डिजाइन किया गया है । विभिन्न राज्यों के स्कूलों में परीक्षण हेतु 60 प्रोटोटाइप निर्मित किए गए, ताकि बाद में फीडबैक प्राप्त करके इन्हें अंतिम रूप से बनाया जा सके । किट–मदों के रेखाचित्र और विनिर्देशन भी तैयार किए गए ।

एन०सी०ई०आर०टी० द्वारा विकसित प्राथमिक स्टेज पर पर्यावरणीय अध्ययनों संबंधी नई पाठ्यचर्या पर आधारित तीसरी, चौथी और पांचवीं कक्षा के लिए अध्यापक हैंडबुक के प्रयोगात्मक संस्करण के विकास हेतु इस विभाग ने अनेक कार्यशालाएं आयोजित कीं । प्रतिदिन के अनुभव और वास्तविक जीवन स्थितियों, जैसा कि नौसिखियों ने महसूस किया हो, को प्रयोग में लाते हुए अध्यापक हैंडबुकों के लिए गतिविधि आधारित सामग्रियां विकसित की गईं । वर्ष 1987–88 में आयोजित कार्यशालाओं के विवरण तालिका 5.4 में दिए गए हैं ।

तालिका 5.4

वर्ष 1987–88 में आयोजित कार्यशालाएं

क्र०सं०	कार्यक्रम का शीर्षक	तिथियां/अवधि	स्थान	सहभागियों की संख्या
1.	तीसरी कक्षा के लिए गतिविधियों के परिष्कार और मूल्यांकन के लिए विज्ञान अध्यापकों की कार्यशाला	6 से 11 अप्रैल, 1987 (6 दिन)	एन० आई० ई० कैम्पस एन० सी० ई० आर० टी०	11
2.	तीसरी कक्षा की अध्यापक हैंडबुक तथा तीसरी कक्षा की गतिविधियों को अंतिम रूप देने हेतु अकादमिक टीम की कार्यशाला	4 से 9 मई, 1987 (6 दिन)	मंसूरी इनडोर कालेज, मंसूरी	10
3.	तीसरी कक्षा के लिए प्राथमिक विज्ञान और अध्यापक हैंडबुक में गतिविधि आधारित सामग्रियों के परीक्षण हेतु कार्यशाला	27 जुलाई से 5 अगस्त, 1987 (10 दिन)	एन० आई० ई० कैम्पस एन० सी० ई० आर० टी०	35
4.	प्राथमिक विज्ञान में गतिविधि आधारित सामग्रियों के विकास और परिष्कार के लिए कार्यशाला	14 से 19 सितम्बर, 1987 (6 दिन)	एन० आई० ई० कैम्पस एन० सी० ई० आर० टी०	26
5.	प्राथमिक विज्ञान में गतिविधि आधारित सामग्रियों के विकास और परिष्कार के लिए कार्यशाला	21 से 26 सितम्बर, 1987 (5 दिन)	एन० आई० ई० कैम्पस एन० सी० ई० आर० टी०	32
6.	चौथी कक्षा की अध्यापक हैंडबुक हेतु प्राथमिक विज्ञान में गतिविधि आधारित सामग्रियों के परीक्षण और परिष्कार के लिए कार्यशाला	14 से 18 दिसंबर, 87 (5 दिन)	एन० आई० ई० कैम्पस एन० सी० ई० आर० टी०	21
7.	पांचवीं कक्षा की अध्यापक हैंडबुक हेतु प्राथमिक विज्ञान में गतिविधि आधारित सामग्रियों के परीक्षण और परिष्कार के लिए कार्यशाला	28 से 31 दिसम्बर, 1987 (4 दिन)	एन० आई० ई० कैम्पस एन० सी० ई० आर० टी०	27
8.	पांचवीं कक्षा की अध्यापक हैंडबुक के लिए प्राथमिक विज्ञान में गतिविधि आधारित सामग्रियों को अंतिम रूप देने हेतु कार्यशाला	18 से 28 जनवरी, 1988	एन० आई० ई० कैम्पस एन० सी० ई० आर० टी०	10
9.	तीसरी, चौथी और पांचवीं कक्षा की अध्यापक हैंडबुक हेतु प्राथमिक विज्ञान में गतिविधि आधारित सामग्रियों के पुनरीक्षण के लिए कार्यशाला	8 से 14 फरवरी, 1988 (7 दिन)	एन० आई० ई० कैम्पस एन० सी० ई० आर० टी०	14
10.	प्राथमिक विज्ञान और किट मैनुअल में तीसरी, चौथी और पांचवीं कक्षा के लिए हैंडबुक को अंतिम रूप देने हेतु कार्यशाला	15 से 27 फरवरी 1988 (13 दिन)	एन० आई० ई० कैम्पस एन० सी० ई० आर० टी०	4

प्रशिक्षण कार्यक्रम

इंडो–एफ०आर०जी० परियोजना के अंतर्गत इस विभाग ने अध्यापक हैंडबुक तथा प्रोटोटाइप किट के परीक्षण सहित प्रशिक्षण पैकेजों के नियोजन हेतु मूल स्रोत व्यक्तियों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया । 1988–89 में परियोजना के अधीन अध्यापक प्रशिक्षण कार्यक्रम के आयोजन की तैयारी हेतु ऐसा किया गया । अपने तकनीकी स्टाफ की उत्पादन प्रौद्योगिकी को अद्यतन करने हेतु इस विभाग ने उनके प्रशिक्षण कार्य को भी अपने हाथ में लिया । शिक्षार्थी अधिनियम 1961 के तहत इसने शिक्षार्थियों को भी प्रशिक्षण दिया । आयोजित किए गए प्रशिक्षण कार्यक्रमों के विवरण तालिक 5.5 में दिए गए हैं ।

विभिन्न प्रेषिती राज्यों हेतु निर्मित किए गए तथा भेजे गए किटों की संख्या :

1.	प्राथमिक विज्ञान किट	335
2.	समेकित विज्ञान किट	97
3.	विज्ञान क्लब किट	120
4.	इंडो–एफ०आर०जी० परियोजना के अंतर्गत नये प्राथमिक विज्ञान किटों का प्रोटोटाइप	60 (भोपाल, इलाहाबाद और दिल्ली के स्कूलों को परीक्षण हेतु भेजे गए)

तालिका 5.5

प्रशिक्षण/अभिविन्यास पाठ्यक्रम आयोजित

क्र०सं०	कार्यक्रम का शीर्षक	तिथियाँ/अवधि	स्थान	सहभागियों की संख्या
1.	मध्यप्रदेश और उत्तर प्रदेश राज्यों के मूल स्रोत व्यक्तियों हेतु प्रशिक्षण कार्यशाला	1 से 6 फरवरी, 1988 (6 दिन)	एन० आई० ई० कैम्पस एन० सी० ई० आर० टी	10
2.	डब्ल्यू०डी० तकनीकी स्टाफ का प्रशिक्षण	वर्ष में वितरित किया गया	74–आई० आई० टी० उ० प्र० लखनऊ – इंडो–डैनिश टूल रूम, दिल्ली –मैसर्स टूल्स मैनुफैक्चरर्स वर्कशाप	12 संबंधित कार्यशालाएं
3.	इंजीनियरी शिक्षार्थियों का प्रशिक्षण	व्यवसाय अनुसार चार आई०टी०आई और एक डिप्लोमाधारी शिक्षार्थी एक वर्ष/दो वर्ष की अवधि का प्रशिक्षण ले रहे हैं।		

परामर्शी सेवाएं

क्र०सं०	परामर्श प्राप्त करनेवाली संख्या	परामर्श का उद्देश्य
1.	यूनेस्को/नेपाल में परियोजना	उत्पादन प्रौद्योगिकी की स्थापना करने हेतु स्कूलों में विज्ञान पाठ्यचर्या की आवश्यकतानुसार उपकरण के डिजाइन की पहचान तथा सिफारिश करना।
2.	इलाहाबाद और भोपाल में कार्यशालाएं	इंडो–एफ०आर०जी० परियोजना के अन्तर्गत उन्हें साधन व कार्मिक संबंधी मार्गदर्शन देना

छः शिक्षा का व्यवसायीकरण

देश में कार्य मूलक शिक्षा के स्तर को ऊपर उठाने के लिए शिक्षा का व्यवसायीकरण विभाग (क) उच्चतर माध्यमिक स्तर पर व्यावसायिक शिक्षा और (ख) सामान्य शिक्षा के एक अभिन्न अंग के रूप में कार्य अनुभव जैसी दो महत्वपूर्ण योजनाएं चला रहा है। उच्चतर माध्यमिक स्तर पर शिक्षा का व्यावसायीकरण और स्कूली शिक्षा के सभी स्तरों पर कार्य अनुभव के कार्यक्रमों से संबद्ध कार्यों को ठीक और प्रभावकारी ढंग से लागू करने के उद्देश्य से विभागीय कार्यक्रम बनाए गए और उन्हें लागू किया गया। 1987–88 वर्ष के दौरान विभिन्न केन्द्रीय मंत्रालयों, राज्य विभागों, स्वैच्छिक संगठनों, विशिष्ट अनुसंधान एवं विकास तथा प्रशिक्षण संस्थाओं, शिक्षकों, छात्रों और अभिभावकों के सहयोग से विभाग द्वारा किए गए कुछ मुख्य कार्यकलाप व्यावसायिक पाठ्यक्रमों और कार्य अनुभव कार्यकलापों पर पाठ्यचर्या तथा शिक्षण–सामग्री को विकसित करना, शिक्षा के व्यवसायीकरण के कार्यक्रमों को लागू करने में लगे हुये व्यक्तियों का अभिविन्यास/प्रशिक्षण देना और विभिन्न संगठनों को परामर्श–सेवा प्रदान करता था।

पाठ्यचर्या और शिक्षण सामग्री का विकास

व्यावसायिक पाठ्यक्रमों के लिए निम्नतम व्यावसायिक सक्षमता पर आधारित पाठ्यचर्याओं, कार्यात्मक अनुभव के लिए शिक्षण–सामग्रियों और विभिन्न प्रकार के कार्य अनुभवों तथा व्यावसायीकरण कार्यक्रमों के लिए व्यापक दिशानिर्देशों का विकास करना था। इन सामग्रियों के विकास के लिए विभाग ने अनेक कार्यशालाएं आयोजित कीं। आयोजित की गई कार्यशालाओं के ब्यौरे सारणी 6.1 में दिए गए हैं।

व्यावसायिक पाठ्यक्रमों और कार्य अनुभव कार्यकलापों पर शिक्षण सामग्री विकसित करने के उद्देश्य से विभाग ने 1987–88 वर्ष में व्यवसायीकरण के विभिन्न विषयों पर वीडियो कार्यक्रम विकसित करने के लिए एक कार्यक्रम शुरू किया। इलेक्ट्रानिकी व्यापार एवं प्रौद्योगिकी विकास निगम (ई०टी०एफ०टी०) के निम्नलिखित विषयों पर, जिनकी पांडुलिपि एन०सी०ई०आर०टी० द्वारा अनुमोदित हो चुकी है, वीडियो कार्यक्रमों का निर्माण करेगा।

1 मेडिकल प्रयोगशाला तकनीशियन
2. सचिवालयी वृत्ति
3. स्कूटर और मोटरसाइकिल की देखभाल और सर्विसिंग
4. खाद्य संसाधन और परिरक्षण
5. अंतर्देशीय मीन उद्योग

अभिविन्यास/प्रशिक्षण कार्यक्रम

विभाग ने व्यावसायिक शिक्षा चलाने वाले राज्यों और निकट भविष्य में व्यावसायिक कार्यक्रम चलाने की योजना बनाने वाले राज्यों के प्रधान कार्यकर्त्ताओं के लिए कार्य–अनुभव पर बारह अभिविन्यास कार्यक्रम और शिक्षा के व्यवसायीकरण पर तीन–चार दिन की अवधि के ग्यारह अभिविन्यास कार्यक्रम आयोजित किए। प्रथम वर्ग के कार्यक्रमों में राजस्थान, हिमाचल प्रदेश, पंजाब, उत्तर प्रदेश, महाराष्ट्र, गुजरात, उड़ीसा और पश्चिम बंगाल के तीन सौ सतहत्तर (377) प्रधान कार्यकर्त्ताओं ने, दूसरे वर्ग के कार्यक्रमों में उत्तर प्रदेश, बिहार, उड़ीसा, केरल, महाराष्ट्र, तमिलनाडु के 475 प्रधान कार्यकर्त्ताओं ने भाग लिया। इन कार्यक्रमों को लागू करने से संबद्ध राज्यों की आवश्यकताओं और परिस्थितियों को ध्यान में रखकर इन्हें चलाया गया। सारणी 6.2 में इन अभिविन्यास कार्यक्रमों के ब्यौरे दिए गए हैं।

सारणी 6.1

शिक्षण सामग्री के विकास के लिए आयोजित की गई कार्यशालाएं

क्र०सं०	कार्यक्रम का नाम	तारीख/अवधि	स्थान	भाग लेने वाले व्यक्तियों की संख्या
1.	खाद्य परिरक्षण पर सक्षमता पर आधारित पाठ्यचर्या के विकास पर कार्यशाला	28 अप्रैल से 2 मई, 1987 (5 दिन)	इंटरमीडिएट बोर्ड हैदराबाद	12
2.	लाइनमैन पर निम्नतम व्यावसायिक सक्षमता पर आधारित पाठ्यचर्या के विकास पर कार्यशाला	1 से 5 सितंबर 1987 (5 दिन)	ईंजीनियरी एवं ग्रामीण प्रौद्योगिकी संस्थान, इलाहाबाद	10
3.	व्यापारिक गार्मेन्ट की अभिकल्पना और निर्माण पर व्यावसायिक पाठ्यक्रम के लिए निम्नतम सक्षमताओं पर आधारित पाठ्यचर्या के विकास पर कार्यशाला	12 से 16 अक्टूबर, 1987 (5 दिन)	व्यावसायिक प्रशिक्षण कालेज नई दिल्ली	11
4.	केटरिंग रेस्तरा प्रबंध पर व्यावसायिक पाठ्यक्रम के लिए सक्षमताओं पर आधारित पाठ्यचर्या के विकास पर कार्यशाला	2 से 6 नवंबर, 1987 (5 दिन)	होटल प्रबंध केटरिंग प्रौद्यो–गिकी एवं अनुप्रयुक्त पोषण संस्थान, बंगलौर	8

क्र०सं०	कार्यक्रम का नाम	तारीख/अवधि	स्थान	भाग लेने वाले वाले व्यक्तियों की संख्या
5.	भौतिक चिकित्सा और व्यावसायिक चिकित्सा में निम्नतम सक्षमता पर आधारित पाठ्यचर्या के विकास पर कार्यशाला	14 से 19 दिसंबर, 1987 (6 दिन)	सफदरजंग हस्पताल नई दिल्ली	10
6.	हस्पताल हाउस कीपर में निम्न सक्षमता पर आधारित पाठ्यचर्या के विकास पर कार्यशाला	3 से 8 जनवरी, 1988 (6 दिन)	अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान, नई दिल्ली	11
7.	सैनिटरी/स्वास्थ्य निरीक्षकों के लिए निम्नतम सक्षमता पर आधारित पाठ्यचर्या के विकास पर कार्यशाला	23 से 28 मार्च, 1988 (6 दिन)	भुवनेश्वर	
8.	कार्यअनुभव के विभिन्न लक्ष्य समूह की निर्देशक रेखाओं के विकास पर कार्यशाला (चरण-I)	8 से 12 सितंबर, 1987 (5 दिन)	एस० आई० एस० ई० जबलपुर	12
9.	कार्य अनुभव के विभिन्न लक्ष्य समूह की निर्देशक रेखाओं के विकास पर कार्यशाला (चरण-II)	13 और 14 सितंबर, 1987 (2 दिन)	एस० आई० एस० ई० जबलपुर	14
10.	व्यावसायिक शिक्षकों के सेवा पूर्व और सेवाकालीन प्रशिक्षण की निर्देशक रेखाओं के विकास पर कार्यशाला	27 से 31 अक्टूबर, 1987 (5 दिन)	क्षेत्रीय शिक्षा कालेज मैसूर	11
11.	घरेलू बिजली उपकरण के सहित हिन्दी रूपांतरण को अंतिम रूप देने पर कार्यशाला	16 से 20 नवंबर, 1987 (5 दिन)	एन० आई० ई० कैम्पस एन० सी० ई० आर० टी०	3

सारणी 6.2
+2 स्तर के व्यवसायीकरण पर राज्य अधिकारियों/प्रधानाचार्यों/शिक्षा अधिकारियों तथा अन्य प्रधान कार्यकर्त्ताओं के लिए अभिविन्यास कार्यक्रमों के ब्यौरे

क्र०सं०	राज्य	तारीख/अवधि	स्थान	भाग लेने वाले व्यक्तियों की संख्या
1.	राजस्थान	27 से 30 अक्टूबर, 1987 (4 दिन)	एस० आई० ई० आर० टी० उदयपुर	35
2.	राजस्थान	2 से 5 नवंबर, 1987 (4 दिन)	एस० आई० ई० आर० टी० उदयपुर	47
3.	हिमाचल प्रदेश	18 से 20 नवंबर, 1987 (3 दिन)	एस० आई० ई० आर० टी० उदयपुर	27
4.	उत्तर प्रदेश	18 से 21 नवंबर, 1987 (4 दिन)	माध्यमिक शिक्षा परिषद् इलाहाबाद (उ०प्र०)	33
5.	उत्तर प्रदेश	23 से 26 नवंबर, 1987 (4 दिन)	माध्यमिक शिक्षा परिषद् इलाहाबाद (उ०प्र०)	27
6.	महाराष्ट्र	21 से 24 दिसंबर, 1987 (4 दिन)	वी० इ० एण्ड टी० क्षेत्रीय कार्यालय, नासिक	44
7.	महाराष्ट्र	5 से 8 जनवरी, 1988 (4 दिन)	नागपुर	
8.	उड़ीसा	18 से 21 जनवरी, 1988 (4 दिन)	पुरी	43
9.	पश्चिम बंगाल	2 से 5 फरवरी, 1988 (4 दिन)	तकनीकी शिक्षक प्रशिक्षण संस्थान, चंडीगढ़	47
10.	गुजरात	23 से 26 फरवरी, 1988 (4 दिन)	गांधी नगर, (गुजरात)	42

इन कार्यक्रमों के अतिरिक्त राजस्थान, उत्तर प्रदेश और महाराष्ट्र राज्यों के अनुरोध पर इन राज्यों के शिक्षक प्रशिक्षण संस्थाओं के विशेषज्ञों और समन्वयकों के लिए अजमेर और अकोला में अभिविन्यास कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसमें 64 समन्वयकों को अभिविन्यस्त किया गया। सारणी 6.3 में इन कार्यक्रमों के ब्यौरे दिए गए हैं।

सारणी 6.3

क्र०सं०	कार्यक्रम का नाम	तारीख/अवधि	स्थान	भाग लेने वाले व्यक्तियों की संख्या
1.	व्यावसायिक शिक्षकों के सेवाकालीन प्रशिक्षण के लिए महाराष्ट्र, उत्तर प्रदेश और राजस्थान के समन्वयकों/प्रधान कार्यकर्ताओं का अभिविन्यास कार्यक्रम	18 से 22 फरवरी, 1988 (5 दिन)	कृषि कालेज पंजाब व कृषि विद्यापीठ, अकोला	12
2.	व्यावसायिक शिक्षकों के सेवाकालीन प्रशिक्षण के लिए महाराष्ट्र, उत्तर प्रदेश और राजस्थान के समन्वयकों/प्रधान व्यक्तियों का अभिविन्यास कार्यक्रम	9 से 11 मार्च, 1988 (3 दिन)	अजमेर	52

सारणी 6.4
कार्य अनुभव में राज्य अधिकारियों/प्रधानाचार्यों/शिक्षा अधिकारियों और प्रधान कार्यकर्ताओं के लिए अभिविन्यास कार्यक्रम के ब्यौरे ।

क्र०सं०	राज्य संगठन	तारीख/अवधि	स्थान	भाग लेने वाले व्यक्तियों की संख्या
1.	केरल	22 से 24 सितंबर, 1987 (3 दिन)	प्राथमिक शिक्षा संस्थान, त्रिचुर	55
2.	महाराष्ट्र	21 से 24 दिसंबर, 1987 (4 दिन)	एस० सी० ई० आर० टी० पुने	31
3.	तमिलनाडु	18 से 21 जनवरी, 1988 (4 दिन)	स्कूल शिक्षा निदेशालय, मद्रास	43
4.	केन्द्रीय विद्यालय	21 से 23 जनवरी, 1988 (3 दिन)	केन्द्रीय विद्यालय न०-1 दिल्ली	47
5.	उत्तर प्रदेश	29 और 30 जनवरी, 1988, (2 दिन)	केन्द्रीय प्रशिक्षण संस्थान, इलाहाबाद	65
6.	उतर प्रदेश	2 और 3 फरवरी, 1988 (2 दिन)	केन्द्रीय प्रशिक्षण संस्थान, इलाहाबाद	60
7.	बिहार	10 से 13 फरवरी 1988 (4 दिन)	नारायणी कन्या विद्यालय, पटना	32
8.	उड़ीसा	7 से 10 मार्च, 1988 तक (4 दिन)	डा० वी० एम० प्रशिक्षण कालेज, संबलपुर	42
9.	नवोदय विद्यालय	7 से 10 मार्च 1988 (4 दिन)	एस० आई० ई० इलाहाबाद	42
10.	केरल	28 से 30 मार्च, 1988 (3 दिन)	त्रिचुर	30
11.	केरल	31 मार्च से 3 अप्रैल 1988 (4 दिन)	मित्रानिकेतन वेल्लनाद, त्रिवेन्द्रम	28

इन कार्यक्रमों के अतिरिक्त विभाग ने राज्य अधिकारियों/प्रधानाचार्यों/शिक्षा अधिकारियों तथा अन्य प्रधान कार्यकर्ताओं के लिए कार्य अनुभव कार्यक्रमों को लागू करने के विभिन्न पहलुओं पर 11 अभिविन्यास कार्यक्रम आयोजित किए । सारणी 6.4 में इन कार्यक्रमों के ब्यौरे दिए गए हैं ।

बैठक/संगोष्ठी

यह विभाग शिक्षा की इन योजनाओं से संबंधित एजेन्सियों को व्यावसायिक शिक्षा और कार्य अनुभव के बारे में सूचना प्रदान करने में एक प्रधान एजेन्सी के रूप में कार्य कर रहा है । इस संबंध में विभाग ने 1987-88 के दौरान अंतर्राष्ट्रीय/राष्ट्रीय संगोष्ठियों और कार्यकारी समूह बैठकों का आयोजन किया जैसा कि सारणी 6.5 में दर्शाया गया है ।

परामर्श सेवा

परिचर्चा कराने, बैठक आयोजित करने और संगोष्ठियों तथा सम्मेलनों आदि में भाग लेने जैसे निरंतर कार्य करके इस विभाग ने विभिन्न राज्य सरकारों तथा अन्य एजेन्सियों को परामर्श सेवा प्रदान की । आलोच्य वर्ष में इस विभाग ने विभिन्न एजेन्सियों से परामर्श-सेवा प्रदान की जिसका ब्यौरा सारणी 6.6 में दिया गया है ।

सारणी 6.5

1987-88 में आयोजित की गई बैठकें/संगोष्ठियाँ

क्र०सं०	बैठक/संगोष्ठी का नाम	अवधि	स्थान	भाग लेने वाले व्यक्तियों की संख्या
1.	एशिया की औद्योगिक शिक्षा में पर्यावरण शिक्षा के निगमन पर यूनेस्को उपक्षेत्रीय प्रशिक्षण संगोष्ठी	20 से 27 अप्रैल 1988	एन० आई० ई० कैम्पस एन० सी० ई० आर० टी०	25
2.	कार्य अनुभव का वित्तीय आकलन तैयार करने के लिए कार्यकारी समूह बैठक	12 से 16 अक्तूबर, 1987	एन० आई० ई० कैम्पस एन० सी० ई० आर० टी०	6
3.	शिक्षा के व्यवसायीकरण पर राष्ट्रीय संगोष्ठी	16 से 18 मार्च 1988	एन० आई० ई० कैम्पस एन० सी० ई० आर० टी०	11

सारणी 6.6

उपलब्ध करायी गई परामर्श सेवा

क्र०सं०	संगठन का नाम	अवधि	परामर्श
1.	राज्य शिक्षा संस्थान, गोवा	11 से 15 अप्रैल 1987	पहली से दसवीं कक्षाओं की कार्य अनुभव पाठ्यचर्या के विकास की कार्य-शाला में भाग लिया ।
2.	मानव संसाधन विकास मंत्रालय	25 और 26 अप्रैल 1987	विज्ञान भवन में आयोजित शिक्षा सचिवों और शिक्षा मंत्रियों के सम्मेलन में भाग लिया । इस सम्मेलन में शिक्षा के व्यवसायीकरण के लिए केन्द्रीयतः प्रायोजित विषय पर एक प्रारूप लेख प्रस्तुत किया गया
3.	राष्ट्रीय जन सहयोग तथा बाल विकास संस्थान, नई दिल्ल	1 मई, 1987	एक संगोष्ठी में भाग लिया और आवासिक विद्यालयों में बच्चों के व्यावसायिक प्रशिक्षण के विषय पर एक व्याख्यान दिया गया ।
4.	सी०एच०ई०बी०, नई दिल्ली	5 से 7 मई, 1987	ग्लूकोमा पर विशेष बल देते हुए समुदाय नेत्र स्वास्थ्य शिक्षा के प्रशिक्षण पर विश्व स्वास्थ्य संगठन क्षेत्रीय कार्यालय के सहयोग से सी०एच०ई०बी० द्वारा आयोजित कार्यशाला में भाग लिया ।
5.	मानव संसाधन विकास मंत्रालय	11 मई 1987	विभाग ने शिक्षा के व्यवसायीकरण की केन्द्रीयतः प्रयोजित योजना के संदर्भ में शिक्षक प्रशिक्षण और पाठ्यचर्या विकास कार्यक्रम के वित्तीय आकल विकसित किया।
6.	इलेक्ट्रानिकी व्यापार एवं प्रौद्योगिकी विकास निगम, नई दिल्ली	14 मई, 1987	व्यावसायिक पाठ्यक्रमों के विशेष संदर्भ में ई०टी० एण्ड टी० द्वारा विकसित किए गए कुछ वीडियो कार्यक्रमों का पुनरीक्षण ।
7.	इलाहाबाद विश्वविद्यालय, उत्तर प्रदेश	14 से 18 मई, 1987	वाणिज्य की विश्वविद्यालय अनुदान आयोग पाठ्यचर्या विकास समिति की बैठक में भाग लिया ।
8.	केन्द्रीय समाज कल्याण परिषद्, नई दिल्ली	19 मई, 1987	महिलाओं के हित के लिए, सी०एस०डब्लू०बी० द्वारा देश में चलाए जा रहे संघटित एवं व्यावसायिक पाठ्यक्रमों का पाठ्यचर्या विकास ।
9.	राजस्थान सरकार, जयपुर	21 से 22 मई 1987	राजस्थान में व्यावसायिक शिक्षा के विषय पर आयोजित की गई संगोष्ठी में भाग लिया ।
10.	केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, दिल्ली	23 मई, 1987	इंजीनियरी पर आधारित पांच व्यावसायिक पाठ्यक्रमों के पाठ्यविवरणों के प्रारूप को अंतिम रूप दिया गया ।
11.	केन्द्रीय समाज कल्याण परिषद्, नई दिल्ली	मई, 1987	महिलाओं की व्यावसायिक शिक्षा पर आयोजित की गई बैठक में भाग लिया।

क्र०सं०	संगठन का नाम	अवधि	परामर्श
12.	यूनेस्को, बैंकाक	23 जून से 2 जुलाई,	महिलाओं की व्यावसायिक शिक्षा पर 1987 तक आयोजित की गई ए० पी० आई० ई० डी० योजना बैठक ।
13.	इलाहाबाद विश्वविद्यालय, उत्तर प्रदेश	25 से 27 जून 1987	वाणिज्य में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग पाठ्यचर्या का विकास ।
14.	पंजाब शिक्षा बोर्ड	25 जून, 1987	पंजाब में व्यावसायीकरण योजना का विकास ।
15.	शिक्षा निदेशालय, दिल्ली	2 जुलाई, 1987	व्यावसायिक शिक्षा और कार्य अनुभव के विशेष संदर्भ में संघ राज्य क्षेत्र दिल्ली द्वारा एन० ई० पी० को लागू करना
16.	महानिदेशालय	7 जुलाई, 1987	भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थानों संबंधन पर एन० सी० वी० टी० उप समिति में भाग लेना ।
17.	आर्मी पब्लिक स्कूल, नई दिल्ली	7 जुलाई, 1987	गृह विज्ञान में पी०जी०टी० का चयन ।
18.	इलेक्ट्रानिकी व्यापार एवं प्रौद्योगिकी विकास निगम, नई दिल्ली	14 जुलाई, 1987	शिक्षा के व्यावसायीकरण के क्षेत्र में वीडियो निर्माण ।
19.	ई० टी० एण्ड० टी० डी० निगम, नई दिल्ली	20 जुलाई 1987	शिक्षा के व्यवसायीकरण के क्षेत्र में वीडियो निर्माण को अनुवर्त्तन ।
20.	एन० आई० ई० पी० ए०, नई दिल्ली	27 से 31 जुलाई 1987	माध्यमिक शिक्षा पर यूनेस्को द्वारा प्रायोजित योजना समूह की बैठक ।
21.	इलाहाबाद विश्वविद्यालय उत्तरप्रदेश	28 जुलाई से 9 अगस्त 1987	वाणिज्य में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग पाठ्यचर्या का विकास ।
22.	सी० बी० एस० ई०, नई दिल्ली	3 अगस्त, 1987	इलेक्ट्रानिकी प्रौद्योगिकी में पाठ्य विवरण के प्रारूप को अंतिम रूप देना ।
23.	एस० आई० ई०, जम्मू और कश्मीर, श्रीनगर	17 से 21 अगस्त 1987	कार्य अनुभव और व्यवसायीकरण पर अभिविन्यास कार्यक्रम।
24.	डा० जान निकोलस, अध्यक्ष, माध्यमिक शिक्षा विभाग, कैनबरा उच्च शिक्षा कालेज, आस्ट्रेलिया	19 अगस्त, 1987	कार्य अनुभव और व्यावसायीकरण की समीक्षा ।
25.	नीपा, नई दिल्ली	15 अगस्त, 1987	देश में चल रहे व्यवसायीकरण कार्यक्रम के बारे में देश के 45 विद्यालयों की महिला प्रिंसिपलों को बताया गया।
26.	शिक्षा सचिव, हिमाचल प्रदेश सरकार		पाठ्यक्रमों के चयन और निरूपण के विशेष संदर्भ में हिमाचल प्रदेश के पाठ्यक्रमों में व्यावसायिक पाठ्यक्रम का समावेश करने के विषय पर चर्चा ।
27.	डी० आई० ई० टी० का कृतिक बल, विज्ञान भवन और एन० सी० ई० आर० टी०	1 से 2 सितंबर 1987	बैठक में भाग लेना ।
28.	विद्या भारती, नई दिल्ली	28 सितंबर, 1987	कार्य अनुभव के कार्यकलाप ।
29.	शिक्षा विभाग उत्तर प्रदेश	15 से 17 अक्टूबर 1987	कार्य अनुभव के क्षेत्र में अधिकारियों का प्रशिक्षण।
30.	डी० जी० ई० एण्ड० टी० नई दिल्ली	29 अक्टूबर, 1987	महिलाओं के प्रशिक्षण और रोजगार पर एन० सी० ई० टी० समिति की बैठक।
31.	दिल्ली पाठ्यपुस्तक ब्यूरो	4 नवंबर, 1987	कार्य अनुभव की निर्देशक रेखाओं और उदाहरणों का मुद्रण ।
32.	भारतीय आयुर्विज्ञान शिक्षा-उन्नति संघ	23 से 25 नवंबर, 1987	आयुर्विज्ञान शिक्षा पर दक्षिण पूर्व क्षेत्रीय सम्मेलन ।
33.	क्षेत्रीय शिक्षा कालेज	4 दिसंबर, 1987	व्यावसायिक शिक्षा पर संगोष्ठी
34.	केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, नई दिल्ली	11 दिसंबर, 1987	कार्य अनुभव की निर्देशक रेखाओं का विकास ।
35.	विज्ञान केन्द्र निदेशालय का कार्य अनुभव एकक, वसंत विहार, नई दिल्ली	22 दिसंबर 1987	कार्य अनुभव कार्यकलापों पर कुशलता प्रशिक्षण पाठ्यक्रम ।
36.	हिमाचल प्रदेश का राज्य व्यावसायिक शिक्षा परिषद, शिमला	4 जनवरी, 1988	व्यावसायिक शिक्षा पर राज्य के प्रधान कार्यकर्त्ताओं की बैठक ।
37.	मानव संसाधन विकास मंत्रालय, शास्त्री भवन नई दिल्ली	25 जनवरी, 1988	अंतर्राष्ट्रीय शिक्षा सम्मेलन के 41वें सत्र के लिए रोजगार के संबंध में माध्यमिकोत्तर शिक्षा के विविधीकरण' के विषय पर यूनेस्को प्रश्नावली के कार्यकारी समूह की बैठक ।
38.	शिक्षा निदेशालय, उत्तर प्रदेश	1 फरवरी, 1988	कार्य अनुभव के कार्यक्रमों के विशेष सभों को देखने के लिए वाराणसी की दो संस्थाओं, क्वीन्स इण्टर कालेज और गवर्नमेंट गर्ल्स इण्टर कालेज का दौरा ।

1987-88

क्र०सं०	संगठन का नाम	अवधि	परामर्श
39.	राष्ट्रीय शैक्षिक योजना और प्रशासन संस्थान, नई दिल्ली	4 फरवरी, 1988	शैक्षिक योजना और प्रशासन में चौथे अंतर्राष्ट्रीय डिप्लोमा कार्यक्रमों में भाग लेने वालों के लिए बैठक आयोजित की गई।
40.	एच० आर० डी० द्वारा नियुक्त की गई बालिकाओं और महिलाओं के लिए एन०सी०ई०आर०टी० में आयोजित व्यावसायिक पाठ्यक्रम का तदर्थ समूह।	8 फरवरी, 1988	तदर्थ समूह की पहली बैठक।
41.	शिक्षा निदेशालय, दिल्ली	10 फरवरी, 1988	दिल्ली में उच्चतर माध्यमिक शिक्षा के व्यवसायीकरण के विषय पर बैठक।
42.	शिक्षा के व्यवसायीकरण पर सी०ए०बी०ई० समिति	15 फरवरी, 1988	ग्रामीण व्यावसायिक पाठ्यक्रमों पर तदर्थ समूह की पहली बैठक।
43.	केन्द्रीय स्वास्थ्य शिक्षा ब्यूरो, नई दिल्ली	17 फरवरी, 1988	स्कूली उम्र के बच्चों की स्वास्थ्य शिक्षा पर बैठक– कार्यान्वयन की निर्देशक रेखाएं।
44.	एन० सी० ई० आर० टी० नई दिल्ली में आयोजित एम० एच० आर० डी० द्वारा नियुक्त लड़कियों और महिलाओं के लिए व्यावसायिक पाठ्यक्रम पर तदर्थ समूह	1 मार्च, 1988	समूह की दूसरी बैठक।
45.	एन० सी० ई० आर० टी० नई दिल्ली में आयोजित ग्रामीण क्षेत्रों के लिए व्यावसायिक पाठ्यक्रमों के निरूपण पर तदर्थ समूह	8 मार्च, 1988	समूह की दूसरी बैठक।
46.	एन० सी० ई० आर० टी०, नई दिल्ली में आयोजित (एम० एच० आर० डी० द्वारा नियुक्त) लड़कियों और महिलाओं के लिए व्यावसायिक पाठ्यक्रमों पर तदर्थ समूह की बैठक।	23 मार्च, 1988	समूह की बैठक।
47.	राष्ट्रीय उद्यमवृत्ति और लघु व्यवसाय विकास संस्थान, ओखला, नई दिल्ली	23 से 28 मार्च, 1988	उद्यमवृत्ति विकास पर राष्ट्रीय कार्यशाला।

प्रकाशन

1987–88 में विभिन्न प्रकार के विकास और कार्यकलान करके विभाग ने अनेक प्रकाशन प्रकाशित किए जो कि कार्य अनुभव और व्यावसायिक छात्रों और शिक्षकों और शिक्षा नियोजकों तथा प्रशासकों के लिए उपयोगी हैं। आलोच्य वर्ष में प्रकाशित कुछ प्रकाशन निम्नलिखित हैं :

(क) छठी से दसवीं कक्षाओं तक के लिए कार्य अनुभव में आदर्श शिक्षण सामग्री

1. बेसिक स्किल्स इन कार्पेण्टरी (कक्षा 6)
2. क्रिएटिव प्रिंटिंग (कक्षा 7/8)
3. लेदर वर्क (कक्षा 6, 7, 8)
4. इलेक्ट्रिसीटी एट वर्क (कक्षा 6–8)
5. शीट मेटल वर्क (कक्षा 7–8)
6. मिल्क प्रोडक्शन एण्ड हैंडलिंग (कक्षा 9–10)
7. मिल्क एण्ड मिल्क प्रोडक्ट्स (कक्षा 9–10)
8. वुडक्रैफ्ट (कक्षा 9)
9. जनरल हार्टिकल्चर (कक्षा 9–10)
10. मील्स फार द फेमिली वाल्यूम–1 (कक्षा 9)
11. केयर आफ द हाउसहोल्ड (कक्षा 9–10)
12. इन्ट्रोडक्शन टू हाउस वायरिंग (कक्षा 9–10)
13. प्लांट प्रोटेक्शन (कक्षा 9–10)
14. रिपेयर एण्ड मेंटेनेन्स आफ हाउस–होल्ड इलेक्ट्रिकल एप्लायन्सेज (कक्षा 9–10)
15. इलेक्ट्रानिक्स टेक्नालाजी (कक्षा 9–10)
16. फोटोग्राफी (कक्षा 9)
17. बेसिक आफिस प्रैक्टिस (कक्षा 9–10)
18. इन्ट्रोडक्शन टू प्लबिंग (कक्षा 9–10)

(ख) शिक्षा के व्यवसायीकरण की निम्नतम सक्षमता पर आधारित।

1. फिजियोथिरेपी एण्ड आकुपेशनल थिरेपी
2. हास्पिटल हाउस कीपर
3. फूड प्रेजरवेशन एण्ड प्रोसेसिंग
4. केटरिंग एण्ड रेस्टराण्ट मैनेजमेण्ट
5. टेक्सटाइल डिजाइनिंग
6. इन्स्टीट्यूशन हाउस कीपिंग
7. कामर्शियल गार्मेण्ट डिजाइनिंग एण्ड पैकिंग
8. लाइनमैन

(ग) नवोदय विद्यालयों के लिए कार्य अनुभव में पाठ्यचर्या निर्देशन।

(घ) गाइड–लाइन्स फार डेवलपिंग स्कूल इन्डस्ट्री लिंकेज।

(ङ) सब–रीजनल ट्रेनिंग सेमिनार आन द इनकार्पोरेशन आफ एन्वायरनमेण्टल एजुकेशन इन्टू इन्डस्ट्रीयल एजुकेशन फॉर एशिया।

(च) वर्क एक्सपीरियन्स इन स्कूल एजुकेशन गाइड–लाइन्स (इंग्लिश एण्ड हिन्दी)।

सात अध्यापक शिक्षा, विशेष शिक्षा और विस्तार सेवा

अध्यापक शिक्षा, विशेष शिक्षा और विस्तार सेवा विभाग (डी०टी०ई०एस०ई०ई०एस०) का कार्य अध्यापक–शिक्षकों की व्यावसायिक सक्षमता में सुधार लाने के साथ-साथ स्कूल अध्यापकों की सेवा पूर्व और सेवाकालीन शिक्षा में गुणतात्मक सुधार लाना है । विभाग अध्यापक–शिक्षा के क्षेत्र में अनुसंधान और प्रायोगिक अध्ययन करने, शिक्षण सामग्री तैयार करने और प्रशिक्षण तथा विस्तार–कार्यकलाप करने में, विकलांगों की विशेष शिक्षा में, अनुसूचित जाति तथा अनुसूचित जनजाति के लोगों की शिक्षा में और महिलाओं की शिक्षा में कार्यरत है । विभाग राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद् (एन०सी०टी०ई०) के एक सचिवालय के रूप में काम करता है ।

अध्यापक शिक्षा

प्रारंभिक और माध्यमिक अध्यापकों के शिक्षा–कार्यक्रमों में सुधार लाने के लिए अनुसंधान एवं प्रायोगिक अध्ययन करना, अध्यापक–शिक्षकों और अध्यापक प्रशिक्षार्थियों के प्रयोग के लिए शिक्षण सामग्री तैयार करना और अध्यापक–शिक्षकों तथा सेवाकालीन अध्यापकों और प्रशिक्षित/अभिविन्यस्त करना इस विभाग के कुछ मुख्य कार्यकलाप हैं ।

1987–88 वर्ष में अध्यापक–शिक्षा से संबद्ध चार अनुसंधान अध्ययनों के अंतर्गत किए जा रहे कार्यकलापों को जारी रखा गया । ये चार अनुसंधान अध्ययन थे–बी०एड० के छात्रों के मूल्य अभिविन्यास पर एक परियोजना, अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति और गैर अनुसूचित जाति/गैर अनुसूचित जनजाति के छात्र अध्यापकों की उपलब्धि के साथ संकल्पना, प्रवृत्ति और समायोजन के संबंधों का अध्ययन, भारत में अध्यापकों की स्थिति का अध्ययन और शिक्षा कालेजों में छात्र शिक्षण और अन्य प्रायोगिक कार्य के पर्यवेक्षण के साधनों के विकास की परियोजना । अध्यापक शिक्षा पर किए जा रहे अनुसंधान कार्य को आगे बढ़ाने के लिए विभाग ने तीन कार्यक्रम आयोजित किए जिनके ब्यौरे सारणी–7.1 में दिए गए हैं ।

1987–88 वर्ष में विकास कार्यकलापों का मुख्य लक्ष्य राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 में उल्लेखित प्रमोद क्षेत्रों के संदर्भ में अध्यापक शिक्षा पाठ्यचर्या के नवीकरण से संबद्ध मामलों का पता लगाना और अध्यापक–शिक्षकों तथा अध्यापक–प्रशिक्षार्थियों के लिए शिक्षण–सामग्री विकसित करना रहा है । इस संबंध में विभाग ने अनेक कार्यशालाएं/बैठकें संगोष्ठियां आयोजित की जिनका ब्यौरा सारणी 7.2 में दिया गया है ।

सारणी 7.1

क्र०सं०	कार्यक्रम का नाम	तारीख/अवधि	स्थान	भाग लेने वालों की संख्या
1.	अनुसंधान परियोजनाओं के नियोजन और अभिकल्पना पर कार्यशाला	2 से 7 नवंबर 1987	हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय शिमला	21
2.	प्रारंभिक अध्यापक शिक्षा में अनुसंधान कार्य को आगे बढ़ाने के लिए प्रधान व्यक्तियों का अभिविन्यास कार्यक्रम	4 से 8 नवंबर, 1987	विद्या भवन टीचर्स कालेज उदयपुर	19
3.	प्रारंभिक अध्यापक शिक्षा में अनुसंधान कार्य को आगे बढ़ाने के लिए कार्यकारी समूह की बैठक	15 और 16 मार्च, 1988	एन० आई० ई० कैम्पस एन० सी० ई० आर० टी०	6

सारणी 7.2

प्रारंभिक और माध्यमिक अध्यापक शिक्षा की शिक्षण–सामग्री विकसित करने के लिए आयोजित की गई कार्यशाला/बैठक

क्र०सं०	कार्यक्रम का नाम	तारीख/अवधि	स्थान	भाग लेने वाले व्यक्तियों की संख्या
1.	गणित के अध्यापकों का मूल्यांकन करने के साधन विकसित पर कार्यशाला	6 से 10 जुलाई 1987 (5 दिन)	डी० ए० वी० कालेज देहरादून	38
2.	प्रारंभिक अध्यापक शिक्षकों को पर्यावरण–अध्ययन का शिक्षण कराने की विषयवस्तु एवं कार्य प्रणाली की गुटिका तैयार करने के लिए कार्यकारी समूह की बैठक ।	31 अगस्त, 1987	एन० आई० ई० कैम्पस एन० सी० ई० आर० टी०	20
3.	भाषा साधनों को अंतिम रूप देने के लिए राष्ट्रीय कार्यशाला	28 से 30 सितंबर, 1987 (3 दिन)	एन० आई० ई० कैम्पस एन० सी० ई० आर० टी०	
4.	सामाजिक विज्ञान में विषयवस्तु एवं कार्य–प्रणाली का प्रश्न बैंक विकसित करने के लिए कार्यकारी समूह की बैठक ।	30 नवंबर से 4 दिसंबर, 1987 (5 दिन)	एन० आई० ई० कैम्पस एन० सी० ई० आर० टी०	8
5.	अध्यापक शिक्षा पाठ्यचर्या ढांचा के पुनरीक्षण का उपागम लेख विकसित करने के लिए विशेषज्ञ समूह की बैठक ।	27 से 29 फरवरी, 1988 (3 दिन)	एन० आई० ई० कैम्पस एन० सी० ई० आर० टी०	
6.	प्रारंभिक अध्यापक प्रशिक्षण संस्थाओं में पर्यावरण अध्ययनों के शिक्षण पर शिक्षण सामग्री विकसित करने के लिए एक कार्यशाला	7 से 9 मार्च 1988	एन० आई० ई० कैम्पस एन० सी० ई० आर० टी०	8
7.	प्रारंभिक अध्यापक–शिक्षकों के लिए सामाजिक विज्ञान में विषयवस्तु एवं कार्यप्रणाली की गुटिका पर परीक्षण मद विकसित करने पर एक कार्यशाला ।	16 से 19 मार्च, 1988	एन० आई० ई० गोवा	8

आलोच्य वर्ष में अध्यापक–शिक्षकों और स्कूल अध्यापकों को प्रशिक्षित/अभिविन्यस्त करना विभाग का एक महत्वपूर्ण कार्य रहा है । विभाग ने स्कूल अध्यापकों के सामूहिक अभिविन्यास कार्यक्रम (पी०एम० ओ०एस०टी०) के अंतर्गत 5 लाख सेवाकालीन अध्यापकों के वार्षिक अभिविन्यास से संबंधित सभी कार्यकलापों को समन्वयित किया । इस कार्यक्रम का आयोजन राज्य सरकार के सहयोग से किया गया । प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन तीन स्तरों पर किया गया । एन०सी०ई०आर० टी० ने राज्यों/संघ राज्य क्षेत्रों के प्रधान कार्यकर्त्ताओं को प्रशिक्षित किया । इन प्रशिक्षित प्रधान कार्यकर्त्ताओं ने राज्य/संघ राज्य क्षेत्र स्तर पर लगभग 1000 ज्ञान–साधन व्यक्तियों को प्रशिक्षित किया । प्राथमिक, उच्च प्राथमिक और माध्यमिक कक्षाओं के सेवाकालीन अध्यापकों का अभिविन्यास करने के उद्देश्य से 10 दिन की अवधि के 9000 से भी अधिक प्रशिक्षण कैम्प आयोजित करने में देश भर में फैले लगभग 2,500 प्रशिक्षण केन्द्रों का सहयोग लिया गया । 1987–88 में इस कार्यक्रम के अंतर्गत लगभग 4.55 लाख अध्यापक अभिविन्यस्त किए गए ।

एस०आई०ई/एन०सी०ई०आर०टी० ने, जो कि राज्य/संघ राज्य क्षेत्र स्तर पर कार्यक्रम लागू करने की प्रधान एजेन्सियां हैं, अभिविन्यास कार्यक्रमों का मूल्यांकन किया । इसके अतिरिक्त एन०सी०ई०आर०टी० ने भी एन० आई०ई० में अपने संकाय और क्षेत्रीय शिक्षा–कालेजों की सहायता से कार्यक्रम की प्रमानिता के संबंध में सूचना एकत्रित की । राज्य/संघ राज्य क्षेत्र स्तर पर कार्यक्रम के कार्यान्वियन की समीक्षा के लिए आयोजित की गई बैठक में प्राप्त हुए पुनर्भरण के आधार पर एक रिपोर्ट तैयार किया गया और उस पर चर्चा की गई । 6 से 8 सितंबर, 1987 तक आयोजित की गई समीक्षा बैठक में राज्य/संघ राज्य क्षेत्र स्तर की प्रधान एजेन्सियों के प्रतिनिधि और एन०आई०ई० तथा क्षेत्रीय शिक्षा कालेज के संकाय सदस्यों ने भाग लिया । समीक्षा–बैठक में दिए गए सुझावों के आधार पर 1988–89 में आयोजित किए जाने वाले अध्यापकों के अभिविन्यास की विषय–वस्तु का और सेवाकालीन अध्यापक शिक्षा के पैकेजों के माड्यूलों का पुनरीक्षण करने का काम शुरू कर दिया गया । कार्यक्रम में प्रचार माध्यम के सहयोग की भी समीक्षा की गई और सेवाकालीन अध्यापकों के लिए अभिविन्यास कार्यक्रमों की विषय–वस्तु के कुछ पहलु से संबद्ध कुछ नए वीडियो कार्यक्रम का निर्माण कार्य शुरू करने का पहल किया गया।

स्कूल अध्यापकों के सामूहिक अभिविन्यास कार्यक्रम (पी०एम०ओ० एस०टी०) के अंतर्गत आयोजित किए गए कार्यक्रमों के अतिरिक्त विभाग ने अध्यापक शिक्षकों के लिए कुछ अभिविन्यास एवं अध्यापक प्रशिक्षण कार्यक्रम भी आयोजित किए । इन कार्यक्रमों के ब्यौरे सारणी 7.3 में दिए गए हैं ।

सारणी 7.3

अध्यापक शिक्षकों/अध्यापकों के लिए अभिविन्यास/प्रशिक्षण कार्यक्रम

क्र०सं०	कार्यक्रम का नाम	तारीख/अवधि	स्थान	भाग लेने वाले व्यक्तियों की संख्या
1.	पूर्वी प्रदेश के अध्यापक शिक्षकों के लिए सूक्ष्म शिक्षण पर अभिविन्यास पाठ्यक्रम ।	31 अगस्त से 5 सितंबर 1987 (6दिन)	पटना विश्वविद्यालय, पटना	35
2.	उभरते भारतीय समाज में अध्यापक और शिक्षा पर अध्यापक–शिक्षकों के लिए अभिविन्यास पाठ्यक्रम ।	16 से 24 नवंबर, 1987 (9 दिन)	अन्नामलाई विश्वविद्यालय तिरुपति	32
3.	उभरते भारतीय समाज में अध्यापक शिक्षा पर अध्यापक शिक्षा के प्रधान कार्यकर्ताओं के लिए अभिविन्यास कार्यक्रम ।	24 से 31 नवंबर, 1987 (8 दिन)		28
4.	स्कूल के प्रधानाचार्यों और अध्यापकों के लिए अभिविन्यास पाठ्यक्रम ।	24 से 28 नवंबर, 1987	जम्मू	37
5.	सूक्ष्म शिक्षण पर अभिविन्यास पाठ्यक्रम ।	22 से 27 फरवरी, 1988 (6 दिन)	धारवाड़	28
6.	बी० एड० के छात्रों के प्रयोजन अभिविन्यास पर प्रशिक्षण कार्यक्रम ।	9 से 14 फरवरी, 1988 (6 दिन)	इन्दौर	41

विशेष शिक्षा

विभाग ने विकलांगों की शिक्षा के क्षेत्र में अनेक अनुसंधान, विकास, प्रशिक्षण और विस्तार कार्यकलाप अपने हाथ में लिया । समाकालित और विशेष स्कूलों से लिए गए कम सुनने वाले बच्चों की भाषाई सक्षमताओं का पता लगाने के लिए किए गए अध्ययन के एक भाग के रूप में कम सुनने वाले बच्चों का निर्धारण करने का एक व्यापक साधन विकसित किया गया । इस साधन को स्कूली शिक्षा के प्रारंभिक स्तर के हिन्दी बोलने वाले छात्रों की सहायता से मानवीकृत किया गया । आलोच्य वर्ष में अध्ययन के लिए आंकड़ा एकत्रित करने का काम भी शुरू किया गया । इसके अतिरिक्त विशेष रूप से विकलांगों की समाकालित शिक्षा की शिक्षण–सक्षमताओं का पता लगाने के लिए एक अन्य परियोजना शुरू की गई । विशेष शिक्षा में अनुसंधान कार्य को आगे बढ़ाने के लिए विभाग ने 7 मार्च से 11 मार्च, 1988 तक बड़ौदा में विशेष शिक्षा में अनुसंधान कार्य को बढ़ाने पर एक कार्यशाला का आयोजन किया ।

विशेष शिक्षा के क्षेत्र में विभाग द्वारा हाथ में लिए गए कुछ महत्वपूर्ण विकासशील कार्यकलाप समाकलित व्यवस्था में विकलांग बच्चों को शिक्षित करने वाले प्राथमिक स्कूल के अध्यापकों के लिए एक गुटिका विकसित करना और 'दिशाएं' नामक व्यापक शीर्षक के अंतर्गत धारावाहिक वीडियो कार्यक्रम विकसित करना था । समेकित व्यवस्था में विकलांग बच्चों को शिक्षित करने वाले प्राथमिक स्कूल के अध्यापकों के लिए गुटिका विकसित पर 30 मार्च से 8 अप्रैल 1987 तक उदयपुर में विशेषज्ञों की एक कार्यशाला आयोजित की गई । इस कार्यशाला में विकलांगों की समाकालित शिक्षा के 15 विशेषज्ञों ने भाग लिया । 'दिशाएं' नामक व्यापक शीर्षक के अंतर्गत विकसित किए गए वीडियो कार्यक्रमों में विकलांगों की शिक्षा के विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डाला गया है । इस धारावाहिक के पहले वीडियो कार्यक्रम में मुख्यतः चार प्रकार के विकलांगों अर्थात् आर्थोपिडिक, देखने, सुनने और मानसिक विकलांग की समाकलित शिक्षा का निहगावलोकन दिया गया है । 'कहते सुनते स्वर' नामक दूसरे वीडियो कार्यक्रम में समाकलित व्यवस्था के विशेष संदर्भ में कम सुनने वाले छात्रों की शिक्षा के बारे में बतलाया गया है । 'आलोक पथ पार' नामक तीसरे वीडियो कार्यक्रम में सामान्य कक्षाओं में कम देखने वाले बच्चों को समाकलित करने की निर्देशन रेखाएं बताई गई हैं । 'खेल में मेल' नामक एक अन्य वीडियो कार्यक्रम में खेल, नृत्य और संगीत के माध्यम से कम अधिगम वाले बच्चों के समाकलन को दिखाया गया है । पहले तीन वीडियो कार्यक्रम दूरदर्शन से प्रसारित किए गए जिन्हें लोगों ने काफी सराहा । इन वीडियो कार्यक्रमों के साथ विकलांग बच्चों के अध्यापकों के प्रयोग के लिए मुद्रण सामग्री भी विकसित की गई ।

विभाग द्वारा हाथ में लिया गया एक अन्य विकासशील कार्यकलाप विकलांगों के लिए सृजनात्मक कला–कार्यकलापों की एक सूची तैयार करना था । इस कार्य के लिए मार्च 1988 में एस०आई०ई०आर०टी, उदयपुर में एक कार्यशाला आयोजित की गई । इस कार्यशाला में गुजरात, हरियाणा, महाराष्ट्र, राजस्थान और तमिलनाडु तथा संघ राज्य क्षेत्र दिल्ली के सहभागियों ने भाग लिया ।

विभाग ने यूनिसेफ–सहायता प्राप्त "विकलांगों की परियोजना समाकलित शिक्षा (पी०आई०ई०डी०)" के अंतर्गत कार्यकलाप प्रारंभ किया। इस परियोजना में भाग लेने वाले राज्यों में नियोजन बैठक और प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए गए । परियोजना के प्रलेख को अंतिम रूप दिया गया और उसे राज्य सरकारों के पास भेज दिया गया ।

विभाग ने 1 जुलाई से 30 सितंबर 1987 तक विकलांगों की समाकालित शिक्षा पर राज्यों/संघ राज्य क्षेत्रों के प्रधान कार्यकर्त्ताओं के लिए एक प्रशिक्षण पाठ्यक्रम आयोजित किया । इस पाठ्यक्रम में बिहार, गुजरात, कर्नाटक, केरल, तमिलनाडु उत्तर प्रदेश और दिल्ली के 18 सहभागियों ने भाग लिया । सहभागियों को आर्थोपिडिक, कम सुनने, कम देखने और मानसिक विकलांग की समाकलित शिक्षा के विभिन्न पहलुओं में प्रशिक्षित किया गया ।

1987-88

3 माह के प्रशिक्षण कार्यक्रम के अतिरिक्त विभाग ने विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के सहयोग से 1 से 3 फरवरी 1988 तक विशेष शिक्षा की प्रशिक्षण आवश्यकताओं पर एक सम्मेलन का आयोजन किया । इस सम्मेलन में विशेष शिक्षा इकाइयों तथा इस तरह की इकाइयां स्थापित करने वाले संस्थानों की शिक्षा विभागों के संकाय अध्यक्षों/अध्यक्षों ने भाग लिया । इस सम्मेलन में भौगोलिक एवं विकलांग की विशेष शिक्षा में प्रशिक्षण आवश्यकताओं पर चर्चा की गई । एन० पी० ई–1986 के संदर्भ में विशेष शिक्षा में प्रशिक्षण आवश्यकताओं की दृष्टि से विशेष शिक्षा इकाइयों की स्थापना के लिए सम्मेलन में निर्देशक रेखाओं के साथ–साथ विशेष शिक्षा की एक प्रोफाइल विकसित की गई ।

अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति की शिक्षा

1987–88 वर्ष में अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति के बच्चों की शिक्षा से संबद्ध अनुसंधान और विकासात्मक कार्यकलाप जारी रखे गए । आलोच्य वर्ष में 'उत्तर प्रदेश में' अनुसूचित जाति और गैर अनुसूचित जाति के दसवीं कक्षा के छात्रों की शैक्षिक उपलब्धियों का एक तुलनात्मक अध्ययन', 'प्राथमिक स्तर के जनजाति छात्रों के दुर्बल एवं प्रबल तथ्यों के बारे में पता लगाने के लिए उनकी विषयानुसार निष्पत्ति का अध्ययन', और 'अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति के छात्रों की मैट्रिक पूर्व छात्रवृत्ति योजना का एक मूल्यात्मक अध्ययन' पर अनुसंधान अध्ययन जारी रखा गया।

विभाग जनजाति के छात्रों के लिए प्राइमर तैयार करने में काफी लगा रहा । 18 से 28 जून 1987 तक जनजातीय सांस्कृतिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान में आन्ध्र प्रदेश के गोंडी जनजाति के बच्चों को कक्षा 1 का प्राइमर तैयार करने के लिए कार्यकारी समूह की एक बैठक की गई । एक कार्यशाला में गोंडी जनजाति की बोली और तेलुगु लिपि में लिखे गए प्राइमर को अंतिम रूप दिया गया ।

जनजातीय क्षेत्रों में स्थित प्रारंभिक अध्यापक प्रशिक्षण संस्थाओं के अध्यापक शिक्षकों के लिए आलोच्य वर्ष में जनजातीय जीवन और संस्कृति तथा जनजातीय शिक्षा की समस्याओं पर एक प्रशिक्षण पाठ्यक्रम आयोजित किया गया । इसके अतिरिक्त 9 से 15 सितंबर 1987 तक जनजातीय क्षेत्रों में चलाए जा रहे अनौपचारिक शिक्षा कार्यक्रमों में लगे प्रधान कार्यकर्त्ताओं के लिए एक अभिविन्यास पाठ्यक्रम आयोजित किया गया । इस कार्यक्रम में 16 लोगों ने भाग लिया । 10 से 16 नवंबर 1987 तक जनजातीय क्षेत्रों के प्रारंभिक अध्यापक शिक्षकों के लिए प्रशिक्षण पाठ्यक्रम आयोजित किया गया। इस पाठ्यक्रम में 8 व्यक्तियों ने भाग लिया ।

महिलाओं की समता की शिक्षा

परिषद् स्कूली शिक्षा के विभिन्न शिक्षा–स्तरों में निर्धारित किए गए पाठ्यपुस्तकों और सप्लीमेन्टरी रीडरों में लिंग भेद को दूर करने के लिए इनके मूल्यांकन से संबद्ध अपना कार्यकलाप जारी रखे हुए हैं । 15 और 16 मार्च 1988 को जोधपुर में महिलाओं की समता और स्कूल पाठ्यचर्या पर एक दो–दिन का अभिविन्यास कार्यक्रम आयोजित किया गया । इस कार्यक्रम में 65 अध्यापकों ने भाग लिया और पुस्तकों में लिंग भेद को दूर करने की दृष्टि से हिन्दी में लगभग 85 पुस्तकों का मूल्यांकन एवं पुनरीक्षण किया गया। 30 सितंबर से 4 अक्टूबर 1987 तक दयावती मोदी अकादमी मोदीपुरम में एक 5 दिन की कार्यशाला आयोजित की गई । भाषा की पाठ्यपुस्तकों में लिंग भेद को दूर करने की दृष्टि से पाठ सामग्री का मूल्यांकन करने की कार्य–प्रणाली के बारे में प्रशिक्षित किया गया । परिषद् विज्ञान, गणित और सामाजिक विज्ञान के शिक्षण के जरिए महिलाओं के अधिकार से संबद्ध अपने कार्यकलाप को जारी रखे रहा ।

'इमेजेज आफ विमन एण्ड करिकुलम इन मदर टंग' नामक पुस्तक के निर्माण के संबंध में इसकी पांडुलिपि का संपादन करने तथा अंतिम रूप देने के लिए दो कार्यशालाओं का, एक 11 से 17 अक्टूबर 1987 तक और दूसरा 26 से 31 अक्टूबर 1987 तक आयोजन किया गया । परिषद् ने पाठ सामग्री में महिलाओं की अवस्थिति और समता से संबद्ध मूल्यों का निगमन करने की दृष्टि से अंग्रेजी में आदर्श संसाधन सामग्री के विकास से संबद्ध विभिन्न कार्यकलापों को हाथ में लिया । इन आदर्श संसाधन सामग्री के विकास के लिए 7 दिन की दो कार्यशालाएं आयोजित की गई । पहले आयोजित की गई कार्यशालाओं में भाग लेने वाले व्यक्तियों द्वारा विकसित पाठों से सामग्री का चयन करने की दृष्टि से 7 से 12 फरवरी 1988 तक मराठा विश्वविद्यालय में एक छानबीन समूह की बैठक आयोजित की गई।

स्कूल स्तर पर महिलाओं के अध्ययन का समावेश करने के लिए 'दहेज देवातल', 'बेगम हजरत महल' नामक दो सप्लीमेण्टरी रीडर तैयार किए गए । महिलाओं के अध्ययन पर लिखे गए सप्लीमेण्टरी रीडर की पांडुलिपि का पुनरीक्षण करने के लिए 21 और 22 मई 1987 को एक बैठक आयोजित की गई ।

महिलाओं की समता की शिक्षा के बारे में जागरूकता पैदा करने की दृष्टि से दक्षिणी क्षेत्र के राज्यों/संघ राज्य क्षेत्रों के प्रधान कार्यकर्त्ताओं के लिए इस विषय पर एक क्षेत्रीय कार्यशाला आयोजित की गई । इस कार्यशाला में स्कूलों के प्रधानाचार्य, शिक्षा प्रशासकों और विश्वविद्यालय की महिला अध्ययन इकाइयों के विशेषज्ञों ने भाग लिया । कार्यशाला में महिलाओं की समता की शिक्षा पर क्रिया अनुसंधान परियोजनाएं विकसित की गई । इन कार्यों के अतिरिक्त, परिषद् ने अनौपचारिक शिक्षा कार्यक्रमों के लिए पाठ्यचर्या को समृद्ध बनाने और इसे बालिकाओं की आवश्यकताओं के अनुसार ढालने की दृष्टि से 6–14 आयु वर्ग की बालिकाओं की शैक्षिक आवश्कताओं का पता लगाने के लिए एक अध्ययन शुरू किया है ।

परिषद् ने महिलाओं की समता की शिक्षा से संबद्ध कार्यक्रमों को प्रभावी ढंग से लागू करने के लिए अक्टूबर 1987 में एक अलग महिला अध्ययन इकाई की स्थापना की । 1988–89 में लागू करने के लिए शिक्षा के जरिए महिलाओं के अधिकार के संबंध में अनेक कार्यक्रम/परियोजनाएं निरूपित की गई । इन कार्यक्रमों/परियोजनाओं का निरूपण करने के लिए महिलाओं के अध्ययन–क्षेत्रों के ज्ञान साधन व्यक्तियों और विशेषज्ञों का सहयोग लिया गया ।

राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद् (एन०सी०टी०ई०)

विभाग राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद् (एन०सी०टी०ई०) के लिए एक सचिवालय के रूप में काम कर रहा है । राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद्

की अपनी साधारण सभा है जिसका अध्यक्ष मानव संसाधन विकास मंत्री है, अपनी समिति है जिसका अध्यक्ष राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद् के सदस्य सचिव हैं, और तीन शैक्षिक स्थायी समितियां हैं जिनके अध्यक्ष संबद्ध क्षेत्रों के विशेषज्ञ होते हैं ।

जबकि शैक्षिक समिति की बैठक अध्यापक शिक्षा से संबद्ध मामलों और समस्याओं पर चर्चा करने के लिए अकसर होती रहती है, परिषद् की बैठक स्थायी समिति की सिफारिशों पर विचार करने और नीति के मामलों पर व्यापक निर्देशक-रेखा और सिफारिश करने के लिए साल में केवल एक बार होती है । कार्यशालाओं, संगोष्ठियों, अभिविन्यास कार्यक्रमों, कार्यकारी समूहों और विशेषज्ञ समूहों की बैठकों आदि की सहायता से पाठ्यचर्या विकास, पाठ्यचर्या सामग्री का निर्माण, प्रवेश नीति और मूल्यांकन आदि जैसे शैक्षिक कार्यक्रमों को राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद् द्वारा की गई सिफारिशों के अनुसार आयोजित किया जाता है ।

1987-88 वर्ष में राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद् के तत्वावधान में अनेक कार्यकलाप किए गए । इनमें से कुछ कार्यकलाप निम्नलिखित हैं।

राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद् की साधारण सभा की बैठक

राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद् की नवीं साधारण सभा की बैठक 21 मार्च 1987 को आयोजित की गई । श्री पी० वी० नरसिंहराव, मानव संसाधन विकास मंत्री ने इस बैठक की अध्यक्षता की । साधारण सभा ने अध्यापकों के व्यावसायिक आचार नीति संहिता के मसौदे पर विचार किया और यह सिफारिश की कि इस संहिता को टिप्पणी के लिए अध्यापक के प्रतिनिधियों के पास भेज दिया जाए ।

इस बात पर पुनः जोर दिया गया कि प्रारंभिक और माध्यमिक स्तरों पर सेवा पूर्व अध्यापक शिक्षा के लिए पत्राचार पाठ्यक्रम को तुरंत रोक दिया जाए । सभा ने यह सिफारिश की कि चार साल अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम की योजना बनाने के लिए एक समिति बनायी जानी चाहिए ।

आम सभा ने सेवा पूर्व और सेवाकालीन अध्यापक शिक्षा को पुनः क्रियाशील बनाने के लिए एन०सी०ई०आर०टी० द्वारा नियुक्त दो कार्यकारी समूहों की रिपोर्टों पर भी विचार किया । यह सुझाव दिया गया कि दो रिपोर्टों पर प्राप्त हुई टिप्पणियों को समेकित कर देना चाहिए और यदि आवश्यक समझा जाए तो आवश्यक कार्रवाई के लिए इसकी सूचना एन० सी०ई०आर०टी० को भेज दी जाए ।

शैक्षिक स्थायी समितियों की बैठक

1987-88 वर्ष में एन०सी०ई०आर०टी० के मुख्यालय पर राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद् की शैक्षिक स्थायी समितियों की निम्नलिखित बैठकें हुई ।

संचालन समिति की बारहवीं बैठक

23 फरवरी 1987 को संचालन समिति की बारहवीं बैठक हुई । इस बैठक में एन०सी०ई०आर०टी० द्वारा नियुक्त की गई दो कार्यकारी समूहों की रिपोर्टों की जिनमें से एक सेवा पूर्व अध्यापक शिक्षा को पुनः क्रियाशील बनाने और दूसरी सेवाकालीन अध्यापक शिक्षा के संबंध में थी, एन०पी० ई० 1986 के निहितार्थ के साथ चर्चा करने की सिफारिश की गई थी । संचालन समिति ने भी साधारण सभा की बैठक के लिए कार्यसूची को अंतिम रूप दे दिया ।

संचालन समिति की तेरहवीं बैठक

संचालन समिति की तेरहवीं बैठक 10 मई, 1988 को हुई । इसने आगे होने वाली साधारण सभा की बैठक की कार्यसूची के मदों पर विचार किया । साधारण सभा की प्रस्तावित कार्यसूची में प्रस्ताव का मसौदा और राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद् के बिल अध्यापकों की व्यावसायिक नीति संहिता, नई अध्यापक शिक्षा पाठ्यचर्या ढांचा और चार-साला अध्यापक शिक्षा ढांचा शामिल है ।

विशेष अध्यापक शिक्षा समिति की नवीं बैठक

विशेष अध्यापक शिक्षा की स्थायी समिति की नवीं बैठक 22 फरवरी 1988 को एन०सी०ई०आर०टी० में हुई । समिति ने आई०ई०डी० योजना में मानसिक विकलांग, अधिगम अपंगता और कुछ चुने हुए बहु विकलांगों को शामिल कर लेने पर संतोष व्यक्त किया । बैठक में यह अनुभव किया गया कि वर्तमान पाठ्य विवरण की जांच करने और संशोधित योजना की आवश्यकताओं के अनुसार उनमें आपरिवर्तन करने के लिए विश्वविद्यालय के शिक्षा-विभागों और क्षेत्रीय शिक्षा कालेज से अनुरोध किया जा सकता है । समिति ने शिक्षा विशेष शिक्षा के अध्यापक शिक्षकों के अभिविन्यास कार्यक्रम की आवश्यकता, विकलांगों की शिक्षा और पुनर्वास से संबंधित आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए अनौपचारिक और वयस्क शिक्षा के अनुदेशकों के प्रशिक्षण कार्यक्रम और विशेष शिक्षा में प्रौद्योगिकी के समावेश और विकलांग बच्चों की आवश्यकताओं के अनुसार शिक्षा नियोजकों और प्रशासकों के अति संवेदनशीलन की आवश्यकता पर विचार किया ।

प्राथमिक पूर्व और प्रारंभिक अध्यापक शिक्षा समिति की दसवीं बैठक

प्राथमिक पूर्व और प्रारंभिक अध्यापक शिक्षा समिति की दसवीं बैठक 16 फरवरी 1988 को हुई । इस बैठक में प्रारंभिक अध्यापक - शिक्षकों का एक अलग कॉडर बनाने, विश्वविद्यालयों में प्रारंभिक अध्यापक शिक्षा के पाठ्यक्रम को संस्थापन करने और स्कूल पूर्व तथा आरंभिक प्राथमिक शिक्षा में समेकित दो साला पाठ्यक्रम की आवश्यकता पर, और प्रायोगिक स्कूलों को प्रारंभिक अध्यापक प्रशिक्षण संस्था के साथ संलग्न करने जैसे मामलों पर विचार किया । समिति ने प्राथमिक और उच्च प्राथमिक स्तर के अध्यापकों की अर्हता के प्रश्न पर विचार किया और यह सिफारिश की कि प्रारंभिक स्कूल के अध्यापकों के लिए, निम्नतम अर्हता 12 साल तक स्कूल की पढ़ाई और 2 साल का अध्यापक-प्रशिक्षण होना चाहिए । यह भी सिफारिश की गई कि इस अर्हता वाले वर्तमान अध्यापकों को, जो उच्च प्राथमिक कक्षाओं में अध्यापन करा रहे हैं, राज्य सरकारों द्वारा विषय-वस्तु की समृद्धि में अभिविन्यस्त कर देना चाहिए ।

1987-88

पर्याप्त सुविधाओं और साधनों के होने के बावजूद भी मान्यता रहित नर्सरी स्कूलों की संख्या में तेजी से हो रही वृद्धि को देखते हुए, यह अनुभव किया गया कि इन स्कूलों को मान्यता प्रदान करने के लिए राज्य सरकारों को कुछ मानक मापदण्ड बना लेना चाहिए और उन्हें लागू करना चाहिए । इस संबंध में यह सुझाव दिया गया कि स्वायत्त एजेन्सियों/ट्रस्टों से +2 स्तर के बाद लिए गए स्कूल पूर्व अध्यापक प्रशिक्षण की और गृह विज्ञान के कालेजों को राज्य सरकार द्वारा मान्यता प्रदान करने के लिए आवश्यक कदम उठाने चाहिए ।

माध्यमिक और कालेज अध्यापक शिक्षा समिति की विशेष बैठक

देश के विभिन्न विश्वविद्यालयों में बी० एड० (पत्राचार) पाठ्यक्रम चलाने के संबंध में 31 अगस्त, 1988 को एन०सी०ई०आर०टी० में माध्यमिक और कालेज अध्यापक शिक्षा समिति की विशेष बैठक हुई । समिति के सदस्यों ने इस बात पर जोर दिया कि यह सुनिश्चित करने के लिए तुरंत कदम उठाने चाहिए कि अप्रशिक्षित अध्यापकों की भर्ती नहीं होनी चाहिए और अध्यापक शिक्षा में प्रथम डिग्री प्रदान करने वाले पत्राचार पाठ्यक्रम अर्थात् बी०एड० को तुरंत रोक देना चाहिए । समिति ने यह अनुभव किया कि अप्रशिक्षित अध्यापकों की भर्ती केवल एक संरचनात्मक समस्या है और इस समस्या का समाधान प्रभावकारी जनशक्ति नियोजन से करने की आवश्यकता है । लंबी चर्चा के बाद समिति ने 31 अगस्त 1987 को मानव संसाधन विकास मंत्री को देने के लिए ज्ञापन का मसौदा तैयार किया।

माध्यमिक और कालेज अध्यापक शिक्षा समिति की ग्यारहवीं बैठक

माध्यमिक और कालेज अध्यापक शिक्षा समिति की ग्यारवीं बैठक 1 मार्च, 1988 को एन०सी०ई०आर०टी० में हुई । समिति को यह सूचित किया गया कि 'अध्यापक शिक्षा पर एक चर्चा लेख' तैयार किया गया और डी०टी०ई०एस०ई० एण्ड ई०एस० के संकाय के साथ उस पर चर्चा की गई । चर्चा के दौरान कुछ महत्वपूर्ण तथ्य उभर कर सामने आए जिन पर अध्यापक शिक्षा पाठ्यचर्या ढांचा की समीक्षा करते समय विचार किया जाएगा । समिति ने (I) + 2 स्तर के अध्यापकों के प्रशिक्षण कार्यक्रम की प्रकृति, (II) अध्यापक शिक्षा संस्थाओं में प्रवेश पाने की प्रकृति और बहुलकता, (III) संकाय सुधार कार्यक्रम और (IV) बी० एड० पाठ्यक्रम में कम्प्यूटर साईंस का एक पेपर रखने की आवश्यकता जैसे मामलों पर विचार किया ।

समिति ने यह सिफारिश की है कि + 2 स्तर के अध्यापकों को तैयार करने से संबद्ध उपयुक्त कार्यक्रम बनाने के लिए एक समिति का गठन किया जाए । यह सुझाव दिया गया कि + 2 स्तर के अध्यापकों के लिए ऐसे पाठ्यक्रमों को पुनः तैयार करने का कार्य क्षेत्रीय शिक्षा–कालेजों को सौंपा जा सकता है । प्रवेश बहुलकता के संबंध में समिति ने यह सिफारिश की है कि विश्वविद्यालयों को प्रवेश के लिए स्वयं अपना परीक्षण लेना चाहिए । फिर भी प्रवेश प्रक्रिया से संबद्ध परीक्षणों और साक्षात्कारों की एक व्यापक कसौटी राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद् को प्रस्तुत करनी चाहिए क्योंकि बी०एड० में प्रवेश के लिए उचित परीक्षण लेने से पाठ्यक्रम का स्तर उठ जाएगा ।

राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद् ने ऊपर उल्लेख की गई बैठक आयोजित की और इन बैठकों तथा पहले की बैठकों में सुझाई गई उपयुक्त अनुवर्ती क्रिया पर विचार किया । राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद् द्वारा बैठकों में की गई सिफारिशों को लागू करने के लिए राज्य अध्यापक शिक्षा बोर्ड (एस०बी०टी०ई०एस), एस०सी०ई०आर०टी०/सी० आई० ई०, विश्वविद्यालयों के शिक्षा विभाग और राज्यों/संघ क्षेत्रों के संबद्ध मंत्रालयों से अनुरोध किया गया ।

आयोजित विकासात्मक कार्यक्रम

राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद् की विभिन्न समितियों की बैठकों के अतिरिक्त, राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद् ने 1987–88 में निम्नलिखित कार्यकलाप भी अपने हाथ में लिए ।

(I) बी०एड० की डिग्री दिलाने वाले पत्राचार पाठ्यक्रम से संबद्ध ज्ञापन को तैयार करना

कालेज और माध्यमिक अध्यापक शिक्षा की स्थायी समिति ने शिक्षा में प्रथम डिग्री प्रदान करने के लिए कुछ विश्वविद्यालयों द्वारा चलाए जा रहे बी० एड पत्राचार पाठ्यक्रम को बंद करने के मामले पर विचार करने के लिए 31 अगस्त 1987 को एक विशेष बैठक की । एस०सी०टी०ई० समिति ने ज्ञापन का मसौदा तैयार किया जिसे एन०सी०ई०आर०टी० के फेलो और भूतपूर्व शिक्षा मंत्री डा० के०एल० श्रीमाली के नेतृत्व में राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद् के सदस्यों के शिष्ट मंडल ने मानव संसाधन विकास मंत्री को प्रस्तुत किया । शिष्ट मंडल ने ज्ञापन 31 अगस्त 1987 को प्रस्तुत किया ।

(II) व्यावसायिक नीति संहिता का विकास

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 के अनुसार 'अध्यापक के गौरव को बढ़ाने वाली व्यावसायिक सत्यनिष्ठा को बनाए रखने और व्यावसायिक अविचार को दूर करने में अध्यापक संघ को एक महत्वपूर्ण भूमिका निभानी चाहिए। राष्ट्रीय अध्यापक संघ को अध्यापकों के लिए एक व्यावसायिक नीति संहिता तैयार करनी चाहिए और उसका अनुपालन करना चाहिए । ऊपर उल्लेख की गई नीति को ध्यान में रखकर 24 से 26 नवंबर 1986 तक हैदराबाद में आयोजित की गई कार्यशाला में अध्यापकों के लिए व्यावसायिक नीति संहिता विकसित की गई । कार्यशाला में यह सिफारिश की गई कि व्यावसायिक नीति संहिता के मसौदे को व्यापक प्रचार–प्रसार तथा आवश्यक संशोधनों के लिए परिचालित करनी चाहिए । राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद् के माध्यमिक और कालेज अध्यापक शिक्षा की समिति की एक बैठक में भी व्यावसायिक नीति संहिता के प्रश्न पर चर्चा की गई ।

इन सिफारिशों के अनुवर्तन के लिए संहिता के मसौदा को सभी डी० पी०आई०, एस०सी०ई०आर०टी०/एस०आई०ई० के निदेशक, राज्य अध्यापक शिक्षा बोर्ड, कुछ चुने हुए अध्यापक प्रशिक्षण संस्थान और एन०सी०ई०

आर०टी० संकाय के पास भेजा गया ।

प्राप्त हुई टिप्पणियों पर विचार करने और संहिता के मसौदे में आवश्यक संशोधन करने के लिए 18 और 19 जनवरी 1988 को एन० आई०ई० कैम्पस में एक राष्ट्रीय सम्मेलन किया गया ।

अखिल भारतीय प्राथमिक अध्यापक संघ, अखिल भारतीय माध्यमिक अध्यापक संघ, और शिक्षा–संघों के अखिल भारतीय महासंघ के पदाधिकारियों ने इस सम्मेलन में भाग लिया ।

संशोधित संहिता के मसौदे को व्यापक रूप से परिचालित करने का प्रस्ताव किया गया जिससे कि अंतिम संस्करण विकसित करने के लिए राज्य, जिला और स्थानीय स्तरों की संबंधित एजेन्सियों और अध्यापक–संघों में इसकी चर्चा की जा सके ।

राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद् की अगली बैठक में अध्यापकों की व्यावसायिक नीति संहिता के मसौदे को रखा जाएगा ।

(III) अध्यापक शिक्षा पाठ्यचर्या ढांचा का विकास

नवंबर 1984 में आयोजित की गई राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा संगोष्ठी में यह सिफारिश की गई थी कि कार्यान्वयन अनुभव, नई प्रवृत्ति और विकास की दृष्टि से ढांचे का पुनरीक्षण और संशोधन एक निश्चित समयांतराल पर होते रहना चाहिए । राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 के अनुसार एक तरफ तो सभी स्तरों पर अध्यापक शिक्षा में आमूल चूल परिवर्तन करने की आवश्यकता है तो दूसरी तरफ स्कूली शिक्षा में गुणात्मक सुधार लाने की आवश्यकता है । प्रारंभिक और माध्यमिक स्तर की शिक्षा की एक राष्ट्रीय पाठ्यचर्या ढांचा एन०सी०ई०आर०टी० ने एन०पी०ई० के मुख्य प्रमोदों को ध्यान में रखकर तैयार की है । इन विकासों और केन्द्रीयतः प्रायोजित अध्यापक शिक्षा योजनाओं विशेष रूप से डी०आई०ई०टी० की स्थापना और अध्यापक शिक्षा के माध्यमिक कालेजों को प्रबल बनाने और शिक्षा के कुछ उच्च अध्ययन संस्थानों को ऊपर उठाने, से अध्यापकों के व्यावसायिक निर्माण पर पुनः विचार करने और राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद की अध्यापक शिक्षा पाठ्यचर्या ढांचा 1978 की पुनः जांच करने की आवश्यकता है ।

इस संदर्भ में राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद् की पाठ्यचर्या ढांचा के नवीकरण और संशोधन से संबद्ध एक उपागम लेख तैयार करने के लिए फरवरी 1988 में तीन दिनों की विशेषज्ञ समूह की बैठक की गई । उपागम लेख की दृष्टि से राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद् की पाठ्यचर्या ढांचे का संशोधन किया जा रहा है । तब संशोधित ढांचे पर एक राष्ट्रीय संगोष्ठी और राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद् की साधारण सभा में विचार किया जाएगा और चर्चा की जाएगी ।

(IV) अध्यापकों के सामाजिक एवं व्यावसायिक उत्तरदायित्व मापने के मानक और साधन का विकास

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 के अनुसार सभी अध्यापकों को अध्यापन कराना चाहिए और सभी छात्रों को अध्ययन करना चाहिए । इस व्यवस्था से अध्यापकों के उत्तरदायित्व को जाना जा सकता है । इस नीति में अध्यापक की उस निष्पत्ति पद्धति के मूल्यांकन की आवश्यकता पर भी चर्चा की गई है जो विवृत भाग लेने योग्य और आंकड़ा आधारित है । यह पद्धति स्वमूल्यांकन और सुधार का एक साधन होने के साथ–साथ उच्च श्रेणी में उन्नति करने का आधार भी है ।

अध्यापकों के सामाजिक एवं व्यावसायिक उत्तरदायित्व मापने के मानक और साधन को विकसित करने के लिए 14 से 16 दिसंबर, 1987 तक मद्रास विश्वविद्यालय के शिक्षा विभाग में एक तीन दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला आयोजित की गई । यह कार्यशाला उस कार्यशाला की ही एक कड़ी है जो कि 26 से 31 अक्टूबर 1987 तक कश्मीर विश्वविद्यालय, श्रीनगर के शिक्षा विभाग में आयोजित की गई थी ।

इस कार्यशाला में देश भर के छब्बीस व्यक्तियों ने भाग लिया । इस संगोष्ठी का मुख्य उद्देश्य अध्यापकों के सामाजिक एवं व्यावसायिक उत्तरदायित्व मापने के मानक और साधन को विकसित करने के लिए पहले की कार्यशाला में विकसित किए गए साधन को परिष्कृत करना था।

इस संबंध में चार साधन विकसित किए जा चुके हैं और इन साधनों के मदों का मूल्यांकन स्पष्टता, परिशुद्धता, पेयता और प्रासंगिकता की दृष्टि से किया गया है और जहां कहीं भी आवश्यक जान पड़ा है आपरिवर्तन कर दिए गए हैं ।

(V) राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद् को सांविधिक अवस्थिति प्रदान करने वाले प्रस्ताव का मसौदा तैयार करना

राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद् को सांविधिक अवस्थिति प्रदान करने वाले प्रस्ताव का मसौदा तैयार करने के लिए प्रो० आर०एन० महरोत्रा की अध्यक्षता में एक समिति का गठन किया गया । इस समिति की लगभग एक दर्जन बैठकें हो चुकी हैं और राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद् के बिल और प्रस्ताव के मसौदे को अंतिम रूप दिया जा चुका है । बिल के मसौदे को राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद् की साधारण सभा की अगली बैठक में प्रस्तुत करने की आशा है ।

अध्यापकों के अनुवर्ती शिक्षा के केन्द्र

यह विभाग अध्यापकों के अनुवर्ती शिक्षा केन्द्र के कार्यकलापों का समन्वयन करता रहा है । ये केन्द्र राज्यों/संघ राज्य–क्षेत्रों के प्रारंभिक अध्यापक प्रशिक्षण संस्थाओं में माध्यमिक अध्यापकों और अध्यापक– शिक्षकों को सेवाकालीन शिक्षा प्रदान करने में लगा हुआ है । अनुवर्ती शिक्षा के केन्द्रों के कार्यकलापों का समन्वयन करने के लिए विभाग ने अनुवर्ती शिक्षा केन्द्रों की राज्य सलाहकार समिति की दो बैठकें आयोजित की और हिमाचल प्रदेश तथा पंजाब की सलाहकार समिति की बैठकों में भाग लिया।

प्रकाशन

विभाग ने अध्यापकों की सेवाकालीन शिक्षा के लिए प्रशिक्षण सामग्री, विकलांगों की शिक्षा के लिए साधन सामग्री, अध्यापक–शिक्षकों और छात्र अध्यापकों के लिए शिक्षण सामग्री, पाठ्यचर्या और पाठ्यपुस्तक निर्माताओं के लिए निर्देशक रेखाएं और अनुसंधान रिपोर्ट प्रकाशित की है । इन

प्रकाशनों के ब्यौरे सारणी 7.4 में दिए गए हैं ।

अनुसंधान रिपोर्टों और शिक्षण सामग्री का प्रचार करने के अतिरिक्त विभाग ने निम्नलिखित बुलेटिन प्रकाशित किए ।

1. संचार : विकलांगों को समान शिक्षा सुअवसर (पाक्षिक)
2. नोट : समाचार बुलेटिन (त्रैमासिक)
3. देश में + स्नातकोत्तर शिक्षा कालेजों और विश्वविद्यालय के शिक्षा विभागों की निर्देशिका (वार्षिक)

परामर्श सेवा

विभाग ने राज्यों और संघ राज्य क्षेत्रों, विकलांगों की राष्ट्रीय संस्थानों, विश्वविद्यालय के शिक्षा-विभागों, मानव संसाधन विकास मंत्रालय तथा कार्मिक प्रशिक्षण से संबद्ध अन्य मंत्रालयों को परामर्श सेवा उपलब्ध करायी है । 1987–88 में विभाग द्वारा उपलब्ध करायी गई परामर्श सेवा का संक्षिप्त विवरण सारणी 7.5 में दिया गया है ।

सारणी 7.4

प्रकाशन (माइक्रोग्राफिक)

क्र०सं०	नाम	प्रकाशन मास	प्रकाशित प्रतिलिपियों की संख्या
1.	प्लानिंग एण्ड मैनेजमेण्ट आफ आई०ई०डी० प्रोग्राम– हैण्ड बुक	जून, 1987	3,000
2.	माड्यूल्स इन इंग्लिश इन III वाल्यूम्स पार्ट I जनरल पार्ट II प्राइमरी पार्ट III सेकेण्डरी	"	
3.	सोर्स बुक–ट्रेनिंग टीचर्स आफ विजुवली इम्पेयर्ड	जून, 1987	3,000
4.	ए टीचर्स हैण्ड बुक आन आई० ई० डी० हेल्पिंग चिल्ड्रन विद स्पेशल नीड्स (इंग्लिश एण्ड हिन्दी)	जून, 1988	3,000 3,000

सारणी 7.5

उपलब्ध करायी गई परामर्श सेवा

क्र०सं०	संगठन का नाम	परामर्श की प्रकृति
1.	एस०सी०ई०आर०टी०/एस०आई०ई०	आई०ई०डी० हरियाणा, मध्यप्रदेश, मिजोरम, महाराष्ट्र, नागालैण्ड उड़ीसा, राजस्थान, तमिलनाडु ।
2.	एन०आई०एच०आई०, सिकंदराबाद	संस्थाओं के अध्यक्षों का प्रशिक्षण ।
3.	एन०आई०एम०एच०, हैदराबाद	व्यावसायिक अध्यापकों के प्रशिक्षण की शिक्षण साम्ग्री का विकास ।
4.	एन०आई०वी० ई०, देहरादून	व्यावसायिक अध्यापकों के प्रशिक्षण की शिक्षण साम्ग्री का विकास ।
5.	यूनिसेफ	विकलांगों की परियोजना समेकित शिक्षा ।
6.	एन०डी०एम०सी०	मानसिक विकलांगों के लिए स्कूल का विकास ।
7.	विश्वविद्यालय का शिक्षा विभाग एम०एस० विश्वविद्यालय, बड़ौदा ।	विशेष शिक्षा कार्यक्रम का विकास ।
8.	विकलांग संस्थान, नई दिल्ली	चिकित्सा के लिए व्यावसायिक अध्यापकों के प्रशिक्षण का विकास ।
9.	भारतीय पुनर्वास परिषद	कम सुनने वालों और मानसिक विकलांगों के क्षेत्र में जनशक्ति उपकरण ।
10.	सी०एस०एस० आर०	विशेष शिक्षा में छानबीन अनुसंधान कार्यक्रम ।
11.	एस०सी०ई०आर०टी, हरियाणा	प्रारंभिक अध्यापक शिक्षा पाठ्यचर्या का विकास ।
12.	दिल्ली प्रशासन	प्रारंभिक अध्यापक शिक्षा पाठ्यचर्या का विकास ।
13.	राष्ट्रीय पुस्तक ट्रस्ट	डब्लु०बी०एफ० के लिए पुस्तकों का चयन ।
14.	राज्य	राज्य योजनाओं का विकास ।
15.	विश्वविद्यालय अनुदान आयोग	एस०सी०डी की स्थापना से सम्बद्ध निर्देशक रेखाओं का विकास ।
16.	केन्द्रीय विद्यालय	स्टाफ का चयन ।

आठ

क्षेत्रीय शिक्षा कालेज

क्षेत्रीय शिक्षा कालेजों का एक मुख्य कार्यकलाप सेवापूर्व अध्यापक शिक्षा के नवीन प्रक्रियात्मक कार्यक्रमों को विकसित करना रहा है। ये कालेज स्कूल शिक्षा और अध्यापक शिक्षा के विभिन्न पहलुओं से संबद्ध अनुसंधान, अध्ययन, अध्यापक–शिक्षक, अध्यापक और अध्यापक प्रशिक्षार्थियों के प्रयोग के लिए शिक्षण सामग्री का विकास और स्कूल शिक्षा तथा अध्यापक शिक्षा में गुणतात्मक सुधार लाने के लिए प्रशिक्षण एवं विस्तार कार्यकलाप करने में लगे हुए हैं।

प्रत्येक क्षेत्रीय शिक्षा कालेज अपने राज्यों/संघ राज्य क्षेत्रों की शिक्षा संबंधी आवश्यकताओं की पूर्ति करता है। अजमेर का क्षेत्रीय शिक्षा कालेज हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, जम्मू और कश्मीर, राजस्थान और उत्तर प्रदेश तथा संघ राज्य क्षेत्र चण्डीगढ़ और दिल्ली की आवश्यकताओं की पूर्ति करता है। भोपाल का क्षेत्रीय शिक्षा कालेज गोवा, गुजरात, मध्यप्रदेश और महाराष्ट्र तथा संघ राज्य क्षेत्र दादर और नागर हवेली तथा दमन और दियू की आवश्यकताओं की पूर्ति करता है। भुवनेश्वर का क्षेत्रीय शिक्षा कालेज अरुणाचल प्रदेश, असम, बिहार, मणिपुर, मिजोरम, मेघालय, नागालैण्ड, उड़ीसा, सिक्किम, त्रिपुरा और संघ राज्य–क्षेत्र अण्डमान और निकोबार द्वीप की आवश्यकताओं की पूर्ति करता है जबकि मैसूर का क्षेत्रीय शिक्षा कालेज आंध्र प्रदेश, कर्नाटक, केरल और तमिलनाडु तथा संघ राज्य क्षेत्र लक्षद्वीप और पाण्डिचेरी की आवश्यकताओं की पूर्ति करता है।

क्षेत्रीय शिक्षा कालेज, अजमेर

अजमेर का क्षेत्रीय शिक्षा कालेज बी०एस–सी० (आनर्स/पास) बी० एड० डिग्री के लिए विज्ञान शिक्षा में चार–वर्षीय समेकित पाठ्यक्रम, विज्ञान/कृषि/वाणिज्य/भाषा (अंग्रेजी/हिंदी/उर्दू) में विशिष्टीकरण के साथ बी० एड० डिग्री के लिए एक वर्षीय पाठ्यक्रम, विज्ञान/वाणिज्य/भाषा में विशिष्टीकरण के साथ एक वर्षीय एम० एड० पाठ्यक्रम और बी०एड० डिग्री के लिए एक पत्राचार पाठ्यक्रम चलाता है। कालेज में शिक्षा और विज्ञान में पी–एच० डी० के लिए विद्यार्थियों को पंजीकृत कराने की व्यवस्था है।

नामांकन

1987–88 में विभिन्न पाठ्यक्रमों में छात्रों के नामांकन का विवरण सारणी 8.1, 8.2 और 8.3 में दिया गया है।

सारणी 8.1

1987–88 वर्ष में सेवापूर्व पाठ्यक्रम में नामांकन

क्र० सं०	पाठ्यक्रम	नामांकन	कुल जोड़
1.	एम० एड०	19	13
2.	बी० एड० विज्ञान	64	64
3.	बी० एड० कृषि	26	26
4.	बी० एड० वाणिज्य	23	23
5.	बी० एड० अंग्रेजी	28	28
6.	बी० एड० हिन्दी	32	32
7.	बी० एड० उर्दू	6	6
8.	प्रथम वर्ष बी० एस–सी. (एच/पी/बी० एड)	59	59
9.	द्वितीय वर्ष बी० एस–सी.	67	67
10.	तृतीय वर्ष बी० एस–सी.	42	42
11.	चतुर्थ वर्ष बी० एस–सी.	43	49
		कुल जोड़ : 415	415

1987-88

सारणी 8.2

1987–88 वर्ष में विभिन्न पाठ्यक्रमों में (राज्यश:) नामांकन

क्र० सं०	पाठ्यक्रम	राजस्थान	उ० प्र०	पंजाब	हि० प्र०	हरियाणा	दिल्ली	चंडीगढ़	जम्मू और कश्मीर	कुल जोड़
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11
1.	बी० एड० विज्ञान	13	19	9	–	10	5	2	–	64
2.	बी० एड० कृषि	5	15	1	–	2	2	–	1	26
3.	बी० एड० वाणिज्य	6	7	1	–	3	4	2	–	23
4.	बी० एड० अंग्रेजी	7	8	3	3	3	3	–	1	28
5.	बी० एड० हिन्दी	8	10	2	1	5	4	–	2	32
6.	बी० एड० उर्दू	1	5	–	–	–	–	–	–	6
7.	प्रथम वर्ष, बी०एस–सी (एच/पी/ बी०एड)	22	20	3	3	2	7	2	–	59
8.	द्वितीय वर्ष, बी०एस–सी	किसी भी राज्य में नया दाखिला नहीं किया गया								67
9.	तृतीय वर्ष, बी०एस–सी		〃	〃	〃 〃	〃				42
10.	चतुर्थ वर्ष, बी०एस–सी		〃	〃	〃 〃	〃				49
11.	एम० एड०		〃	〃	〃 〃	〃				19

सारणी 8.3

1987–88 वर्ष में सेवापूर्व पाठ्यक्रम में अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति के छात्रों का नामांकन

क्र० सं०	पाठ्यक्रम	छात्रों की संख्या	अनुसूचित जाति के छात्र	अनुसूचित जनजाति के छात्र
1	2	3	4	5
1.	बी० एड०	19	–	–
2.	बी० एड० विज्ञान	64	6	2
3.	बी० एड० कृषि	26	4	2
4.	बी० एड० वाणिज्य	23	3	–
5.	बी० एड० अंग्रेजी	28	4	–
6.	बी० एड० हिन्दी	32	5	–
7.	बी० एड० उर्दू	6	–	–
8.	प्रथम वर्ष बी० एस–सी (एच/पी) बी० एड०	59	4	–
9.	द्वितीय वर्ष बी० एस–सी (एच/पी) बी० एड०	67	1	1
10.	तृतीय वर्ष बी० एस–सी (एच/पी) बी० एड०	42	1	–
11.	चतुर्थ वर्ष बी० एस–सी (एच/पी)	49	–	–
	कुल जोड़	415	28	5

सारणी 8.4

1987 वर्ष के परीक्षा फल

क्र० सं०	पाठ्यक्रम	परीक्षा में बैठे छात्रों की संख्या	उत्तीर्ण छात्रों की कुल संख्या
1	2	3	4
1.	प्रथम वर्ष बी० एस–सी० बी० एड०	86	59
2.	द्वितीय वर्ष बी० एस–सी० बी० एड०	44	38
3.	तृतीय वर्ष बी० एस–सी० बी० एड०	50	48
4.	चतुर्थ वर्ष बी० एस–सी० बी० एड०	45	45
5.	बी० एड० (विज्ञान)	58	57
6.	बी० एड० (कृषि)	18	18
7.	बी० एड० (वाणिज्य)	24	20
8.	बी० एड० (अंग्रेजी)	27	25
9.	बी० एड० (हिन्दी)	34	33
10.	बी० एड० (उर्दू)	23	20
11.	बी० एड० (एल. एस. सी. सी.)	102	94
12.	एम० एड०	14	14

परिणाम

शैक्षिक सत्र 1987–88 में विभिन्न पाठ्यक्रमों में छात्रों के परीक्षा परिणाम सारणी 8.4 में दिए गए हैं ।

विस्तार सेवा

कालेज के विस्तार सेवा विभाग में अपने अंतर्गत आने वाले राज्यों/संघ राज्य क्षेत्रों की आवश्यकताओं और माँगों को ध्यान में रखकर स्कूल शिक्षा और अध्यापक शिक्षा से संबद्ध विभिन्न क्षेत्रों पर कार्यशालाएँ/बैठकें/संगोष्ठियाँ आयोजित कीं । 1987–88 वर्ष में आयोजित किए गए कार्यक्रमों के ब्यौरे सारणी 8.5 में दिए गए हैं ।

प्रकाशन

कालेज अनुसंधान रिपोर्ट, मोनोग्राफ और जर्नल प्रकाशित करता है। कालेज द्वारा प्रकाशित दो जर्नल निम्नलिखित है :

"द एजुकेशनल ट्रैण्ड" एक अनुसंधान जर्नल है जो अर्धवार्षिक प्रकाशित होता है ।

"स्कूल साइन्स रिसोर्स लैटर" जो त्रैमासिक प्रकाशित होता है।

क्षेत्रीय शिक्षा कालेज, भोपाल

भोपाल के क्षेत्रीय शिक्षा कालेज में बी०एस–सी० बी०एड० डिग्री के लिए विज्ञान शिक्षा में चार वर्षीय समेकित पाठ्यक्रम, बी० ए० बी० एड० डिग्री के लिए अंग्रेजी में चार वर्षीय समेकित पाठ्यक्रम, विज्ञान/वाणिज्य में विशिष्टीकरण के साथ एक वर्षीय बी०एड० पाठ्यक्रम, प्रारंभिक शिक्षा में विशिष्टीकरण के साथ एक वर्षीय बी०एड० पाठ्यक्रम, विज्ञान शिक्षा, शैक्षिक प्रशासन और मार्गदर्शन में विशिष्टीकरण के साथ एक वर्षीय एम० एड० पाठ्यक्रम और बी० एड० डिग्री के लिए ग्रीष्मकालीन विद्यालय एवं पत्राचार पाठ्यक्रम की सुविधा उपलब्ध है ।

नामांकन

1987–88 के शैक्षिक सत्र में विभिन्न पाठ्यक्रमों में किए गए नामांकन का विवरण सारणी 8.6, 8.7, 8.8 और 8.9 में दिया गया है ।

परिणाम

1987–88 के शैक्षिक सत्र में विभिन्न पाठ्यक्रमों में छात्रों के परीक्षा फल सारणी 8.10 में दिए गए हैं ।

सारणी 8.5

1987–88 वर्ष में आयोजित की गई कार्यशालाएं/बैठकें/संगोष्ठियां

क्र० सं०	कार्यक्रम का नाम	राजस्थान	उ० प्र०	पंजाब	हरियाणा	हि० प्र०	चंडीगढ़	दिल्ली	जम्मू–कश्मीर	कुल जोड़
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11
1.	माध्यमिक कक्षाओं के लिए पारिस्थितिक निदर्श के विकास की कार्यशाला ।	10	6	–	1	1	–	10	–	28
2.	विज्ञान क्लब प्रायोजकों पर कार्यशाला ।	14	3	1	–	–	–	–	–	18
3.	10+2 की नयी पाठ्यचर्या पर आधारित नवी कक्षा के रसायन के अधिगम पैकेज के विकसित करने की कार्यशाला ।	14	1	1	2	–	–	–	–	18
4.	स्कूल शिक्षा के मानव पारिस्थिति मामलों के व्यावहारिक उपागम पर कार्यशाला ।	30	5	2	1	3	3	3	1	48
5.	प्राथमिक स्तर पर भाषा सीखने की नवीन प्रक्रियात्मक शिक्षण नीतियों पर कार्यशाला ।	5	3	1	–	–	–	2	28	39
6.	शिक्षा कालेजों में मूल्यवादी शिक्षा पर प्रशिक्षण कार्यक्रम ।	4	12	1	1	–	–	–	–	18
7.	हस्तक्षेप से राजस्थान में स्कूल चलाने वाले आई ई डी से गुणतात्मक सुधार पर कार्यशाला ।	15	–	–	–	–	–	–	–	15
8.	व्यवहार अनुसंधान में बहुचर अभिकल्पनाओं पर प्रशिक्षण पाठ्यक्रम ।	2	5	1	3	–	–	1	1	13
9.	स्थानीय साधनों की सहायता से भूगोल के शिक्षण पर कार्यशाला	5	2	–	–	–	–	1	–	8

विस्तार सेवा

1987–88 वर्ष में कालेज ने 26 अभिविन्यास/प्रशिक्षण कार्यक्रम, सम्मेलन और कार्यशालाओं का आयोजन किया । इन कार्यक्रमों के व्यौरे सारणी 8.11 में दिए गए हैं ।

इनके अतिरिक्त कालेज ने जनसंख्या शिक्षा पर तीन कार्यक्रम और विकलांगों की शिक्षा पर दो कार्यक्रम आयोजित किए । स्कूल अध्यापकों के सामूहिक अभिविन्यास कार्यक्रम (पी०एम०ओ०एस०टी०) के अंतर्गत सेवाकालीन अध्यापकों के प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करने में कालेज ने राज्यों की सहायता की । इसने नवोदय विद्यालयों के लिए छात्रों के चयन से संबद्ध कार्यों और सेवाकालीन अध्यापकों और अध्यापक शिक्षकों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करने की सहायता की ।

क्षेत्रीय शिक्षा कालेज, भुवनेश्वर

क्षेत्रीय शिक्षा कालेज भुवनेश्वर में बी० एस–सी० (आनर्स) बी० एड० डिग्री के लिए विज्ञान शिक्षा में चार वर्षीय–समेकित पाठ्यक्रम, बी० ए० (आनर्स), बी०एड० डिग्री के लिए अंग्रेजी शिक्षा में चार वर्षीय समेकित पाठ्यक्रम, एकवर्षीय बी०एड० (माध्यमिक) पाठ्यक्रम, एकवर्षीय बी० एड० (प्रारंभिक) पाठ्यक्रम, बी०एड० डिग्री के लिए ग्रीष्मकालीन विद्यालय एवं पत्राचार पाठ्यक्रम, एकवर्षीय एम०एड० पाठ्यक्रम और दो वर्षीय एम० एस–सी० एड० (जीव विज्ञान) पाठ्यक्रम की सुविधा उपलब्ध हैं ।

नामांकन

1987–88 के शैक्षिक सत्र में विभिन्न सेवापूर्व पाठ्यक्रमों के नामांकन सारणी 8.12 और 8.13 में दिए गए हैं ।

सारणी 8.6

1987–88 में सेवापूर्व पाठ्यक्रम में नामांकन

क्र० सं०	पाठ्यक्रम	पाठ्यक्रम की अवधि	नामांकन वर्ष प्रथम	द्वितीय	तृतीय	चतुर्थ	1 वर्ष	कुल जोड़
1.	बी० एस-सी० बी० एड०	4 वर्ष	72	66	60	74	–	272
2.	बी० ए० बी० एड०	4 वर्ष	31	26	26	30	–	113
3.	बी० एड० (विज्ञान)	1 वर्ष	–	–	–	–	61	61
4.	बी० एड० (वाणिज्य)	1 वर्ष	–	–	–	–	38	38
5.	बी० एड० (प्रारंभिक)	1 वर्ष	–	–	–	–	41	41
6.	एम० एड०	1 वर्ष	–	–	–	–	14	14
		कुल जोड़	103	92	86	104	154	539

सारणी 8.7

1987–88 के शैक्षिक सत्र में सेवापूर्व पाठ्यक्रमों में (राज्यशः) नामांकन

क्र० सं०	पाठ्यक्रम	कुल जोड़	म० प्र०	महाराष्ट्र	गुजरात	गोवा, दमन दयू, दादर नागर हवेली	उत्तर प्रदेश
1	2	3	4	5	6	7	8
1.	बी० एस-सी० बी० एड० प्रथम वर्ष	72	61	9	1	1	–
2.	बी० एस-सी० बी० एड० द्वितीय वर्ष	66	62	2	2	–	–
3.	बी० एस-सी० बी० एड० तृतीय वर्ष	60	58	1	1	–	–
4.	बी० एस-सी० बी० एड० चतुर्थ वर्ष	74	73	1	–	–	–
5.	बी० ए० बी० एड० प्रथम वर्ष	31	23	3	–	–	5
6.	बी० ए० बी० एड० द्वितीय वर्ष	26	25	–	–	–	1
7.	बी० ए० बी० एड० तृतीय वर्ष	26	24	–	–	–	2
8.	बी० ए० बी० एड० चतुर्थ वर्ष	30	24	4	–	–	2
9.	बी० एड० (विज्ञान)	61	22	21	17	1	–
10.	बी० एड० (वाणिज्य)	38	13	18	7	–	–
	कुल जोड़	484	385	59	28	2	10

सारणी 8.8

1987–88 में पूर्व सेवा में अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति के छात्रों का नामांकन

क्र० सं०	पाठ्यक्रम	कुल योग	इनमें से	
			अनुसूचित जाति	अनुसूचित जनजाति
1	2	3	4	5
1.	बी० एस–सी० बी० एड० प्रथम वर्ष	72	6	–
2.	बी० एस–सी० बी० एड० द्वितीय वर्ष	66	1	–
3.	बी० एस–सी० बी० एड० तृतीय वर्ष	60	1	–
4.	बी० एस–सी० बी० एड० चतुर्थ वर्ष	74	1	–
5.	बी० ए० बी० एड० प्रथम वर्ष	31	–	–
6.	बी० ए० बी० एड० द्वितीय वर्ष	26	–	–
7.	बी० ए० बी० एड० तृतीय वर्ष	26	2	–
8.	बी० ए० बी० एड० चतुर्थ वर्ष	30	1	–
9.	बी० एड० (विज्ञान)	61	4	2
10.	बी० एड० (वाणिज्य)	38	6	4
11.	बी० एड० (प्रारंभिक)	41	6	4
12.	एम० एड०	14	–	–
	कुल जोड़	539	28	10

सारणी 8.9

1987–88 वर्ष में सेवाकालीन पाठ्यक्रम एवं ग्रीष्मकालीन विद्यालय एवं पत्राचार पाठ्यक्रम (बी एड – एस एस सी सी सी) में (राज्यश:) नामांकन

क्र० सं०	पाठ्यक्रम	(राज्यश:) नामांकन				
		म० प्र०	महाराष्ट्र	गुजरात	गोवा दमन द्यू	दादर और नागर हवेली
1.	बी० एड० (एस. एस. सी. सी. सी.) प्रथम वर्ष		कोई प्रवेश नहीं			
2.	बी० एड० (एस. एस. सी. सी. सी.) द्वितीय वर्ष					
	सामान्य	145	55	38	17	35
	अनुसूचित जाति	13	4	9	1	–
	अनुसूचित जनजाति	2	1	1	–	–
	कुल जोड़	160	60	48	18	35

सारणी 8.10

1987–88 में शैक्षिक सत्र के परीक्षा फल

पाठ्यक्रम का नाम	नामांकित छात्रों की संख्या	परीक्षा में बैठे छात्रों की संख्या	उत्तीर्ण छात्रों की संख्या
बी० ए० बी० एड० i	29	29	26
बी० ए० बी० एड० ii	26	26	22
बी० ए० बी० एड० iii	32	31	29
बी० ए० बी० एड० iv	24	22	22
बी० एस-सी० बी० एड० i	82	81	62
बी० एस-सी० बी० एड० ii	61	61	60
बी० एस-सी० बी० एड० iii	74	73	73
बी० एस-सी० बी० एड० iv	65	65	63
बी० एड० (विज्ञान)	50	49	49
बी० एड० (वाणिज्य)	52	51	50
बी० एड० (प्रारंभिक)	28	28	28
एम० एड०	8	8	7
बी० एड० (एस. एस. सी. सी. सी.)	158	157	154

सारणी 8.11

1987–88 वर्ष में आयोजित प्रशिक्षण/अभिविन्यास कार्यक्रम, कार्यशाला और सम्मेलन

क्र० सं०	कार्यक्रम का नाम	तारीख/अवधि	स्थान	भाग लेने वाले व्यक्तियों की संख्या
1	2	3	4	5
1.	शिक्षण-निदेशों के लिए अभिविन्यास कार्यक्रम	6 से 11 जुलाई, 1987 (6 दिन)	भोपाल	24
2.	पश्चिम प्रदेश के + 2 स्तर के अध्यापक शिक्षण के लिए भौतिकी में विषयवस्तु समृद्धि कार्यक्रम	13 से 22 जुलाई, 1987 (10 दिन)	भोपाल	29
3.	+ 2 स्तर के रसायन की शिक्षण परीक्षण कैप्सूल विकसित करने के लिए म० प्र० के जनजातीय क्षेत्रों के अध्यापक-शिक्षकों और अध्यापकों का अभिविन्यास	20 से 25 जुलाई, 1987 (6 दिन)	धार	13
4.	+ 2 स्तर के गणित शिक्षण में ज्ञान साधन व्यक्तियों का अभिविन्यास	– वही –	भोपाल	27
5.	पर्यावरण उपागम की सहायता से एक अध्यापक वाले विद्यालय और अनौपचारिक शिक्षा केन्द्रों में शिक्षण की नीति	– वही –	विदिसा	23
6.	+ 2 स्तर की ग्यारहवीं कक्षा के लिए व्यापार संगठन की अभ्यास पुस्तक को अंतिम रूप देने का अभिविन्यास कार्यक्रम	27 से 29 जुलाई, 1987 (3 दिन)	भोपाल	2
7.	गुजरात के जनजातीय क्षेत्र के अध्यापकों और छात्रों का सम्मेलन	3 और 4 अगस्त, 1987 (2 दिन)	भंडारा	21
8.	राष्ट्रीय शिक्षा परिषद् 1986 के दृष्टि से सामाजिक विज्ञान की विषयवस्तु और प्रक्रिया में महाराष्ट्र और गुजरात के सी. सी. ई के ज्ञान साधन व्यक्तियों/समन्वयकों का अभिविन्यास कार्यक्रम	3 से 8 अगस्त, 1987 (6 दिन)	भोपाल	11
9.	पर्यावरण शिक्षा के लिए पोस्टरों और चार्टरों का विकास	7 से 12 अगस्त, 1987 (6 दिन)	भोपाल	19
10.	सामान्य स्कूल में दृष्टि की कमी वाले छात्रों की समेकित शिक्षा को लागू करने के लिए शिक्षा विभाग के प्रशासकों का अभिविन्यास कार्यक्रम	24 से 29 सितंबर, 1987 (6 दिन)	भोपाल	10

1987-88

क्र० सं०	कार्यक्रम का नाम	तारीख/अवधि	स्थान	भाग लेने वाले व्यक्तियों की संख्या
11.	पश्चिम प्रदेश के अध्यापक-शिक्षकों का भूगोल में विशेष अभिविन्यास पाठ्यक्रम	14 से 23 सितंबर, 1987 (10 दिन)	भोपाल	12
12.	प्रारंभिक स्तर पर शिक्षण के समेकित उपागम की शिक्षण नीति विकसित करने के लिए प्रारंभिक शिक्षा के अध्यापकों और अध्यापक-शिक्षकों की कार्यशाला	21 से 25 सितंबर, 1987 (5 दिन)	भोपाल	47
13.	+ 2 स्तर की जैविकी की विषयवस्तु और कार्यप्रणाली में मध्य प्रदेश के अध्यापकों और अध्यापक-शिक्षकों का अभिविन्यास और शिक्षण/परीक्षण कैप्सूल का विकास	24 से 29 सितंबर 1987 (6 दिन)	भोपाल	36
14.	कार्य अनुभव/एस० यू० पी० डब्ल्यू और व्यावसायिक शिक्षा क्षेत्रों में मध्यप्रदेश के प्रधानाचार्यों/प्रधान कार्यकर्ताओं का अभिविन्यास कार्यक्रम	5 से 10 अक्टूबर 1987 (6 दिन)	भोपाल	32
15.	संघ राज्य-क्षेत्र गोवा के माध्यमिक स्तर का विषय वस्तु एवं कार्य-प्रणाली समृद्धि कार्यक्रम	26 से 31 अक्टूबर 1987 (6 दिन)	गोवा	26
16.	दादर नागर हवेली के प्रारंभिक स्तर पर भाषाकौशल विकसित करने की कार्यशाला	2 से 10 नवंबर,	सिल्वासा	29
17.	पश्चिम प्रदेश में भूगोल के मूल्यांकन तकनीक में सुधार लाने के लिए कार्यशाला	9 से 14 नवंबर, 1987 (6 दिन)	सूरत	34
18.	कक्षा-1 की अभ्यास पुस्तक (उर्दू) तैयार करने के लिए कार्यशाला	8 से 13 दिसंबर, 1987 (6 दिन)	पुने	12
19.	सामान्य विद्यालयों में प्रशासकों (हेडमास्टर/प्रिंसिपल) के लिए दृष्टि की कमी वाले छात्रों की समेकित शिक्षा में अभिविन्यास कार्यक्रम	30 नवंबर से 5 दिसंबर 1987 (6 दिन)	बंबई	–
20.	महाराष्ट्र की एन एफ ई बालिकाओं में प्रधान कार्यकर्ताओं का अभिविन्यास	4 से 8 जनवरी, 1988 (3 दिन)	औरंगाबाद	10
21.	व्यावसायिक स्तर पर वाणिज्य का शिक्षण करने के लिए गुजरात के वाणिज्य अध्यापकों का अभिविन्यास कार्यक्रम	4 से 9 जून, 1988 (6 दिन)	भोपाल	15
22.	नवीं और दसवीं स्तर की जैविकी की विषयवस्तु और कार्यप्रणाली में मध्यप्रदेश के अध्यापकों और अध्यापक शिक्षकों का अभिविन्यास और शिक्षण सामग्री का विकास	11 से 16 जनवरी, 1988 (6 दिन)	भोपाल	7
23.	(महाराष्ट्र) ग्यारहवीं कक्षा के भूगोल की अभ्यास पुस्तक के मूल्यांकन के लिए कार्यशाला	18 से 20 जनवरी, 1988 (3 दिन)	पुने	20
24.	दृष्टि की कमी वाले छात्रों की समेकित शिक्षा पर विशेष बल देते हुए पर्यवेक्षण सेवा को प्रबल बनाने के लिए एस०सी०ई०आर०टी, डी०आई०ई०टी० के ज्ञानसाधन व्यक्तियों का प्रशिक्षण पाठ्यक्रम	8 से 13 फरवरी, 1988 (6 दिन)	पालनपुर	25
25.	नयी शिक्षा नीति में मध्यप्रदेश के केन्द्रीय क्षेत्र के जनजातीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के प्रिंसिपलों का अभिविन्यास कार्यक्रम	15 से 19 फरवरी, 1988 (5 दिन)	काल्पी	25
26.	कार्य अनुभव/एस. यु. पी. डब्ल्यू के क्षेत्रों में शिक्षण सामग्री विकसित करने के लिए कार्यशाला	15 से 25 फरवरी, 1988 (11 दिन)	भोपाल	15

अन्य एजेन्सियों द्वारा आयोजित किए गए कार्यक्रम

1.	म० प्र० विश्वविद्यालय के छात्रों, अध्यापकों और प्रतिनिधियों की बैठक	11 जुलाई, 1987	भोपाल विश्वविद्यालय, भोपाल
2.	विज्ञान जत्था कार्यक्रम के अंतर्गत विज्ञान अध्यापकों का सम्मेलन	4 और 5 अक्टूबर, 1987	म० प्र० विज्ञान प्रोद्योगिकी परिषद् म० प्र० भोपाल
3.	आर्मी अफसर और बी० एड० (ए. ई. सी.) के छात्रों का दौरा		आर्मी शिक्षा और प्रशिक्षण कालेज, पचमढ़ी
4.	अल्पसंख्यकों के प्रधानाचार्यों का सम्मेलन	9 से 11 नवंबर, 1987	वाक्फ बोर्ड केन्द्रीय सरकार

सारणी 8.12
1987-88 के शैक्षिक सत्र में सेवापूर्व पाठ्यक्रमों में (राज्यशः) नामांकन

क्र० सं०	पाठ्यक्रम	कुल नामांकन	राज्यशः नामांकन			
			उड़ीसा	बिहार	प० बं०	असम तथा अन्य राज्य
1.	बी० ए० बी० एड० भाग 1	67	24	13	14	16
2.	– वही – भाग 2	60	20	16	16	8
3.	– वही – भाग 3	56	19	13	12	12
4.	– वही – भाग 4	54	13	14	16	11
5.	बी० एस-सी० बी० एड० भाग 1	81	20	13	23	19
6.	– वही – भाग 2	71	18	20	16	17
7.	– वही – भाग 3	72	116	15	20	21
8.	– वही – भाग 4	81	24	23	24	10
9.	एक वर्षीय बी० एड० (विज्ञान) माध्यमिक	99	39	30	29	1
10.	एक वर्षीय बी० एड० (कला) माध्यमिक	61	29	16	11	5
11.	एक वर्षीय बी० एड० (वाणिज्य)	21	6	11	4	–
12.	एकवर्षीय बी० एड० (विज्ञान) प्रारंभिक	10	3	3	44	–
13.	एक वर्षीय बी० एड० (कला) प्रारंभिक	11	8	1	1	1
14.	एम० एड०	22	16	4	1	1
15.	एम० एस-सी० (जीव विज्ञान) एड० भाग 1	22 असम – 1 उड़ीसा – 5 कर्नाटक – 2 आंध्रप्रदेश – 2		बिहार – 2 पंजाब – 3 उ० प्र० – 1 राजस्थान – 1		पश्चिम बंगाल – 3 दिल्ली – 1 केरल – 1
16.	एम० एस-सी० (जीव विज्ञान) एड० भाग 2	20 आंध्रप्रदेश – 4 केरल – 2 पश्चिम बंगाल – 4		मध्यप्रदेश – 1 उड़ीसा – 3 हिमाचल प्रदेश – 1		कर्नाटक – 3 बिहार – 1 उत्तरप्रदेश – 1

सारणी 8.13
1987-88 के दौरान सेवापूर्व में अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति के छात्रों का नामांकन

क्र० सं०	पाठ्यक्रम	नामांकन		
		कुल नामांकन	अनुसूचित जाति	अनुसूचित जनजाति
1.	बी० ए० बी० एड० भाग – 1	67	5	4
2.	– वही – भाग – 2	60	2	1
3.	– वही – भाग – 3	56	1	1
4.	– वही – भाग – 4	54	3	1
5.	बी० एस-सी० बी० एड० भाग – 1	81	7	1
6.	– वही – भाग – 2	71	12	–
7.	– वही – भाग – 3	72	2	–
8.	– वही – भाग – 4	81	5	–
9.	एक-वर्षीय बी० एड० (विज्ञान) माध्यमिक	99	4	1
10.	एक-वर्षीय बी० एड० (कला) माध्यमिक	61	7	4
11.	एक-वर्षीय बी० एड० (वाणिज्य)	21	4	–
12.	एक-वर्षीय बी० एड० (विज्ञान) प्रारंभिक	10	1	–
13.	एक-वर्षीय बी० एड० (कला) प्रारंभिक	11	–	1
14.	एम० एड०	22	3	–
15.	एम० एस-सी० (जीव विज्ञान) एड० भाग 1	22	2	–
16.	एम० एस-सी० (जीव विज्ञान) भाग 2	20	2	–
	कुल जोड़	808	60	13

सारणी 8.14
1987–88 में बी०एड० (एस०एस०सी०सी०) में नामांकन

क्र० सं०	पाठ्यक्रम	कुल नामांकन	नामांकन	
			अनुसूचित जाति	अनुसूचित जनजाति
1.	माध्यमिक	प्रथम वर्ष 165	3	3
		द्वितीय वर्ष 88	3	3
2.	प्रारंभिक	प्रथम वर्ष 81	3	1
		द्वितीय वर्ष 43	2	2

सारणी 8.15
1987–88 में बी०एड० (एस०एस०सी०सी०) में राज्यशः नामांकन

क्र० सं०	पाठ्यक्रम	कुल नामांकन	राज्यशः नामांकन			
			उड़ीसा	बिहार	पश्चिम बंगाल	असम और उत्तर पूर्व राज्य
1.	माध्यमिक	प्रथम वर्ष 165	57	50	29	29
		द्वितीय वर्ष 88	36	23	13	11
2.	प्रारंभिक	प्रथम वर्ष 81	48	22	4	7
		द्वितीय वर्ष 43	21	11	5	6

सारणी 8.16
1987 के शैक्षिक सत्र के परीक्षा फल

क्र० सं०	पाठ्यक्रम	बैठने वाले छात्रों की कुल संख्या	उत्तीर्ण छात्रों की संख्या	उत्तीर्ण प्रतिशतता
1.	बी० ए० बी० एड० भाग – 1	58	58	100 प्रतिशत
2.	– वही – भाग – 2	56	55	98 प्रतिशत
3.	– वही – भाग – 3	54	54	100 प्रतिशत
4.	– वही – भाग – 4	45	45	100 प्रतिशत
5.	बी० एस–सी० बी० एड० भाग – 1	74	55	74 प्रतिशत
6.	बी० एस–सी० बी० एड० भाग – 2	72	65	90 प्रतिशत
7.	बी० एस–सी० बी० एड० भाग – 3	79	75	95 प्रतिशत
8.	बी० एस–सी० बी० एड० भाग – 4	68	63	92.6 प्रतिशत
9.	एक वर्षीय बी० एड०	195	166	85.12 प्रतिशत
10.	एम० एड०	20	18	90 प्रतिशत
11.	एम० एस–सी० (जीव विज्ञान) एड० भाग – 1	25	23	92 प्रतिशत
12.	एम० एस–सी० (जीव विज्ञान) एड० भाग – 2	15	15	100 प्रतिशत

सारणी 8.17
1987 वर्ष के बी० एड० ग्रीष्मकालीन विद्यालय एवं पत्राचार पाठ्यक्रम के परीक्षा फल

क्र० सं०	पाठ्यक्रम	कुल नामांकित छात्रों की संख्या		परीक्षा में बैठे छात्रों की संख्या		उत्तीर्ण छात्रों की संख्या प्रतिशत			
		आर सी ई केन्द्र	इम्फाल उपकेन्द्र	आर सी ई केन्द्र	इम्फाल	आर सी ई	इम्फाल	आर सी ई	इम्फाल
1.	बी० एड० (एस एस/सी सी) माध्यमिक	138	125	122	100	77	24	63 प्रतिशत	24 प्रतिशत
2.	बी० एड० (एस एस/सी सी) प्रारंभिक	60	104	51	73	39	15	76.5 प्रतिशत	20.5 प्रतिशत

सारणी 8.18

1987–88 में आयोजित प्रशिक्षण/अभिविन्यास कार्यक्रम

क्र० सं०	कार्यक्रम का नाम	राज्य और स्थान	तारीख/ अवधि	भाग लेने वाले व्यक्तियों की संख्या
1	2	3	4	5
1.	राज्य स्तर के प्रधान कार्यकर्त्ताओं के लिए अभिविन्यास कार्यक्रम (क) प्राथमिक (ख) प्रारंभिक (ग) माध्यमिक	पूर्वी प्रदेश (भुवनेश्वर)	9 से 11 अप्रैल 1987 (3 दिन) 12 से 14 अगस्त 1987 (3 दिन)	21 17
2.	नवोदय विद्यालयों के अध्यापकों के लिए अभिविन्यास कार्यक्रम	पूर्वी प्रदेश (भुवनेश्वर)	4 से 9 जून, 1987 (6 दिन)	19
3.	पर्यावरण उपागम के जरिए विज्ञान में विषयवस्तु समृद्धि पर अभिविन्यास कार्यक्रम	बिहार (रांची)	10 से 17 सितंबर 1987 (8 दिन)	10
4.	शिक्षण कुशलता के पाठ योजना और विकास पर कार्यशाला	पूर्वी प्रदेश (भुवनेश्वर)	21 से 25 सितंबर, 1987 (5 दिन)	18
5.	शिक्षण–अधिगम समस्याओं पर प्रारंभिक विद्यालयों के अनुसूचित जनजाति के अध्यापकों के लिए अभिविन्यास कार्यक्रम	अण्डमान और निकोबार द्वीप (कार निकोबार)	13 से 18 अक्टूबर, 1987 (6 दिन)	33
6.	अंग्रेजी के शिक्षण और अधिगम का मानकीकरण करने के लिए अंग्रेजी की विषयवस्तु और शिक्षण विधि पर अभिविन्यास पाठ्यक्रम	मणिपुर (इम्फाल)	13 से 21 अक्टूबर, 1987 (9 दिन)	26
7.	माध्यमिक विद्यालय के अध्यापकों को विज्ञान का शिक्षण करने के लिए प्रयोगशाला का उपयोग	उड़ीसा (भुवनेश्वर)	27 अक्टूबर, से 2 नवंबर, 1987 (6 दिन)	26
8.	माध्यमिक स्तर के विज्ञान में मणिपुर के प्रधान ज्ञानसाधन व्यक्तियों का प्रशिक्षण	मणिपुर (इम्फाल)	2 से 15 नवंबर, 1987	30
9.	केन्द्रीय वाक्फ परिषद् के अधीन शैक्षिक संस्थाओं के प्रधानाचार्यों/ हेडमास्टरों/प्रबंधकों का पांच दिवसीय संलग्न कार्यक्रम	बिहार और परिचम बंगाल (भुवनेश्वर)	9 से 13 नवंबर 1987 (5 दिन)	12
10.	माध्यमिक स्तर के सामाजिक विज्ञान में प्रधान ज्ञानसाधन व्यक्तियों का अभिविन्यास	मणिपुर (इम्फाल)	25 नवंबर से 1 दिसंबर 1987 (7 दिन)	30
11.	शिक्षुता प्रशिक्षण/कार्य के स्थान पर उद्योगों और तकनीकी तथा उच्चतर माध्यमिक शिक्षण के राज्य विभाग के प्रधान कार्मिकों की संगोष्ठी	उड़ीसा (भुवनेश्वर)	4 दिसंबर, 1987 (1 दिन)	17
12.	शिक्षण–अधिगम समस्या पर प्रारंभिक विद्यालयों के अनुसूचित जाति के अध्यापकों के लिए अभिविन्यास कार्यक्रम	उड़ीसा (बौलनगीर)	7 से 12 दिसंबर, 1987 (6 दिन)	36

कालेज में पूर्वी प्रदेश के अप्रशिक्षित अध्यापकों के लिए बी० एड० ग्रीष्मकालीन विद्यालय एवं पत्राचार पाठ्यक्रम (माध्यमिक और प्रारंभिक) की भी सुविधा उपलब्ध है । 1987–88 के शैक्षिक सत्र में इन पाठ्यक्रमों में किए गए नामांकन को सारणी 8.14 और 8.15 में दिखाई गया है ।

मणिपुर में पहले से चले आ रहे अप्रशिक्षित स्नातक अध्यापकों को प्रशिक्षित करने के लिए मणिपुर सरकार के अनुरोध पर इम्फाल में माध्यमिक और प्रारंभिक पाठ्यक्रम में क्रमशः 120 और 100 नामांकन वाला एक उपकेन्द्र खोला गया है ।

परीक्षा फल

उत्कल विश्वविद्यालय की 1987 की परीक्षाओं में बैठने वाले हमारे छात्रों के पाठ्यक्रम के अनुसार परीक्षाफल सारणी 8.16 में दिए गए हैं । उत्कल विश्वविद्यालय की 1987 की बी०एड० (एस०एस०सी०सी०सी) परीक्षा में बैठने वाले छात्रों की संख्या सारणी 8.17 में दी गई है ।

विस्तार सेवा

विस्तार सेवा के अंग के रूप में कालेज ने अनेक अध्यापक प्रशिक्षण पाठ्यक्रम आयोजित किए हैं । 1987–88 में आयोजित किए गए सेवाकालीन कार्यक्रमों और इन कार्यक्रमों में पूर्वी प्रदेश से राज्य/संघ राज्य–क्षेत्रों के भाग ......लेने वालों की संख्या का विवरण सारणी 8.18 में दिया गया है।

1987-88

क्षेत्रीय शिक्षा कालेज, मैसूर

क्षेत्रीय शिक्षा कालेज, मैसूर में बी० एस-सी० बी० एड० डिग्री के लिए विज्ञान शिक्षा में चार वर्षीय समेकित पाठ्यक्रम, बी० ए० बी० एड० डिग्री के लिए अंग्रेजी शिक्षा में चार वर्षीय समेकित पाठ्यक्रम, एक एक-वर्षीय बी० एड० पाठ्यक्रम, एक एक-वर्षीय एम० एड० पाठ्यक्रम और रसायन, गणित और भौतिकी में दो वर्षीय एम० एस-सी० एड० पाठ्यक्रम की सुविधा उपलब्ध है ।

नामांकन

1987-88 के शैक्षिक सत्र में विभिन्न सेवापूर्व पाठ्यक्रमों में किए गए नामांकन सारणी 8.19, 8.20 और 8.21 में दिए गए हैं ।

परीक्षाफल

1987 वर्ष में विभिन्न पाठ्यक्रमों में छात्रों के परीक्षाफल सारणी 8.22 में दिए गए हैं ।

विस्तार सेवा

देश में सेवापूर्व अध्यापकों की शिक्षा का स्तर ऊंचा रखने की अपनी भूमिका निभाने के अतिरिक्त कालेज अध्यापक शिक्षा में नीति प्रणोद को लागू करने में दक्षिण प्रदेश के एक मुख्य केन्द्र के रूप में कार्य कर रहा है जैसा कि अध्यापक शिक्षा में राष्ट्रीय परिषद, राष्ट्रीय शिक्षा नीति और कार्यान्वयन कार्यक्रम में व्यक्त किया गया है । यह कालेज विद्यालयों में कम्प्यूटर साक्षरता और अध्ययन (क्लास) परियोजना, व्यापक सेवाकालीन अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम, नवोदय विद्यालय, जिला शिक्षा प्रशिक्षण संस्थान और जनसंख्या शिक्षा जैसे विभिन्न केन्द्रीयतः प्रायोजित योजनाओं में अपने को लगाए हुए हैं । 1987-88 वर्ष में कालेज ने अनेक कार्यक्रम किए हैं। कालेज में आयोजित 37 परिषद् कार्यक्रमों में से 26 कार्यक्रम कालेज के प्रोग्राम में जो मुख्यतः शिक्षण सामग्री के विकास, प्रधान कार्यकर्ताओं के प्रशिक्षण और संकाय के अनुसंधान और विकास कार्य के विस्तार से संबंधित थे ।

आलोच्य वर्ष में कार्यशालाओं और संगोष्ठियों के जरिए 900 अध्यापकों और अध्यापक-शिक्षकों को अभिविन्यास/प्रशिक्षण दिया गया ।

कालेज ने कुछ विशेष समूहों के लिए राष्ट्रीय स्तर पर कुछ प्रशिक्षण कार्यक्रम भी चलाया । केन्द्रीय तिब्बती विद्यालयों के प्राथमिक अध्यापकों का प्रशिक्षण कार्यक्रम, केन्द्रीय वाक्फ परिषद् के अनुरोध पर मुस्लिम प्रबंधित विद्यालयों के प्रधानाचार्यों और प्रबंधकों के अभिविन्यास कार्यक्रम दो ऐसे महत्वपूर्ण कार्यक्रम थे जिन्हें 1987-88 वर्ष में आयोजित किया गया ।

छोटे किसानों के विषय पर विशेष कार्यक्रम आयोजित करके कालेज ने विश्व खाद्य दिवस मनाया । विश्व खाद्य दिवस मनाने का उद्देश्य पारिवारिक खाद्य उत्पादकों की आवश्यकताओं की ओर लोगों का ध्यान दिलाना और विश्व खाद्य उत्पादन में उनके योगदान के महत्व को समझाना है ।

संघ राज्य क्षेत्र लक्षद्वीप की विशिष्ट शैक्षिक आवश्यकताओं पर विचार करने के लिए कालेज की प्रबंध समिति की 26वीं बैठक कवराती में हुई। शैक्षिक मार्गदर्शन उपलब्ध कराके और सेवाकालीन कार्यक्रम आयोजित करके कालेज ने इस द्वीप की शिक्षा प्रक्रिया में सक्रिय रूप से भाग लेने की योजना बनायी है ।

1987-88 वर्ष में कालेज द्वारा आयोजित किए गए प्रशिक्षण/अभिविन्यास कार्यक्रमों, कार्यशालाओं और बैठकों के ब्यौरे सारणी 8.22 में दिए गए हैं ।

इन कार्यकलापों के अतिरिक्त कालेज ने विद्यालय शिक्षा के विभिन्न पहलुओं पर अनुसंधान अध्ययन करने का कार्य भी अपने हाथ में ले रहा है । 1987-88 वर्ष में कालेज ने शिक्षा की दृष्टि से मानसिक मंदबुद्धि वाले बच्चों में पढ़ाई के प्रति सुधार लाने की परियोजना अपने हाथ में ली ।

निदर्शन बहु-उद्देश्य विद्यालय

क्षेत्रीय शिक्षा कालेजों से जुड़े निदर्शन बहु-उद्देश्य विद्यालय कालेजों द्वारा चलाए गए विभिन्न अध्यापक शिक्षा में नामांकित अध्यापक प्रशिक्षणार्थियों के व्यवहारिक विद्यालयों के रूप में काम करते हैं । विद्यालय शिक्षा और अध्यापक शिक्षा में नवीन प्रक्रियात्मक व्यवहारों में विद्यालय एक प्रयोगशाला के रूप में काम करते हैं ।

सारणी 8.19
1987-88 के शैक्षिक सत्र में विभिन्न सेवापूर्व पाठ्यक्रमों में नामांकन

क्र० सं०	पाठ्यक्रम	पाठ्यक्रम की अवधि	वर्षतः नामांकन				
			प्रथम वर्ष	द्वितीय वर्ष	तृतीय वर्ष	चतुर्थ वर्ष	कुल जोड़
1.	बी० एड०	एक वर्ष	78	–	–	–	78
2.	एम० एड०	एक वर्ष	30	–	–	–	30
3.	बी० ए० एड०	चार वर्ष	32	29	28	26	115
4.	बी० एस-सी० एड०	चार वर्ष	81	59	54	57	251
5.	एम० एस-सी० एड० (भौतिक)	दो वर्ष	24	11	–	–	35
6.	एम० एस-सी० एड० (रसायन)	दो वर्ष	22	18	–	–	40
7.	एम० एस-सी० एड० (गणित)	दो वर्ष	22	14	–	–	36
		कुल जोड :	289	131	82	83	585

सारणी 8.20

1987-88 के शैक्षिक सत्र में विभिन्न सेवापूर्व पाठ्यक्रमों में (राज्यशः) नामांकन

क्र० सं०	पाठ्यक्रम	कुल छात्र	राज्यशः संख्या				
			आंध्र० प्र०	त० ना०	कर्नाटक	केरल	पांडिचेरी
1.	बी० एड०	78	29	23	12	12	12
2.	एम० एड०	30	12	1	12	5	–
3.	बी० ए० एड० प्रथम वर्ष	32	6	11	9	6	–
	द्वितीय वर्ष	29	10	10	5	4	–
	तृतीय वर्ष	28	3	9	5	6	–
	चतुर्थ वर्ष	26	9	8	5	4	–
4.	बी० एस-सी० एड० प्रथम वर्ष	81	23	32	13	11	2
	द्वितीय वर्ष	59	22	12	12	11	2
	तृतीय वर्ष	54	18	17	8	10	1
	चतुर्थ वर्ष	57	17	24	8	7	–
5.	एम० एस-सी०एड० प्रथम वर्ष	24	12	7	3	2	–
	द्वितीय वर्ष	11	–	7	2	2	–
6.	एम० एस-सी० एड० प्रथम वर्ष	22	8	6	2	2	4
	द्वितीय वर्ष	18	3	8	2	3	2
7.	एम० एस-सी० एड० प्रथम वर्ष (गणित)	22	14	2	–	2	4
	द्वितीय वर्ष	14	3	–	3	6	2
	कुल जोड़	505	195	177	101	93	19

सारणी 8.21

1987-88 के शैक्षिक सत्र में विभिन्न सेवापूर्व पाठ्यक्रमों में अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति के छात्रों का नामांकन

क्र० सं०	पाठ्यक्रम	छात्रों की कुल संख्या	अनुसूचित जाति	अनुसूचित जनजाति
1.	बी० एड०	78	4	1
2.	एम० एड०	30	2	1
3.	बी० ए० एड० प्रथम वर्ष	32	3	–
	द्वितीय वर्ष	29	–	2
	तृतीय वर्ष	28	–	–
	चतुर्थ वर्ष	26	–	–
4.	बी० एस-सी० एड० प्रथम वर्ष	31	4	1
	द्वितीय वर्ष	59	3	–
	तृतीय वर्ष	54	4	–
	चतुर्थ वर्ष	57	1	–
5.	एम० एस-सी० एड० प्रथम वर्ष	24	–	–
	(भौतिकी) द्वितीय वर्ष	11	–	–
6.	एम० एस-सी० एड० प्रथम वर्ष	22	01	–
	(रसायन) द्वितीय वर्ष	18	01	–
7.	एम० एस-सी० एड० प्रथम वर्ष	22	–	–
	(गणित) द्वितीय वर्ष	14	–	–
	कुल जोड़	585	23	5

सारणी 8.22

1987 वर्ष के परीक्षा फल

क्र० सं०	पाठ्यक्रम का नाम	कुल नामांकित संख्या	बैठे छात्रों की कुल संख्या	उत्तीर्ण छात्रों की कुल संख्या	उत्तीर्ण छात्रों की प्रतिशतता
1.	बी० एड०	80	72	71	99
2.	एम० एड०	26	22	22	100
3.	बी० ए० एड०	29	29	27	93
4.	बी० एस-सी० एड०	47	47	42	89
5.	बी० एड० (ई टी ई)	19	17	16	94
6.	एम० एस-सी० एड० (भौतिकी)	21	21	12	57
7.	एम० एस-सी० एड० (रसायन)	16	16	16	100

सारणी 8.23

1987-88 वर्ष में आयोजित किए गए प्रशिक्षण/अभिविन्यास कार्यक्रम, कार्यशाला और बैठक

क्र० सं०	कार्यक्रम का नाम	तारीख/ अवधि	भाग लेने वाले व्यक्तियों की संख्या	आंध्र प्रदेश	कर्नाटक	केरल	तमिलनाडु	पाण्डिचेरी	अन्य
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
1.	तिब्बती विद्यालय के अध्यापकों के लिए गणित में विषयवस्तु समृद्धि कार्यक्रम	6 से 13 जून, 1987 (8 दिन)	15	–	–	–	–	–	15
2.	माध्यमिक स्तर की भौतिकी के कुछ चुने हुए प्रकरणों में संसाधन सामग्री को अंतिम रूप देने के लिए कार्यशाला	6 से 15 जुलाई, 1987 (10 दिन)	6	–	6	–	–	–	–
3.	तमिलनाडु और पाण्डिचेरी के माध्यमिक विद्यालय अध्यापकों के लिए कम्प्यूटर शिक्षा पर कार्यशाला	13 से 18 जुलाई, 1987 (6 दिन)	26	–	–	–	21	5	–
4.	विद्यालय शिक्षा में कम्प्यूटरों के प्रयोग पर अभिविन्यास कार्यक्रम	20 से 22 जुलाई, 1987 (3 दिन)	28	–	–	–	23	5	–
5.	केरल के माध्यमिक विज्ञान अध्यापकों की रसायन में हो रही संभावनात्मक कठिनाइयों का पता लगाने पर कार्यशाला	10 और 11 अक्टूबर, 1987 (2 दिन)	37	–	–	–	–	–	–
6.	केरल के माध्यमिक विज्ञान अध्यापकों की रसायन में हो रही संकल्पनात्मक कठिनाइयों का पता लगाने पर कार्यशाला	10 और 11 अक्टूबर, 1987 (2 दिन)	26	–	–	26	–	–	–
7.	ग्रामीण क्षेत्रों में विज्ञान और प्रौद्योगिकी शिक्षण पर ग्रामीण विद्यालय विज्ञान अध्यापकों को अभिविन्यास करने के लिए कार्यशाला	16 से 20 नवंबर, 1987 (5 दिन)	18	–	18	–	–	–	–
8.	कर्नाटक के + 2 स्तर पर अंग्रेजी की नई शिक्षण सामग्री का मूल्यांकन करने के लिए कार्यशाला	23 से 27 नवंबर, 1987 (5 दिन)	25	–	25	–	–	–	–

9.	शिशु शिक्षा के अध्यापक–शिक्षकों के शिक्षणसाधन के विकास पर कार्यशाला एवं प्रशिक्षण कार्यक्रम	30 नवंबर से 5 दिसंबर 1987 (6 दिन)	17	5	3	6	3	–	–
10.	प्राथमिक अध्यापकों के आडियो कार्यक्रमों के विकास के लिए कार्यशाला	2 से 4 दिसंबर 1987 (3 दिन)	14	–	12	1	1	–	–
11.	एन एफ ई अनुदेशकों (कर्नाटक) के प्रशिक्षण पैकेज के प्रयोग के लिए प्रधान कार्यकर्ताओं का अभिविन्यास	14 से 17 दिसंबर 1987 (4 दिन)	42	–	42	–	–	–	–
12.	पहली से तीसरी प्राथमिक कक्षाओं के बच्चों के लिए कन्नड़ में आडियो सामग्री विकसित करने के लिए कार्यशाला	1 से 3 फरवरी, 1988 (3 दिन)	17	–	17	–	–	–	–
13.	कर्नाटक की आजीवन कुशलताओं पर शिक्षण सामग्री विकसित करने के लिए कार्यशाला	2 से 7 फरवरी, 1988 (6 दिन)	23	–	23	–	–	–	–
14.	कुछ चुनी हुई इकाइयों पर गणित में विषयवस्तु समृद्धि सामग्री को अंतिम रूप देने के लिए कार्यशाला	16 से 20 फरवरी, 1988 (5 दिन)	9	–	1	3	5	–	–
15.	एक तीसरी भाषा के रूप में हिन्दी शिक्षण के लिए अभिविन्यास	22 से 27 फरवरी, 1988 (6 दिन)	7	–	4	3	–	–	–
16.	कम लागत के उपकरणों के प्रयोग से + 2 स्तर के वैद्युत रसायन में प्रयोग अभिकल्पित करने के लिए प्रयोगशाला	7 से 11 मार्च 1988 (6 दिन)	7	–	4	–	1	1	1
17.	कार्य अनुभव में अध्यापक गाइड विकसित करने के लिए कृषि, वाणिज्य और प्रौद्योगिकी पर निर्माण अभिविन्यस्त संपादकों की कार्यशाला	26 से 30 मार्च, 1988 (5 दिन)	6	–	6	–	–	–	–

विशेष कार्यक्रम

जनसंख्या शिक्षा परियोजना

1.	जनसंख्या शिक्षा की राष्ट्रीय स्रोत पुस्तक पर कार्यशाला ।	17 से 19 अगस्त, 1987	88	–	4	–	–	–	4
2.	केरल के टी टी आई के अध्यापक शिक्षकों के लिए जनसंख्या शिक्षा पर अभिविन्यास कार्यक्रम ।	17 से 21 अगस्त, 1987 (5 दिन)	44	–	–	44	–	–	–
3.	कर्नाटक के बी० एड० कालेजों के अध्यापक शिक्षकों के लिए जनसंख्या शिक्षा पर नेशनल कालेज, शिलांग में आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम ।	14 से 18 सितंबर, 1987 (5 दिन)	24	–	24	–	–	–	–

अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति के शैक्षिक विकास की परियोजना

1.	मैसूर के प्राभव परियोजना के अंतर्गत आने वाले चमर जंगर के अध्यापक के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम ।	31 अगस्त से 2 सितम्बर 1987 (3 दिन)	56	–	56	–	–	–	–

2.	चमरजंगर, कोलेजग और थाल–दूर के विद्यालयों के जनजातीय बच्चों को पढ़ाने वाले अध्यापकों के लिए व्यापक अभिविन्यास कार्यक्रम ।	18 से 22 सितंबर, 1987 (5 दिन)	15	–	15	–	–	–	–
3.	नगर के 8 चुने हुए विद्यालयों के अध्यापकों के लिए विज्ञान और गणित में विषयवस्तु समृद्धि पाठ्यक्रम ।	12 से 14 फरवरी, 1987 और 19 से 21 फरवरी 1988 (6 दिन)	31	–	31	–	–	–	–
4.	जे० एस० एस० जूनियर कालेज, चमरजंगर के बारहवीं कक्षा के विज्ञान के विद्यालयों का प्रशिक्षण कार्यक्रम ।	22 से 27 फरवरी 1988 (6 दिन)	20	–	20	–	–	–	–
विश्व खाद्य दिवस									
	छोटे किसानों, अध्यापकों और गृह स्वामिनियों के लिए हार्टिकल्चर प्रशिक्षण कार्यक्रम ।	14 अक्टूबर, 1987 (1 दिन)	50	–	50	–	–	–	–
यूनेस्को परियोजना									
	ग्रामीण क्षेत्रों में विज्ञान और प्रौद्योगिकी को यूनेस्को परियोजना के अंतर्गत तैयार की गई माड्यूलों का प्रयोग ।	28 और 29 नवंबर, 1987 (2 दिन)	20	–	20	–	–	–	–
परिषद् कार्यक्रम									
1.	प्रधान कार्यकर्ताओं का अभिविन्यास–व्यापक सेवाकालीन कार्यक्रम ।	9 से 14 अप्रैल 1987 (6 दिन)	109	24	20	31	28	5	1
2.	एल० वी० एस० परीक्षण सामग्री का अनुवाद ।	9 से 13 जून 1987 (5 दिन)	15	–	15	–	–	–	–
3.	नवोदय विद्यालय अध्यापकों का अभिविन्यास कार्यक्रम ।	22 से 27 जून, 1987 (6 दिन)	19	9	1	4	–	1	4
4.	एन वी एस की प्रवेश परीक्षा के लिए जिला स्तर के प्रेक्षकों का अभिविन्यास कार्यक्रम ।	11 अगस्त 1987 (1 दिन)	18	5	7	3	–	2	1
5.	शिशुओं के आडियो कार्यक्रम पर राष्ट्रीय संगोष्ठी ।	8 से 10 सितंबर 1987 (3 दिन)	35	–	10	2	3	–	20
6.	दसवीं कक्षा की भौतिकी पाठ्यपुस्तक की विषयवस्तु सामग्री की समीक्षा के लिए राष्ट्रीय कार्यशाला ।	21 सितंबर, 1987 (1 दिन)	24	–	3	–	–	–	21
7.	माध्यमिक अध्यापक, शिक्षकों के अधिगम और विकास पर समृद्धि पाठ्यक्रम ।	7 से 16	39	–	32	5	–	–	2
8.	व्यावसायिक अध्यापकों के सेवापूर्व और सेवाकालीन प्रशिक्षण की निर्देशक रेखाएं विकसित करने के लिए कार्यशाला ।	27 से 31 अक्टूबर 1987 (5 दिन)	17	–	8	–	1	–	8
9.	रेडियो नीदरलैण्ड और सी आई इ टी के सहयोग से शैक्षिक रेडियो प्रशिक्षण पाठ्यक्रम ।	26 अक्टूबर से 20 नवंबर, 1987 (25 दिन)	15	–	8	–	1	–	6
10.	मुस्लिम प्रबंधित विद्यालयों के प्रधानाचार्यों और प्रबंधकों के लिए संलग्न कार्यक्रम ।	9 से 13 नवंबर 1987 (5 दिन)	15	2	9	3	1	–	–

सारणी 8.24

अजमेर के निदर्शन विद्यालय में छात्रों का नामांकन

क्र० सं०	कक्षा	छात्रों की संख्या	नामांकन	
			अनुसूचित जाति	अनुसूचित जनजाति
1.	पहली	36	6	–
2.	दूसरी	31	6	–
3.	तीसरी	41	2	4
4.	चौथी	34	1	2
5.	पांचवीं	40	–	4
6.	छठी	84	–	–
7.	सातवीं	108	3	6
8.	आठवीं	108	2	1
9.	नवीं	115	2	–
10.	दसवीं	103	2	–
11.	ग्यारहवीं	92	1	–
12.	बारहवीं	94	3	–
	कुल जोड़	886	28	17

सारणी 8.25

भोपाल के निदर्शन विद्यालय में छात्रों का नामांकन

क्र० सं०	कक्षा	छात्रों की संख्या	नामांकन	
			अनुसूचित जाति	अनुसूचित जनजाति
1.	पहली ए	36	7	2
2.	पहली बी	34	6	2
3.	दूसरी ए	38	6	2
4.	दूसरी बी	38	5	4
5.	तीसरी ए	38	5	6
6.	तीसरी बी	39	6	2
7.	चौथी ए	42	7	1
8.	चौथी बी	41	8	4
9.	पांचवीं ए	42	5	4
10.	पांचवीं बी	43	9	3
11.	छठी ए	46	7	–
12.	छठी बी	48	11	1
13.	सातवीं ए	37	2	–
14.	सातवीं बी	31	3	2
15.	आठवीं ए	36	4	1
16.	आठवीं बी	37	–	2
17.	नवीं ए	40	3	1
18.	नवीं बी	39	1	1
19.	दसवीं ए	39	2	1
20.	दसवीं बी	37	–	–
21.	ग्यारवहवीं विज्ञान	37	–	2
22.	ग्यारहवीं वाणिज्य	23	–	–
23.	ग्यारहवीं (व्यावसायिक) आधारी वैद्युत प्रौद्योगिकी	7	–	–
24.	ग्यारहवीं (व्यावसायिक) अंग्रेजी टाइप और स्टेनो	7	–	–

25.	बारहवीं विज्ञान	33	–	–
26.	बारहवीं वाणिज्य	25	1	–
27.	बारहवीं (व्यावसायिक) आधारी वैद्युत प्रौद्योगिकी	8	–	–
28.	बारहवीं (व्यावसायिक) अंग्रेजी टाइप और स्टेनो	14	–	–

सारणी 8.26

भुवनेश्वर के निर्दशन विद्यालय में छात्रों का नामांकन

क्र० सं०	कक्षा	कुल नामांकन	नामांकन	
			अनुसूचित जाति	अनुसूचित जनजाति
1.	कक्षा – 1	72	10	5
2.	कक्षा – 2	89	8	2
3.	कक्षा – 3	84	7	4
4.	कक्षा – 4	88	6	2
5.	कक्षा – 5	117	5	1
6.	कक्षा – 6	115	9	3
7.	कक्षा – 7	115	4	1
8.	कक्षा – 8	112	3	2
9.	कक्षा – 9	101	4	2
10.	कक्षा – 10	112	–	–
11.	कक्षा – 11	102	3	–
12.	कक्षा – 12	99	–	–
	कुल जोड़	1206	59	22

सारणी 8.27

मैसूर के निर्दशन विद्यालय में छात्रों का नामांकन

क्र० सं०	कक्षा	छात्रों की कुल संख्या	नामांकन	
			अनुसूचित जाति	अनुसूचित जनजाति
1.	पहली	86	15	2
2.	दूसरी	89	15	3
3.	तीसरी	92	7	–
4.	चौथी	90	1	–
5.	पांचवीं	92	4	–
6.	छठी	87	4	1
7.	सातवीं	88	1	1
8.	आठवीं	82	4	1
9.	नवीं	86	3	–
10.	दसवीं	80	4	1
11.	ग्यारहवीं ओ एम एस पी	20	–	–
	बी० ई० टी०	21	2	–
	मानविकी	9	–	–
	विज्ञान	34	–	–
12.	बारहवीं ओ एम एस पी	19	–	–
	बी० ई० टी०	20	1	1
	मानविकी	6	–	–
	विज्ञान	20	–	–

1987-88

परीक्षा फल

मार्च–अप्रैल 1987 की बोर्ड परीक्षाओं के परीक्षाफल सारणी 8.27, 8.28, 8.29, 8.30 और 8.31 में दिए गए हैं ।

सारणी 8.28

(निदर्शन बहु–उद्देश्य विद्यालय, अजमेर) मार्च–अप्रैल, 1987 में की गई बोर्ड परीक्षाओं के परीक्षाफल

कक्षा	परीक्षा में बैठे छात्रों की संख्या	उत्तीर्ण छात्रों की संख्या	उत्तीर्ण प्र० श० में	पिछले वर्ष के उत्तीर्ण प्रतिशत में
दसवीं	83	81	97 प्रतिशत	ए आई एस ई ई, 1987
दसवीं	104	95	91 प्रतिशत	ए आई एस ई ई, 1988
बारहवीं	93	86	92 प्रतिशत	ए आई एस ई ई, 1987
बारहवीं	94	92	98 प्रतिशत	ए आई एस ई ई, 1988
कुल जोड़	374	354		

सारणी 8.29

अखिल भारतीय प्रवर विद्यालय सर्टिफिकेट परीक्षा – कक्षा–12 (निदर्शन बहुउद्देश्य विद्यालय)

कक्षा	परीक्षा में बैठे छात्रों की संख्या	उत्तीर्ण	प्रतिशत में उत्तीर्ण	विशेष योग्यता
बारहवीं ए (विज्ञान)	40	33	83 प्रतिशत	32
बारहवीं बी (कला)	22	22	100 प्रतिशत	14
बारहवीं सी (वाणिज्य)	24	24	100 प्रतिशत	2
बारहवीं डी (व्यावसायिक)	7	6	87 प्रतिशत	9

सारणी 8.30

(निदर्शन बहु–उद्देश्य विद्यालय, भोपाल) मार्च–अप्रैल 1987 में की गई बोर्ड परीक्षाओं के परीक्षाफल

कक्षा	बैठे छात्रों की संख्या	उत्तीर्ण छात्रों की संख्या	उत्तीर्ण प्रतिशत में	पिछले वर्ष के उत्तीर्ण प्र० श० में
दसवीं	70	66	94 प्रतिशत	100 प्रतिशत
बारहवीं	54	43	79 प्रतिशत	90 प्रतिशत

सारणी 8.31

(निदर्शन बहु उद्देश्य विद्यालय, भुवनेश्वर) मार्च–अप्रैल 1987 में की गई बोर्ड परीक्षाओं के परीक्षाफल सी० बी० एस० ई० परीक्षा–1987 के परीक्षाफल

क्र० सं०	कक्षा	परीक्षा में बैठे छात्रों की संख्या	उत्तीर्ण छात्रों की संख्या	उत्तीर्ण प्र० श० में	पिछले वर्ष में उत्तीर्ण प्र० श० में
1.	अखिल भारतीय माध्यमिक विद्यालय परीक्षा (कक्षा – 10)	113	उत्तीर्ण – 106 अनुत्तीर्ण – 1 कम्पार्टमेंट – 6	93.8 प्र० श०	94 प्र० श०

2.	अखिल भारतीय प्रवर विद्यालय सर्टिफ़िकेट परीक्षा (कक्षा – 12) विज्ञान	28	उत्तीर्ण – 25 अनुत्तीर्ण – 2 कम्पार्टमेंट – 1	89.2 प्र० श०	96.4 प्र० श०
	– वही – कला	17	उत्तीर्ण – अनुत्तीर्ण – कंपार्टमेंट –	64.7 प्र० श०	100 प्र० श०
	– वही – वाणिज्य	14	उत्तीर्ण – अनुत्तीर्ण – कंपार्टमेंट –	71.4 प्र० श०	75 प्र० श०
	– वही – व्यावसायिक	28	उत्तीर्ण – अनुत्तीर्ण – कंपार्टमेंट –	25 प्र० श०	14.8 प्र० श०

सारणी 8.32

(निदर्शन बहु–उद्देश्य विद्यालय, मैसूर) मार्च–अप्रैल 1987 में की गई बोर्ड परीक्षाओं के परीक्षाफल

कक्षा	परीक्षा में बैठे छात्रों की संख्या	उत्तीर्ण छात्रों की संख्या	उत्तीर्ण प्रतिशत में
दसवीं	73	69	95
बारहवीं विज्ञान	28	28	100
बारहवीं मानविकी	10	9	90
बारहवीं बी० ई० टी०	7	4	57
बारहवीं ओ एम एस पी	13	9	69

1987-88

नौ — शैक्षिक प्रौद्योगिकी

केन्द्रीय शैक्षिक प्रौद्योगिकी संस्थान (सी०आई०ई०टी), जिसका अध्यक्ष एक संयुक्त निदेशक होता है, एन०सी०ई०आर०टी० के एक घटक के रूप में काम करता है । केन्द्रीय शैक्षिक प्रौद्योगिकी संस्थान का मुख्य उद्देश्य देश में शिक्षा का प्रचार-प्रसार करने, उसमें सुधार लाने और शिक्षा की वैकल्पिक पद्धति विकसित करने के लिए शैक्षिक प्रौद्योगिकी विशेष रूप से जनसंपर्क माध्यम के प्रयोग को बढ़ावा देना है । केन्द्रीय शैक्षिक प्रौद्योगिकी संस्थान शैक्षिक आवश्यकताओं से संबद्ध-प्रक्रिया सामग्री विकसित करता है, शैक्षिक प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में काम करने वाले कार्मिकों को प्रशिक्षित करता है, और शैक्षिक प्रौद्योगिकी में पद्धतियों, कार्यक्रमों और सामग्री का मूल्यांकन और अनुसंधान कार्य करता है । देश में शैक्षिक माध्यम और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में उपलब्ध यंत्र सामग्री और प्रक्रिया सामग्री से संबद्ध सूचना को प्रलेखित करता है तथा उसका प्रचार प्रसार करता है । सी आई ई टी को यू एन टी वी/यूनेस्को/यूनिसेफ से उपकरण, परामर्श, फैलोशिप और प्रशिक्षण कार्यक्रम के रूप में सहायता भी मिलती है।

सी०आई०ई०टी के आठ प्रभाग हैं

(1) शैक्षिक टेलिविजन स्क्रिप्ट, प्रशिक्षण और एस०आई०ई०टी समन्वय प्रभाग का संबंध ई०टी०वी पाठ्यचर्या का नियोजन करने, सी आई ई०टी० में ई०टी०वी० निर्माण के लिए स्क्रिप्ट लिखना, अंतर्देशीय/अंतर्राष्ट्रीय पाठ्यक्रमों के जरिए ई०टी०वी निर्माण के विभिन्न पहलुओं में सी०आई०ई०टी०, एस०आई०ई०टी और अन्य संस्थाओं के कार्मिकों को प्रशिक्षित करना और ई०टी०वी सेवा की उपयोगिता और निर्माण सुविधाएं उपलब्ध कराने के लिए राज्य शैक्षिक प्रौद्योगिकी संस्थाओं (एस०आई०ई०टी) के साथ समन्वय करने से है ।

(2) शैक्षिक टेलिविजन निर्माण और फिल्म प्रभाग का संबंध इन्सेट, निम्न और उच्च पावर ट्रांसमीटरों के जरिए संचारित करने के लिए लगभग बारह राज्यों की पांच भाषाओं में वर्ष के 200 स्कूल दिनों में स्कूली तथा गैर स्कूली बच्चों के लिए ई०टी०वी० कार्यक्रम का निर्माण करते तथा उनका कैप्सूल बनाने से है । ई०टी०ई०वी० 1986, 1987 और 1988 में आयोजित किए गए व्यापक विद्यालय अध्यापक कार्यक्रम आमिविन्यास का समन्वयन और निर्माण कार्य कर रहा है । यह सभी घरेलू निर्माणों का एक वीडियो टेप संग्रह रखता है और समेकित कार्यक्रम अनुसूची तैयार करता है तथा उसका प्रचार करता है । इस प्रभाग ने ही शैक्षिक फिल्मों (35 और 16 मिमी०)का निर्माण किया है, हिन्दी अथवा अंग्रेजी में उनकी डबिंग की है और बिक्री के लिए प्रिंटों के डुप्लिकेट निकाले हैं ।

(3) सुदूर शिक्षा योजना, समन्वय और अनुसंधान तथा मूल्यांकन प्रभाग का संबंध सुदूर शिक्षा, शैक्षिक प्रौद्योगिकी में प्रशिक्षित करना, सी० आई०ई०टी० के कार्यकलापों का नियोजन और समन्वय और शैक्षिक प्रौद्योगिकी में कार्यक्रमों और सामग्रियों का मूल्यांकन और अनुसंधान कार्य करने से है।

(4) शैक्षिक रेडियो प्रभाग युवा बच्चों और अध्यापकों के लिए शैक्षिक रेडियो/आडियो कार्यक्रमों में प्रक्रिया सामग्री का निर्माण करता है और सक्षम व्यक्तियों को प्रशिक्षित करता है ।

(5) आलेखिकी,प्रदर्शनी और मुद्रण प्रभाग का संबंध मुख्यतः कम लागत के शिक्षण साधन और टेपस्लाइड कार्यक्रमों का निर्माण करने, प्रदर्शनी लगाने और अपनी मल्टीलिथ आफसेट प्रिंटिंग मशीन का प्रयोग करके सी०आई०ई०टी०/एन०सी०ई०आर०टी० के लिए मुद्रण कार्य करने से है ।

(6) सूचना प्रलेखन और केन्द्रीय फिल्म लाइब्रेरी प्रभाग के केन्द्रीय फिल्म लाइब्रेरी में 8,000 (16 मि० मी०) से भी अधिक शैक्षिक फिल्मों का भंडार है जिन्हें देश भर के लगभग 4,600 सदस्य संस्थाओं को बिना किसी लागत के उधार पर दिया जाता है । प्रचार माध्यम के प्रलेखन पर सेवाकालीन प्रशिक्षण/पाठ्यक्रम/संगोष्ठियां आयोजित करने और देश के विभिन्न भागों में शैक्षिक फिल्मों के उत्सवों की व्यवस्था करने के अतिरिक्त यह प्रभाग शैक्षिक प्रौद्योगिकी पर पुस्तकालय सूचना प्रसार केन्द्र का भी काम करता है ।

(7) तकनीकी प्रयोजना, प्रचालन और अनुरक्षण प्रभाग सी०आई०ई०टी० के विभिन्न प्रभागों को तकनीकी सहायता प्रदान करता है। प्रभाग स्टूडियो में लगे उपकरण का देखरेख और ईटीवी प्रचालन बनाए रखता है और यह प्रभाग उत्तर प्रदेश, महाराष्ट्र, गुजरात, आंध्रप्रदेश, बिहार और उड़िसा में से प्रत्येक के एस०आई०ई०टी० के स्टूडियो को ठीक रखने के कार्य को समन्वयित करता है ।

(8) **प्रशासन और लेखा :** 1987-88 वर्ष में सी०आई०ईटी० में अनेक अनुसंधान, विकासात्मक प्रशिक्षण कार्यकलाप किए गए । इन कार्यकलापों का ब्यौरा निम्नलिखित परिच्छेदों में दिया गया है।

अनुसंधान

"विकलांग बच्चों में संकल्पनाओं को विकसित करने के लिए शिक्षण-साधन के प्रयोग पर अन्वेषी अध्ययन" नामक परियोजना के अंतर्गत किए जाने वाले कार्यकलाप 1987-88 वर्ष में पूरे कर लिए गए । इस परियोजना के अंतर्गत बधिर बच्चों में आठ संकल्पनाएँ विकसित करने के लिए 100 शिक्षण साधन तैयार किए गए । भाषा और गणित में बधिर बच्चों के प्राथमिक स्तर के पाठ्य विवरण से संकल्पनाओं का चयन किया गया । यह देखा गया कि बधिर बच्चों को बुनी हुए संकल्पनाओं का अध्ययन करने में शिक्षण की संकल्पना प्राप्त निदर्श की सहायता से शिक्षण-साधन का प्रयोग काफी प्रभावकारी होता है । अध्ययन की रिपोर्ट

को अंतिम रूप दिया गया और उसे ई०आर०आई०सी० को प्रस्तुत किया गया ।

"ई०टी०वी० पुनर्भरण कैम्पस" नामक परियोजना के अंतर्गत दादरी (जिला गाजियाबाद, उ०प्र०),लखनऊ और पटना में तीन ईटीवी पुनर्भरण कैम्प्स आयोजित किए गए और विशेष वयस् वर्ग के बच्चों और प्राथमिक स्तर के अध्यापकों की सहायता से 28 कार्यक्रमों का पुनरीक्षण और मूल्यांकन किया गया । प्राप्त तथ्यों पर संबंधित कार्यक्रम निर्माताओं और स्क्रिप्ट लेखकों के साथ चर्चा की गई ।

"विद्यालय अध्यापकों के सामूहिक अभिविन्यास कार्यक्रम के ई टी वी घटक के अनुवर्तन" के रूप में दिल्ली, अलवर और जयपुर के प्रशिक्षण कैम्प में भाग लेने वाले अध्यापकों से 15 कार्यक्रमों के पनुर्भरण एकत्रित किए गए ।इनके अतिरिक्त आँकड़ों को एकत्रित करने के लिए आंध्र प्रदेश, हिमाचल प्रदेश, कर्नाटक, केरल और तमिलनाडु के दौरे किए गए। प्राप्त हुए तथ्यों के संबंध में एक रिपोर्ट तैयार की गई है ।

"बाल केन्द्रित ई टी वी कार्यक्रम" पर बस्ती जिला के 19 गाँवों से पुनर्भरण आँकड़े एकत्रित किए गए । आँकड़े एकत्रित करने के लिए लगभग 64 छात्रों और 30 अध्यापकों से संपर्क स्थापित किया गया । अध्ययन की रिपोर्ट तैयार कर ली गई है ।

शिक्षा सामग्री का विकास

सी०आई०ई०टी० बच्चों के लिए आडियो/रेडियो कार्यक्रम सहित शिक्षण/प्रशिक्षण साम्ग्री,शैक्षिक फिल्म और ई टी वी कार्यक्रम विकसित करने में लगा रहा जिसका विवरण नीचे दिया गया है ।

(i) आडियो/रेडियो कार्यक्रमों का निर्माण

1987–88 में सी०आई०ई०टी० ने 63 आडियो/रेडियो कार्यक्रमों का निर्माण किया ।

सांस्कृतिक विरासत पर विशेष जोर देते हुए राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 में उल्लेखित सामान्य कोर घटकों से संबंधित कार्यक्रमों का निर्माण किया गया है । संगीत पर आधारित आडियो कार्यक्रम भी निर्मित किए गए। इसके अतिरिक्त 35 आडियो स्क्रिप्ट और 102 नर्सरी राइम विकसित किए गए । डी ई एस एस एच के सहयोग से नवोदय विद्यालयों की अंग्रेजी पाठ्यपुस्तकों को आडियो पुस्तकों पर रिकार्ड किया गया ।

रेडियो की सहायता से प्राथमिक स्तर पर प्रथम भाषा के रूप में हिन्दी का अध्यापन कराने की परियोजना को अक्टूबर 1987 में मध्य प्रदेश तक बढ़ा दिया गया । मध्य प्रदेश के होशंगाबाद जिले के 450 विद्यालयों को टू–इन–वन सेट दिए गए हैं । पहली कक्षा के आडियो कार्यक्रमों वाले आडियो टेपों के सेट प्रत्येक विद्यालय को दिए गए ।

(2) शैक्षिक फिल्मों का निर्माण

आलोच्य वर्ष में "लैण्ड एण्ड द पिपुल" नामक धारावाहिक के अंतर्गत पश्चिमी समुद्र तट पर तीन फिल्मों का निर्माण करने का काम हाथ में लिया गया । "लैण्ड एण्ड द पिपुल" धारावाहिक के अंतर्गत अरावली पर्वत माला पर दो फिल्मों (भाग 11 और 4) का निर्माण करने का काम भी हाथ में लिया गया । इन पाँचों फिल्मों को साथ–साथ हिन्दी में डब कर दिया गया । अनौपचारिक शिक्षा पर बनाई जाने वाली फिल्म के दूसरे भाग की शूटिंग भी की गई ।

ई०टी०वी० प्रस्तुतीकरण तकनीक, सीमर्ग, जादू की किताब पर बनाई जाने वाली फिल्म और प्रारंभिक वर्षों में निर्माण के लिए टी वी के संसाधन पूरे कर लिए गए हैं और इन्हें सी०आई०ई०टी० ने प्राप्त कर लिया है ।

(3) प्रारंभिक स्तर के अध्यापकों और बच्चों के लिए ई टी वी कार्यक्रम का निर्माण

1987–88 में उपग्रह इन्सेट–1 बी के भरण के लिए 80 नए ई०टी० वी० कार्यक्रम निर्मित किए गए जिनके ब्यौरे नीचे दिए गए हैं :

5–8 वर्ष	13
9–11 वर्ष	35
अध्यापक	10
विविध कार्यक्रम	22
	80

पांच भिन्न–भिन्न भाषाओं में ई टी वी के कार्यक्रम सोमवार से शनिवार तक रोज 3 घंटे 45 मिनट प्रसारित किए जाते हैं । परियोजना में शुरू में उल्लेख किए गए छः राज्यों के अतिरिक्त ये कार्यक्रम सभी उच्च पावर ट्रांसमीटरों द्वारा मध्य प्रदेश, राजस्थान, पंजाब, हरियाणा और चण्डीगढ़ में भी प्रसारित किए जाते हैं । सी आई ई टी द्वारा निर्मित कुछ चुने हुए कार्यक्रम बच्चों के संध्याकालीन दूरदर्शन के कार्यक्रम में दिल्ली के दूरदर्शन केन्द्र और 150 अन्य दूरदर्शन केन्द्रों से प्रसारित किए गए । सी०आई०ई०टी० द्वारा 9–11 वयस् वर्ग के बच्चों के लिए निर्मित किया गया "एयर एराउन्ड अस" कार्यक्रम को जापान में आयोजित अंतर्राष्ट्रीय शैक्षिक फिल्म प्रतियोगिता में विशेष एन एच के पुरस्कार प्राप्त हुआ ।

सी०आई०ई०टी० ने 1987–88 वर्ष के दौरान विद्यालय अध्यापकों की सामूहिक अभिविन्यास योजना के अंतर्गत प्रसारित करने के लिए कार्यक्रम कैप्सूलों का भी निर्माण किया ।

(4) माध्यमिक विद्यालय के अध्यापकों के लिए पर्यावरण शिक्षा में बहु–माध्यम पैकेजों का निर्माण

यूनेस्को, बैंकाक द्वारा निधिचित इस परियोजना का लक्ष्य में हो रहे ह्रास के और पर्यावरण संरक्षण की महत्ता के बारे में अध्यापकों के अंदर जागरूकता पैदा करना था । इस परियोजना के अंतर्गत चार वीडियो कार्यक्रम – द कैसल इन द एयर, द ग्रेट थर्स्टे, दून वैली एकोसिस्टम्स, देल्ही मेट्रोपालिटन इकोलॉजिकल क्राइसिस–विकसित किए गए । पहले की तरह पैकेज के मुद्रण के लिए सामग्री भी विकसित की गई । यह पैकेज बच्चों को दिखाया गया । ग्रेट थर्स्ट और दून वैली इकोसिस्टम नामक दो कार्यक्रम दूरदर्शन के राष्ट्रीय नेटवर्क पर प्रसारित किये गए ।

इन कार्यकलापों के अतिरिक्त एन०सी०ई०आर०टी० अनेक अन्य विकासात्मक कार्यकलाप किये । इन कार्यकलापों के अंतर्गत पर्यावरण के

रक्षण पर चार्टों का विकास और प्रचार–प्रसार जैविकी चार्ट (धारावाहिक 11) का विकास, अध्यापक शिक्षा के लिए सुदूर शिक्षा में पाठ्यक्रम के पाठ्यविवरण का विकास, सुदूर शिक्षा में कथानक का अभिज्ञान और आडियो कार्यक्रमों के लिए विवरण का निर्माण, ए वी साम्ग्री पर ई टी वी स्क्रिप्ट का विकास, विद्यालय पाठ्यचर्चा में सामान्य कोर घटक पर टी वी स्क्रिप्ट का विकास, राष्ट्रीय नेताओं/वैज्ञानिकों आदि का पोट्रेट विकसित करना है। इन विकासात्मक कार्यकलापों के संबंध में अनेक कार्यशालाएं/बैठकें आयोजित की गईं। 1987–88 वर्ष में आयोजित की गई कार्यशालाओं/बैठकों के ब्यौरे "सारणी 9.1" में दिए गए हैं।

सारणी 9.1

1987–88 में आयोजित कार्यशाला/सम्मेलन/बैठक

क्र० सं०	कार्यक्रम का नाम	तारीख/अवधि	स्थान	भाग लेने वाले व्यक्तियों की संख्या
1	2	3	4	5
1.	"पर्यावरण के रक्षण पर चार्टों का विकास और प्रचार–प्रसार" परियोजना के संबंध में सृजनात्मक बच्चों की कार्यशाला	27 से 29 अक्टूबर 1987	बाल भवन नई दिल्ली	23
2.	जैविकी चार्ट (धारावाहिक 11) के विकास के लिए कार्यशाला	(1) 18 और 19 नवंबर 1987 (2) 4 से 10 दिसंबर 1987 (3) 28 दिसंबर 1987 से 1 जनवरी 88 (4) 19 से 29 जनवरी, 1988 (5) 18 से 29 फरवरी, 1988	सी. ई आई. टी.	9
3.	भौतिकी चार्टों के मूल्यांकन के लिए कार्यशाला	3 से 9 दिसंबर, 1987	सी. ई. आई. टी.	9
4.	अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम के लिए सुदूर शिक्षा में पाठ्यक्रम की पाठ्यचर्चा के विकास पर कार्यशाला (दो चरणों में)	(1) 15 और 16 दिसंबर 1987 (2) 9 से 11 फरवरी, 1988	सी. आई. ई. टी	19
5.	सुदूर शिक्षा में आडियो/रेडियो कार्यक्रम का सारकथन तैयार करने और कथानक का चयन करने के लिए कार्यशाला	21 से 24 दिसंबर, 1987	एस. सी. ई. आर. टी उदयपुर	21
6.	स्वास्थ्य और स्वच्छता के धारावाहिक के विषयवस्तु विश्लेषण और मूल्यांकन पर कार्यशाला	18 से 19 जनवरी, 1988	सी. आई ई. टी	4
7.	ए वी साम्ग्री पर ई टी वी स्क्रिप्ट के विकास पर कार्यशाला	(1) 22 से 24 फरवरी, 1988 (2) 28 से 30 मार्च, 1988	सी आई ई टी	6
8.	सामान्य और मानसिकता मंद बुद्धि वाले बच्चों की नर्सरी साइज के विकास पर कार्यशाला	23 से 25 फरवरी, 1988	सी. आई. ई. टी.	25
9.	विद्यालय पाठ्यचर्या के साधारण कोर घटक पर टी वी स्क्रिप्ट विकसित करने के लिए कार्यशाला	26 से 27 फरवरी, 1988	सी. आई. ई. टी.	20
10.	प्राथमिक स्तर के अध्यापकों के लिए संस्कृति पर विषयों का पता लगाने और सार विषयों को विकसित करने के लिए कार्यशाला	28 से 30 मार्च, 1988	सी. आई. ई. टी	19
11.	व्यक्तिगत संपर्क कार्यक्रम आयोजित करने की प्रक्रिया को अंतिम रूप देने के लिए कार्यशाला	31 मार्च से 7 अप्रैल, 1988	सी. आई. ई. टी.	7
12.	एस आई ई टी/ई टी सेल अधिकारियों का सम्मेलन	22 से 25 मार्च, 1988	एस. सी. ई. आर. टी मेघालय, शिलांग	27

1987-88

सारणी 9.2

1987–88 में आयोजित किए गए प्रशिक्षण/अभिविन्यास कार्यक्रम

क्र० सं०	पाठ्यक्रम	तारीख/अवधि	स्थान	भाग लेने वालों की संख्या
1	2	3	4	5
1.	टी. वी. कैमरा प्रचालन पर प्रशिक्षण पाठ्यक्रम	9 मार्च से 9 अप्रैल, 1987	सी. आई. ई. टी	11
2.	ई टी. वी. उपकरण की देखभाल पर प्रशिक्षण पाठ्यक्रम	6 अप्रैल से 15 मई, 1987	सी. आई. ई. टी.	14
3.	कैमरा, ई. टी. वी. निर्माण और तकनीकी प्रचालन पर प्रशिक्षण पाठ्यक्रम	10 अप्रैल से 19 मई, 1987	एस. आई. ई. टी. पुणे	40
4.	बी. जी. एन. 51 (1 इंच वी टी आर) के तकनीकी प्रचालन पाठ्यक्रम पर प्रशिक्षण पाठ्यक्रम	21 सितंबर से 28 सितंबर, 1987	सी. सी. एस. बड़ौदा	18
5.	समेकित सुदूर प्रशिक्षण साम्रगी की डिजाइन और विकास पर अभिविन्यास पाठ्यक्रम	3 अगस्त से 28 अगस्त, 1987	सी. आई. ई. टी.	25
6.	अध्यापक शिक्षकों के लिए शैक्षिक प्रौद्योगिकी में अभिविन्यास पाठ्यक्रम	5 अक्टूबर से 15 अक्टूबर, 1987	सी. आई. ई. टी.	25
7.	ई एन जी कैमरा और यू–मैटिक बी सी आर पर प्रशिक्षण पाठ्यक्रम	19 अक्टूबर से 25 नवंबर, 1987	सी. आई. ई. टी	12
8.	शैक्षिक रेडियो के लिए स्क्रिप्ट लेखन और निर्माण में पुनश्चर्या पाठ्यक्रम	26 अक्टूबर से 20 नवंबर, 1987	आर सी ई, मैसूर	18
9.	टेलिविजन आलेखिकी पाठ्यक्रम	2 नवंबर से 27 नवंबर, 1987	सी. आई. ई. टी	13
10.	कैमरा, ई टी वी निर्माण और तकनीकी प्रचालन पर प्रशिक्षण पाठ्यक्रम	2 नवंबर से 19 दिसंबर, 1987	एस. आई. ई. टी.	39
11.	वी सी एन–51 (1 इंच वी टी आर) के अनुसार पाठ्यक्रम पर प्रशिक्षण पाठ्यक्रम	4 जनवरी से 25 जनवरी, 1988	सी. आई. ई. टी	7

प्रशिक्षण कार्यक्रम

1987–88 में सी०आई०ई०टी ने 11 प्रशिक्षण/ अभिविन्यास कार्यक्रमों का आयोजन किया । इन कार्यक्रमों के व्यौरे सारणी 9.2 में दिए गए है ।

विस्तार कार्यक्रम

1987–88 में सी०आई०ई०टी० द्वारा आयोजित विस्तार कार्यक्रम निम्नलिखित हैं :

(1) "भारत उत्सव" के अवसर पर रूस में की जा रही प्रदर्शनी के "भारत में शिक्षा" मंडप में रखने के लिए शिक्षा में एनसीईआरटी की भूमिका को दर्शाने वाले 67 फोटो विकसित किए गए । जबलपुर और तीनमूर्ति भवन, नई दिल्ली में आयोजित विज्ञान प्रदर्शनी के लिए एन०सी०ई०आर०टी के विज्ञान और गणित में शिक्षा विभाग को कुछ अन्य सामग्री दी गई ।

(2) एन०सी०ई०आर०टी० की साधारण सभा की वार्षिक बैठक में भाग लेने वालों के हित के लिए 30 नवंबर 1987 को विज्ञान भवन में एक प्रदर्शनी लगायी गई ।

(3) 1 से 7 फरवरी 1988 तक पटना में लगायी गई अखिल भारतीय प्राथमिक अध्यापक सम्मेलन महासंघ की फोटो तैयार किए गए । फोटो में जहां तक प्राथमिक शिक्षा का संबंध है, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 को लागू करने में एन सी ई आर टी की भूमिका दर्शायी गई है । इसी प्रकार की प्रदर्शनी दिल्ली प्रदर्शनी हाल में लगायी गई ।

(4) समेकित जनजातीय विकास एजेन्सी और आंध्र प्रदेश आवासी विद्यालय के सहयोग से एतुर्नाग्राम, आंध्र प्रदेश में अक्टूबर, नवंबर में और फिल्म अध्ययन केन्द्र, केरल विश्वविद्यालय तथा जनअनुदेश निदेशालय, केरल के सहयोग से फरवरी 1988 में त्रिवेन्द्रम में शैक्षिक फिल्म उत्सव मनाया गया । इन उत्सवों में लगभग 25,000 छात्रों और अध्यापकों ने भाग लिया।

(5) दिल्ली के स्कूल के बच्चों के हित के लिए पच्चीस शैक्षिक फिल्म शो किए गए ।

(6) डी ई सी यू/दुसरों और एस आई ई टी, गुजरात के सहयोग से 5 से 9 जनवरी 1988 तक अहमदाबाद में बाल शैक्षिक वीडियो उत्सव मनाया गया । इसमें 100 से भी अधिक लोगों ने भाग लिया । सी आई ई टी, एस आई ई टी, डी ई सी यू और दूरदर्शन के उत्कृष्ट निर्माणों को प्रदर्शित किया गया और उन पर चर्चा की गई । इस अवसर पर युवा बच्चों की शिक्षा पर टी वी के भावी प्रभाव पर भी चर्चा की गई।

(7) विजिटिंग अध्यापकों और अन्य कार्यकर्ताओं के हित के लिए एवी सामग्री के प्रयोग और विकास पर अनेक विस्तार व्याख्यान दिए गए । इससे लगभग 200 दर्शनार्थियों को लाभ हुआ ।

(8) ए वी सामग्री और ई टी वी कार्यक्रम के विकास और प्रयोग में विभिन्न अवधियों में प्रशिक्षित करने के लिए नेपाल के दो अध्यापकों और दिल्ली के तैंतीस पी०जी०टी० अध्यापकों को सी०आई०ई टी० के साथ जोड़ दिया गया ।

प्रचार–प्रसार

(1) आलोच्य वर्ष में 45 राष्ट्रीय एवं अंतराष्ट्रीय शैक्षिक फिल्में केन्द्रीय फिल्म लाइब्रेरी (सी एफ एल) के लिए ली गई । 4008 फिल्में शैक्षिक संस्थाओं को उधार दी गई । केन्द्रीय फिल्म लाइब्रेरी की संख्या बढ़ कर 4209 हो गई ।

(2) सी आई ई टी द्वारा निर्मित 119 फिल्में और 8 टेप स्लाइड कार्यक्रम न लाभ और न हानि के आधार पर देश के विभिन्न संस्थाओं को सप्लाई किए गए ।

(3) संकाय और शैक्षिक माध्यम से संबद्ध अन्य संस्थाओं के सदस्यों में शैक्षिक प्रौद्योगिकी के प्रति जागरूकता उत्पन्न करने के लिए सी आई ई टी "एजुकेशनल मिडिया न्यूज लेटर" नामक त्रैमासिक पत्रिका निकाल रही है। इस वर्ष इस पत्रिका के तीन अंक निकाले गए ।

परामर्श

सी आई ई टी द्वारा उपलब्ध कराए गए परामर्श के ब्यौरे नीचे दिए गए हैं ।

परामर्श लेने वाले संगठन	उद्देश्य
1 छः इन्सेट राज्यों के राज्य शैक्षिक प्रौद्योगिकी संस्थान (एस आई ई टी)	स्टूडियो स्थापित करने तथा निर्माण संबंधी कार्यकलापों में उनका मार्गदर्शन करने के लिए सभी एस आई ई टी की पांच समन्वय बैठकें आयोजित की गईं ।
2. राज्य शैक्षिक प्रौद्योगिकी संस्थान (एस आई ई टी)	ई एन जी उपकरण और ई टी वी स्टूडियो में उपकरण लगाना और सिविल निर्माण
3. शैक्षिक मनोविज्ञान, परामर्श और मार्ग निदेशन विभाग एन सी ई आर टी	मार्च 1988 में आयोजित की गई कार्यशाला में मार्गदर्शन और परामर्श में आडियो विधा की सहायता से आडियो स्क्रिप्ट लिखने की निदेशक रेखाओं पर चर्चा की गईं ।
4. सामाजिक विज्ञान और मानविकी में शिक्षा विभाग, एन सी ई आर टी	उच्च प्राथमिक कक्षाओं के लिए अंग्रेजी पाठ्यपुस्तक के आधार पर एक आडियो पाठ्यपुस्तक विकसित करने के लिए 35 पाठ लिए गए हैं ।
5. क्षेत्रीय शिक्षा कालेज, मैसूर	क्षेत्रीय शिक्षा कालेज, मैसूर में लगाए गए साउन्ड स्टूडियो को क्रियाशील बनाने के लिए छः कार्यक्रम निर्मित किए गए ।
6. राष्ट्रीय दृष्टि विकलांग संस्थान, देहरादून	आडियो/रेडियो स्टूडियो को ठीक ढंग से चलाने के लिए एन आई वी एस व्यवस्था की आंतरिक संचरना की सहायता करने ।

प्रकाशन

क्र० सं०	प्रकाशन का नाम	प्रकाशन माह	प्रकाशित प्रतियों की संख्या
1.	डाइरेक्टरी ऑफ इन्स्टीच्युशन्स ऑफ एजुकेशनल मिडिया इन इंडिया	दिसंबर, 1987	150
2.	ऐन एक्सप्लोरेटरी स्टडी ऑन द यूज़ ऑफ टीजिंग एड्स फार डेवलपिंग कन्सेप्ट्स एमंग द हैण्डीकैप्ड (डेफ) चिल्ड्रन ।	मार्च, 1988	4
3.	रिपोर्ट ऑन द ओरिएन्टेशन कोर्स इन एजूकेशनल टेक्नोलॉजी फार टीचर एजूकेटर्स ।	मार्च, 1988	100
4.	रिपोर्ट ऑन द डेवलपमेंट ऑफ करीकुलम फॉर कोर्सेस इन डिस्टेन्स एजूकेशन फॉर टीचर एजूकेशन प्रोग्राम ।	मार्च, 1988	100
5.	रिपोर्ट ऑन अवेलेबिलिटी एण्ड यूज ऑफ ब्लैक बोर्डस, चाक्स, डस्टर्स, मैप्स, ग्लोब्स एण्ड चार्टस इन प्राइमरी स्कूल्स	जुलाई, 1987	100
6.	रिपोर्ट ऑन नेशनल सेमिनार ऑन यूज ऑफ रेडियो/ आडियो प्रोग्राम्स इन डिस्टेन्स एजूकेशन ।	जुलाई, 1987	100
7.	रिपोर्ट ऑन नेशनल सेमिनार ऑन डिजाइनिंग ओपन लर्निंग सिस्टम्स ।	अक्टूबर, 1987	150
8.	मैग्नीच्यूड ऑफ प्रोग्राम रिपीटीशन ऐन ऐनेलिसिस ऑफ इन्सेट प्रोग्राम शिड्यूल ।	नवंबर, 1987	25
9.	ऐन इन–डेप्थ ऐनेलिसिस ऑफ "ए कम्पाइलेशन एण्ड ब्रीफ्स फार प्रोग्राम प्रोडक्शन–1983–87"	दिसंबर, 1987	25
10.	एनेलिसिस ऑफ व्यूवर्स लेटर्स (टू रिपोर्ट्स) ।	जनवरी, 1988	25
11.	ई टी वी फीड बैक रिपोर्ट, दादरी (पार्ट I, II एण्ड III)	जवरी, 1988	25

1987-88

दस मापन, मूल्यांकन, सर्वेक्षण और आंकड़ा संसाधन

मापन, मूल्यांकन, सर्वेक्षण और आंकड़ा संसाधन विभाग (डी एम ई एस एण्ड डी पी) मापन और मूल्यांकन, शैक्षिक सर्वेक्षण, प्रतिभा का अभिज्ञान और पोषण और कम्प्यूटरीकरण तथा आंकड़ा संसाधन से संबंधित अनेक कार्यकलापों के कामों में लगा हुआ है । शैक्षिक मूल्यांकन के नवीन प्रक्रियात्मक उपागम और नीतियों का विकास, विद्यालय शिक्षा के सभी स्तरों की परीक्षाओं में सुधार लाने से संबद्ध अनुसंधान और विकासात्मक कार्यात्मक । शैक्षिक योजना का आंकड़ा संयम उपलब्ध करने के लिए शैक्षिक सर्वेक्षण, राष्ट्रीय प्रतिभा खोज परीक्षा का आयोजन, राज्यों/संघ राज्य क्षेत्रों के प्रधान कार्मिकों और ज्ञानसाधन व्यक्तियों का परीक्षण और विभिन्न शैक्षिक सर्वेक्षण तथा अनुसंधान परियोजनाओं से संबद्ध आंकड़ों का संसाधन करना, मापन, मूल्यांकन, सर्वेक्षण और आंकड़ा संसाधन विभाग के कुछ महत्वपूर्ण कार्य हैं । यह विभाग राज्यों और संघ राज्य क्षेत्रों के माध्यमिक और उच्चतर माध्यमिक शिक्षा बोर्डों और शिक्षा विभागों/निदेशालयों के पूरे सहयोग से अपने कार्यकलाप कर रहा है ।

परीक्षा में सुधार

(1) राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 में उल्लेखित मूल्यांकन के क्षेत्र में विभिन्न कार्यों को लागू करने के लिए परीक्षा में सुधार लाने से संबद्ध सभी कार्यकलापों को कार्यान्वित किया गया । 1987--88 के दौरान हाथ में लिए गए कुछ महत्वपूर्ण कार्यक्रम निम्नलिखित हैं । विभिन्न विषयों के मूल्यांकन संबंधी परीक्षणों और अन्य साधनों के विकास के कार्यक्रमों का उद्देश्य शिक्षण--अधिगम प्रक्रिया में सुधार लाना था । गत वर्षों में किए गए कुछ कार्यों को 1987--88 वर्ष में भी जारी रखा गया ।

(2) विभिन्न माध्यमिक विद्यालय शिक्षा बोर्डों (हरियाणा, गोवा, उड़िसा, जम्मू और कश्मीर) के परीक्षा पत्र सेटरों के प्रशिक्षण के लिए कुछ ऐसे सुधार उपायों को रखकर कार्यशालाएं आयोजित की गई जिनसे निम्नलिखित लाभ हुए हैं ।

सुधार के उपाय	लाभ
उपयुक्त अनुपात में उच्च योग्यता का परीक्षण करने वाले प्रश्न निगमित करना	रटने पर जोर नहीं दिया जाता और उच्च योग्यता प्राप्त करने की प्रवृत्ति बनती है ।
विभिन्न भागों का आनुपातिक महत्व रखते हुए निर्धारित	वरणात्मक अध्ययन और वरणात्मक शिक्षण में कमी आती है ।
किए गए पूरे पाठ्यविवरण का प्रभावकारी व्याप्ति ।	
विभिन्न प्रकार के प्रश्नों का निगमन	अतिउपयुक्त प्रकार के प्रश्नों से विभिन्न योग्यताओं का परीक्षण
प्रश्न पत्र में उत्तर दिए जाने वाले प्रश्नों की संख्या में वृद्धि	परीक्षण--परिणाम को अधिक विश्वसनीय बनाना ।
समग्र विकल्पों को बंद करना ।	अधिक तुलनीयता का सुनिश्चित होना ।
विस्तृत नंबर देने की योजना का प्रावधान	अंक प्राप्त करने में विषयनिष्ठता का नियंत्रण ।

(3) राज्य शिक्षा विभागों, एस०सी०ई०आर०टी० और माध्यमिक शिक्षा बोर्डों में परिचालित करने के लिए एक व्यापक सतत् मूल्यांकन योजना विकसित की गई । इस योजना को काफी लचीला रखा गया है जिससे कि एक तरह तो यह साधनयुक्त शहरी विद्यालयों में लागू हो सके तो दूसरी तरफ ग्रामीण क्षेत्र के लगभग साधन रहित विद्यालयों में भी लागू हो सके। इस योजना में शैक्षिक उपलब्धि, स्वास्थ्य स्थिति, अभिरुचि, प्रवृत्ति, व्यक्तिक और सामाजिक गुणता तथा अंतरंग और बहिरंग कार्यकलापों में भाग लेने का समावेश है । राजस्थान, तमिलनाडु और केरल में प्राप्त अनुभवों के आधार पर इसे एक व्यावहारिक प्रतिज्ञप्ति बनाने की दृष्टि से इस योजना का निर्माण किया गया है । इसे जून 1987 में आयोजित की गई राष्ट्रीय संगोष्ठी में अंतिम रूप दिया गया ।

(4) श्रेणी निर्धारण और अनुमापन विधि को लागू करने के लिए व्यवहार्य उपागम के विकास से संबद्ध कार्यकलाप शुरू किए गए । इसकी निदेशक--रेखाएँ, जुलाई, 1987 में आयोजित उच्च स्तर राष्ट्रीय संगोष्ठी में विकसित की गई जिसमें बोर्ड परीक्षाओं में श्रेणी निर्धारण और अनुमापन विधि को लागू करने के कारणों पर ब्यौरेवार चर्चा की गई । इस विषय पर एक दीपिका विकसित करने का काम हाथ में लिया गया ।

(5) सितंबर, 1987 में आयोजित मौलिक परीक्षाओं पर की गई संगोष्ठी में इस मूल्यांकन तकनीक की शक्यता और प्रत्याशाओं पर विभिन्न शिक्षा स्तर के अध्यापकों और शिक्षाविदों के साथ चर्चा की गई । यह प्रस्ताव किया गया कि किसी व्यक्ति की शक्यता का उपयुक्त मूल्यांकन करने के लिए लिखित और प्रायोजिक परीक्षणों के एक पूरक के रूप में मौलिक परीक्षा भी ली जानी चाहिए ।इस तकनीक को लागू करने के लिए और अधिक शैक्षिक और प्रशासनिक ब्यौरों को विकसित करने से संबद्ध कार्यकलाप शुरू किए गए । इस क्षेत्र से संबंधित कुछ अनुसंधान विषय भी अभिज्ञापित किए गए हैं और उन पर अनुसंधान कार्य करने के लिए उन्हें विभिन्न एजेंसियों में परिचालित किया गया है ।

(6) विभाग विवृत पुस्तक परीक्षाओं पर पहले से ही किए जा रहे कार्य को जारी रखे हुए हैं। अनुसंधान के लिए विषय का पता लगाने के अतिरिक्त इसमें विवृत पुस्तक परीक्षा के लिए उपयुक्त प्रश्न लिखने की निदेशक--रेखाएं विकसित करने का काम भी शामिल है । उत्तर प्रदेश में विवृत पुस्तक परीक्षा विधि को लागू करने के लिए कुछ कदम उठाए गए हैं और विभाग ने इस प्रकार की परीक्षा का प्रश्न पत्र बनाने वालों के प्रशिक्षण में सहायता की है ।

1987-88

विद्यालय शिक्षा के सभी स्तरों पर परीक्षा में सुधार लाने से संबद्ध कार्यकलापों को विकसित करने के लिए विभाग ने कार्यशालाएं/बैठकें/संगोष्ठियाँ आयोजित कीं। इन कार्यक्रमों के ब्यौरे सारणी 10.1 में दिए गए हैं।

इन कार्यशालाओं की सहायता से निम्नलिखित सामग्री भी विकसित की गई : एन०सी०ई०आर०टी० के पाठ्यपुस्तकों के आधार पर ग्यारहवीं कक्षा की भौतिकी के यूनिट परीक्षण, सातवीं और आठवीं कक्षा के विज्ञान के निरंतर मूल्यांकन के लिए नमूना मौखिक परीक्षण और लिखित परीक्षण, "रीड, अंडरस्टैंड एण्ड ऐन्सर, वाल्यूम II" नामक पुस्तक : नवीं और दसवीं कक्षा की अंग्रेजी के अर्थ ग्रहण परीक्षण, निदान एवं सुधार के संबंध में अध्यापकों के प्रयोग के लिए, गणित, भौतिकी, रसायन, जैविकी, इतिहास, अर्थशास्त्र की परीक्षा सामग्री, रसायन, जैविकी, इतिहास, अर्थशास्त्र की परीक्षण सामग्री, सामान्य मानसिक योग्यता परीक्षणों में प्रयुक्त होने वाली सामग्री, और शैक्षिक मूल्यांकन के तकनीकी शब्दों का शब्द संग्रह।

इनके अतिरिक्त विभाग ने विभिन्न माध्यमिक शिक्षा बोर्डों के कार्मिकों की बाह्य परीक्षाओं में सुधार लाने के लिए पाँच प्रशिक्षण पाठ्यक्रम आयोजित किए। इन परीक्षण पाठ्यक्रमों के ब्यौरे सारणी 10.2 में दिए गए हैं।

सारणी 10.1

1987-88 में आयोजित कार्यशाला/बैठक/संगोष्ठी

क्र० सं०	कार्यक्रम का नाम	तारीख/अवधि	स्थान	भागलेने वालों की संख्या
1.	अनुमापन और श्रेणी निर्धारण पर उच्च स्तरीय बैठक	22 और 23 जुलाई, 1987 (2 दिन)	एन सी ई आर टी नई दिल्ली	17
2.	उच्च प्राथमिक कक्षाओं (भाग I) के निर्माणात्मक मूल्यांकन योजना विकसित करने के लिए कार्यशाला	27 से 31 जुलाई, 1987 (5 दिन)	एन सी ई आर टी नई दिल्ली	13
3.	मौखिक परीक्षा पर संगोष्ठी	8 से 10 सितंबर, 1987 तक (3 दिन)	एन सी ई आर टी नई दिल्ली	27
4.	उच्च प्राथमिक कक्षाओं (भाग – II) के निर्माणात्मक मूल्यांकन योजना विकसित करने के लिए कार्यशाला	13 से 17 अक्टूबर, 1987 (5 दिन)	जयपुर	14
5.	नवीं कक्षा भौतिकी में इकाई परीक्षण विकसित करने के लिए कार्यशाला	6 नवंबर, 1987 (1 दिन)	इन सी ई आर टी नई दिल्ली	15
6.	इतिहास की परीक्षण सामग्री विकसित करने के लिए कार्यशाला	23 से 27 नवंबर 1987 (5 दिन)	एन सी ई आर टी नई दिल्ली	24
7.	विज्ञान के मौखिक और लिखित परीक्षणों का नमूना विकसित करने के लिए कार्यशाला	11 से 15 जनवरी, 1988 (5 दिन)	एन सी ई आर टी नई दिल्ली	25
8.	नवीं और दसवीं कक्षा के व्यापक परीक्षण विकसित करने के लिए कार्यशाला	28 दिसंबर से 1 जनवरी, 1988 (5 दिन)	एन सी ई आर टी नई दिल्ली	4
9.	+ 2 की जैविकी के नमूना प्रश्न विकसित करने के लिए कार्यशाला	15 से 19 फरवरी, 1988 तक (5 दिन)	एन सी ई आर टी नई दिल्ली	23
10.	राष्ट्रीय लेखा (अर्थशास्त्र) में प्रायोगिक अभ्यास विकसित करने के लिए कार्यशाला	22 से 26 फरवरी, 1988 (5 दिन)	एन सी ई आर टी नई दिल्ली	13
11.	विज्ञान में सातवीं कक्षा की परीक्षण सामग्री के पुनरीक्षण के लिए कार्यशाला	14 से 18 मार्च, 1988 (5 दिन)	एन सी ई आर टी नई दिल्ली	16
12.	बारहवीं कक्षा की जैविकी की परीक्षण सामग्री के पुनरीक्षण के लिए कार्यशाला	14 से 18 मार्च 1988	एन सी ई आर टी नई दिल्ली	8
13.	मानसिक योग्यता के क्षेत्र में सामग्री बैंक विकसित करने के लिए कार्यशाला	21 से 25 मार्च, 1988 (5 दिन)	एन सी ई आर टी नई दिल्ली	17
14.	शैक्षिक मूल्यांकन का शब्द संग्रह विकसित करने के लिए कार्यशाला	28 से 30 मार्च, 1988 (3 दिन)	एन सी ई आर टी नई दिल्ली	9

सारणी 10.2

1987-88 में आयोजित किए गए प्रशिक्षण/अभिविन्यास पाठ्यक्रम

क्र० सं०	पाठ्यक्रम	अवधि	स्थान	भाग लेने वालों की संख्या
1.	निरंतर व्यापक मूल्यांकन पर अखिल भारतीय प्रशिक्षण पाठ्यक्रम।	3 से 16 जून 1987 (14 दिन)	शिमला	22

2.	जम्मू और कश्मीर के विद्यालय शिक्षा बोर्ड की बाह्य परीक्षा में सुधार लाने के लिए प्रशिक्षण पाठ्यक्रम ।	10 सितंबर से 9 दिसंबर, 1987 (3 महीने)	श्रीनगर	70
3.	गोवा के विद्यालय शिक्षा बोर्ड की बाह्य परीक्षा में सुधार लाने के लिए प्रशिक्षण पाठ्यक्रम ।	2 से 9 दिसंबर, 1987 (8 दिन)	पणजी	55
4.	उड़ीसा के विद्यालय शिक्षा बोर्ड की बाह्य परीक्षा में सुधार लाने के लिए प्रशिक्षण पाठ्यक्रम ।	28 से 31 दिसंबर, 1987 (8 दिन)	पुरी	43
5.	आंध्र प्रदेश के इण्टरमिडिएट बोर्ड की बाह्य परीक्षा में सुधार लाने के लिए प्रशिक्षण पाठ्यक्रम ।	28 जनवरी से 3 फरवरी 1988 (7 दिन)	हैदराबाद	53

पाँचवां अखिल भारतीय शैक्षिक सर्वेक्षण

आधार स्तर पर शैक्षिक सुविधाओं के नियोजन में आँकड़ा उपलब्ध करने के लिए एन सी ई आर टी अखिल भारतीय शैक्षिक सर्वेक्षण कर रहा है । इस प्रकार के आँकड़े उपलब्ध करने के लिए अंतिम सर्वेक्षण 1978 में किया गया था । पांचवें अखिल भारतीय शैक्षिक सर्वेक्षण को, जिस पर आजकल काम हो रहा है, मुख्यतः राष्ट्रीय शिक्षा-नीति (1986) के उस संदर्भ को हाथ में लिया गया है जिसमें "आपरेशन ब्लैक बोर्ड" के अंतर्गत प्राथमिक शिक्षा के लिए कुछ निम्नतम आंतरिक संरचनात्मक सुविधाओं की व्यवस्था होने और 7वीं और 8वीं पंचवर्षीय योजनाओं के दौरान देश में अनौपचारिक, व्यावसायिक और व्यस्क शिक्षा कार्यक्रमों का प्रसार करने की बात कही गई है ।

1986 के अंतिम महीनों में शुरू किये गए पांचवी अखिल भारतीय शैक्षिक सर्वेक्षण में छः लाख से भी अधिक गाँवों और सभी प्रकार के लगभग इतने ही विद्यालयों से आँकड़े एकत्रित करना, उनकी जांच पड़ताल करना और उनका संकलन करना पड़ता है । शुरू में इन आंकड़ों को सारणी रूप में रखने का काम ब्लाक स्तर पर किया जाता है और फिर समेकित सारणियाँ जिला, राज्य और राष्ट्रीय स्तर पर तैयार की जाती हैं।

सर्वेक्षण के मुख्य उद्देश्य निम्नलिखित हैं :

(1) विद्यालय जाने वाली जनसंख्या, घर से विद्यालय की दूरी, कुल नामांकन, अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति और बालिकाओं की व्याप्ति सहित विद्यालय के विभिन्न स्तरों पर उपलब्ध शैक्षिक सुविधाओं की वर्तमान स्थिति का निर्धारण करना ।

(2) विद्यालय भवन, खेल के मैदान, फर्नीचर, पीने का पानी, मेडिकल चैक अप प्रोत्साहन योजना और हिताधिकारियों की संख्या जैसी भौतिक सुविधाओं का निर्धारण करना ।

(3) ब्लैक बोर्ड और चाक, पुस्तकालय, प्रयोगशाला, पुस्तक बैंक आदि जैसी निविष्टियों की स्थिति का निर्धारण ।

(4) अध्यापकों-विशेष रूप से विज्ञान और गणित के अध्यापकों की शैक्षिक और व्यावसायिक अहर्ताओं को जानना और शिक्षण व्यवसाय में अनुशय दर निर्धारण करना ।

(5) विद्यालय रहित आवासों में वर्तमान शैक्षिक सुविधाओं और प्रस्तावित व्यवस्था को प्रदर्शित करने वाले ब्लाक मैप तैयार करना । ग्राम सूचना आदि, शहरी सूचना फार्म और विद्यालय सूचना फार्म सहित विभिन्न पहलुओं पर सूचना एकत्रित करने के लिए फार्म विकसित किए गए ।

सर्वेक्षण के अंतर्गत प्रत्येक गाँव और प्राथमिक से (+2) स्तर के उच्च माध्यमिक तक प्रत्येक विद्यालय की गणना की गई । विद्यालय शिक्षा के विभिन्न स्तरों की शैक्षिक सुविधाएं उपलब्ध होने और न उपलब्ध होने वाले वास क्षेत्रों, विद्यालय रहित क्षेत्रों की विद्यालय की सुविधा उपलब्ध होने वाले क्षेत्रों से दूरी, मुख्यतः अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति की जनसंख्याएं वाले वास क्षेत्रों में विभिन्न स्तर के विद्यालयों की सुविधा जनसंख्या के आधार पर गाँवों में अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति के लोगों का अनुपात और उन्हें मिलने वाली विद्यालय सुविधाएं, कुल जनसंख्या, अनुसूचित की जनसंख्या और अनुसूचित जनजाति की संख्या में उम्र के हिसाब से कितने लड़के और कितनी लड़कियों का विद्यालय के विभिन्न स्तरों में नामांकन, विद्यालय के विभिन्न स्तरों पर पढ़ाने वाले अध्यापकों की अहर्ता और विज्ञान तथा गणित के अध्यापकों की अहर्ता. विभिन्न स्तर की शिक्षा के लिए आवश्यक पुस्तकालयों, प्रयोगशालाओं और उपकरण आदि की उपलब्धता, + 2 स्तर पर व्यावसायिक पाठ्यक्रमों की उपलब्धता और इन पाठ्यक्रमों के लिए नामांकन , अध्यापकों की उपलब्धता, कार्यशालाओं और अंतःकार्य प्रशिक्षण सुविधाओं के आंकड़े एकत्रित किए गए हैं ।

1988 के मार्च के अंत तक गुजरात, हरियाणा, सिक्किम, अण्डमान और निकोबार द्वीप, अरुणाचल प्रदेश, लक्षद्वीप और मिजोरम की राज्य सारणियाँ पूरी कर ली गईं ।

पांचवें अखिल भारतीय शैक्षिक सर्वेक्षण के अतिरिक्त विभाग ने अनुसंधान परियोजनाओं से संबंधित अनेक कार्यकलाप भी किए । अनुसंधान परियोजनाओं के अंतर्गत "चुने हुए चार राज्यों के उच्च और उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में उपलब्ध पुस्तकालय सुविधा और उनके उपयोग पर एक प्रतिदर्श अध्ययन', "माध्यमिक और उच्चतर माध्यमिक स्तरों पर उपलब्ध विज्ञान प्रयोगशालाओं पर गहन अध्ययन", "चुने हुए चार राज्यों के माध्यमिक और माध्यमिक विद्यालय के भवनों पर गहन अध्ययन", मिडिल और माध्यमिक विद्यालयों में उपलब्ध शिक्षण साधन पर गहन अध्ययन", और "तीसरी से पांचवी कक्षाओं के निकष-परीक्षणों के विकास पर "एक परियोजना" शामिल हैं ।

राष्ट्रीय प्रतिभा खोज

1984-85 से राष्ट्रीय प्रतिभा खोज योजना को विकेन्द्रित कर दिया गया । परिशोधित राष्ट्रीय प्रतिभा खोज योजना के अन्तर्गत पुरस्कार का चयन दसवीं कक्षा के अंत में दो चरणों में किया जाता है । प्रथम चरण

में राज्यों/संघ राज्य क्षेत्रों द्वारा अक्टूबर, 1986 में ली गई परीक्षा में उ। छात्रों का चयन किया गया जितना कि द्वितीय स्तर परीक्षण के लिए एन०सी०ई०आर०टी० ने सिफारिश की थी। अपेक्षित संख्या में पुरस्कार विजेताओं का चयन करने के लिए एन०सी०ई०आर०टी ने 10 मई, 1987 को द्वितीय स्तर परीक्षा आयोजित की। एन०सी०ई०आर०टी० ने यह परीक्षा पूरे भारत के 29 केन्द्रों पर ली। विदेशों में दसवीं कक्षा में अध्ययन कर रहे कुछ भारतीय छात्र भी एन०सी०ई०आर०टी द्वारा ली गई परीक्षा में बैठे। इसके ब्यौरे सारणी 10.3 और 10.4 में दिए गए हैं।

सारणी 10.3

1987 में दी गई राष्ट्रीय प्रतिभा खोज छात्रवृत्तियों की संख्या

क्र० सं०	राज्य/संघ राज्य क्षेत्र	द्वितीय स्तर परीक्षा में बैठे छात्रों की संख्या	दी गई छात्रवृत्तियों की संख्या (सामान्य)	अनुसूचित जाति/ अनुसूचित जनजाति को दी गई आरक्षित छात्रवृत्ति
1.	आंध्र प्रदेश	211	20	2
2.	असम	78	16	4
3.	बिहार	193	54	9
4.	गुजरात	161	10	–
5.	हरियाणा	70	15	1
6.	हिमाचल प्रदेश	29	3	–
7.	जम्मू और कश्मीर	15	1	–
8.	कर्नाटक	155	33	3
9.	केरल	246	43	8
10.	मध्य प्रदेश	152	24	3
11.	महाराष्ट्र	317	171	15
12.	मणिपुर	17	–	2
13.	मेघालय	25	1	–
14.	नागालैण्ड	24	–	1
15.	उड़ीसा	88	24	4
16.	पंजाब	88	20	1
17.	राजस्थान	122	12	3
18.	सिक्किम	9	–	–
19.	तमिलनाडु	225	64	4
20.	त्रिपुरा	25	–	2
21.	उत्तर प्रदेश	475	64	3
22.	पश्चिम बंगाल	215	58	4
23.	अण्डमान और निकोबार द्वीप	10	–	–
24.	अरुणाचल प्रदेश	9	7	2
25.	चण्डीगढ़	10	7	–
26.	दादर नागर हवेली	–	–	–
27.	दिल्ली	54	39	1
28.	गोवा, दमन और डयू	10	–	–
29.	लक्षद्वीप	1	–	–
30.	मिजोरम	9	–	–
31.	पाण्डिचेरी	10	–	1
32.	नेपाल	7	–	–
33.	भूटान	4	–	–
34.	कुवैत	2	1	–
	कुल जोड़ :	3065	680	73

सारणी 10.4

(1987–88 के पुरस्कार विजेताओं सहित) नामावली
पर वृत्तिछात्रों की कुल संख्या

क्र०	पाठ्यक्रम	सामान्य	अनुसूचित जाति अनुसूचित जनजाति	कुल जोड़
1.	– 2 स्तर	1350	128	1478
2.	पूर्व स्नातक	465	20	485
3.	स्नातकोत्तर	256	4	260
4.	पी–एच० डी	42	–	42
5.	आयुर्विज्ञान में प्रथम डिग्री	658	60	718
6.	आयुर्विज्ञान में द्वितीय डिग्री	254	3	257
7.	इंजीनियरी में प्रथम डिग्री	1404	60	1664
8.	इंजीनियरी में द्वितीय डिग्री	328	3	331
	कुल जोड़ :	4757	278	5035

आलोच्य वर्ष में राष्ट्रीय प्रतिभा खोज के पुरस्कार विजेताओं के लिए रुपए 78,08,875,65 की छात्रवृत्ति निर्मुक्त की गई ।

आलोच्य वर्ष में पूर्वस्नातक पुरस्कार विजेताओं के लिए दिल्ली तथा जम्मू और जम्मू कश्मीर विश्वविद्यालयों में ग्रीष्मकालीन विद्यालय आयोजित किए गए । इसी प्रकार के कार्यक्रम पटना और कलकत्ता विश्वविद्यालयों में भी आयोजित किए गए । कलकत्ता, कानपुर और बम्बई विश्वविद्यालयों में भी स्नातकोत्तर पुरस्कार विजेताओं के लिए तीन स्थानन कार्यक्रम आयोजित किए गए ।

कम्प्यूटरीकरण और आंकड़ा संसाधन

(1) दिसंबर 1987 में एक नया कम्प्यूटर तंत्र ओनेजा सुपरस्टार लगाया गया । इस कम्प्यूटर तंत्र लगाने की जगह की व्यवस्था करने के लिए सिविल और विद्युत दोनों कार्य भी करने पड़े । कम्प्यूटर तंत्र को सदा ठीक बिजली मिलती रहे–इसके लिए एक अवांछित पावर सप्लाई (यु० पी० एस०) तंत्र लगाया गया । कम्प्यूटर तंत्र में 1 एक्स एम बी स्मृति, 1 एक्स एम बी के दो फलॉपी ड्राइव, 80 एम बी के दो विन्चेस्टर ड्राइव, एक टेप ड्राइव, पांच – टर्मिनल, एक लाइन प्रिन्टर, तीन डॉट–मैट्रिक्स पिन्टर और एक पीसी/एक्स टी तंत्र है । कम्प्यूटर तंत्र के निम्नलिखित प्रक्रिया सामग्री पैकेज उपलब्ध हैं –(1) आंकड़ा संचय प्रबंध तंत्र (2) स्प्रेड शीट (3) शब्द संसाधित्र और (4) वैज्ञानिक उपनेमका पैकज । इसके अतिरिक्त कम्प्यूटर तंत्र में निम्नलिखित प्रोग्रामन भाषा उपलब्ध हैं : (1) फोर्ट्रान (2) कोबोल (3) बेसिक (4) प स्कल और (5) "सी" भाषा । अनुसंधान, सर्वेक्षण और परीक्षा आंकड़े का संसाधन करने के अतिरिक्त परिषद् के शैक्षिक कार्यक्रमों तथा प्रशासन एवं लेखा कार्यों से संबद्ध विभिन्न कार्यकलापों में इस कम्प्यूटर तंत्र का उपयोग करने का प्रस्ताव है ।

(2) ऊपर उल्लेखित कम्प्यूटर तंत्र के अतिरिक्त चार ऑफ लाइन आँकड़ा प्रविष्टि तंत्र भी फलॉपियों पर आँकड़ा रूपांतरित करने के लिए लगाए गए ।

(3) आलोच्य वर्ष में निम्नलिखित मुख्य कार्यकलाप किए गए हैं । (अ) ऑफ लाइन आँकड़ा प्रविष्टि तंत्र की सहायता से चुंबकीय टेप/फ्लापी जैसे कम्प्यूटर माध्यमों पर आंकड़ा स्थानांतरित करना, (ब) आँकड़ों के प्रमाणीकरण तथा विभिन्न प्रकार के सांख्यिकीय विश्लेषण करने के लिए अनुप्रयोग प्रक्रिया सामग्री विकसित करना और अंत में (स) कम्प्यूटर पर आँकड़ों का संसाधन ।

आलोच्य वर्ष में निम्नलिखित विशेष कार्य किए गए :

(अ) एन०सी०ई०आर०टी० के विभिन्न विभागों/यूनिटों द्वारा हाथ में ली गई अनेक अनुसंधान परियोजनाओं से संबद्ध आँकड़ा का कम्प्यूटर संसाधन, (ब) राष्ट्रीय प्रतिभा खोज परीक्षा के उत्तर शीट का स्कोरिंग और योग्यताक्रम सूची तैयार करने आदि सहित परीक्षाफलों का संसाधन (स) अपनी पी०एच०डी० परियोजनाओं के लिए संकाय सदस्यों को कम्प्यूटर सुविधा उपलब्ध कराना, (द) कूटलेखन अभिकल्पना के विकास आँकड़ों का निर्माण, सांख्यिकीय तकनीकों का अनुप्रयोग, विश्लेषण योजना के विकास और परिणामों के विवेचन में अनुसंधानकर्त्ताओं को मार्गदर्शन करना ।

मापन, मूल्यांकन, सर्वेक्षण और आंकड़ा संसाधन विभाग ने परीक्षा में सुधार लाने के क्षेत्र में कार्य कर रहे विभिन्न संगठनों को परामर्श सेवाएं उपलब्ध करायीं । परामर्श के ब्यौरे सारणी 10.5 में दिए गए हैं ।

सारणी 10.5

1987–88 वर्ष में दिए गए परामर्श

क्र० सं०	संगठन जिन्हें परामर्श दिया गया	परामर्श उद्देश्य
1.	हरियाणा माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, भिवानी	हिन्दी, अंग्रेजी, संस्कृत, भौतिकी, जैविकी और भूगोल की प्रतिदर्श सामग्री विकसित करना ।
2.	अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय, अलीगढ़	– 2 स्तर के अंग्रेजी, हिन्दी, समाज विज्ञान, दर्शन, उर्दू, मनोविज्ञान, गणित और विज्ञान के प्रतिदर्श प्रश्न पत्र विकसित करना ।
3.	एस. सी. ई. आर. टी. हिमाचल प्रदेश, सोलन	भौतिकी, रसायन, गणित, जैविकी, इतिहास, अर्थशास्त्र के सामग्री लेखकों का प्रशिक्षण ।
4.	उत्तर प्रदेश हाई स्कूल और इन्टरमिडिएट शिक्षा बोर्ड	निवृत्त पुस्तक परीक्षा के लिए परीक्षण सामग्री विकसित करने का अभिविन्यास ।

प्रकाशन

1987–88 वर्ष में विभाग द्वारा प्रकाशित किए गए प्रकाशनों के ब्यौरे सारणी 10.6 में दिए गए हैं ।

सारणी 10.6

1987–88 वर्ष में प्रकाशित प्रकाशन

क्र० सं०	नाम	प्रकाशन मास	प्रकाशित प्रतियों की संख्या
1.	ओपन बुक एक्जामिनेशन एरियाज (अनुलेखित)	अप्रैल, 1987	300
2.	कम्प्रेहेन्सिव कन्टिनुएशन इवेलुएशन स्कीम फॉर प्रेअर एण्ड अपर प्राइमरी स्कूल (अनुलेखित)	जून, 1987	300
3.	रिपोर्ट ऑफ द नेशनल सेमिनार आन स्केलिंग एण्ड ग्रेडिंग(अनुलेखित)	अगस्त, 1987	250
4.	आउटकम्स ऑफ द सेमिनार ऑन ओरेल एक्जामिनेशन (अनुलेखित)	दिसम्बर, 1987	400
5.	रीड, अंडरस्टैण्ड एण्ड एन्सर (वाल्यूम 11)	जनवरी, 1988	मुद्रण के लिए तैयार
6.	गाइड लाइन्स फॉर सर्वे आफिसर्स, फिफ्थ आल इंडिया एजुकेशनल सर्वे	जून, 1987	800
7.	स्क्रूटनी चेक्स फॉर ब्लॉक टेबुल्स (अनुलेखित)	नवंबर, 1987	1000

नवोदय विद्यालय सेल (एन वी सी) के कार्यकलाप

नवोदय सेल के काम हैं– प्रवेश के लिए चयन परीक्षण लेना, नवोदय विद्यालयों के अध्यापकों के अभिविन्यास/प्रशिक्षण पाठ्यक्रम आयोजित करना और योजना करने के विभिन्न पहलुओं से संबद्ध अनुसंधान कार्यकलाप हाथ में लेना तथा संकलनात्मक सामग्री विकसित करना ।

नवोदय विद्यालयों में प्रवेश के लिए चयन परीक्षण

नवोदय विद्यालय सेल 1986–87 से नवोदय विद्यालयों में प्रवेश के लिए चयन परीक्षण ले रहा है । नवोदय विद्यालयों की संख्या 1986–87 में 83 से बढ़कर 1987–88 में 209 हो गई ।

नवोदय विद्यालय परीक्षण सलाहकार समिति में आवश्यक चर्चाएं हो जाने के बाद कार्यक्रम की रूपरेखा का अंतिम रूप दे दिया गया और परीक्षणों तथा विभिन्न भाषाओं में किए गए उनके अनुवादों को अंतिम रूप देने के लिए कार्यशालाएं आयोजित की गईं । निम्नलिखित भाषाओं में परीक्षणों का अंतिम रूप दिया गया ।

1. असमी
2. बंगाली
3. अंग्रेजी
4. गारो
5. गुजराती
6. हिन्दी
7. कन्नड़
8. खासी
9. मलयालम
10. मणिपुरी
11. मराठी
12. मिजो
13. उड़िया
14. पंजाबी
15. सिंधी
16. तमिल
17. तेलुगु
18. उर्दू

क. अरबी लिपि

ख. देवनागरी लिपि

परीक्षण माला और विभिन्न परीक्षणों की भारिता से संबद्ध ब्यौरे नीचे दिए गए हैं ।

1	मानसिक योग्यता परीक्षण	60 मद	(60 प्रतिशत)
2	भाषा परीक्षण	20 मद	(20 प्रतिशत)
3	अंकगणित परीक्षण	20 मद	(20 प्रतिशत)

मानसिक योग्यता परीक्षण में केवल अशाब्दिक मद था । ऐसा चयन प्रक्रिया को यथासंभव सांस्कृतिक–उदासीन बनाने तथा पर्यावरण कारकों से अभिनति को कम करने की दृष्टि से किया गया ।

प्रवेश परीक्षण का प्रचार

जिन–जिन जिलों में नवोदय विद्यालय खोले जा रहे हैं उनमें से प्रत्येक जिले के प्रत्येक ब्लॉक में व्यापक प्रचार करने के लिए एन सी ई आर टी के क्षेत्र सलाहकारों ने समाचार पत्रों में विज्ञापन देकर, रेडियो और दूरदर्शन से प्रसारित करके, पांचवी कक्षा वाले विभिन्न विद्यालयों में पोस्टर लगाकर और – विज्ञप्ति पत्रक बाँटकर प्रचार अभियान चलाया । इसके अतिरिक्त, नवोदय विद्यालय सेल ने परीक्षार्थियों के मार्गदर्शन के लिए दृष्टांत सामग्री सहित परीक्षण के ब्यौरे प्रस्तुत करने वाला एक सूचना–ब्रोशर प्रकाशित किया और उसे परिचालित किया । इस कार्य का बोझ तब और अधिक बढ़ गया जबकि प्रत्येक परीक्षा केन्द्र पर विभिन्न भाषाओं में परीक्षण –पुस्तिकाओं की अपेक्षताओं का निर्धारण करना और संबंधित प्रत्येक जिले के दूर–दूर कोने तक गोपनीय सामग्री भेजना आवश्यक हो गया । राज्यों के जिला शिक्षा अधिकारियों के साथ उचित समन्वय करके और पूरे प्रचालन का मॉनिटरन करके एन०सी०ई०आर०टी० के क्षेत्र सलाहकारों से अपने कार्य–क्षेत्रों के विभिन्न राज्यों/संघ राज्य–क्षेत्रों के व्यापक और पूर्ण प्रचार करने की अधिकांश जिम्मेदारी अपने ऊपर लेनी पड़ी ।

18 भाषाओं में आवेदन फार्म

अँग्रेजी और हिन्दी में तैयार किए गए आवेदन फार्मों से 18 क्षेत्रीय भाषाओं में अनुदित किया गया और उन्हें एफ० ए० के पास भेज दिया जिन्होंने इन्हें छपवाकर बंटवा दिया । आवेदन–फार्मों को देने और लेने का काम एन०सी०ई०आर०टी० के क्षेत्र सलाहकारों के निर्देशन में जिला समन्वयक के रूप में काम कर रहे जिला शिक्षा अधिकारियों के जरिए किया गया । परीक्षण का ठीक ढंग से संचालित करने के लिए आवश्यक व्यवस्थाएं की गईं । प्रत्येक सामुदायिक विकास खंड में परीक्षा केन्द्र बनाए गए । परीक्षण के संचालन पर नजर रखने के लिए जिला स्तर और केन्द्र स्तर के प्रेक्षक रखे गए । सभी स्तरों पर संबद्ध कार्मिकों के मार्गदर्शन और राज्य, जिला और केन्द्र स्तर पर परीक्षण कार्मिकों के अभिविन्यास के लिए अँग्रेजी और हिन्दी में परीक्षण दीपिकाएँ तैयार की गईं ।

23 अगस्त, 1987 को 21 राज्यों और संघ राज्य–क्षेत्रों में परीक्षण लिया गया ।इन तारीखों पर बाढ़ के कारण बिहार के सात जिलों में और स्थानीय गड़बड़ी के कारण मेघालय के एक जिले में परीक्षण नहीं लिया जा सका । बाद में नवोदय विद्यालय खोजे जाने के कारण अरुणाचल प्रदेश के लोहित मंडल में 7 फरवरी, 1988 को पूरक परीक्षण लिया गया। कुल मिलाकर राज्यों और संघ राज्य–क्षेत्रों के 209 जिलों में, जिनके अंतर्गत 2789 सामुदायिक विकास खंड आते हैं, चयन परीक्षण लिए गए । इन परीक्षणों के लिए कुल 2656 परीक्षा केन्द्र थे । पंजीकृत किए गए 286118 छात्रों में से कुल 262591 छात्र इस परीक्षण में बैठे ।

परीक्षाफलों का कम्प्यूटरीकरण

1986 में परीक्षण–पुस्तिकाओं का मूल्यांकन और परीक्षाफलों का सारणीयन एन०सी०ई०आर०टी के चार क्षेत्रीय शिक्षा कालेजों में हाथ से किया गया । पर, 1987 में परीक्षण पुस्तिकाओं का मूल्यांकन, परीक्षाफलों का संसाधन और आँकड़ों का विश्लेषण कम्प्यूटर की सहायता से किया गया । इस कार्य की व्यवस्था देश के पाँच अलग–अलग केन्द्रों में की गई ।

भाषाओं में लगभग 7.8 लाख परीक्षण–पुस्तिकाओं की जांच करनी थी । पर यह कार्य पूरा कर लिया गया और 209 नवोदय विद्यालयों में छात्रों के प्रवेश के लिए परीक्षाफलों को अंतिम रूप दे दिया गया । आँकड़ों को व्यवस्थित रखने में काफी कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। क्योंकि परीक्षण में बैठने वाले अधिकांश बच्चे 9 से 13 वर्ष के उम्र के ग्रामीण क्षेत्रों के बच्चे थे अतः छात्रों द्वारा दिए गए आँकड़े में अनेक विसंगतियां रही । परीक्षा फल का अंतिम रूप देने के पहले इन विसंगतियों को दूर करना आवश्यक था जिसकी वजह से परीक्षाफल निकालने में थोड़ा विलंब हो गया । फिर भी, परीक्षाफल तैयार करने, संचालित करने और संसाधन करने से संबद्ध सभी क्रियाएं सफलतापूर्वक पूरी कर ली गईं ।

परीक्षाफल

परीक्षण में बैठे कुल 262591 छात्रों में से 1380 छात्र (लगभग 5 प्रतिशत) चुने गए । अलग–अलग क्षेत्रों से चुने गए लड़के/लड़कियों का ब्यौरा नीचे दिया गया है ।

नवोदय विद्यालयों के अध्यापकों और प्रधानाचार्यों के अभिविन्यास पाठ्यक्रम

1. नए भर्ती किए गए नवोदय विद्यालयों के अध्यापकों के लिए अजमेर, भोपाल, भुवनेश्वर और मैसूर के क्षेत्रीय शिक्षा–कालेजों के सहयोग से जून, 1987 में चार सामान्य प्रेरणा पाठ्यक्रम आयोजित किए गए ।
2. नवोदय विद्यालय के अध्यापकों को अँग्रेजी और हिन्दी का अध्ययन करने के लिए अजमेर में दो अभिविन्यास पाठ्यक्रम चलाए गए ।
3. डी०ई०एस० और एम० के सहयोग से एन०सी०ई०आर०टी के मुख्यालय पर दो दलों में विज्ञान और गणित के अध्यापन में अभिविन्यास कार्यक्रम आयोजित किए गए ।
4. एन०सी०ई०आर०टी के मुख्यालय पर दो दलों में नवोदय विद्यालय के प्रधानाचार्यों के लिए अभिविन्यास पाठ्यक्रम आयोजित एवं संचालित किए गए ।

1987-88

1988 वर्ष में नवोदय विद्यालय में प्रवेश के लिए छात्रों के चयन के परीक्षणों का सभी भाषाओं में अंतिम रूप दे दिया गया और चालू वित्तीय वर्ष के अंत के पहले इन्हें छपने के लिए भेज दिया गया।

एन०सी०ई०आर०टी० और राज्यों के अन्य शैक्षिक एजेन्सियों के साथ संपर्क

समय पर नवोदय विद्यालयों की पाठ्यपुस्तकें विकसित करने और प्रकाशन विभाग से पाठ्यपुस्तकों को यथाशीघ्र प्रेषित करने के लिए नवोदय विद्यालय सेल एन०सी०ई आर०टी के विभिन्न विभागों के साथ संपर्क बनाकर काम करता रहा। इसी समय यह सेल एन०सी०ई०आर०टी, नवोदय विद्यालय समिति, केन्द्रीय संगठन और राज्य शिक्षा विभाग, नवोदय विद्यालय, क्षेत्र सलाहकार और क्षेत्रीय शिक्षा कालेजों के विभिन्न अधिकारियों के निकट सहयोग से 26 से अधिक राज्यों/संघ राज्य क्षेत्रों के 209 जिलों के नवोदय विद्यालयों में छात्रों के प्रवेश के चयन परीक्षण से संबद्ध सफल प्रशासन के कार्य में भी लगा रहा।

ग्रामीण क्षेत्र	शहरी क्षेत्र	लड़के	लड़कियां
10934 (79 प्रतिशत) अनुसूचित जाति 2360 (17 प्रतिशत)	2870 (21 प्रतिशत) अनुसूचित जनजाति 1602 (12 प्रतिशत)	11298 (82 प्रतिशत) सामान्य 9842 (71 प्रतिशत)	2506 (18 प्रतिशत)

1987-88

ग्यारह — नीति अनुसंधान, योजना और प्रोग्राम

एन०सी०ई०आर०टी० का नीति अनुसंधान, योजना और प्रोग्राम विभाग (डी पी आर पी पी) शिक्षा की सभी शाखाओं के अनुसंधान कार्यों और नवीन प्रक्रियाओं को अपने हाथ में लेता है, उनकी सहायता करता है, उन्हें बढ़ाता है और उनका समन्वयन करता है — और अनुसंधान संबंधी विचारों और सूचनाओं के लिए एक वितरण केन्द्र के रूप में कार्य करता है । 1987–88 में डी पी आर पी पी द्वारा हाथ में लिए गए मुख्य कार्यकलापों के संक्षिप्त विवरण नीचे दिए गए हैं ।

अनुसंधान और नवीन प्रक्रिया

1974 में स्थापित शैक्षिक अनुसंधान और नवीन प्रक्रिया समिति (ई आर आई सी) अनुसंधान कार्य में सहायता प्रदान करने वाली मुख्य इकाई है । इस समिति के सदस्य शिक्षा के श्रेष्ठ अनुसंधानकर्त्ता, एस आई ई/एस०सी०ई०आर०टी० के प्रतिनिधि, एन आई ई, सी आई ई टी और क्षेत्रीय शिक्षा कालेजों के सभी विभागों/यूनिटों के अध्यक्ष हैं ।इनके अतिरिक्त एन०आई०ई०, सी०आई०ई०टी० और क्षेत्रीय शिक्षा कालेज के कुछ चुने हुए प्रोफेसर इस समिति के स्थायी आमंत्रित सदस्य हैं ।

ई आर आई सी अनुसंधान के प्राथमिकता वाले क्षेत्रों का पता लगाने में सहायता करता है और एन आई ई के विभागों, क्षेत्रीय शिक्षा कालेज के कुछ चुने हुए प्रोफेसर इस समिति के स्थायी आमंत्रित सदस्य हैं ।

ई आर आई सी अनुसंधान के प्राथमिकता वाले क्षेत्रों का पता लगाने में सहायता करता है और एन आई ई के विभागों, क्षेत्रीय शिक्षा कालेज, क्षेत्र यूनिट, सी आई ई टी और राज्य के अन्य संस्थाओं तथा व्यक्तिगत विद्वानों द्वारा हाथ में ली गई अनुसंधान परियोजनाओं के लिए निधि की मंजूरी करना है । ई आर आई सी, एन सी ई आर टी संकाय के सह–मार्गदर्शन में वाचस्पति कार्य के लिए फेलोशिप, वाचस्पति थीसिस, अन्य कहीं किए गए शोध पत्र और मोनोग्राफ तथा ई आर ई सी की रिपोर्ट के प्रकाशन के लिए अनुदान भी देता है ।

एन०आई०ई० व्याख्यान माला

एन आई ई व्याख्यान माला के अंतर्गत विभिन्न विषयों पर वार्ता देने के लिए चार श्रेष्ठ शिक्षाविदों को आमंत्रित किया गया जैसा कि सारणी 11.1 में दिखाया गया है ।

सारणी 11.1

1987–88 वर्ष में एन०आई०ई० व्याख्यान माला के अंतर्गत दी गई वार्ता

वक्ता	विषय	तारीख
1. डा० फ्रेड्रिक जोन्स, अफ्रीकी भाषा विद भाषा विज्ञान संस्थान, तकनीकी विश्वविद्यालय, बर्लिन	पश्चिमी अफ्रिका में पिडिगिन्स और कोरियोलेन से संबंधित अंग्रेजी	2 सितंबर, 1987
2. डा० फ्रेड्रिक जोन्स, अफ्रीकी भाषाविद् भाषा विज्ञान संस्थान तकनीकी विश्वविद्यालय बर्लिन	सिरलियों में बहुभाषी शिक्षा	3 सितंबर, 1987
3. डा० जोसफ चिल्टन पियर्स	अपने पूर्ण मानव शक्यता का प्रयोग	18 जनवरी, 1988
4. प्रो0 (डा0) डोनल्ड वारेन मेरीलैण्ड, मेरीलैण्ड विश्वविद्यालय यू. एस. ए,	शिक्षा में समकालीन समस्याएं,	26 फरवरी, 1988
5. डा० (श्रीमती) जुडिथ मार्गेट काट्सन, विशेष शिक्षा विभाग मोरे हाउस, शिक्षा कालेज एडिनबरा, यू० के०	बच्चों के भाषा अर्जन और संचार समस्या पर अनुसंधान से प्राप्त जानकारी और एक वीडियो प्रस्तुतिकरण	7 मार्च, 1988

पूरी की गई परियोजनाएं

आलोच्य वर्ष में दो विभागीय ई आर आई सी परियोजनाएँ पूरी की गयीं । इनका उल्लेख सारणी 11.2 में किया गया है । विभाग ने पूरी की गई परियोजनाओं के विषयसार को ई आर आई सी के बुलेटिन में प्रकाशित किया है ।

सारणी 11.2
पूरी की गई अनुसंधान परियोजनाएं

क्र० सं०	नाम	अवधि	मुख्य अन्वेषक
1.	अनुसूचित जाति के हाई स्कूल के लड़कों की मनोवैज्ञानिक अभिलक्षण बनाम शैक्षिक एवं व्यावसायिक योजना ।	3 वर्ष	डा० जे. एस. गौड़, डी. ई. पी. सी. एण्ड जी. एन. सी. ई. आर. टी.
2.	अनुसूचित जनजातियों की शिक्षा और उनकी सामाजिक आर्थिक गतिशीलता के बीच के अंतर्संबंध का अध्ययन ।	1 वर्ष	डा० बी. पी. अवस्थी डी. टी. ई. एस. ई. एन. सी. ई. आर. टी.

पूरी की गई परियोजनाओं के सार

(अनुसूचित जाति के छात्रों के शैक्षिक और व्यावसायिक विकास का मनोवैज्ञानिक आधार)

मुख्य अन्वेषक : डा० जे० एस० गौड़

इस अन्वेषण का लक्ष्य अनुसूचित जाति के हाई स्कूल के लड़कों के मनोवैज्ञानिक लक्षण बनाम शैक्षिक एवं व्यावसायिक परिपक्वता का अध्ययन करना है । अध्ययन के उद्देश्य निम्नलिखित थे :

(क) नवीं कक्षा के अनुसूचित जाति और गैर–अनुसूचित जाति के लड़कों के मनोवैज्ञानिक अभिलक्षण बनाम आत्म धारणा, व्यावसायिक आकांक्षा, मान, बुद्धि और वृत्तिक परिपक्वता में सार्थक अंतर मालूम करना ।

(ख) माध्यमिक स्तर के अनुसुचित जाति के लड़कों का उनके वृत्तिक परिपक्वता के साथ विभिन्न मनोवैज्ञानिक लक्षणों के बीच के संबंध को मालूम करना ।

(ग) ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों के माध्यमिक स्तर के अनुसूचित जाति के लड़कों के संबंध में यह मालूम करना कि मनोवैज्ञानिक सार्थक अभिलक्षणों का वृत्तिक परिपक्वता के साथ किस प्रकार का संबंध है ।

(घ) गैर–अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति के लड़कों के मनोवैज्ञानिक अभिलक्षणों में अंतर मालूम करना ।

इस संबंध में गहन अध्ययन चार जिलों में किया गया । उद्देश्य प्रतिचयन के आधार पर हरियाणा राज्य के (1) फरीदाबाद (औद्योगिक) (2) गुड़गाँव (अर्ध शहरी), (3) करनाल और हिसार (कृषि) चुने गए । आंकड़े एक वर्ष के अंतराल में दो चरणों में एकत्रित किए गए ।

इस अध्ययन में निम्नलिखित चर भी शामिल किए गए :

(1) आत्म धारणा–(क) भौतिक आत्म धारणा (ख) सामाजिक आत्म धारणा (ग) स्वाभाविक आत्म धारणा (घ) शैक्षिक आत्म धारणा (ङ) नैतिक आत्म धारणा (च) बौद्धिक आत्म धारणा ।

(2) व्यावसायिक आकांक्षा
(3) मूल्य : (क) सैद्धांतिक (ख) आर्थिक (ग) सौन्दर्यपरक
(4) बुद्धि
(5) वृत्तिक परिक्वता

निम्नलिखित साधनों से आँकड़े एकत्रित किए गए :

1. आत्म धारणा सूची (डा० ए.०के. सारस्वत)
2. व्यावसायिक आकांक्षा मापक्रम (डा० जे. एस. ग्रेवाल)
3. मूल्य परीक्षण (डा० आर. के. ओझा)
4. बुद्धि के मिश्रित प्रकार के समूह परीक्षण (डा० पी. एन. महरोत्रा)
5. वृत्तिक परिपक्वता सूची (डा० निर्मला गुप्ता)

अध्यन से प्राप्त कुछ महत्वपूर्ण तथ्य निम्नलिखित हैं :

अध्ययन से यह पता चला है कि अनुसूचित जाति के लड़कों की तुलना में गैर अनुसूचित जाति के लड़कों की आत्म धारणा काफी अधिक है । शाब्दिक और गैर–शाब्दिक बुद्धि में भी अनुसूचित जाति के लड़के काफी आगे हैं ।

सौन्दर्यपरक मूल्य के संबंध में ग्रामीण अनुसूचित जाति और गैर अनुसूचित जाति में काफी अंतर पाया गया, इसमें शहरी अनुसूचित जाति में सौन्दर्यपरक मूल्य कुछ अधिक था : स्वाभाविक और बौद्धिक आत्मधारणा को छोड़कर, जितने गैर–अनुसुचित जाति के लड़कों के मूल्य अपेक्षाकृत अधिक थे, शहरी अनुसूचित जाति और गैर अनुसूचित जाति के समूहों में कोई विशेष अंतर देखने में नहीं आया ।

ग्रामीण और शहरी गैर अनुसूचित जाति/अनुसूचित जाति की तुलना करने पर पता चला है कि ग्रामिण गैर अनुसूचित जाति/अनुसूचित जाति और शहरी गैर अनुसूचित जाति/ अनुसूचित जाति की वृत्तिक परिपक्वता में काफी अंतर हैं । सक्षमता के लगभग सभी आयामों में इन दोनों समूहों में काफी अंतर पाया गया ।

1987-88

गैर–अनुसूचित जाति के संबंध में भी ग्रामीण और शहरी लड़कों के व्यावसायिक आकांक्षाओं तथा सैद्धांतिक मूल्यों में काफी अंतर देखने को मिला। दोनों स्थितियों में ग्रामीण लड़कों की तुलना में शहरी लड़कों की स्थिति काफी अच्छी है । एक वर्ष की अवधि में अनुसूचित जाति के लड़कों में भौतिक, स्वाभाविक, शैक्षिक और नैतिक आत्मधारणा में काफी अंतर देखने को मिला ।

बुद्धि–चर के संबंधों में शाब्दिक और गैर–शाब्दिक दोनों में ही बुद्धि में सुधार पाया गया है । एक साल की अवधि में वृत्तिक परिपक्वता और संपूर्ण सक्षमता तथा आत्मज्ञान, व्यावसायिक ज्ञान और व्यवसाय के लिए अपने को तैयार करने में काफी सुधार पाया गया है । प्रवृत्ति आयाम और वृत्तिक परिपक्वता में भी काफी सुधार पाया गया है ।

एक वर्ष की अवधि में गैर–अनुसूचित जाति समूह की सामाजिक आत्मधारणा, संपूर्ण बुद्धि और आयाम (शाब्दिक और गैर–शाब्दिक) और सक्षमता के दो आयामों में अर्थात् आत्म ज्ञान और व्यवसाय के लिए अपने को तैयार करना, काफी सुधार पाया गया है । इसी प्रकार के परिणाम ग्रामीण गैर–अनुसूचित जाति के लड़कों पर लागू होते हैं ।

शहरी अनुसूचित जाति और शहरी गैर–अनुसूचित जाति के समूहों के संपूर्ण बुद्धि और इसके दो आयामों में काफी सुधार देखने को मिला है ।

गैर–अनुसूचित जाति के लड़कों की वृत्तिक परिपक्वता की अभिवृत्ति मापनी के लिए सामाजिक मूल्य, बौद्धिक आत्म धारणा और संपूर्ण शैक्षिक उपलब्धि सार्थक प्राक्सूचक चर पाए गए । अनुसूचित जाति के बच्चों के इसी आश्रित चर के लिए सामाजिक आत्म धारणा और सैद्धांतिक मूल्य सार्थक प्राक्सूचक चर पाए गए ।

इसी प्रकार गैर–अनुसूचित जाति की सक्षमता मापनी के संबंध में प्राक्सूचक चर को संपूर्ण शैक्षिक उपलब्धि, सौन्दर्यपरक मूल्य, भौतिक आत्म–धारणा व्यावसायिक आकांक्षा, धार्मिक मूल्य और शैक्षिक आत्म धारण पाया गया और अनुसूचित जाति की सक्षमता मापनी के संबध में प्राक्सूचक चर को आर्थिक मूल्य, सामाजिक मूल्य और स्वाभाविक आत्मधारणा पाया गया ।

इसी प्रकार अंतिम परिकल्पना का परीक्षण करते समय सक्षमता परीक्षण के प्रत्येक आयाम के प्राक्सूचक चर का भी पता लगाया गया । आश्रित चर के रूप में "व्यवसाय ज्ञान" ने सभी चरों पर शहरी और ग्रामीण अनुसुचित जाति में काफी अंतर देखने को मिला ।

परियोजना जिनकी रिपोर्टों के मसौदे प्राप्त हुए हैं

1987–88 वर्ष में चार विभागेतर अनुसंधान परियोजनाओं और नौ विभागी अनुसंधान परियोजनाओं को रिपोर्टों के मसौदे प्राप्त हुए हैं । इनके ब्यौरे सारणी 11.3 में दिए गए हैं ।

सारणी 11.3

क्र० सं०		नाम	अवधि	मुख्य अन्वेषक
1		2	3	4
(क)		विभागेतर परियोजनाएं		
1.	1.	अनुसूचित जाति / अनूसूचित जनजाति के छात्रों के शिक्षा, अध्यापक, अन्य छात्र और संस्थाओं के प्रति प्रवृति ।	18 महीने	डा० (श्रीमती) के० एन० लतिथ्मा, त्रिवेन्द्रम
	2.	अधिगम कठिनाइयों वाले बच्चों के लिए कक्षा शिक्षण–कार्यक्रम विकसित तथा लागू करना ।	20 महीने	डा०(श्रीमती) प्रेरणा मोहिते, बड़ौदा
	3.	उड़ीसा के जनजातीय विद्यालय के छात्रों के सामाजिक मनोविज्ञान पर शिक्षा का प्रभाव ।	एक साल	डा० (श्रीमती) एस० पटेल फुलवानी
	4.	जनजाति और शिक्षा : क्षेत्रीय विचारधारा में मिल जाने की इच्छा	1/2 साल	डा० हेमलता तलेसरा उदयपुर
(ख)		विभागीय परियोजनाएं		
	1.	2 से 13 वर्ष के उम्र के भारतीय बच्चों की संज्ञानात्मक विकास पर अध्ययन — एक अनुदैर्ध्य अध्ययन ।	5 – 1/2 साल	डा०(श्रीमती) यू० बेवली
	2.	उच्चतर माध्यमिक स्तर की एक स्ट्रीम में स्ट्रीम और पाठ्यक्रम के चयन–निकर्ष का विकास ।	2 साल	डा० ए० शर्मा
	3.	रसायन की औपचारिक संरचनाओं के अर्थग्रहण के लिए शिक्षण की मूर्ज सामग्री और अनुक्रमण की प्रभाविता ।	6 महीने	डा० बी० प्रकाश
	4.	व्यवसायीकरण के लिए माध्यमिक विद्यालय स्तर पर व्यावसायिक अन्वेषी कार्यक्रमों की प्रभाविता का पता लगाना ।	4 साल	डा० ए० शर्मा
	5.	माध्यमिक स्तर पर आवर्ती सारणी के जरिए रसायन की संरचनाओं की अनुक्रमिक उपलब्धि ।	3 साल	डा० एस० वी० सक्सेना क्षेत्रीय शिक्षा कालेज भोपाल
	6.	अध्यापकों की शुद्ध जल जैविकी गुटिका तैयार करने में शुद्ध जल में जीवों का ज्ञान ।	3 साल	डा० जी० के० लहरी क्षेत्रीय शिक्षा कालेज भोपाल
	7.	पश्चिम प्रदेश के अध्यापकों की उपरिमुखी गतिशीलता पर पत्राचार पाठ्यक्रम के जरिए अध्यापक प्रशिक्षण (बी०एड० डिग्री) का प्रभाव ।	2 साल	डा० डी० सी० उपरेती क्षेत्रीय शिक्षा कालेज भोपाल
	8.	विज्ञान में कुछ समेकित प्रक्रिया के लिए आत्म अधिगम प्रक्रिया पर आधारित सामग्री की दक्षता का विकास, मान्यकरण और परीक्षण ।	2 साल	डा० (श्रीमती) ए० ग्रेवाल क्षेत्रीय शिक्षा कालेज भोपाल
	9.	चौथे अखिल भारतीय शैक्षिक सर्वेक्षण आंकड़ों का माध्यमिक विश्लेषण ।	2 साल	डा० सी० एल० राव

1987-88

1987–88 में सिफारिश की गई परियोजनाएं

1987–88 में सिफारिश की गई निम्नलिखित दो अनुसंधान परियोजनाओं का काम हाथ में लिया गया । ये परियोजनाएं एस०वी०आई० ई०आर० आई०सी० की बैठक में अनुमोदित की गई थीं ।

सारणी 11.4

सिफारिश की गई अनुसंधान परियोजनाएं

क्र० सं०	नाम	अवधि	मुख्य अन्वेषक	प्रारंभ करने की तारीख
1.	शैक्षित: मानसिक मंद बुद्धि वालों के कन्नड़ पठन में सुधार लाना ।	2 साल 2 महीने	डा० एम० ए० रवादर, क्षेत्रीय शिक्षा कालेज मैसूर	21. 5. 87
2.	छात्रों की अधिगम विधि : सिद्धांत, अनुसंधान और यंत्रीकरण का विश्लेषण ।	$1\frac{1}{2}$ साल	डा० एम० के रैना, ई० आर० आई० सी०, एन० सी० ई० आर० टी० नई दिल्ली	30. 3. 88

ई०आर०आई०सी० की सत्रहवीं बैठक

28–29 मार्च, 1988 को प्रो० बाकर मेहदी, डीन (अनुसंधान) और अध्यक्ष (ई०) की अध्यक्षता में ई०आर०आई०सी० की सत्रहवीं बैठक हुई।

शैक्षिक अनुसंधान पर घेरलू समूह

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 और कार्यान्वयन कार्यक्रम से प्राप्त शैक्षिक अनुसंधान से संबद्ध विभिन्न मामलों और समस्याओं पर समय–समय पर विचार करने के लिए नीति अनुसंधान योजना और प्रोग्रामन विभाग ने शैक्षिक अनुसंधान पर एक घेरलू समूह का गठन किया ।

शिक्षा अनुसंधान के संवर्धन और प्रबंध पर विशेषज्ञ समूह की बैठक

डी०पी०आर०पी०जी० (ई०आर०ई०सी०) ने ई०आर०आई०सी० के अनुसंधान के संवर्धन और प्रबंध पर एक विशेषज्ञ समूह का गठन किया । इस विशेषज्ञ समूह के सदस्य विश्वविद्यालय के प्रोफेसर और आई०सी० एस०एस०आर०, योजना आयोग, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग और मानव संसाधन विकास मंत्रालय के प्रतिनिधि तथा एन०सी०ई०आर०टी० के वरिष्ठ संकाय सदस्य थे ।

अनुसंधान से प्राप्त तथ्यों का प्रचार

अंतिम विश्लेषण में, अध्यापक के स्तर तक अनुसंधान के व्यवहारकर्त्ताओं और उपयोगकर्त्ताओं में, जो कि किसी क्षेत्र विशेष में अनुसंधान के मूल्य निर्धारित करने हैं, अनुसंधान से प्राप्त तथ्यों का प्रचार–प्रसार करता है । इस विषय पर विभाग ने काफी विचार किया है और उसने ई० आर० ई० सी० की बुलेटिनों के जटिल अनुसंधान के प्रचार–प्रसार से संबंधित अपने कार्यकलापों को और अधिक प्रबल करने का प्रस्ताव किया है ।

विभागीय कार्यकलाप

1987–88 में निम्नलिखित कार्यकलाप हाथ में लिए गए ।

1. शिक्षा के क्षेत्र में केरल की सफल सूचना का वृत्ति अध्ययन अनुसंधान परिकल्पना (चरण–1) के अनुसार प्रो० ए० सुकुमारन नायर, प्रो० वाइस चांसलर, केरल विश्वविद्यालय, त्रिवेन्द्रम के मार्ग दर्शन में सरकारी आदेशों, रिपोर्टों, प्रचार लेखों का संग्रहण, शैक्षिक निवेशों के अनुसार राज्य शिक्षा जिलों का वर्गीकरण और विशेष रूप से शिक्षा की दृष्टि से पिछड़े 135 पाकेटों के आंकड़ों के एकत्रण करने का काम पूरा किया गया ।

2. 21 सितंबर से 25 सितंबर 1987 तक एन० सी० ई० आर० टी०, नई दिल्ली में आयोजित शिक्षा के व्यवसायीकरण से संबद्ध प्रमोद क्षेत्रों और समस्याओं के प्राथमिकता पर आधारित अभिज्ञान की संगोष्ठी एवं कार्यशाला।

विभिन्न राज्यों/संघ राज्य–क्षेत्रों की शिक्षा के व्यवसायीकरण की अवस्थिति पर आयोजित पेपरों के कार्यक्रम में 44 व्यक्तियों ने भाग लिया ।

एक या अधिक ज्ञान साधन व्यक्तियों के मार्ग निर्देशन में तीन समूहों ने काम किया ।

अनुसंधान के लिए प्रशिक्षण

1987–88 में तीन अनुसंधान कार्यप्रणाली पाठ्यक्रम आयोजित किए गए जिनके ब्यौरे सारणी 11.5 में दिए गए हैं ।

प्रकाशन में सहायता

1987–88 वर्ष मे 17 पी०एच०डी० थीसिस/मानोग्राफों के प्रकाशन में सहायता देने के प्रस्ताव को मंजूरी मिल गई । इनके ब्यौरे सारणी 11.6 में दिए गए हैं ।

1987-88

सारणी 11.5

1987–88 में आयोजित अनुसंधान कार्य–प्रणाली

पाठ्यक्रम के ब्यौरे

पाठ्यक्रम का स्तर	उद्देश्य	अवधि	भाग लेने वालों की संख्या
आर० एम० सी० स्तर –I	विषय–संक्षेप अन्वेषण की तैयारी	20 जुलाई से 29 जुलाई, 1987 तक	24
आर० एम० सी० स्तर –II	साधनों का चयन और तैयारी तथा प्रतिचयन	8 अक्तूबर से 14 अक्तूबर, 1987 तक	21
आर०एम० सी० स्तर – III	आंकड़ों का विश्लेषण	23 फरवरी से 1 मार्च, 1988 तक	24

सारणी 11.6

1987–88 में मंजूर की गई पी० एच–डी० थीसिस/मोनोग्राफ की प्रकाशन सहायता

क्र० सं०	थीसिस का नाम	लेखक का नाम	विमुक्त की गई राशि
1.	ऋग्वेद में धर्मनिरपेक्ष तथ्य	डा० रमणरानी गाजियाबाद	रु० 2500/–
2.	समकालीन भारतीय शिक्षा दर्शन की प्रकृति और उसकी संभावनाएं।	डा०(श्रीमती) मणि शर्मा आगरा	रु० 2500/–
3.	अध्यापकों की आत्म धारणा और उनका भावनात्मक समायोजन	डा० डी० के० चड्डा, रोहतक	रु० 2500/–
4.	प्रभावी प्रक्रियाओं के क्रय–मोल निदर्श का प्रमाणीकरण अध्ययन	डा० (श्रीमती) स्वदेश मोहन एन० सी० ई० आर० टी०	रु० 2500/–
5.	शेर स्काक के जरिए मापे गए विद्यालयों में उच्च एवं निम्न सर्जनात्मक किशोरों के व्यक्तित्व प्रतिमानों के अंतरों का अध्ययन।	डा०(श्रीमती) जनक वर्मा एन० सी० ई० आर० टी०	रु० 2500/–
6.	सामाजिक–आर्थिक सुविधावंचित बच्चों में कुछ संज्ञानात्मक और सामाजिक संवेगात्मक चरों का अध्ययन	डा० विनीता कौल एन० सी० ई० आर० टी०	रु० 2500/–
7.	विद्यालय छात्रों की वृत्ति परिपक्वता से संबद्ध कारकों का अध्ययन	डा०(श्रीमती) निर्मला गुप्ता एन० सी० ई० आर० टी०	रु० 2500/–
8.	भारतीय संभ्रांत व्यक्तियों का शिक्षण	प्रो० आर० पी० सिंह एन० सी० ई० आर० टी०	रु० 2500/–
9.	माध्यमिक विद्यालयों के प्रधानाचार्यों का नेतृत्व व्यवहार, संगठनात्मक वातावरण और अध्यापक हौसले का अध्ययन।	डा० सरोज पाण्डे इलाहाबाद	रु० 2500/–
10.	रोर्सकाक तकनीक से प्राप्त शिक्षण प्रभाविता से संबद्ध व्यक्तित्व अभिलक्षण का अध्ययन।	डा०(श्रीमती) शीला भगोलीवाल, इलाहाबाद	रु० 2500/–
11.	डा० जाकिर हुसेन के शैक्षिक विचारधारा की समीक्षा।	डा० आर० के० पी० सिंह एन० सी० ई० आर० टी०	रु० 2500/–
12.	शिष्य–अध्यापक के कुसमायोजन का मनो निदान और उनकी चिकित्सा	डा० एस० एन० प्रसाद चण्डीगढ़	रु० 2500/–
13.	बच्चों में प्रतिनिधित्मक सक्षमता का विकास	डा० अर्चना शुक्ला, अलमोड़ा	–
14.	मिडिल स्कूल के बच्चों की सर्जनकता पर कुछ सामाजिक मनोवैज्ञानिक कारक और विशेष रूप से अभिकल्पित शिक्षण नीति के प्रभाव का अध्ययन।	डा० भूदेव सिंह, सुल्तानपुर	–
15.	व्यावसायिक और गैर–व्यावसायिक कालेज–छात्रों की अभिवृत्ति, आत्म–धारणा और मूल्यों का अध्ययन और उपलब्धि के साथ संबंध।	डा० राम निवास मानव, ओरई	–
16.	1947–77 की अवधि में भारत में विद्यालय विज्ञान की शिक्षा के विकास का अलोचनात्मक अध्ययन।	डा० एच० एल० शर्मा	–
17.	मध्य प्रदेश के औद्योगिक संपदा में स्थित लघु उद्योग इकाइयों की आमाण अवस्थिति और सहलग्नता प्रभावों का अध्ययन	डा० के० एस० चाकी, भोपाल	–

बारह

शैक्षिक मनोविज्ञान, परामर्श और मार्गदर्शन

शैक्षिक मनोविज्ञान, परामर्श और मर्गदर्शन विद्याशाखाओं के प्रयोग द्वारा शिक्षा में गुणात्मक सुधार लाना, विशेष रूप से प्राथमिक, माध्यमिक और उच्चतर स्तरों पर, शैक्षिक मनोविज्ञान, परामर्श और मार्गदर्शनविभाग की प्रमुख चिन्ता है । यह विभाग, परामर्श व मार्गदर्शन, प्रतिभा पहचान व विकास, व्यवहार प्रौद्योगिकी तथा पाठ्यविवरणों व अनुदेशी सामग्रियों के विकास, प्रशिक्षण व अनुसंधान क्रियाकलापों में रत है ।

अनुसंधान

वर्ष 1987–88 में "मनोवैज्ञानिक विशेषताओं का एक अध्ययन बनाम अनुसूचित जाति हाई स्कूल के लड़के के लिए शैक्षिक और व्यावसायिक नियोजन" नामक एक अनुसंधान परियोजना पूरी की गई । इस परियोजना की रिपोर्ट को, एरिक के मूल्यांककों से प्राप्त सुझावों के संदर्भ में सुधारा गया । प्राप्त जानकारियों की रिपोर्ट पत्रिकाओं में दी जा रही है ।

इसके अतिरिक्त मेघालय में जनजातीय हाई स्कूल विद्यार्थियों के शैक्षिक व व्यावसायिक नियोजन, अकादमिक उपलब्धि और चुनिंदा मनोवैज्ञानिक और गृह पृष्ठभूमि अस्थिरों का अध्ययन भी पूरा किया गया। +2 स्तर की अकादमिक और व्यावसायिक धाराओं में विद्यार्थियों के व्यावसायिक व्यवहार और समायोजन का अध्ययन 1987–88 में जारी रहा।

प्रशिक्षण और विस्तार कार्यक्रम

शैक्षिक मनोविज्ञान, परामर्श और मार्गदर्शन विभाग में निम्नलिखित प्रशिक्षण/विस्तार कार्यक्रम आयोजित किए :

(i) शैक्षिक और व्यावसायिक मार्गदर्शन में डिप्लोमा पाठ्यक्रम

यह पाठ्यक्रम मार्गदर्शन ब्यूरो और मार्गदर्शन के माध्यमिक और उच्चतर माध्यमिक स्कूल अध्यापकों के लिए रचा गया है ।अखिल भारतीय चयन टैस्ट के आधार पर उम्मीदवारों को इस पूरे नौ महीनों के पाठ्यक्रम में प्रवेश दिया जाता है । 1987–88 में 29 व्यक्ति, जिनमें चार एस०सी०/ एस०टी० प्रशिक्षणार्थी थे, प्रशिक्षित किए गए । इस पाठ्यक्रम के लिए मूल रूप से चुने गए 35 प्रशिक्षणार्थियों में से 8 व्यक्ति राज्य सरकारों/संघशासित क्षेत्रों – बिहार, नागालैण्ड, कर्नाटक, पंजाब व चण्डीगढ़ द्वारा प्रतिनियुक्त किए गए । शेष 27 प्रशिक्षणार्थी दिल्ली, हरियाणा, पंजाब, उड़ीसा, उत्तरप्रदेश और चण्डीगढ़ से थे । 24 प्रशिक्षणार्थियों (एस०सी०/ एस०टी० सहित) को वजीफा दिया गया । डा० शिव के० मित्रा, निदेशक, सामाजिक विकास परिषद, नई दिल्ली की अध्यक्षता में एक समीक्षा समिति ने डिप्लोमा पाठ्यक्रम का पुनरीक्षण किया । समीक्षा समिति की सिफारिशों को लागू करने के बारे में अनुवर्ती कार्रवाई जारी है ।

(ii) प्रशिक्षण पाठ्यक्रम, संवर्धन पाठ्यक्रम/कार्यशालाएं

विभाग ने शिक्षा की दृष्टि से पिछड़े हुए अल्पसंख्यक व्यवस्थित स्कूलों के अध्यापक शिक्षकों, अध्यापकों के लिए चार प्रशिक्षण पाठ्यक्रम, + 2 स्तर के मनोविज्ञान अध्यापकों, प्राथमिक अध्यापक शिक्षकों और माध्यमिक स्कूल अध्यापक शिक्षकों के लिए तीन संवर्धन पाठ्यक्रम आयोजित किए । विभाग ने क्लासरूम सेटिंग में व्यवहार संशोधन प्रविधियों के प्रयोग, अल्पसंख्य व्यवस्थित स्कूलों के अवैतनिक निदेशकों के लिए प्रशिक्षण पद्धतियों, मल्टीमीडिया पैकेज के लिए साफ्टवेयर तैयार करने, विकासात्मक और पेशेवर मार्गदर्शन के लिए वीडियो कार्यक्रमों के लिए श्रव्य माध्यम के उपयोग और स्क्रिप्ट तैयार करने के क्षेत्रों में 6 कार्यशालाएं भी आयोजित कीं। 1987–88 में डी०ई०पी०सी० और जी० द्वारा आयोजित कार्यक्रम सारणी 12.1 में नीचे दिए गए हैं ।

सारणी 12.1

1987–88 में आयोजित प्रशिक्षण/विस्तार कार्यक्रम

क्र० सं०	पाठ्यक्रम	तिथियां/अवधि	स्थान	प्रतिभागियों की संख्या
1	2	3	4	5
1.	विकासात्मक और पेशेवर मार्गदर्शन पर वीडियो कार्यक्रम के लिए स्क्रिप्ट तैयार करने पर कार्यशाला	16–18 जुलाई, 1987 (3 दिन)	सी० आई० ई० टी० प्रांगण, एन० सी० ई० आर० टी० नई दिल्ली	15
2.	संघशासित क्षेत्र पांडिचेरी के अध्यापकों के लिए पेशेवर अध्यापकों का प्रशिक्षण पाठ्यक्रम	24 अगस्त से 11 सितम्बर, 1987 (19 दिन)	पांडिचेरी	38

1	2	3	4	5
3.	+ 2 स्तर पर मनोविज्ञान का प्रशिक्षण देने वाले दिल्ली के उच्चतर माध्यमिक स्कूलों के अध्यापकों के लिए संवर्धन पाठ्यक्रम	21 से 25 सितम्बर 1987 (5दिन)	एन आई ई कैम्पस एन० सी० ई० आर० टी०	12
4.	प्रारंभिक अध्यापक शिक्षकों के लिए क्लासरूम सेटिंग में व्यवहार संशोधन प्रविधियों के प्रयोग संबंधी कार्यशाला प्रयोग	21 से 30 सितम्बर, 1987 (10 दिन)	कारवेती नगर (चित्तूर, आ० प्र०)	22
5.	कर्नाटक व केरल के सेकेंडरी स्कूल अध्यापक शिक्षकों और डी० आई० ई० कार्मिकों के लिए सीखने और विकास संबंधी संवर्धन पाठ्यक्रम	7 से 16 अक्तूबर, 1987 (10 दिन)	आर सी ई (मैसूर)	36
6.	अल्पसंख्यकों के शैक्षिक कार्यक्रमों के लिए क्षेत्रीय स्रोत केन्द्रों के स्रोत व्यक्तियों व अवैतनिक निदेशकों के लिए प्रशिक्षण क्रियाविधि पर कार्यशाला	15 व 16 अक्तूबर 1987 (2 दिन)	उस्मानिया यूनिवर्सिटी (हैदराबाद)	16
7.	प्रारंभिक और माध्यमिक स्तरों के लिए विकासात्मक और पेशेवर मार्गदर्शन पर बहुसंचार पैकेज के लिए साफ्टवेयर तैयार करने पर कार्यशाला	25 से 30 नवंबर, 1987 (6 दिन)	कालेज आफ एजुकेशन, द्वारका	13
8.	मार्गदर्शन : नए उभरते क्षेत्र पर रिफ्रेशर कोर्स (पुनश्चर्या पाठ्यक्रम)	27 से 29 जनवरी, 1988 3 दिन)	एन आई ई कैम्पस, एन सी ई आर टी	16
9.	प्रारंभिक ग्रेडों में सर्जनात्मक क्षमता की पहचान और प्रोत्साहन हेतु अध्यापक शिक्षकों के लिए प्रशिक्षण पाठ्यक्रम	22 से 27 फरवरी 1988 (6 दिन)	एन सी ई आर टी नई दिल्ली	30
10.	प्रारंभिक स्तर पर अध्यापक शिक्षकों के लिए क्लासरूम सेटिंग में व्यवहार संशोधन प्रविधियों के प्रयोग संबंधी कार्यशाला	16 से 25 मार्च, 1988 (10 दिन)	उदयपुर (राजस्थान)	30
11.	विकासात्मक और पेशेवर मार्गदर्शन के लिए श्रव्य साधनों के प्रयोग पर कार्यशाला	22 से 24 मार्च 1988 (3 दिन)	सी. आई. ई. टी कैम्पस एन सी ई आर टी नई दिल्ली	31
12.	शैक्षिक दृष्टि से पिछड़े हुए अल्पसंख्यक व्यवस्थित स्कूलों के अध्यापकों के लिए प्रशिक्षण पाठ्यक्रम	23 मार्च से 15 अप्रैल 1988 (24 दिन)	एन आई ई कैम्पस, एन सी ई आर टी	—
13.	एस आई ई/एस सी ई आर टी कार्मिकों के लिए, प्राथमिक अध्यापक शिक्षकों के लिए अधिगम और विकास संबंधी संवर्धन पाठ्यक्रम	31 मार्च से 9 अप्रैल, 1988 (10 दिन)	अमर कंटक (म० प्र०)	37

शैक्षिक दृष्टि से पिछड़े हुए अल्पसंख्यकों के लिए कार्यक्रम

शैक्षिक दृष्टि से पिछड़े हुए अल्पसंख्यक समुदायों, विशेषकर मुसलमानों और नव–बुद्धि अनुयाइयों द्वारा व्यवस्थित स्कूलों के शैक्षिक उत्थान के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रमों के समन्वय हेतु, डी ई पी सी और जी, (क) इस कार्य के लिए स्थापित क्षेत्रीय स्रोत केन्द्रों के कार्यक्रमों के नियोजन, समन्वयन और मोनीटरिंग, (ख) इन स्कूलों के अध्यापकों के लिए पेशेवर मार्गदर्शन संबंधी प्रशिक्षण कार्यक्रम चलाने, (ग) कल्याण मंत्रालय, मानव संसाधान विकास मंत्रालय, केन्द्रीय वक्फ परिषद् और एन सी ई आर टी के अन्य कई घटकों, जैसे – क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय, सी आई ई टी और एन आई ई के बीच सम्पर्क कार्य की देखभाल के मामले में केन्द्रीय एजेंसी का काम करता है। अभी तक एन सी ई आर टी ने जामिया मिलिया इस्लामिया, नई दिल्ली, अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी, अलीगढ़ और उस्मानिया यूनिवर्सिटी, हैदराबाद नामक तीन स्रोत केन्द्रों के लिए उपलब्ध कराई है। शैक्षिक दृष्टि से पिछड़े अल्पसंख्यकों द्वारा व्यवस्थित स्कूलों के अध्यापकों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रमों का विवरण पहले ही सारणी 12.1 में दिया जा चुका है।

विकासात्मक कार्यक्रम

विभाग ने 1987–88 में वृहत् अध्यापक प्रशिक्षण कार्यक्रम के लिए दो माड्यूल विकसित किए। पहला "किशोरों की आवश्यकताएं और समस्याएं" पर और दूसरा "शिक्षा का अधिगामी केन्द्रित रवैया" पर। इस वृहत् अध्यापक प्रशिक्षण कार्यक्रम के लिए स्रोत व्यक्तियों के प्रशिक्षण में और प्रशिक्षण केन्द्रों से, निर्दिष्ट प्रपत्र में प्राप्त सूचनाओं के माध्यम से प्रशिक्षण कार्यक्रम के मूल्यांकन में, विभाग के कुछ वरिष्ठ संकाय सदस्यों के, अध्यापक शिक्षण, विशेष शिक्षा और विस्तार सेवाएं विभाग का सहयोग मिला।

विभाग ने सीनियर सेकेंडरी चरण की स्कूली शिक्षा के लिए मनोविज्ञान के संबंध में पाठ्यक्रम नवीकरण और अनुदेशी सामग्रियों के विकास से संबंधित कार्य हाथ में लिए हैं । ग्यारहवीं कक्षा के लिए मनोविज्ञान की पाठ्यपुस्तक के संशोधन का और बारहवीं कक्षा के लिए मनोविज्ञान की नई पाठ्यपुस्तक तैयार करने का काम प्रगति पर है । + 2 चरण में मनोविज्ञान के टैस्ट आइटमों में सुधार के बारे में भी एक कार्यशाला आयोजित की गई ।

डी ई पी सी और जी के विकासात्मक कार्यक्रमों के हिस्से के रूप में आयोजित कार्यशालाओं/बैठकों का विवरण सारणी 12.2 में दिया गया है:–

सारणी 12.2

क्र० सं०	कार्यक्रम का शीर्षक	अवधि/तिथियां	स्थान	प्रतिभागियों की संख्या
1	2	3	4	5
1.	+ 2 चरण में मनोविज्ञान के टैस्ट आइटमों के परिष्करण पर कार्यशाला	23 से 25 नवंबर, (3 दिन)	एन सी ई आर टी, नई दिल्ली	13
2.	ग्यारहवीं कक्षा की पाठ्यपुस्तक "मनोविज्ञान : मानव व्यवहार का परिचय, भाग–1" की पांडुलिपि की समीक्षा के लिए बैठक	13 से 22 जनवरी, 1988 (10 दिन)	एन सी ई आर टी, नई दिल्ली	14
3.	प्राथमिक अध्यापक शिक्षकों के लिए अधिगम और विकास की हस्तपुस्तिका तैयार करने के बारे में बैठक	2 से 4 फरवरी, 1988 (3 दिन)	एन सी ई आर टी, नई दिल्ली	11
4.	ग्यारहवीं कक्षा की मनोविज्ञान की पठ्यपुस्तक के लिए अध्यापकों की हस्त–पुस्तिका तैयार करने के लिए बैठक	8 से 12 फरवरी, 1988, (5 दिन)	एन सी ई आर टी, नई दिल्ली	18
5.	बारहवीं कक्षा की पाठ्यपुस्तक "मनोविज्ञान : मानव व्यवहार का परिचय, भाग–2" की पांडुलिपि की समीक्षा के लिए बैठक	21 से 25 मार्च, 1988 (5 दिन)	एन सी ई आर टी, नई दिल्ली	21

सांख्यिकी में कुछ चुने हुए विषयों में सी बी एल पैकेजों का विकास

सांख्यिकी में कुछ चुनिदा विषयों पर अनेक सी बी एल पैकेजों के विकास के लिए "एप्सन एच एक्स– 20" नामक एक माइक्रोकम्प्यूटर इस्तेमाल किया गया । शैक्षिक और पेशेवर मार्गदर्शन के डिप्लोमा पाठ्यक्रम के प्रशिक्षणार्थियों ने इन पैकेजों का प्रयोग किया । इस माइक्रोकम्प्यूटर को इस्तेमाल करके, एन आई ई के विभिन्न विभागों और क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालयों के, शिक्षा और मनोविज्ञान के अनेक शोधकर्ताओं के आंकड़ों का विश्लेषण किया गया ।

राष्ट्रीय टैस्ट विकास लाइब्रेरी (एन टी डी एल)

राष्ट्रीय टैस्ट विकास लाइब्रेरी जो पहले नीति अनुसंधान नियोजन एवं प्रोग्रामन विभाग के साथ थी, सितम्बर 1987 में डी ई पी सी और जी में आ गई । यह लाइब्रेरी, संदर्भ टैस्ट लाइब्रेरी, शैक्षिक और मनोवैज्ञानिक टैस्टों के लिए सूचना केन्द्र, शैक्षिक और मनोवैज्ञानिक टैस्टों की समीक्षा और भारत में टैस्ट विकास में अंतरालों की पहचान करने वाली संस्था; सभी प्रकाशित भारतीय टैस्टों की आलोचनात्मक समीक्षा करने वाली एजेंसी और शैक्षिक एवं पेशेवर मार्गदर्शन के डिप्लोमा पाठ्यक्रम के प्रशिक्षणार्थियों के लिए स्रोत केन्द्र के रूप में काम करती है ।

फिलहाल एन टी डी एल के पास 572 टैस्ट हैं । इनमें से 86 व्यक्तित्व के अधीन वर्गीकृत हैं, 76 रुचि और सामान के अधीन, 8 उपलब्धि के अधीन, 33 रवैये के अधीन और 171 विविध के अधीन ।

परामर्श सेवाएं

विभाग द्वारा दी गई परामर्श सेवाओं का विवरण सारणी 12.3 में दिया गया है ।

सारणी 12.3

दी गई परामर्श सेवाएं

क्र० सं०	जिन्होंने परामर्श किया	प्रयोजन
1	2	3
1.	समाजकार्य स्कूल, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली ।	सामाजिक विज्ञान अनुसंधान में विविध प्रकार के विश्लेषणों के कम्प्यूटरीकरण तरीकों पर व्याख्यान
2.	राष्ट्रीय जनसहयोग और बाल विकास संस्थान, नई दिल्ली ।	बड़े पैमाने पर नमूना सर्वेक्षणों के डिज़ाइन और अनुक्रिया प्राप्त न होने में त्रुटियों पर व्याख्यान ।

1987-88

क्र० सं०	जिन्होंने परामर्श किया	प्रयोजन
1	2	3
3.	राष्ट्रीय जनसहयोग और बाल विकास संस्थान, नई दिल्ली ।	असहाय बच्चों के कल्याण के लिए काम कर रही स्वैच्छिक संस्थाओं के निदेशकों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लेना ।
4.	आई सी एस एस आर, नई दिल्ली ।	"स्कूली विद्यार्थियों में आधुनिकता की धारणा और मूल्यांकन" पर अनुसंधान परियोजना की रिपोर्ट की समीक्षा
5.	शिक्षा विभाग, दिल्ली प्रशासन	दिल्ली प्रशासन के शैक्षिक और मार्गदर्शन परामर्शदाताओं की, "नई शिक्षा नीति के संदर्भ में परामर्शदाताओं की भूमिका" पर दिया गया व्याख्यान ।
6.	केन्द्रीय विद्यालय संगठन, प्रशिक्षण स्कूल ।	प्रिंसिपलों के लिए शिक्षा पाठ्यक्रम में 3 मास में शैक्षिक और पेशेवर मार्गदर्शन तथा परामर्श पर व्याख्यान
7.	एन आई ई पी ए, नई दिल्ली	शैक्षिक दृष्टि से पिछड़े अल्पसंख्यकों द्वारा व्यवस्थित संस्थाओं के शैक्षिक विकास के लिए प्रशिक्षण योजना के विकास पर व्याख्यान ।
8.	भारतीय विज्ञान कांग्रेस का 75वां सत्र	मनोविज्ञान अनुभाग में "इन सर्च आफ मीडिया टैक्सोनामी" नामक एक दस्तावेज़ प्रस्तुत किया ।
9.	आर्मी पब्लिक स्कूल, धौला कुंआ, नई दिल्ली ।	पेशेवर सम्मेलन में विकासात्मक मार्गदर्शन पर व्याख्यान ।
10.	दूरदर्शन, नई दिल्ली ।	"मानव संसाधन विकास के लिए अध्यापक एक स्रोत के रूप में" वीडियो कार्यक्रम में भाग लिया ।
11.	ज्योति कन्या विद्यालय, अहमदाबाद	स्कूलों में शैक्षिक स्तर सुधारने के लिए क्रिया-अनुसंधान अध्ययन करने के संबंध में प्रिंसिपल और संकाय सदस्यों से चर्चा की ।
12.	एस सी ई आर टी, उदयपुर, राजस्थान	परामर्शदाता, एस सी ई आर टी, उदयपुर में शैक्षिक और पेशेवर मार्गदर्शन के प्रभारी ने राजस्थान में स्कूल मार्गदर्शन कार्यक्रम के विकास के कुछ पहलुओं पर चर्चा की ।
13.	खोसला ट्रस्ट पब्लिक स्कूल, नई दिल्ली ।	ट्रस्ट के अधीन स्कूलों में मार्गदर्शन और परामर्श केन्द्र स्थापित करने के संबंध में परामर्श दिया ।
14.	सी आई आर टी ई एस, डी जी ई और टी, नई दिल्ली	रोज़गार अधिकारियों के प्रशिक्षण पाठ्यक्रम में व्यावसायिक मार्गदर्शन की धारणा और सिद्धांत पर व्याख्यान
15.	आई ए ए पी का 25वां वार्षिक सम्मेलन	"मेघालय के जनजातीय प्रथम पीढ़ी अधिगमि में पेशेगर नियोजन" पर दस्तावेज़ प्रस्तुत किया ।
16.	संदर्शन (परामर्श और वैयक्तिक बढ़ोत्तरी संस्थान)	परामर्श देने के कौशल में प्रशिक्षण के संबंध में परामर्श सेवाएं दीं ।
17.	जी बी एस एस स्कूल, रामकृष्णपुरम, सैक्टर 7,नई दिल्ली	प्रशिक्षित मार्गदर्शन कार्यकर्ताओं से विहीन स्कूलों में न्यूनतम मार्गदर्शन कार्यक्रम स्थापित करने के संबंध में परामर्श सेवाएं दीं ।
18.	सावन पब्लिक स्कूल, नई दिल्ली	स्कूलों में मार्गदर्शन सेवाएं स्थापित करने के बारे में परामर्श दिया
19.	सी० बी० एस० ई० दिल्ली	ग्यारहवीं व बारहवीं कक्षा के लिए मनोविज्ञान के पाठ्यक्रम में संशोधन के लिए परामर्श दिया ।
20.	शिक्षा निदेशालय, हिमाचल प्रदेश, सोलन	हिमाचल प्रदेश में मार्गदर्शन सेवाओं पर प्रशिक्षण तथा कार्यशाला में भाग लिया ।
21.	एस०सी० ई० आर० टी०, हिमाचल प्रदेश, सोलन	हिमाचल प्रदेश के सीनियर सेकेंडरी स्कूलों के प्रिंसिपलों के मार्गदर्शन पर हुए एक अभिविन्यास कार्यक्रम में भाग लिया।
22.	डी एस ई आर टी, कर्नाटक, बंगलौर	पेशेवर अध्यापकों के प्रशिक्षण कार्यक्रम के संबंध में व्याख्यान
23.	मानव संसाधन विकास मंत्रालय, नई दिल्ली ।	"एक अपेक्षा" वीडियो फिल्म के निर्माण में अकादमिक सलाहकार के रूप में काम किया ।
24.	मानव संसाधन विकास मंत्रालय, नई दिल्ली ।	राज्य एवं राष्ट्रीय पुरस्कारों के लिए अध्यापकों का चयन करने के लिए, मंत्रालय के नामित व्यक्ति के रूप में विशेषज्ञ का काम करने के लिए ।

प्रकाशन

1987–88 में संकाय सदस्यों द्वारा प्रकाशित अनुसंधान लेख सारणी 12.4 में दिए गए हैं ।

सारणी 12.4

1987–88 के प्रकाशन

क्र० सं०	शीर्षक	प्रकाशन
1	2	3
1.	किशोरों की व्यावसायिक आकांक्षाओं के स्तर पर प्रभाव	इंडियन एजुकेशन रिव्यू, 1987 (जुलाई) में प्रकाशित ।
2.	ग्रेडिंग और स्केलिंग की कुछ समस्याएं	जर्नल आफ एजूकेशनल मेजरमेन्ट में प्रकाशनार्थ भेजा गया।
3.	अनुसूचित और गैर अनुसूचित जाति के हाई स्कूल लड़कों का, मूल्यों और पेशेवर परिपक्वता पर तुलनात्मक अध्ययन	इंडियन एजुकेशन रिव्यू में प्रकाशनार्थ भेजा गया ।
4.	अधिगम केन्द्रित अधिगम	एन सी ई आर टी द्वारा प्रकाशित विनिबंध (मोनोग्राफ) सेवारत अध्यापकों का प्रशिक्षण कार्यक्रम, खंड 1 व 2 में प्रकाशित ।
5.	टैस्ट और मापन प्रवृत्तियों की रिपोर्ट	एन सी ई आर टी द्वारा प्रकाशित किए जा रहे, शिक्षा में अनुसंधान के चौथे सर्वेक्षण में प्रकाशनार्थ भेजा गया।
6.	स्कूलों में पेशेवर मार्गदर्शन	सी बी एस ई का त्रैमासिक बुलेटिन, एनवोसेक, खण्ड 23, अंक 2
7.	सर्जनात्मक किशोरों की पेशेवर परिपक्वता : अनुसंधान के लिए प्रस्तावित ढांचा	इंडियन एजुकेशन रिव्यू के अक्तूबर 1988 के अंक में प्रकाशन के लिए स्वीकृत
8.	मेघालय में जनजातीय स्कूलों में पेशेवर नियोजन	आई ई आर में प्रकाशनार्थ भेजा गया ।
9.	पेशेवर पाठ्यक्रमों के चुनाव से संबंधित घटक : अनुसंधान की एक समीक्षा	इंडियन एजुकेशन रिव्यू में प्रकाशन के लिए स्वीकृत ।
10.	+ 2 चरण में पेशेवर और अकादमिक धाराओं के विद्यार्थियों की वैयक्तिक विशिष्टताओं, व्यावसायिक योजनाओं और मनोवृत्तियों का तुलनात्मक अध्ययन	आई ए ए पी के 25वें वार्षिक सम्मेलन के कार्यवृत में प्रकाश्य ।
11.	पेशेवर परिपक्वता : ग्रेड व लिंग की एक क्रिया	इंडियन साइकोलाजिस्ट, 1987, खण्ड 4, अंक 1, 19–31 में प्रकाशित ।
12.	लड़कियों की पेशेवर क्षमता : एक क्रिया कार्यक्रम	दिसम्बर 1987 में देहरादून में, समाज के वंचित अंशों के विकास के लिए नीतियां, पर हुई एक विश्वविद्यालय अनुदान आयोग राष्ट्रीय संगोष्ठी की रिपोर्ट में इसके प्रकाशन पर विचार किया जा रहा है ।

1987-88

तेरह

क्षेत्रीय सेवाएं और समन्वय

क्षेत्र सेवा और समन्वय विभाग विभिन्न राज्यों/संघ शासित प्रदेशों के क्षेत्रीय शिक्षा कालेजों और परिषद् के क्षेत्र कार्यालयों के कार्यकलापों का समन्वय करता है । यह परिषद् के क्षेत्र कार्यालय के ज़रिए राज्यों और संघशासित प्रदेशों के शिक्षा विभागों और अन्य संस्थाओं के साथ सम्पर्क बनाए रखता है और विद्यालय शिक्षा तथा अध्यापक शिक्षा के विभिन्न पहलुओं से संबंध स्थापित करने में सहायता करता है ।

1987–88 में विभाग ने, स्कूली शिक्षा के बारे में प्राथमिकता प्राप्त क्षेत्रों में चल रहे कुछ कार्यक्रमों के बारे में, आवश्यकताओं व समस्याओं तथा की गई प्रगति की जानकारी के लिए और राज्यों तथा संघशासित प्रदेशों द्वारा अपनाई गई नीतियों और उपायों की सूचना इकट्ठा करने के लिए जिला शिक्षा अधिकारियों की बैठकें आयोजित कीं । क्षेत्र अधिकारियों की भूमिका और दायित्वों की भी पहचान की गई । अगरतला में 29 जुलाई से 1 अगस्त 1987 तक हुई पहली बैठक में 17 जिला शिक्षा अधिकारियों ने भाग लिया । लखनऊ में 6 से 9 दिसम्बर 1987 तक हुई दूसरी बैठक में 66 प्रतिभागी थे । तीसरी बैठक दिल्ली में 20 से 24 नवंबर 1987 तक हुई जिसमें 58 शिक्षा अधिकारियों ने भाग लिया ।

इनके अतिरिक्त, विभाग ने, भारत सरकार के मानव संसाधन विकास मंत्रालय से वित्तीय सहायता पाने वाले स्वैच्छिक और गैर सरकारी संगठनों द्वारा चलाए जा रहे प्रारंभिक बाल शिक्षा केंद्रों के निरीक्षकों के लिए क्षेत्र सलाहकार के कार्यालयों के माध्यम से राज्यों को सहायता दी ।

राज्यों में अजमाई जा रही विभिन्न गतिविधियों और नवाचारों के बारे में सूचनाओं के विस्तृत प्रसार और विचारों के विनिमय के लिए विभाग ने क्षेत्र कार्यालयों की गतिविधियों का संकलन भी किया ।

विभाग की प्रमुख विस्तार गतिविधियों में से एक, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 के संदर्भ में प्राथमिक शिक्षा के गुणात्मक सुधार के लिए अध्यापकों के स्वैच्छिक संगठन को अकादमिक सहायता देना था । 1987–88 में अखिल भारतीय प्राथमिक अध्यापक संघ को अकादमिक सहायता का कार्यक्रम चार विभिन्न चरणों में आयोजित किया गया । 27 से 30 नवंबर, 1987 तक आयोजित, इस कार्यक्रम के पहले चरण में, ए आई पी टी एफ से सम्बद्ध संस्थाओं वाले लगभग सभी राज्यों और संघशासित प्रदेशों के 125 मूल व्यक्तियों ने भाग लिया । उन्हें प्रारंभिक बाल शिक्षा के तरीकों, शैक्षिक खेलों, कला और सर्जनात्मकता तथा अध्यापन–अधिगम को रोचक कार्य बनाने के लिए उद्यम अनुभव (वर्क एक्सपीरिएंस) में प्रशिक्षित किया गया । एन०सी०ई०आर०टी० ने यह कार्यक्रम सी सी आर टी के सहयोग से आयोजित किया । प्रतिभागियों को एन०पी०ई० और पी०ओ०ए० के अन्तर्गत सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य से परिचित करवाया गया । एन०सी०ई०आर०टी० ने एक विशेष सत्र में आपरेशन ब्लैक बोर्ड, डी आई ई टी और पर्यावरण शिक्षा से परिचित कराया ।

दूसरे चरण में, कला और सर्जनात्मकता, शैक्षिक खेलों और वर्क एक्सपीरिएंस के माध्यम से प्रयोगात्मक अध्यापन और क्रियाविधियों पर 10 दिन के बृहत् प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लेने के लिए एन०सी०ई०आर०टी ने बिहार के सभी जिलों से 30 स्रोत व्यक्तियों को आमंत्रित किया । यह कार्यक्रम एन सी ई आर टी ने सी सी आर टी के सहयोग से आयोजित किया । प्रतिभागियों को, ज्ञान, कौशल और सुरुचि के विकास के लिए अनेक प्रायोगिक कार्यों की जानकारी दी गई । स्रोत व्यक्तियों को, खेल व अन्य सर्जनात्मक क्रियाकलाप दिखाने के लिए, एन सी ई आर टी द्वारा छतरपुर में अपनाए गए एक परियोजना स्कूल में ले जाया गया । यह प्रशिक्षण पाठ्यक्रम 5 से 14 दिसम्बर, 1987 तक आयोजित किया गया था।

कार्यक्रम का दूसरा चरण पूरा होने के बाद इन स्रोत व्यक्तियों को, भागलपुर, मुजफ्फरपुर, पटना, पूर्णिया और रांची नामक पांच केन्द्रों में से प्रत्येक में 50 अध्यापकों के क्षेत्र स्तरीय अभिविन्यास/प्रशिक्षण के आयोजन के लिए इस्तेमाल किया गया । प्रत्येक केन्द्र को एक स्टील का बक्स दिया गया जिसमें विभिन्न क्रियाकलाप आयोजित करने के लिए आवश्यक सामग्री जैसे कि पोस्टर, चित्र कार्ड, चार्ट, नक्शे, फोलियो, टेप रिकार्डर, कैसेट और अन्य ऐसी ही उपभोज्य सामग्री थी । प्रत्येक केन्द्र में तैयार वस्तुओं/पदार्थों की प्रदर्शनियां आयोजित की गईं । सर्जनात्मक कार्यों और खेलों के अलावा समूह गान कार्यक्रम, योग और स्वास्थ्य शिक्षा क्रियाएं भी आयोजित की गईं । 10 दिन के प्रशिक्षण के बाद अध्यापकों को, इन क्रियाओं को कक्षा–कक्षा में प्रचलित करने के लिए एक किट बैग दिया गया । ऊपर बताए गए इन पांचों केंद्रों में कार्यक्रम का तीसरा चरण 21 से 30 दिसम्बर 1987 तक साथ–साथ आयोजित किया गया । प्रशिक्षण कार्यक्रमों में कुल मिलाकर 183 प्राथमिक स्कूल अध्यापकों ने भाग लिया।

4 से 6 फरवरी 1988 के बीच हुए अखिल भारतीय प्राथमिक अध्यापकों के तीन दिवसीय द्विवार्षिक सम्मेलन में एन सी ई आर टी ने एक प्रदर्शनी का आयोजन किया जिसमें 81 अध्यापकों ने और 325 विद्यार्थियों ने भाग लिया । डेढ़ लाख से अधिक अध्यापकों ने क्रियाकलापों की प्रदर्शनी और प्राथमिक शिक्षा के गुणात्मक सुधार के लिए अध्यापन–अधिगम स्थिति का लाभ उठाया । देश के सभी भागों के अध्यापकों के लिए प्राथमिक स्कूलों की पाठ्यपुस्तकों, पूरक पाठ्यसामग्री और अन्य अनुदेशी सामग्री की एक प्रदर्शनी लगाई गई जो एन पी ई – 1986 के प्रभावी कार्यान्वयन में लाभकारी सिद्ध हुई ।

समूह गान कार्यक्रम

विभाग का एक मुख्य कार्यक्रम समूहगान कार्यक्रम है । 1987–88 में समूह गान के कुल मिलाकर 29 शिविर लगाए गए, एक राष्ट्रीय स्तर पर आयोजित किया गया, 25 क्षेत्रीय स्तर पर और तीन वृन्दगान शिविर ।

स्वतंत्रता के 40 वें वर्ष की पूर्व संध्या पर बम्बई के क्रांति मैदान में

9 अगस्त 1987 को और दिल्ली में लालकिले पर 15 अगस्त 1987 को दो विशेष कार्यक्रम आयोजित किए गए । दूरदर्शन ने अपने राष्ट्रीय नेटवर्क पर इन दोनों कार्यक्रमों का प्रसारण किया ।

19 से 25 नवंबर 1987 के बीच, राष्ट्रीय एकता सप्ताह के दौरान 19 व 23 नवंबर 1987 को दो दिन के लिए समूह गान कार्यक्रम का आयोजन किया गया ।

एन सी ई आर टी ने 10 सितम्बर 1987 को स्वर्गीय पं० गोविन्द बल्लभ पंत की जन्म शताब्दी मनाई और इस अवसर पर समूह गान का एक विशेष कार्यक्रम आयोजित किया गया ।

प्राथमिक शिक्षा के सुधार के लिए अखिल भारतीय प्राथमिक अध्यापक संघ को अकादमिक सहायता देने की योजना के अन्तर्गत विभाग ने नई दिल्ली में 27 से 30 नवंबर 1987 और 5 से 14 दिसम्बर 1987 तक आयोजित विभिन्न अध्यापक प्रशिक्षण कार्यक्रमों में समूह गान निदेश भी उपलब्ध कराया।

डी०ए०वी० व्यवस्थित स्कूलों के अध्यापकों के लिए नई दिल्ली में 4 जनवरी से 9 जनवरी 1988 तक हुए प्रशिक्षण कार्यक्रम में भी समूह गान का आयोजन किया गया ।

पटना में 4 से 6 फरवरी 1988 तक हुए अखिल भारतीय प्राथमिक अध्यापक संघ के द्विवार्षिक सम्मेलन के अवसर पर समूह गान कार्यक्रम का भी आयोजन किया गया ।

समूह गान कार्यक्रम की प्रभावशीलता सुनिश्चित करने के लिए प्रशिक्षित अध्यापकों से पुनर्निवेश प्राप्त करने और प्रशिक्षित अध्यापकों द्वारा अनुवर्ती कार्रवाई किए जाने के लिए एक प्रश्नावली भेजी गई थी और प्राप्त उत्तरों को सारणीबद्ध किया जा रहा है ।

उत्तर प्रदेश सरकार के अनुरोध पर दो विशेष कार्यक्रम आयोजित किए गए ताकि उत्तर प्रदेश के प्रत्येक जिले में कम से कम दो स्रोत व्यक्तियों को प्रशिक्षण दिया जा सके । उत्तर प्रदेश सरकार इस कार्यक्रम को विस्तृत आधार का बनाने के लिए तत्परता से सामने आई है । उन्होंने एक पुस्तक भी प्रकाशित की है जिसमें विभिन्न भाषाओं के समूह गान हैं, और वे इसे एक जन आंदोलन बनाने वाले हैं ।

इसी प्रकार से राजस्थान सरकार ने भी विस्तृत प्रसार के लिए उपयुक्त क्रियाकलाप शुरू किए हैं । अन्य राज्यों व संघशासित प्रदेशों में भी यह कार्यक्रम काफी प्रचलित होता जा रहा है ।

क्षेत्रीय कार्यालय

राज्यों और संघशासित प्रदेशों के शिक्षा विभागों/ निदेशालयों तथा अन्य संस्थाओं के साथ सम्पर्क बनाए रखने के लिए परिषद् ने 17 क्षेत्र कार्यालय स्थापित किए हैं । ये कार्यालय परिषद् के विभिन्न संघटक यूनिटों के कार्यकलापों और कार्यक्रमों से सम्बद्ध आवश्यक सूचनाएं राज्य के शिक्षा विभागों को देते हैं । ये कार्यालय अपने कार्यक्षेत्र के अन्तर्गत आने वाले राज्यों/संघशासित प्रदेशों की विशिष्ट आवश्यकताओं से सम्बद्ध सूचनाओं को एकत्र करके परिषद् तथा इसके संघटक यूनिटों को देते हैं और साथ ही ये कार्यालय प्रशिक्षण एवं विस्तार कार्यक्रमों को आयोजित करने में परिषद् के विभिन्न संघटक यूनिटों की आवश्यक सहायता करते हैं। ये कार्यालय विद्यालय के अध्यापकों द्वारा हाथ में ली गई लघु क्रिया अनुसंधान परियोजनाओं के लिए वित्तीय सहायता उपलब्ध कराते हैं और राज्य शिक्षा विभाग के अनुरोध पर सेवाकालीन प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करते हैं ।

1987–88 में क्षेत्र कार्यालयों ने एन आई ई के विभिन्न विभागों, क्षेत्रीय शिक्षा कालेजों और केन्द्रीय शैक्षिक प्रौद्योगिकी संस्थान को राज्यों और संघशासित प्रदेशों में उनके कार्यक्रमों को आयोजित करने में सहायता दी । इन्होंने राज्य/संघशासित प्रदेश के स्तर पर राष्ट्रीय प्रतिभा खोज परीक्षा आयोजित करने में राज्य के शिक्षा विभागों/बोर्डों को आवश्यक मार्गदर्शन और सहायता दी ।एक कार्य जो सभी क्षेत्र कार्यालयों को करना पड़ा, वह था, कार्यक्रम सलाहकार समिति की बैठक का आयोजन करना, जिसमें वर्ष 1987–88 के कार्यक्रमों के प्रस्तावों को अंतिम रूप दिया गया। इन कार्यकलापों के अतिरिक्त क्षेत्र कार्यालयों ने, स्कूल अध्यापकों के वृहत् अभिविन्यास के कार्यक्रम के अन्तर्गत प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन, नवोदय विद्यालय में दाखिले के लिए प्रवेश परीक्षाओं का आयोजन, राज्यों और संघ शासित प्रदेशों में नए नवोदय विद्यालय खोलना, राष्ट्रीय प्रतिभा खोज परीक्षाओं का आयोजन करना, साक्षात्कार और राज्य स्तर की खिलौने बनाने की प्रतिस्पर्धा आयोजित करना, जैसे काम भी किए ।

क्षेत्रीय कार्यालय, अहमदाबाद

अहमदाबाद में स्थित क्षेत्र कार्यालय ने 1987–88 में निम्नलिखित कार्यकलाप किए :

- नवोदय विद्यालयों में दाखिले के लिए प्रवेश परीक्षा के विभिन्न पहलुओं पर चर्चा करने के लिए जिला शिक्षा अधिकारियों की दो बैठकें आयोजित की गई । प्रत्येक बैठक में 8 जिला अधिकारियों ने भाग लिया।
- चुनिंदा प्राथमिक स्कूलों के अध्यापकों के लिए रोलर बोर्ड गिनतारा (एबेक्स) के प्रयोग का प्रदर्शन/प्राथमिक स्कूलों में गणित के अध्यापन के लिए क्षेत्र कार्यालय ने एक सहायता सामग्री के रूप में रोलर बोर्ड गिनतारा का विकास किया ।
- क्षेत्र कार्यालय ने बलसार जिले के नवसारी तालुके के दसवीं कक्षा के विद्यार्थियों को पेशेवर मार्गदर्शन देने की परियोजना के अन्तर्गत एक बैठक का आयोजन किया । बैठक में अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति के विद्यार्थियों और ग्रामीण इलाकों के विद्यार्थियों के लाभ के लिए स्कूलों में पेशेवर मार्गदर्शन कक्षों की स्थापना के विभिन्न पहलुओं पर चर्चा की गई । इस बैठक में 25 प्रतिभागी थे ।
- अदलज गांधी नगर जिले में, अध्यापन सहायक सामग्री तैयार करने पर एक 5 दिन का अध्यापन प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया जिसमें 40 अध्यापकों ने भाग लिया ।
- गुजरात में शिक्षा के व्यावसायीकरण को मज़बूत करने के लिए, उच्चतर माध्यमिक अध्यापकों के लिए, शिक्षा के व्यावसायीकरण पर 5 दिन का एक प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया । इस कार्यक्रम में 35 अध्यापकों ने भाग लिया ।
- गुजरात तथा दादरा और नागर हवेली के पूर्वप्राथमिक एवं

प्राथमिक स्कूल अध्यापकों के लिए खिलौने बनाने की एक राज्य स्तरीय प्रतियोगिता आयोजित की गई । इस प्रतियोगिता में भाग लेने वालों की संख्या 44 थी ।

– कक्षा कक्ष अध्यापन में प्रयोगात्मक परियोजनाओं और नवाचारों के लिए वित्तीय सहायता देने की योजना के अन्तर्गत क्षेत्र कार्यालय ने 1987–88 में 16 परियोजनाओं में वित्त लगाया ।

क्षेत्रीय कार्यालय, इलाहाबाद

इलाहाबाद के क्षेत्र कार्यालय ने सेवाकालीन पाठ्यक्रम पर 13 से 17 फरवरी 1988 तक, अध्यापक शिक्षकों की एक कार्यशाला का आयोजन किया । सतत् शिक्षा के 12 केन्द्रों के प्रिंसिपलों/समन्वयकों ने इस कार्यशाला में भाग लिया ।

क्षेत्रीय कार्यालय, बंगलौर

क्षेत्र कार्यालय बंगलौर ने, मूल्यांकन को पुनर्निवेश के रूप में प्रयोग करके प्रारंभिक स्तर पर शैक्षिक विषयों में गुणात्मक सुधार पर एक कार्यशाला, 18 से 21 जनवरी, 1988 तक आयोजित की । इस कार्यशाला में 13 सहायक शिक्षा अधिकारियों और 10 विषय निरीक्षकों ने भाग लिया।

क्षेत्रीय कार्यालय, भोपाल

भोपाल के क्षेत्र कार्यालय में किए गए मुख्य कार्यकलाप निम्नलिखित हैं :

– मध्य प्रदेश के जनजातीय स्कूलों में काम करने वाले शारीरिक शिक्षा अध्यापकों के लिए एक कार्यशाला ग्वालियर में 9 से 14 जून 1987 तक, लक्ष्मीबाई राष्ट्रीय शारीरिक शिक्षा महाविद्यालय के सहयोग से आयोजित की गई । इस कार्यशाला में शारीरिक शिक्षा के 23 अध्यापकों ने भाग लिया।

– नवोदय विद्यालयों के प्रिंसिपलों के लिए 14 से 16 जुलाई, 1987 तक एक अभिविन्यास पाठ्यक्रम आयोजित किया गया ।

– प्राथमिक स्कूल अध्यापकों का एक राज्य स्तरीय सम्मेलन उज्जैन में 12 से 16 जनवरी, 1988 तक आयोजित किया गया । सम्मेलन में 55 अध्यापकों ने भाग लिया ।

– अध्ययन बोर्ड और मध्यप्रदेश के माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के सदस्यों के लिए, मूल्यांकन की आधुनिक धारणा पर एक अभिविन्यास कार्यक्रम उज्जैन में 18 से 23 जनवरी, 1988 तक आयोजित किया गया ।

– इनके अतिरिक्त, "नवीं व दसवीं कक्षा को ज्ञान, भारत में जनसंख्या विस्फोट के बारे में विद्यार्थियों की प्रवृत्तियों और विश्वासों पर, जनसंख्या विस्फोट के अध्यापन के संचार माध्यम अधिगमों, अध्यापक प्रेरित, स्वतः अधिगम और सामूहिक चर्चा का प्रभाव" नामक अनुसंधान परियोजना पर कार्य पूरा कर लिया गया । "बिलासपुर डिवीज़न में जनजातीय विद्यार्थियों के सामाजिक और आर्थिक जीवन पर माध्यमिक स्कूल शिक्षा के प्रभाव का एक सर्वेक्षण" शीर्षक वार्ता एक अनुसंधान परियोजना पर भी काम शुरू किया गया ।

क्षेत्रीय कार्यालय, भुवनेश्वर

1987–88 में क्षेत्र कार्यालय भुवनेश्वर द्वारा किए गए मुख्य कार्यकलाप निम्नलिखित हैं :

– कालाहांडी जिले के भवानी पटना में, सार्वजनिक नामांकन और अभिग्रहण पर, खंड (ब्लाक) शिक्षा अधिकारियों के लिए एक अभिविन्यास पाठ्यक्रम का आयोजन 14 से 19 दिसम्बर, 1987 तक किया गया । इस पाठ्यक्रम में 400 व्यक्तियों ने भाग लिया।

– ग्रामीण माध्यमिक स्कूलों में विज्ञान में जीवन आधारित और प्रक्रिया आधारित प्रयोगों के विकास पर एक कार्यशाला 28 दिसम्बर 1987 से 2 जनवरी, 1988 तक धेनकनाल में आयोजित की गई । इस कार्यशाला में 300 व्यक्तियों ने भाग लिया ।

क्षेत्रीय कार्यालय, कलकत्ता

1987–88 में क्षेत्र कार्यालय, कलकत्ता द्वारा किए गए मुख्य कार्यकलापों में निम्नलिखित हैं :

– मनोभाषाविज्ञान और भाषा अध्यापन पर एक अभिविन्यास कार्यक्रम 11 से 15 जनवरी, 1988 तक आयोजित किया गया । इस कार्यक्रम में 23 व्यक्तियों ने भाग लिया ।

– माध्यमिक स्कूलों में भौतिकी प्रयोगशाला की व्यवस्था और रखरखाव पर एक अभिविन्यास कार्यक्रम 9 से 12 फरवरी, 1988 तक आयोजित किया गया ।इस कार्यक्रम में 150 व्यक्तियों ने भाग लिया ।

– पश्चिम बंगाल के स्वैच्छिक संगठनों द्वारा चलाए जा रहे ई सी ई केन्द्रों के अध्यापकों के लिए एक प्रशिक्षण तथा कार्यशाला का आयोजन 29 मार्च से 2 अप्रैल, 1988 तक किया गया । इस कार्यक्रम में 30 व्यक्तियों ने भाग लिया ।

क्षेत्रीय कार्यालय, चण्डीगढ़

1987–88 में क्षेत्र कार्यालय, चण्डीगढ़ ने निम्नलिखित कार्यकलाप किए :

– सुरजपुर (हरियाणा) में 8 से 11 दिसम्बर, 1987 तक, सर्जनात्मकता और सर्जनात्मक अध्यापन–अधिगम नीतियों के बारे में जागरूकता विकसित करने पर एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया । संगोष्ठी में 53 स्नातकोत्तर अध्यापकों ने भाग लिया ।

– क्षेत्र कार्यालय ने पंजाब व हरियाणा के अनुसूचित जाति के अध्यापकों के लिए एक अंतर्वस्तु तथा संवर्धन कार्यक्रम आयोजित किया । इस कार्यक्रम में 36 अध्यापकों ने भाग लिया ।

– कक्षाकक्ष अध्यापन में प्रयोगात्मक परियोजनाओं और नवाचारों के लिए वित्तीय सहायता देने की योजना के अन्तर्गत क्षेत्र कार्यालय ने 1987–88 में 9 परियोजनाओं में वित्त लगाया ।

क्षेत्रीय कार्यालय, गुवाहाटी

क्षेत्र कार्यालय, गुवाहाटी द्वारा किए गए कार्यकलापों में निम्नलिखित शामिल हैं :

– मूल्य शिक्षा पर एक संगोष्ठी छंगलांग (अरुणाचल प्रदेश) में 17 से 21 फरवरी, 1988 तक आयोजित की गई । इस संगोष्ठी में 21 व्यक्तियों ने भाग लिया ।
– पाठ्यक्रम भार और संवर्धित पाठ्यक्रम से निपटने के लिए उचित नीतियों पर एक संगोष्ठी 29 जनवरी से 2 फरवरी, 1988 तक आयोजित की गई । इस संगोष्ठी में 300 व्यक्तियों ने भाग लिया ।

क्षेत्रीय कार्यालय, हैदराबाद

क्षेत्र कार्यालय, हैदराबाद ने, हैदराबाद में राष्ट्रीय प्रतिभा खोज छात्रवृत्तियों के लिए प्रत्याशियों ने साक्षात्कार आयोजित करने में सहायता प्रदान की ।इस कार्यालय ने हैदराबाद में 25 मई से 3 जून, 1987 तक और 27 सितंबर से 6 अक्तूबर, 1987 तक दो समूह गान शिविरों के आयोजन के लिए भी सहायता प्रदान की ।

क्षेत्रीय कार्यालय, जयपुर

क्षेत्र कार्यालय, जयपुर द्वारा किए गए मुख्य कार्यकलापों में निम्नलिखित शामिल हैं :

– प्राथमिक कक्षाओं के लिए गणित पर एक कार्यशाला उसे 8 अगस्त 1987 तक कूचायन सिटी में आयोजित की गई । इस कार्यशाला में प्राथमिक स्कूल के 15 अध्यापकों ने भाग लिया।
– एकल अध्यापक स्कूलों के लिए अध्यापन नीतियों के विकास के लिए एक कार्यशाला उदयपुर में 21 से 26 दिसंबर, 1987 तक आयोजित की गई । इस कार्यशाला में 17 व्यक्तियों ने भाग लिया ।
– अजमेर में 18 से 22 जनवरी 1988 तक, लिखित और बोली जाने वाली अंग्रेजी के अध्यापन की क्रियाविधियों पर एक पुनश्चर्या पाठ्यक्रम आयोजत किया गया । माध्यमिक स्कूल के 16 अध्यापकों ने इस पाठ्यक्रम में भाग लिया ।
– जयपुर में 21 से 26 मार्च 1988 तक, समाचार पत्रों के इस्तेमाल के ज़रिए अंग्रेजी में निपुणता विकसित करने पर एक कार्यशाला आयोजित की गई । इस कार्यशाला में 11 अध्यापकों ने भाग लिया ।

क्षेत्रीय कार्यालय, मद्रास

क्षेत्रीय कार्यालय, मद्रास द्वारा किए गए मुख्य कार्यकलापों में निम्नलिखित शामिल हैं :–

– परीक्षाओं में स्केलिंग और ग्रेडिंग पर एक कार्यशाला 16 से 19 फरवरी, 1988 तक आयोजित की गई । इस कार्यशाला में माध्यमिक और उच्चतर माध्यमिक स्कूलों के 36 अध्यापकों ने भाग लिया ।
– (यानम (पांडिचेरी) में 8 से 12 फरवरी, 1988 तक, प्रारंभिक) स्कूल अध्यापकों के लिए पर्यावरणीय अध्ययन अधिगम पर एक कार्यशाला आयोजित की गई । इस कार्यशाला में 41 अध्यापकों ने भाग लिया ।
– मदुरै में 7 से 11 मार्च, 1988 तक, प्रारंभिक स्कूल अध्यापकों के लिए पर्यावरणीय अध्ययन अधिगम पर एक कार्यशाला आयोजित की गई। इस कार्यशाला में 40 अध्यापकों ने भाग लिया ।
– कांचीपुरम में 21 से 25 मार्च, 1988 तक, प्रारंभिक स्कूल अध्यापकों के लिए पर्यावरणीय अध्ययनों पर एक कार्यशाला आयोजित की गई । इस कार्यशाला में 40 अध्यापकों ने भाग लिया ।
– कोयम्बतूर में 28 मार्च से 1 अप्रैल 1988 तक प्रारंभिक स्कूल अध्यापकों के लिए पर्यावरणीय अध्ययन अधिगम पर एक कार्यशाला आयोजित की गई । इस कार्यशाला में 40 अध्यापकों ने भाग लिया ।
– चिंगलपट में 4 से 8 अप्रैल, 1988 तक प्रारंभिक स्कूल अध्यापकों के लिए पर्यावरणीय अध्ययन अधिगम पर एक कार्यशाला आयोजित की गई । इस कार्यशाला में 41 अध्यापकों ने भाग लिया ।

आलोच्य वर्ष में क्षेत्र कार्यालय ने, तमिलनाडु में स्कूल अवस्था में पाठ्यक्रम संशोधन के कार्य में काफी नज़दीकी तौर पर मिल कर काम किया । क्षेत्र सलाहकार ने पाठ्यक्रम संशोधन और पाठ्यक्रम संबंधी सामग्री विकसित करने के काम में स्वयं को समन्वय के रूप में सम्बद्ध किया।

क्षेत्रीय कार्यालय, पटना

1987–88 में क्षेत्र कार्यालय, पटना ने निम्नलिखित कार्यकलाप किए:–

– पूर्व प्राथमिक और प्राथमिक स्कूल के बच्चों के लिए शैक्षिक खिलौने बनाने के लिए एक कार्यशाला भागलपुर में 3 से 5 मार्च 1988 तक आयोजित की गई । इस कार्यशाला में 28 अध्यापकों ने भाग लिया ।
– पर्यावरण के माध्यम से विज्ञान अध्यापन पर एक अभिविन्यास कार्यक्रम रांची में 9 से 12 मार्च 1988 तक आयोजित किया गया । इस कार्यक्रम में 19 अध्यापकों ने भाग लिया ।
– प्रयोगात्मक परियोजनाओं को वित्तीय सहायता देने की योजना के अंतर्गत, क्षेत्र कार्यालय को 14 प्रस्ताव प्राप्त हुए जिनमें से दो प्रयोगात्मक परियोजना प्रस्तावों को वित्तीय अनुदान के लिए चुना गया ।

1987-88

क्षेत्रीय कार्यालय, पुणे द्वारा किए गए मुख्य कार्यकलापों में निम्नलिखित शामिल हैं :–

- महाराष्ट्र व गोआ के उच्चतर माध्यमिक स्कूल अध्यापकों के लिए विज्ञान (भौतिकी) अध्यापन और मूल्यांकन पर एक अभिविन्यास पाठ्यक्रम 21 से 25 मार्च 1988 तक आयोजित किया गया जिसमें 26 अध्यापकों ने भाग लिया ।
- ग्रामीण इलाकों में लड़कियों की शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए शैक्षिक डिज़ाइन विकसित करने के लिए एक कार्यशाला 7 से 10 मार्च 1988 तक आयोजित की गई जिसमें 20 व्यक्तियों ने भाग लिया ।
- महाराष्ट्र में एस सी/एस टी विद्यार्थियों को जिन शैक्षिक समस्याओं का सामना करना पड़ता है उन पर चर्चा के लिए एक बैठक 27 से 30 मार्च 1988 तक आयोजित की गई । इस बैठक में 16 व्यक्तियों ने भाग लिया ।
- इतिहास और विज्ञान में पूरक पठन सामग्री तैयार करने के लिए एक कार्यशाला 31 मार्च से 30 अप्रैल 1988 तक (एक माह के लिए, सप्ताह में दो बार) आयोजित की गई । इस कार्यशाला में 12 व्यक्तियों ने भाग लिया ।

क्षेत्रीय कार्यालय, शिलांग

क्षेत्रीय कार्यालय, शिलांग में किए गए मुख्य कार्यकलापों में निम्नलिखित शामिल हैं :–

- उत्तर पूर्वी पहाड़ी राज्यों के मूल व्यक्तियों के लिए एक अभिविन्यास कार्यक्रम शिलांग में 14 से 16 अप्रैल 1987 तक, स्कूल अध्यापकों के वृहत अभिविन्यास कार्यक्रम के अन्तर्गत आयोजित किया गया । इस कार्यक्रम में 24 व्यक्तियों ने भाग लिया ।
- एन०सी०ई०आर०टी० के नवोदय विद्यालय प्रकोष्ठ द्वारा तैयार की गई सामग्री के अनुवाद के लिए एक कार्यशाला 25 से 28 मई, 1987 तक आयोजित की गई ।
- क्षेत्र कार्यालय ने, उत्तर पूर्वी क्षेत्र में क्षेत्र शिक्षा कालेज स्थापित करने के लिए, विशेषज्ञ समिति के दौरे 10 से 14 मई 1987 तक और 5 से 8 जून, 1987 तक आयोजित किए ।
- मीजो भाषा में पाठ्यपुस्तकें लिखने वालों के लिए एक प्रशिक्षण पाठ्यक्रम एज़ाल में 14 से 18 दिसंबर, 1987 तक आयोजित किया गया ।

क्षेत्रीय कार्यालय, शिमला

क्षेत्र कार्यालय, शिमला ने, अंग्रेजी अध्यापन की क्रियाविधि पर एक 6 दिन की कार्यशाला आयोजित की । इस कार्यशाला में 18 व्यक्तियों ने भाग लिया ।

क्षेत्रीय कार्यालय, श्रीनगर/जम्मू

जम्मू और कश्मीर के क्षेत्र कार्यालय द्वारा किए गए कार्यकलाप निम्नलिखित हैं :

- जम्मू व कश्मीर में उच्चतर माध्यमिक शिक्षा के व्यावसायीकरण पर एक कार्यशाला श्रीनगर में 6 से 9 अप्रैल, 1987 तक आयोजित की गई । लगभग 50 वरिष्ठ शिक्षा अधिकारियों और प्रिंसिपलों ने इस कार्यशाला में भाग लिया ।
- उच्चतर माध्यमिक स्कूलों के पुस्तकालयाध्यक्षों के लिए एक अभिविन्यास पाठ्यक्रम श्रीनगर में 8 से 12 जून 1987 तक आयोजित किया गया । इस पाठ्यक्रम में 45 पुस्तकालयाध्यक्षों ने भाग लिया ।
- जम्मू व कश्मीर के नवोदय विद्यालयों के प्रिंसिपलों और जिला शिक्षा अधिकारियों के लिए एक अभिविन्यास कार्यक्रम 14 से 16 जुलाई, 1987 तक आयोजित किया गया । इस कार्यक्रम के दौरान प्रवेश परीक्षाओं के संचालन और उससे संबद्ध मामलों के बारे में विभिन्न उपायों पर चर्चा हुई ।
- स्कूलों में वर्क एक्सपीरिएंस पर एक अभिविन्यास पाठ्यक्रम श्रीनगर में 7 से 11 सितम्बर, 1987 तक आयोजित किया गया। इस पाठ्यक्रम में 45 अध्यापकों ने भाग लिया ।
- उच्चतर माध्यमिक स्कूलों में विज्ञान प्रयोगशालाओं के सुधार पर एक कार्यशाला जम्मू में 18 से 21 जनवरी, 1988 तक आयोजित की गई । इस कार्यशाला में उच्चतर माध्यमिक स्कूलों के 40 प्रिंसिपलों ने भाग लिया ।
- राष्ट्रीय शिक्षा नीति की कार्यान्वयन नीतियों पर एक कार्यशाला जम्मू में 28 से 30 मार्च, 1988 तक आयोजित की गई ।
- माध्यमिक स्तर पर नवाचारी प्रयोगात्मक परियोजनाओं के विकास के लिए एक तीन दिवसीय कार्यशाला श्रीनगर में आयोजित की गई । इस कार्यशाला में 35 व्यक्तियों ने भाग लिया ।

क्षेत्रीय कार्यालय, त्रिवेन्द्रम

क्षेत्र कार्यालय, त्रिवेन्द्रम में किए गए मुख्य कार्यकलापों में निम्नलिखित शामिल हैं :

- एन पी ई – 1986 की प्रमुख विशेषताओं पर एस सी/एस टी अध्यापकों के लिए एक अभिविन्यास कार्यक्रम ओट्टापलम में 8 से 11 दिसम्बर, 1987 तक आयोजित किया गया । इस कार्यक्रम में 31 व्यक्तियों ने भाग लिया ।
- प्रयोगात्मक परियोजनाओं पर एक प्रशिक्षण कार्यक्रम गुरुवयूर में 21 से 24 दिसम्बर, 1987 तक आयोजित किया गया । इस कार्यक्रम में 31 अध्यापकों ने भाग लिया ।
- उत्पादक कार्यक्रमों पर एक प्रशिक्षण पाठ्यक्रम किलतन द्वीप (लक्षद्वीप) में 9 से 13 फरवरी, 1988 तक आयोजित किया गया। इस पाठ्यक्रम में 37 व्यक्तियों ने भाग लिया ।

चौदह

प्रकाशन और प्रलेखन

परिषद् का एक अति महत्वपूर्ण कार्यकलाप पाठ्यपुस्तकों, अभ्यास पुस्तिकाओं, अध्यापकों के लिए अध्यापक गाइडों व अन्य अनुदेशी सामग्री, अनुसंधान मोनोग्राफ, पत्रिकाओं आदि का प्रकाशन है । एन सी ई आर टी का प्रकाशन विभाग, परिषद् के प्रकाशनों का मुद्रण, प्रकाशन और वितरण करता है । इस अवधि में, विभिन्न वर्गों के अन्तर्गत 281 प्रकाशन निकाले गए । इनका विवरण सारणी 14.1 में दिया गया है ।

सारणी 14.1

1987-88 में निकाले गए प्रकाशन

प्रकाशन वर्ग	प्रकाशनों की संख्या
प्रथम संस्करण पाठ्यपुस्तक/अभ्यास पुस्तिका/ निर्धारित पूरक रीडर	22
पाठ्यपुस्तक/अभ्यास पुस्तिका/निर्धारित पूरक रीडर के पुनर्मुद्रण	161
अन्य सरकारी एजेंसियों के लिए पाठ्यपुस्तक/ अभ्यास पुस्तिका	20
अनुसंधान मोनोग्राफ/रिपोर्ट व अन्य प्रकाशन	58
पत्रिकाएं (अंक)	20
कुल	281

नई पाठ्यपुस्तकें

एन०सी०ई०आर०टी ने नई शिक्षा नीति के निर्देशों के अनुरूप, पहली से बारहवीं कक्षा तक की पाठ्यपुस्तकें तैयार करने का दायित्व लिया है। इस कार्यक्रम के पहले चरण में एन सी ई आर टी ने अकादमिक सत्र 1987-88 के लिए पहली, तीसरी और छठी कक्षाओं के लिए नई पाठ्यपुस्तकें/अभ्यास पुस्तिकाएं/अध्यापक गाइड निकाली हैं ।

आदर्श अनुदेशी सामग्री

एन०सी०ई०आर०टी ने स्कूली शिक्षा में वर्क एक्सपीरिएंस के प्रमुख क्षेत्रों पर आदर्श अनुदेशी सामग्री के 20 सैट तैयार किए हैं । इस परियोजना के अन्तर्गत अब तक 19 शीर्षक निकाले जा चुके हैं ।

रीडिंग टू लर्न सीरीज़

परिषद् ने "रीडिंग टू लर्न सीरीज" के अन्तर्गत विभिन्न स्कूली अवस्थाओं के लिए अंग्रेजी और हिन्दी में पुस्तकों की एक नई श्रृंखला की शुरूआत की है । इस श्रृंखला की पुस्तकों का ध्येय पुस्तकों के लिए प्यार पैदा करने और आश्चर्य और सुन्दरता से भरपूर विश्व के प्रति जागरूकता पैदा करने के लिए बच्चों को तैयार करना है । अब तक इस श्रृंखला में 7 शीर्षक प्रकाशित किए जा चुके हैं ।

पढ़ें और सीखें योजना

एन सी ई आर टी ने बच्चों के लिए रुचिकर और सूचनात्मक विषयों पर विभिन्न आयु वर्ग के लिए सरल हिन्दी में पुस्तकें निकालने का निर्णय किया है । कई विख्यात वैज्ञानिकों ने एन सी ई आर टी के लिए पुस्तकें लिखने की सहमति दे दी है ।

लोटस सीरीज़

परिषद् ने "लोटस सीरीज़" नामक लोकप्रिय पुस्तकों की एक नई माला चलाई है । इस माला का उद्देश्य 11-16 के आयु वर्ग के युवा पाठकों को विभिन्न विषयों की कम दामों की पुस्तकें उपलब्ध करा कर उन्हें ज्ञान के जगत से परिचित कराना है । संचार माध्यम ने इसे परिषद् का "एक रुपया पुस्तक क्रांति" कहा है । इस माला के अन्तर्गत प्रकाशित की जाने वाली पुस्तकों के दो संस्करण होंगे — पहला एक रुपया वाला पेपर बैक संस्करण और दूसरा अधिक मूल्य का दफ्ती की जिल्दवाला पुस्तकालय संस्करण होगा । इस माला के अंतर्गत निकाली गई पहली पुस्तक "द हिस्टोरिक ट्रायल आफ महात्मा गांधी" काफी लोकप्रिय सिद्ध हुई है । पेपरबैक संस्करण बिक चुका है और इसका पुनर्मुद्रित संस्करण निकाला जा रहा है । दूसरी पुस्तक "लिविंग थाट्स आफ जवाहरलाल नेहरू" का भी विमोचन हो चुका है ।

पुस्तक निर्माण में श्रेष्ठता के लिए पुरस्कार

एन०सी०ई०आर०टी के प्रकाशन अपनी अंतर्वस्तु और उत्पादन की उत्कृष्ट कोटि के लिए जाने माने हैं । परिषद् द्वारा निकाली गई पहली, तीसरी व छठी कक्षा की नई पाठ्यपुस्तकों की, उच्च कोटि के उत्पादन व डिज़ाइन के लिए काफी प्रशंसा की गई है ।

एन०सी०ई०आर०टी० के प्रकाशनों ने, भारतीय प्रकाशक संघ द्वारा दिल्ली में, मई, 1987 में आयोजित प्रतियोगिताओं में पुस्तक निर्माण में श्रेष्ठता के लिए आठ पुरस्कार जीते । प्रकाशन विभाग की इस उपलब्धि की प्रशंसा विभिन्न अग्रणी समाचारपत्रों द्वारा की गई ।

एन०सी०ई०आर०टी की "योगासन" शीर्षक वाली एक अध्यापक गाइड को, भारतीय खेल प्राधिकरण द्वारा आयोजित, शारीरिक शिक्षा, खेल,

स्वास्थ्य शिक्षा, मनोरंजन और योग पर 16वीं राष्ट्रीय पुरस्कार प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार दिया गया ।

आठवें विश्व पुस्तक मेले, नई दिल्ली में भारतीय प्रकाशक संघ द्वारा आयोजित प्रतियोगिता में चार पुस्तकों ने, पुस्तक निर्माण में श्रेष्ठता के लिए पुरस्कार जीते ।

प्रकाशन विभाग के स्टाफ के सदस्यों को पुरस्कार/प्रतिष्ठाएं

दिल्ली साहित्य अकादमी ने प्रधान संपादक श्री प्रभाकर द्विवेदी को "वही आदिम आँच" नामक उपन्यास पर रु. 5100/– का पुरस्कार दिया।

स्विट्जरलैंड में भारत की गौरवशाली "कला प्रदर्शनी" में भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद् ने श्री सांतो दत्ता, सम्पादक को कला आयुक्त के रूप में काम करने के लिए आमंत्रित किया ।

अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर जानी मानी, हास्य लेखकों की संस्था – जिन्दा दिलां –ए– हैदराबाद ने नवंबर, 1987 में हैदराबाद में आयोजित एक समारोह में श्री मुजतबा हुसैन, सम्पादक को "अभिनंदन ग्रंथ" प्रस्तुत करके सम्मानित किया ।

श्री मुजतबा हुसैन को, उर्दू साहित्य को उनके साहित्यिक योगदान के लिए कर्नाटक उर्दू अकादमी ने भी सम्मानित किया ।

बिक्री

आलोच्य वर्ष में, एन सी ई आर टी के प्रकाशनों की बिक्री से रु० 6, 12,79, 993.83 पै० (रुपए छह करोड़ बारह लाख उन्नासी हजार नौ सौ तिरानवे और तिरासी पैसे) प्राप्त हुए ।

कापीराइट की अनुमति

राज्य स्तर की अनेक एजेंसियों ने एन सी ई आर टी द्वारा प्रकाशित पुस्तकों में अपनी अभिरुचि दिखलाई है । नीचे दी गई सारणी में उन एजेंसियों के नाम दिए गए हैं जिन्हें आलोच्य वर्ष में परिषद् ने अपनी पाठ्य पुस्तकों और अन्य प्रकाशनों के प्रकाशित करने के लिए स्वीकरण/अनुकूलन करने की अनुमति दी है ।

दिल्ली पाठ्यपुस्तक ब्यूरो, अलीगंज, कर्बला मार्केट, लोदी रोड, नई दिल्ली–3	पहली, तीसरी व छटी कक्षा की निम्नलिखित नई पुस्तकों के मुद्रण और वितरण के लिए कापीराइट अनुमति दी गई । 1. बाल भारती, भाग–1 2. अभ्यास पुस्तिका बाल भारती, भाग –1 3. गणित, कक्षा 1 4. बाल भारतीय, भाग–3 5. अभ्यास पुस्तिका बाल भारतीय भाग–3 6. गणित, कक्षा 3 7. परिवेशीय अध्ययन (विज्ञान) कक्षा 3 8. किशोर भारती, कक्षा 6 9. संक्षिप्त रामायण 10. गणित , कक्षा 6 11. प्राचीन भारत 12. हमारा नागरिक जीवन 13. देश और उनके निवासी 14. विज्ञान, कक्षा 6
सचिव, हि० पु० विद्यालय शिक्षा बोर्ड, धर्मशाला, जिला कांगड़ा	एन सी ई आर टी की निम्नलिखित पाठ्यपुस्तकों के मुद्रण और वितरण के लिए कापीराइट अनुमति दी गई । 1. गणित, भाग 3, कक्षा 3 2. हम और हमारा देश, कक्षा 3 3. विज्ञान, कक्षा 3 4. इंगलिश रीडर बुक (एस० एस०), कक्षा 4 5. स्वस्ति, भाग 1, कक्षा 5 6. गणित, भाग 1, कक्षा 6 7. देश और उनके निवासी, कक्षा 6 8. हमारा नागरिक जीवन, कक्षा 6 9. हिंदी व्याकरण और रचना, कक्षा 7 व 8 10. प्राचीन भारत, कक्षा 6 11. सभ्यता की कहानी, भाग 1 कक्षा 9 12. मनुष्य और वातावरण, कक्षा 9 13. सभ्यता की कहानी, भाग 2, कक्षा 10

14. भारत विकास की ओर, कक्षा 10
15. मैथेमेटिक्स बुक 3 कक्षा 11 व 12
16. मैथेमेटिक्स बुक 4, कक्षा 12
17. मैथेमेटिक्स बुक 5, कक्षा 12
18. माडर्न इंडिया, कक्षा 12
19. आधुनिक भारत, कक्षा 12
20. संस्कृत काव्य तरंगिणी, कक्षा 12
21. संस्कृत गद्य मंदाकिनी, कक्षा 12
22. रसायन विज्ञान, भाग 1, कक्षा 9
23. संक्षिप्त रामायण, कक्षा 6
24. विज्ञान, कक्षा 6
25. भौतिकी भाग, कक्षा 9
26. आधुनिक जीव विज्ञान, भाग 1, खण्ड 1,
27. आधुनिक जीव विज्ञान, भाग 1, खंड 2, कक्षा 9
28. गणित, भाग 1, खंड 2,कक्षा 9
29. नागरिक और शासन, कक्षा 9–10
30. हिन्दी साहित्य का संक्षिप्त इतिहास, कक्षा 12
31. केमिस्ट्री, पार्ट 2, कक्षा 12
32. बायोलोजी, पार्ट 2, वाल्यूम 1, कक्षा 12
33. बायोलोजी, पार्ट 2, वाल्यूम 2, कक्षा 12
34. इंडियन कंस्टीट्यूशन एंड द गवर्नमेंट, कक्षा 12
35. –वही (हिन्दी)
36. इंडियन डेमोक्रेसी एट वर्क, कक्षा 12
37. –वही– (हिन्दी),कक्षा 12
38. मीडिवल इंडिया, भाग 2, कक्षा 12
39. –वही– (हिन्दी)
40. नेशनल इन्कम एकाउंटिंग, कक्षा 12
41. –वही– (हिन्दी)
42. एन इन्ट्रोडक्शन टु इकोनामिक थ्योरी, कक्षा 12
43. –वही– (हिन्दी)
44. बाल भारती, भाग 1, कक्षा 1
45. बाल भारती, भाग 3, कक्षा 3
46. किशोर भारती, भाग 1, कक्षा 5
47. फोर्थ स्टेप टु इंगलिश रीडर (बी कोर्स, कक्षा 9)
48. फोर्थ स्टेप टु इंगलिश सप्लीमेंटरी रीडर (बी कोर्स, कक्षा 9)
49. द वैब आफ अवर लाइफ, कक्षा 12
50. काव्य संचयन, भाग 2, कक्षा 12
51. गद्य संचयन, भाग 2, कक्षा 12

सचिव, हरियाणा विद्यालय शिक्षा बोर्ड, भिवानी

एन सी ई आर टी को निम्नलिखित पाठ्यपुस्तकों के स्वीकरण और मुद्रण के लिए कापीराइट अनुमति दी गई ।

1. सभ्यता की कहानी, भाग 1, कक्षा 9
2. मनुष्य और वातावरण, कक्षा 9
3. रसायन विज्ञान, भाग 1, कक्षा 9
4. भारत विकास की ओर, कक्षा 10
5. सभ्यता की कहानी भाग 2, कक्षा 10
6. रसायन विज्ञान, भाग 1, कक्षा 10
7. साइकोलाजी, एन इन्ट्रोडक्शन टु ह्यूमन बिहेवियर, कक्षा 9
8. चाइल्ड साइकोलाजी, कक्षा 12
9. वर्कबुक टु स्टैप्स टु इंगलिश रीडर, बुक 4 (बी कोर्स) कक्षा 9
10. वर्कबुक टु स्टैप्स टु इंगलिश रीडर, बुक 5 (बी कोर्स), कक्षा 10
11. फोर्थ स्टेप टु इंगलिश रीडर, (बी कोर्स), कक्षा 11
12. फोर्थ स्टेप टु सप्लीमेंटरी रीडर (बी कोर्स), कक्षा 9
13. फोर्थ स्टेप टु इंगलिश रीडर (बी कोर्स), कक्षा 10
14. फोर्थ स्टेप टु इंगलिश सप्लीमेंटरी रीडर (बी कोर्स), कक्षा 10

15. अभिनव काव्य भारती, भाग 1, कक्षा 11
16. अभिनव गद्य भारती, भाग 1, कक्षा 11
17. अभिनव कथा भारती, भाग 1, कक्षा 11
18. द पीपुल, कक्षा 11
19. स्टोरीज़, प्लेज़ एण्ड टेबल्ज एण्ड एडवेंचर, कक्षा 11
20. फाइव वन एक्ट प्लेज़, कक्षा 11
21. अभिनव काव्य भारती, भाग 2, कक्षा 11
22. अभिनव गद्य भारती, भाग 2, कक्षा 11
23. द वैब आफ अवर लाइफ, कक्षा 12
24. द कोर्स इन रिटेन ईंगलिश, कक्षा 12
25. आधुनिक जीव विज्ञान, भाग 1, खण्ड 1
26. आधुनिक जीव विज्ञान, भाग 1, खण्ड 2
27. धरती की, भाग 1, खण्ड 2
28. गणित, भाग 1, खण्ड 1, कक्षा 9
29. गणित, भाग 1, खण्ड 2, कक्षा 9
30. नागरिक और शासन, कक्षा 9–10
31. आधुनिक जीव विज्ञान, भाग 2, कक्षा 10
32. गणित, भाग 2, कक्षा 10
33. भौतिक विज्ञान के आधार, कक्षा 11
34. भारत का सामान्य भूगोल, भाग 1, कक्षा 11

निदेशक, तेलुगु अकादमी, हैदराबाद — दसवीं कक्षा के लिए एन सी ई आर टी पाठ्यपुस्तक मार्डन इंडिया को तेलुगु में अनुवाद करवा कर प्रकाशित करवाने की कापीराइट अनुमति ।

सचिव, माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, भोपाल, म० प्र० — एन सी ई आर टी निम्नलिखित पाठ्यपुस्तकों के स्वीकरण और मुद्रण के लिए कापीराइट अनुमति ।

1. रागिनी, कक्षा 11
2. संस्कृत काव्य तरंगिणी, कक्षा 11

वितरण

परिषद् के प्रकाशन, पिछले वर्षों की भांति, परिषद् के राष्ट्रीय वितरकों, सूचना व प्रसारण मंत्रालय के प्रकाशन विभाग द्वारा, जिनके बिक्री निर्गम संघशासित प्रदेश दिल्ली के अतिरिक्त पूरे देश की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए नई दिल्ली, कलकत्ता, बंबई, मद्रास, त्रिवेन्द्रम, पटना, लखनऊ और हैदराबाद में स्थित हैं, बेचे और वितरित किए जाते रहे । संघशासित प्रदेश दिल्ली में परिषद् के प्रकाशन, एन सी ई आर टी द्वारा नियुक्त किए गए 14 थोक एजेन्टों के माध्यम से बेचे और वितरित किए गए । उर्दू के प्रकाशन एकमात्र, दिल्ली प्रशासन की उर्दू अकादमी के माध्यम से बेचे और वितरित किए गए । एन०सी०ई०आर०टी० के विशेष प्रकाशन "फ्रीडम स्ट्रगल आफ इंडियाज़ इंडीपेंडेंस, विज़ुअल्स आफ डाक्यूमेंट्स एलबम" नई दिल्ली के लिए भी दिल्ली व मद्रास में दो वितरक नियुक्त किए गए ।

परिषद् की पत्रिकाएं, पिछले वर्षों की भांति सीधे परिषद् द्वारा ही बेची और वितरित की गई ।

बिक्री और वितरण की ऊपर बताई गई व्यवस्थाओं के अतिरिक्त, परिषद् की पुस्तकों की आपूर्ति के लिए, स्कूलों व अन्य शैक्षिक संस्थाओं से सीधे ही आर्डर भी लिए गए । इस वर्ष में केन्द्रीय विद्यालयों के 320, सैनिक स्कूलों के 35, तिब्बतियों के लिए केन्द्रीय विद्यालयों के 70, नवोदय विद्यालयों के 209, अन्य स्कूलों के 310 और अरुणाचल प्रदेश के स्कूलों व जिला शिक्षा अधिकारियों के 29 आर्डरों सहित कुल मिला कर 973 आर्डर सीधे प्राप्त हुए और उनकी पूर्ति की गई । विदेशों की कई शैक्षिक संस्थाओं से भी अनेक आर्डर मिले जिनकी पूर्ति मर्चेंट निर्यातकों के माध्यम से की गई । ग्यारहवीं व बारहवीं कक्षा के लिए पाठ्यपुस्तकें, स्कूल शिक्षा बोर्ड, हरियाणा को सीधे ही दी गईं और ग्यारहवीं व बारहवीं कक्षा की कुछ चुनिंदा पाठ्यपुस्तकें स्कूल शिक्षा बोर्ड, हिमाचल प्रदेश को भी दी गईं ।

इसके अतिरिक्त, स्कूल शिक्षा बोर्ड, जम्मू व कश्मीर के लिए ग्यारहवीं व बारहवीं कक्षा की पुस्तकें परिषद् द्वारा मुद्रित करवाई और अपने राष्ट्रीय वितरकों के माध्यम से उपलब्ध कराई ।

इनके अतिरिक्त, अलग अलग व्यक्तियों से प्राप्त पोस्टल आर्डरों पर भी कार्रवाई की गई और हजारों व्यक्तिगत खरीदार भी हमारे बिक्री काउंटर पर आए । इस वर्ष में प्रकाशित अनेक शीर्षक, परिषद् द्वारा समय-समय पर अनुमोदित व्यक्तियों के और निःशुल्क वितरण की सूची के अंतर्गत आने वालों को भेजे / वितरित किए गए । परिषद् के निःशुल्क प्रकाशनों के बारे में, अनेक शैक्षिक संस्थाओं और शोधकर्ताओं से प्राप्त मांगों की भी आपूर्ति की गई।

पुस्तक मेला/प्रदर्शनी में भाग लेना

परिषद् ने निम्नलिखित पुस्तक मेलों/प्रदर्शनियों में अपने प्रकाशन प्रदर्शित किए :

- शिक्षक दिवस के अवसर पर 5 सितम्बर 1987 को विज्ञान भवन, नई दिल्ली में प्रकाशन विभाग द्वारा आयोजित पुस्तक प्रदर्शन ।
- एन०सी०ई०आर०टी० द्वारा नवंबर 1986 में जबलपुर में आयेजित विज्ञान प्रदर्शनी ।

– प्रकाशन विभाग द्वारा अक्तूबर 1987 में पटियाला हाउस, नई दिल्ली में आयोजित विशेष पुस्तक प्रदर्शनी ।
– एन बी टी द्वारा नवंबर 1987 में तीन मूर्ति भवन, नई दिल्ली में आयोजित बाल पुस्तक मेला ।
– एन बी टी द्वारा फरवरी 1988 में आयोजित आठवां विश्व पुस्तक मेला ।

इनके अलावा प्रकाशन विभाग ने एन०सी०ई०आर०टी० कैम्पस में भी अनेक अवसरों पर प्रदर्शनियां आयोजित कीं ।

परिषद् ने, एन सी ई आर टी के चुनिंदा प्रकाशन, राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत के माध्यम से भेज कर निम्नलिखित अन्तर्राष्ट्रीय पुस्तक मेलों/प्रदर्शनियों में भी भाग लिया :

– प्रथम अंतर्राष्ट्रीय पुस्तक उत्सव मन्नागुआ (निकारागुआ), 20 – 26 जुलाई 1987
– 19 वां सिंगापुर पुस्तक उत्सव और मेला 5–13 सितम्बर, 1987
– मलेशिया पुस्तक मेला, 21–30 अगस्त 1987
– 39 वां फ्रेंकफर्ट पुस्तक मेला, 1987
– भारत उत्सव, यू०एस०एस०आर०, 1987
– लंदन पुस्तक मेला, 28 से 30 मार्च 1988
– 20 वां काहिरा अंतर्राष्ट्रीय पुस्तक मेला, जनवरी–फरवरी, 1988

पत्रिकाओं का प्रकाशन

पत्रिका कक्ष का मुख्य कार्य, परिषद् की 6 लक्ष्य अभिविन्यस्त पत्रिकाएं निकालने का है । पत्रिका कक्ष कुछ शैक्षिक कार्यक्रम और शोध कार्यकलाप भी अपने हाथ में लेता है । पत्रिका कक्ष द्वारा प्रकाशित पत्रिकाओं का विवरण नीचे दिया गया है :

इंडियन एजुकेशनल रिव्यू (त्रैमासिक)

इसमें शोध लेख, शिक्षा और सम्बद्ध विद्याशाखाओं में डाक्टरी तथा डाक्टरोत्तर अनुसंधान के संक्षिप्त विवरण, अनुसंधान टिप्पणियां और शिक्षा एवं अनुसंधान की पुस्तकों की समीक्षाएं होती हैं ।

जर्नल आफ इंडियन एजुकेशन (द्वैमासिक)

नवाचारों और बेहतर पढ़ाई की संभावनाओं को बढ़ावा देने के लिए इसमें लेख, दस्तावेज़, पुस्तक समीक्षाएं आदि होती हैं । कभी–कभी किसी विशेष प्रकरण के अधिगम–अध्यापन के संवर्धन के लिए विशेष प्रकरण अंक भी निकाले जाते हैं ।

स्कूल साइंस (त्रैमासिक)

पत्रिका में, समुदाय के लाभ के लिए लोकप्रिय विज्ञान लेख छापे जाने के अलावा स्कूल विज्ञान के नवाचारों और प्रयोगों का प्रसार भी किया जाता है ।

द प्राइमरी टीचर (त्रैमासिक)

यह पत्रिका पूर्व–प्राथमिक और प्राथमिक स्कूल के अध्यापकों के लिए है, जो उन्हें कक्षाओं से सम्बद्ध समस्याओं को हल करने, प्रयोगों को आज़माने और अध्यापन में सुधार लाने में सहायक होती है ।

प्राइमरी शिक्षक (हिंदी में एक त्रैमासिक)

यह पत्रिका भी प्राथमिक स्कूल अध्यापकों के लिए है ।

भारतीय आधुनिक शिक्षा (हिंदी में त्रैमासिक)

यह पत्रिका शोधकर्ताओं और स्कूल अध्यापकों के लिए है, जो उन्हें कक्षाकक्ष में अध्यापन में सहायता करती है । इसमें शिक्षा में नवाचार स्थायी तौर पर छपते हैं । प्रकरण विशेष पर इसके विशेषांक भी निकाले जाते हैं ।

आलोच्य वर्ष में इन पत्रिकाओं के निम्नलिखित अंक निकाले गए :

इंडियन एजुकेशनल रिव्यु	चार अंक
जर्नल आफ इंडियन एजुकेशन	छ : अंक
प्राइमरी टीचर	चार अंक
प्राइमरी शिक्षक	चार अंक
स्कूल साइंस	चार अंक
भारतीय आधुनिक शिक्षा	चार अंक

पत्रिका कक्ष के शैक्षिक पत्रकारिता पर हस्तपुस्तिका के लिए लेख लिखने के लिए चार कार्यशालाएं, शैक्षिक पत्रकारिता पर इयर बुक (वार्षिकी) के लिए लेख लिखने पर दो कार्यशालाएं और शैक्षिक अनुसंधान और नीति निर्माण में संबंधों की समस्याओं पर एक संगोष्ठी आयोजित की। इन कार्यक्रमों का विवरण सारणी 14.2 में दिया गया है ।

इन अनुसंधान परियोजनाओं के अतिरिक्त पत्रिका कक्ष ने शैक्षिक पत्रकारिता पर राष्ट्रीय सर्वेक्षण भी किया ।

प्रलेखन

पुस्तकालय, प्रलेखन और सूचना विभाग, परिषद् के एक सूचना साधन केन्द्र के रूप में कार्य करता है । इसके मुख्य कार्य निम्नलिखित उद्देश्यों की दृष्टि से पठन सामग्री एकत्रित और आयोजित करने के साथ–साथ उनका प्रचार–प्रसार भी करना है :

(i) राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान, केन्द्रीय शिक्षा प्रौद्योगिकी संस्थान के संकाय सदस्यों और देश भर के शिक्षा क्षेत्र से संबंधित विद्वानों को आवश्यकताओं की पूर्ति करना ।
(ii) शिक्षा संबंधी सूचनाओं के लिए एक वितरण केन्द्र का काम करना।
(iii) शिक्षा के क्षेत्र में अनुसंधान और अध्ययन का संवर्धन ।
(iv) विद्यालय और अध्यापक प्रशिक्षण कालेज के व्यावसायिक स्टाफ को सेवाकालीन अभिविन्यास कार्यक्रम उपलब्ध करा कर इन संस्थाओं के पुस्तकालय में उन्नत स्तर की पुस्तकालय सेवा के जरिए शिक्षा के स्तर में सुधार लाना ।

शिक्षा के तुलनात्मक और अंतर्राष्ट्रीय पहलुओं पर सूचना और पठन सामग्री एकत्रित करने और प्रचार–प्रसार करने के लिए विभाग में एक अलग यूनिट "अंतर्राष्ट्रीय शैक्षिक साधन और प्रलेखन केन्द्र" स्थापित किया गया है । यह केन्द्र भारत और अन्य देशों में जनसंख्या शिक्षा कार्यक्रम पर पाठ्य सामग्री और प्रलेख भी एकत्रित करता है ।

सारणी 14.2
पत्रिका कक्ष द्वारा संचालित कार्यक्रम

क्र० सं०	कार्यक्रम का शीर्षक	अवधि तिथियां	स्थान	आमंत्रित/भाग लेने वाले पात्रियों की संख्या
1	2	3	4	5
1.	शैक्षिक अनुसंधान और नीति निर्धारण के बीच समस्याओं पर चर्चा के लिए संगोष्ठी	21 अप्रैल 1987	दिल्ली	15
2.	शैक्षिक पत्रकारिता को हस्तपुस्तिका के लिए लेख लिखने के लिए कार्यशाला	23 से 25 जुन 1987	मसुरी	24
3.	शैक्षिक पत्रकारिता की हस्तपुस्तिका के लिए लेख लिखने के लिए कार्यशाला	23 से 25 सितंबर, 1987	श्रीनगर	30
4.	शैक्षिक पत्रकारिता की वार्षिकी के लिए लेख लिखने के लिए कार्यशाला	2 से 4 नवंबर, 1987	जोधपुर	18
5.	शैक्षिक पत्रकारिता की हस्तपुस्तिका के लिए लेख लिखने के लिए कार्यशाला	30 जनवरी से 1 फरवरी 1988	मदुरै	21
6.	शैक्षिक पत्रकारिता की वार्षिकी के लिए लेख लिखने के लिए कार्यशाला	27 से 29 फरवरी 1988	जबलपुर	16
7.	शैक्षिक पत्रकारिता की हस्तपुस्तिका के लिए लेख लिखने के लिए कार्यशाला	22 से 24 मार्च, 1988	इम्फाल	21

संग्रह

(क) 31 मार्च 1987 को पुस्तकों की संख्या : 1, 20, 216
(ख) 1987–88 में बढ़ाई गई पुस्तकों की संख्या
 (i) खरीद कर : 1, 770
 (ii) उपहार के रूप में प्राप्त : 458
 (iii) जिल्दबंद पत्रिकाएं : 332
(ग) 1987–88 में हटाई गई पुस्तकें : 24
(घ) 31–3–88 को कुल पुस्तकें : 1,22,752
 (क + ख + ग)

पत्रिकाएं

अभिदत्त, उपहार स्वरूप या विनिमय आधार पर : 450
अभिदत्त समाचार पत्रों की संख्या : 17

प्रलेखन और रेप्रोग्राफी सेवाएं

(क) प्रलेखन सेवाएं
 (i) परिग्रहण सूची : 4 अंक
 (ii) वर्तमान विषयवस्तु : 7 अंक
 (iii) पुस्तकालय में आने वाली पत्रिकाओं में छपे लेखों की सूची : 3 अंक
(ख) ग्रंथ सूची
 – विशेष शिक्षा पर ग्रंथ सूची
 – अनुसुचित जातियों और अनुसूचित जनजातियों की शिक्षा पर ग्रंथ सूची
 – नई शिक्षा नीति पर ग्रंथ सूची
 – कम्प्यूटरों पर ग्रंथ सूची
(ग) प्रचलित समाचार पत्रों से समाचार कतरनें : 895
(घ) दी गई फोटोकापियां : 89,629

परिचालन

(क) 31 मार्च 1988 को सदस्यों की कुल संख्या : 3001
(ख) वर्ष के दौरान संदर्भ/पठन कक्ष की सुविधाएं प्राप्त करने के लिए बाहरी आगंतुकों की संख्या : 804

कार्य के घंटे

पुस्तकालय का प्रयोग करने वालों की सुविधा को ध्यान में रखते हुए, पुस्तकालय, सभी दिवसों में, प्रातः 8.00 बजे से रात्रि 8 बजे तक खुला रखा जाता है। दिनांक 5–3–88 से पुस्तकालय प्रत्येक शनिवार को भी खुला रखा जाता है।

प्रशिक्षण कार्यक्रम

पुस्तकालय, प्रलेखन और सूचना विभाग ने 1987–88 में दो कार्यशालाएं आयोजित कीं। एक कार्यशाला, बम्बई विश्वविद्यालय के पुस्तकालय और पुस्तकालय विज्ञान विभाग के सहयोग से, पश्चिम क्षेत्र में अध्यापक प्रशिक्षण कालेज पुस्तकालय (प्रारंभिक स्तर) के विकास के लिए डी एल डी आई द्वारा बंबई में 24 से 29 नवंबर 1987 तक आयोजित की गई।

एक कार्यशाला, सरदार पटेल विश्वविद्यालय के पुस्तकालय और पुस्तकालय विज्ञान विभाग के सहयोग से, पश्चिम क्षेत्र में अध्यापक प्रशिक्षण कालेज पुस्तकालय (प्रारंभिक स्तर) के विकास के लिए वल्लभ विद्या नगर, गुजरात में 8 से 12 मार्च 1988 तक आयोजित की गई।

इनके अतिरिक्त, उड़ीसा सरकार के माध्यमिक शिक्षा बोर्ड और गोआ के शिक्षा निदेशालय को, पुस्तकालयाध्यक्षों व प्रभारी अध्यापकों के सेवाकालीन प्रशिक्षण के लिए स्रोत व्यक्ति और स्रोत सामग्री भी उपलब्ध कराई गई।

1987-88

1987–88 में परिषद् के प्रकाशन विभाग द्वारा प्रकाशित प्रकाशन

क्र० सं०	शीर्षक	प्रकाशन मास	मुद्रित प्रतियों की संख्या
1	2	3	4
पहली कक्षा			
1.	बाल भारती भाग–1 (नई पुस्तक)	मई 1987	3, 00, 000
2.	बाल भारती भाग–1	जनवरी 1988	2, 40, 000
3.	अभ्यास पुस्तिका बाल भारती भाग – 1	फरवरी 1988	2, 40, 000
4.	लैट अस लर्न मैथेमैटिक्स बुक 1 नई पुस्तक	जुलाई 1988	3, 00, 000
5.	लैट अस लर्न मैथेमैटिक्स बुक 1	मार्च 1988	2, 40, 000
6.	लैट अस लर्न इंगलिश बुक 1	मार्च 1988	3, 35, 000
7.	वर्क बुक टु लैट अस लर्न इंगलिश बुक (सा० ह०)	मार्च 1988	3, 05, 000
दूसरी कक्षा			
8.	बाल भारती, भाग 2 (हिंदी रीडर)	मार्च 1988	35, 000
9.	अभ्यास पुस्तिका बाल भारती, भाग 2	मार्च 1988	35, 000
10.	लैट अस लर्न इंगलिश, बुक 2 (सा० अ०)	मार्च 1988	3, 10, 000
11.	वर्क बुक फार लैट अस लर्न इंगलिश बुक 2 (सा० अ०)	मार्च 1988	3, 00, 000
12.	मैथेमैटिक्स फार प्राइमरी स्कूल्स, भाग 2	जनवरी 1988	40, 000
तीसरी कक्षा			
13.	बाल भारती, भाग 3 (नई पुस्तक)	मई 1987	2, 75, 000
14.	बाल भारती, भाग 3	फरवरी 1988	2, 30, 000
15.	अभ्यास पुस्तिका बाल भारती, भाग 3 (नई पुस्तक)	जून 1987	2, 75, 000
16.	लैट अस लर्न इंगलिश, बुक 3 (एस० एस०)	मार्च 1988	2, 70, 000
17.	वर्क बुक लैट अस लर्न इंगलिश, बुक 3	मार्च 1988	2, 30, 000
18.	लैट अस लर्न मैथेमैटिक्स बुक 3 (नई पुस्तक)	जुलाई 1987	2, 25, 000
19.	लैट अस लर्न मैथेमैटिक्स, बुक 3	मार्च 1988	2, 60, 000
20.	वी एण्ड अवर कंट्री (नई पुस्तक)	सितम्बर 1987	1, 10, 000
21.	वी एण्ड अवर कंट्री	मार्च 1988	1, 15, 000
22.	हम और हमारा देश, भाग 1 (नई पुस्तक)	जुलाई 1987	75, 000
23.	एक्सप्लोरिंग एन्वायरनमेंट बुक 1 (विज्ञान)	जुलाई 1987	1, 50, 000
24.	एक्सप्लोरिंग एन्वायरनमेंट, बुक 1 (नई)	जनवरी 1988	1, 90, 000
चौथी कक्षा			
25.	बाल भारती, भाग 4	दिसम्बर 1987	25, 000
26.	बाल भारती, भाग 4 (नई पुस्तक)	मार्च 1988	2, 50, 000
27.	अभ्यास पुस्तिका बाल भारती, भाग – 4	मार्च 1988	40, 000
28.	मैथेमैटिक्स फार प्राइमरी स्कूल्स, बुक 4	जनवरी 1988	30, 000
29.	एन्वायरनमेंटल स्टडीज़ फार क्लास 4, पार्ट 2 (जन० सा०)	जनवरी 1988	25, 000
30.	एन्वायरनमेंटल स्टडीज फार क्लास 4, पार्ट 1 (सें० स्ट०)	दिसंबर 1987	20, 000
31.	इंगलिश रीडर बुक 1	मार्च 1988	2, 90, 000
32.	वर्क बुक फार इंगलिश रीडर बुक 1	मार्च 1988	2, 60, 000
33.	रीड फार प्लेज़र बुक 1	मार्च 1988	1, 20, 000
पांचवीं कक्षा			
34.	बाल भारती भाग 5	अक्तुबर 1987	2, 75, 000
35.	अभ्यास पुस्तिका बाल भारती भाग 5	अक्तुबर 1987	2, 10, 000
36.	स्वस्ति भाग 1	मार्च 1988	90, 000
37.	इंगलिश रीडर बुक 2 (एस एस)	अक्तुबर 1987	2, 50, 000
38.	वर्क बुक फार इंगलिश रीडर बुक 2	जनवरी 1988	2, 50, 000
39.	मैथेमैटिक्स फार प्राइमरी स्कूल्स बुक 5	अक्तुबर 1987	2, 20, 000
40.	सोशल स्टडीज बुक 3 इंडिया एण्ड द वर्ल्ड	दिसम्बर 1987	1, 00, 000
41.	सामाजिक अध्ययन पुस्तक 3 भारत और संसार	जनवरी 1988	40, 000
42.	लर्निंग साइंस थ्रू एन्वायरनमेंट पार्ट 1–3, क्लास 5	नवंबर 1987	1, 50, 000
43.	पर्यावरण से विज्ञान सीखना, भाग 3	मार्च 1988	5, 000
44.	रीड फार प्लेज़र बुक 2	दिसम्बर 1987	1, 15, 000

1987-88

1	2	3	4
छठी कक्षा			
45.	किशोर भारती, भाग 1 (नई पुस्तक)	जून 1987	1, 50, 000
46.	किशोर भारती भाग 1	मार्च 1988	1, 50, 000
47.	रीड फार प्लेज़ट बुक 3	मार्च 1988	80, 000
48.	संक्षिप्त रामायण (हिंदी) पूरक रीडर (नई पुस्तक)	जून 1987	75, 000
49.	संक्षिप्त रामायण (हिंदी) पूरक रीडर	मार्च 1988	80, 000
50.	स्वस्ति भाग 2 (संस्कृत पाठ्यपुस्तक)	मार्च 1988	60, 000
51.	अभ्यास पुस्तिका स्वस्ति, भाग 2	फरवरी 1988	45, 000
52.	इंगलिश रीडर बुक 3 (एस एस)	फरवरी 1988	1, 50, 000
53.	मैथेमेटिक्स बुक 1 (नई पुस्तक)	जून 1987	1, 50, 000
54.	मैथेमेटिक्स बुक 1	जनवरी 1988	1, 75, 000
55.	एंशियेंट इंडिया (नई पुस्तक)	जुलाई 1987	1, 00, 000
56.	प्राचीन भारत (नई पुस्तक)	जुलाई 1987	75, 000
57.	प्राचीन भारत	मार्च 1988	80, 000
58.	लैण्ड्स एण्ड पीपुल पार्ट 1 (नई पुस्तक)	अगस्त 1987	1, 00, 000
59.	लैण्ड्स एण्ड पीपुल पार्ट 1	जनवरी 1988	95, 000
60.	देश और उनके निवासी भाग 1 (नई पुस्तक)	जुलाई 1987	75, 000
61.	देश और उनके निवासी भाग 1	फरवरी 1988	80, 000
62.	अवर सिविक लाइफ	मार्च 1988	1, 05, 000
63.	हमारा नागरिक जीवन (नई पुस्तक)	जून 1987	75, 000
64.	हमारा नागरिक जीवन	फरवरी 1988	1, 10, 000
सातवीं कक्षा			
65.	भारती भाग 2	जनवरी 1988	20, 000
66.	संक्षिप्त महाभारत (हिंदी पूरक रीडर)	दिसम्बर 1987	10, 000
67.	रीड फार प्लेज़र – 4 इंगलिश सप्लीमेंटरी रीडर	मार्च 1988	60, 000
68.	स्वस्ति, भाग 3	मार्च 1988	40, 000
69.	अभ्यास पुस्तिका स्वस्ति भाग 3	मार्च 1988	40, 000
70.	हिस्ट्री एण्ड सिविक्स	जनवरी 1988	10, 000
71.	मैथेमेटिक्स फार मिडिल स्कूल्स बुक 2, पार्ट 1	दिसम्बर 1987	20, 000
72.	मैथेमेटिक्स फार मिडिल स्कूल्स बुक 2, पार्ट 2	जनवरी 1988	20, 000
73.	लैण्ड्स एण्ड पीपुल पार्ट 2 (भूगोल)	जनवरी 1988	15, 000
74.	लर्निंग साइंस, पार्ट 2	जनवरी 1988	25, 000
आठवीं कक्षा			
75.	भारती भाग 3 (हिंदी रीडर)	जनवरी 1988	1, 20, 000
76.	त्रिविधा	मार्च 1988	75, 000
77.	स्वस्ति भाग 4 (संस्कृत पाठ्यपुस्तक)	जनवरी 1988	45, 000
78.	अभ्यास पुस्तिका स्वस्ति भाग 4	मार्च 1988	45, 000
79.	इंगलिश रीडर बुक 5 (एस एस)	दिसम्बर 1987	1, 10, 000
80.	रीड फार प्लेज़र – 5 (इंगलिश सप्लीमेंटरी रीडर)	दिसम्बर 1987	65, 000
81.	मैथेमेटिक्स फार मिडिल स्कूल्स बुक 3, पार्ट 1	फरवरी 1988	1, 35, 000
82.	गणित माध्यमिक स्कूलों के लिए, पुस्तक 3, भाग 1	मार्च 1988	10, 000
83.	मैथेमेटिक्स बुक 3, पार्ट 2	मार्च 1988	1, 35, 000
84.	गणित माध्यमिक स्कूलों के लिए पुस्तक 3, भाग 2	फरवरी 1988	5, 000
85.	हिस्ट्री एण्ड सिविक्स	मार्च 1988	85, 000
86.	इतिहास और नागरिक शास्त्र भाग 2	दिसम्बर 1987	60, 000
87.	लैण्ड्स एण्ड पीपुल पार्ट 3	मार्च 1988	85, 000
88.	देश और उनके निवासी भाग 3 (भूगोल)	जनवरी 1988	50, 000
89.	लर्निंग साइंस पार्ट 3	जनवरी 1988	1, 25, 000
90.	जीवन और विज्ञान (विज्ञान की पूरक रीडर)	फरवरी 1988	40, 000
नवीं कक्षा			
91.	फोर्थ स्टैप टू इंगलिश (सप्लीमेंटरी रीडर बी कोर्स)	मार्च 1988	1, 20, 000
92.	फोर्थ स्टैप टू इंगलिश (सप्लीमेंटरी रीडर बी कोर्स)	जनवरी 1987	29, 000
93.	फोर्थ स्टैप टू इंगलिश सप्लीमेंटरी रीडर (बी कोर्स)	फरवरी 1988	40, 000

1	2	3	4
94.	केमिस्ट्री पार्ट 1	मार्च 1987	1, 18, 000
95.	द स्टोरी आफ सिविलाइजेशन वाल्यूम (हिस्ट्री)	फरवरी 1988	48, 000
96.	मनुष्य और वातावरण	मार्च 1988	33, 000
97.	मैन एण्ड एन्वायरनमेंट	फरवरी 1988	60, 000
98.	गणित भाग 1, खण्ड 2	मार्च 1988	20, 000
99.	सभ्यता की कहानी, भाग 1	मार्च 1988	36, 000
दसवीं कक्षा			
100.	फिफ्थ स्टैप टु इंगलिश रीडर (बी कोर्स)	जनवरी 1988	60, 000
101.	वर्क बुक फार फिफ्थ स्टैप टु इंगलिश रीडर (बी कोर्स)	मार्च 1988	60, 000
102.	फिजिक्स पार्ट 2	फरवरी 1987	90, 000
103.	भौतिकी, भाग 2	अप्रैल 1987	60, 000
104.	बेसिक बायोलाजी पार्ट 2	मार्च 1988	90, 000
105.	केमिस्ट्री पार्ट 2	मार्च 1987	70, 000
106.	केमिस्ट्री पार्ट 2	दिसम्बर 1987	1, 10, 000
107.	मैथेमेटिक्स पार्ट 2	दिसम्बर 1987	65, 000
108.	द स्टोरी आफ सिविलाइजेशन वाल्यूम 2	दिसम्बर 1987	70, 000
109.	सभ्यता की कहानी, भाग 2	दिसम्बर 1987	65, 000
110.	आधारिक जीवविज्ञान	मार्च 1988	1, 00, 000
ग्यारहवीं कक्षा			
111.	आई द पीपुल (इंगलिश कोर)	मार्च 1988	20, 000
112.	जीव विज्ञान भाग 1	जुलाई 1987	1, 000
113.	राजनीतिक व्यवस्था	मार्च 1988	5, 000
114.	भूगोल के क्षेत्रीय कार्य एवं प्रयोगशाला प्रविधियां	जुलाई 1987	4, 000
115.	अन्डरस्टैंडिंग सोसाइटी	फरवरी 1988	5, 000
116.	भौतिक भूगोल	मार्च 1988	4, 000
117.	फाइव वन एक्ट प्लेज़र	फरवरी 1988	3, 000
118.	मध्यकालीन भारत भाग 1	मार्च 1988	5, 000
119.	जनरल ज्योग्राफी आफ इंडिया	फरवरी 1988	12, 000
120.	मैथेमेटिक्स बुक 1	फरवरी 1988	37, 000
121.	अभिनव कथा भारती, भाग 1	मार्च 1988	11, 000
122.	रंगिनी (संस्कृत)	मार्च 1988	3, 000
123.	अभिनव गद्य भारती भाग 1	मार्च 1988	15, 000
124.	फाउंडेशन आफ पेलिटिकल साइंस	फरवरी 1988	10, 000
125.	समाज को समझने की ओर	मार्च 1988	2, 000
126.	मैथेमेटिक्स बुक 2	फरवरी 1988	37, 000
बारहवीं कक्षा			
127.	काव्य संचयन भाग 2 (हिंदी इलैक्टिव)	जनवरी 1988	75, 000
128.	गद्य संचयन भाग 2 (हिंदी इलैक्टिव)	मार्च 1988	95, 000
129.	हिंदी साहित्य का संक्षिप्त इतिहास (इलैक्टिव)	मार्च 1988	30, 000
130.	संस्कृत काव्य तरंगिणी	मार्च 1988	5, 000
131.	संस्कृत गद्य मंदाकिनी (इलेक्टिव)	मार्च 1987	12, 000
132.	संस्कृत गद्य मंदाकिनी (इलैक्टिव)	मार्च 1988	5, 000
133.	संस्कृत काव्य तरंगिणी (संस्कृत कविता)	मार्च 1987	7, 000
134.	बायोलाजी पार्ट 2, वाल्यूम 2	दिसम्बर 1987	40, 000
135.	मैथेमेटिक्स बुक 3	दिसम्बर 1987	80, 000
136.	मैथेमेटिक्स बुक 4	दिसम्बर 1987	80, 000
137.	मैथेमेटिक्स बुक 5	दिसम्बर 1987	80, 000
138.	मध्यकालीन भारत भाग 2 (इतिहास)	मार्च 1988	23, 000
139.	इंडियन कंस्टीट्यूशन एण्ड द गवर्नमेंट (पोल साइंस)	जनवरी 1988	30, 000
140.	भारतीय संविधान और शासन (राजनीतिक विज्ञान)	जनवरी 1988	8, 000
141.	द वेब आफ अवर लाइफ	फरवरी 1988	1, 60, 000
142.	डियर टु आल द म्यूजेज़	फरवरी 1988	5, 000
143.	मानव और आर्थिक भूगोल	मार्च 1988	6, 000

1987-88

1	2	3	4
144.	माडर्न इंडिया	फरवरी 1988	30, 000
145.	अधुनिक भारत	दिसम्बर 1987	23, 000
146.	भारत में लोक तंत्र	मार्च 1988	10, 000
147.	राष्ट्रीय आय लेखापद्धति	मार्च 1988	9, 000
148.	आन टाप आफ द वर्ल्ड	मार्च 1988	4, 000
149.	इंडियन डेमोक्रेसी एट वर्क	फरवरी 1988	15, 000
150.	एन इंट्रोडक्शन टु इकोनामिक्स	जुलाई 1987	18, 000
151.	ह्यूमन एंड इकोनोमिक ज्योग्राफी	मार्च 1988	9, 000
152.	ज्योग्राफी आफ इंडिया, पार्ट 2	फरवरी 1988	35, 000
153.	सोशल चेंज	मार्च 1988	5, 000
154.	इंडियन सोसाइटी (नई पुस्तक)	अप्रैल 1987	5, 000
155.	इंडियन सोसाइटी	मार्च 1988	6, 000
156.	भारत का भूगोल भाग 2	मार्च 1988	10, 000
उर्दू पाठ्यपुस्तकें			
157.	रियाज़ी (गणित) बुक 1, प्राथमिक स्कूलों के लिए	मार्च 1988	10, 000
158.	हिसाब (गणित) बुक 2, पार्ट 1, कक्षा 7	मार्च 1988	2, 000
159.	हिसाब (गणित) बुक 2, पार्ट 2, कक्षा 7	मार्च 1988	2, 000
160.	तारीख़ और इल्मे शहरियत (इतिहास और नागरिक शास्त्र) भाग 2, कक्षा 7	मार्च 1988	4, 000
161.	इल्म–ए–कौमी (रसायन) भाग 1	अप्रैल 1987	1, 000
162.	इन्सान और माहौल	अप्रैल 1987	1, 000
163.	उर्दू की नई किताब, कक्षा 2	जुलाई 1987	5, 000
164.	नफ़्सियत–ए–तिफ़्ली (बाल मनोविज्ञान)	अप्रैल 1987	2, 000
165.	उर्दू की नई किताब, कक्षा 3 के लिए	मई 1987	5, 000
अरुणाचल प्रदेश के लिए पाठ्यपुस्तकें			
166.	अरुण भारती भाग 1	जुलाई 1987	20, 000
167.	अभ्यास पुस्तिका, अरुण भारती भाग 1	अगस्त 1987	18, 000
168.	अरुण भारती भाग 2	जुलाई 1987	15, 000
169.	अभ्यास पुस्तिका अरुण भारती भाग 2	जुलाई 1987	5, 000
170.	अरुण भारती भाग 3	अगस्त 1987	5, 000
171.	न्यू डान, रीडर 1, कक्षा 1 के लिए	जुलाई, 1987	14, 000
172.	वर्कबुक फार न्यू डान रीडर 1	जुलाई 1987	10, 000
173.	सप्लीमेंटरी रीडर फार न्यू डान रीडर 1, कक्षा 1 के लिए	जुलाई 1987	12, 000
174.	वर्कबुक फार न्यू डान रीडर 2	मई 1987	35, 000
175.	न्यू डान रीडर 2, कक्षा 2 के लिए	जुलाई 1987	35, 000
पश्चिम बंगाल के लिए पाठ्यपुस्तकें			
176.	माध्यमिक कक्षाओं के लिए गद्य भारती	मार्च 1988	6, 000
177.	काव्य भारती कक्षा 9	मार्च 1988	6., 000
नवोदय विद्यालय के लिए पाठ्यपुस्तकें			
कक्षा 6			
178.	रीडिंग इज़ फन –1, माइ फैमिली एण्ड फ्रेंड्स इंगलिश वर्कबुक	जनवरी 1988	30, 000
179.	रीडिंग इज फन – 1, माइ फेमिली एण्ड फ्रेंड्स सप्लीमेंटरी रीडर इन इंगलिश	जनवरी 1988	25, 000
कक्षा 7			
180.	माई स्माल वर्ल्ड, सप्लीमेंटरी रीडर	सितम्बर 1987	14, 000
181.	माई स्माल वर्ल्ड, सप्लीमेंटरी रीडर	जनवरी 1988	14, 000
182.	माई स्माल वर्ल्ड – इंगलिश वर्क	सितम्बर 1987	14, 000
183.	माई स्माल वर्ल्ड – इंगलिश वर्क	जनवरी1987	15, 000
माडल पाठ्यपुस्तकें			
184.	अभ्यास पुस्तिका हमारी हिंदी	मई 1987	14, 000
185.	भाषा किरण भाग 1	दिसम्बर 1987	10., 000
अध्यापक गाइड			
186.	आर्ट एजुकेशन हैन्डबुक, कक्षा 1 के लिए	सितम्बर 1987	10, 000
187.	स्कूल शिक्षा में कार्य अनुभव	जुलाई 1987	1, 00, 000
188.	एन्वायरनमेंटल स्टडीज़ पार्ट–1 टीचर्स गाइड फार क्लास 5	मार्च 1988	10, 000

1	2	3	4
189.	अध्यापक दर्शिका परिवेशीय अध्ययन, कक्षा 1	जुलाई 1987	10, 000
190.	कार्य अनुभव अध्यापक दर्शिका कक्षा 1 व 2	फरवरी 1988	10, 000
191.	वर्क एक्सपीरिएंस इन स्कूल एजुकेशन	जुलाई 1987	1, 00, 000
कक्षा 1, 2, 3 व 4 के लिए नई अध्यापक गाइड			
192.	कक्षा 1 व 2 के लिए वर्क एक्सपीरिएंस टीचर्स हैन्डबुक	सितम्बर 1987	10, 000
193.	कक्षा 3 के लिए वर्क एक्सपीरिएंस टीचर्स हैन्डबुक	सितंबर 1987	10, 000
194.	कक्षा 3 के लिए वर्क एक्सपीरिएंस टीचर्स हैन्डबुक	सितम्बर 1987	10, 000
कार्य अनुभव के लिए निर्दशन अनुदेशी सामग्री			
195.	शीट मेटल वर्क (कक्षा 7/8)	जुन 1987	10, 000
196.	मिल्क प्रोडक्शन एण्ड हैंडलिंग (कक्षा 9–10)	सितम्बर 1987	10, 000
197.	वुडक्राफ्ट (कक्षा 9)	अप्रैल 1987	10, 000
198.	जनरल हर्टिकल्चर (कक्षा 9–10)	अप्रैल 197	10, 000
199.	मील्स फार द फैमिली वाल्यूम 1 (कक्षा 9)	मई 1987	10, 000
200.	इन्ट्रोडशन टु हाउसवायरिंग (कक्षा 9–10)	अगस्त 1987	10, 000
201.	रिपेयर एण्ड मेंटेनेंस आफ हाउस होल्ड इलैक्ट्रिकल एप्लाएंसेज (कक्षा 9–10)	अप्रैल 1987	10, 000
202.	इलेक्ट्रानिक्स टेक्नोलाजी (कक्षा 9–10)	मई 1987	10, 000
203.	फोटोग्राफी (कक्षा 9)	अप्रैल 1987	10, 000
204.	इन्ट्रोडक्शन टु प्लम्बिंग (कक्षा 9–10)	अप्रैल 1987	10, 000
निर्दशन अनुदेशी सामग्री			
205.	सम कोर करिकुलम एरियाज	मई 1987	5, 000
पूरक रीडर			
206.	रीडिंग टू लर्न सीरीज़ सिटी आफ स्टेयूज	दिसम्बर 1987	10, 000
207.	लेट अस बी हैप्पी	मार्च 1988	10, 000
208.	लाइफ इज डिफिकल्ट	जुलाई 1987	10, 000
209.	स्ट्रिंग आफ कैमल्स	अगस्त 1987	10, 000
पढ़े और सीखें माला			
210.	युवा संसद का संचालन	अक्तुबर 1987	3, 000
211.	ऐसे थे राजेन्द्र बाबू	सितम्बर 1987	15, 000
212.	विश्वेश्वरैया	मई 1987	15, 000
213.	पौराणिक कहानियां	फरवरी 1988	15, 000
214.	फूल जैसी लड़की	मई 1987	15, 000
215.	घर से दूर	जुलाई 1987	15, 000
216.	काला सागर गोरा देश	फरवरी 1988	15, 000
217.	महाभारत की कहानियाँ	फरवरी 1988	15,000
218.	ग्रामोफोन से स्टीरियों तक	सितम्बर 1987	10,000
219.	गोविंद बल्लभ पंत	जनवरी 1988	5,000
220.	मानव मशीन से परिचय	दिसम्बर 1987	10,000
221.	जंगल की कहानी	फरवरी 1988	15,000
अनुसंधान अध्ययन व मोनोग्राफ तथा अन्य प्रकाशन			
222.	कमिटीज़ एंड कमीशन आन इंडियन एजुकेशन 1947–1977, ए बिबलियोग्राफी	अप्रैल 1987	2,000
223.	साईंस एजुकेशन फार द फर्स्ट टेन इयर्स आफ स्कूलिंग सिलैबस फार अपर प्राइमरी स्टेज	जुलाई 1987	5,000
224.	राष्ट्रीय प्रतिभा खोज योजना नियम विनिमय	अक्तुबर 1987	3,000
225.	वार्षिक रिपोर्ट 1986–87 (हिंदी)	नवंबर 1987	500
226.	एनुअल रिपोर्ट 1986–87 (अंग्रेजी)	नवंबर 1987	1,000
227.	लेखा परीक्षा रिपोर्ट 1986–87	जनवरी 1988	4,000
228.	कन्डक्टिंग यूथ पार्लियामेंट	सितम्बर 1987	5,000
229.	ए स्टडी आफ द इवैल्युएशन आफ द टैक्स्टबुक	जुलाई 1987	5,000
230.	इन सर्विस टीचर एजुकेशन फार प्राइमरी टीचर्स	मार्च 1988	50,000
231.	गाइडलाइन्स एण्ड सिलेबाइ फार अपर प्राइमरी स्टेज क्लास 6–8	फरवरी 1988	10,000

1987-88

1	2	3	4
लोटस सीरीज			
232	हिस्टोरिक ट्रायल आफ महात्मा गांधी	फरवरी 1988	10,000
233.	लिविंग थाट्स आफ जवाहरलाल नेहरू	फरवरी 1988	18,000
पत्रिकाएं			
1.	इंडियन एजुकेशलन रिव्यू	अप्रैल 87 से अक्तूबर 87 (3 अंक)	
2.	स्कूल साइंस	मार्च 87 से सितम्बर 87 (3 अंक)	
3.	प्राइमरी टीचर	अप्रैल 87 से अक्तूबर 87 (3 अंक)	
4.	प्राइमरी शिक्षक	जनवरी 1987 से अक्तूबर 87 (4 अंक)	
5.	जर्नल आफ इंडियन एजुकेशन	मार्च 87 से सितम्बर 87 (4 अंक)	
6.	भारतीय आधुनिक शिक्षा	अप्रैल 87 से अक्तूबर 87 (3 अंक)	

पंद्रह

अंतर्राष्ट्रीय संबंध और सहायता

एन०सी०ई०आर०टी० का अंतर्राष्ट्रीय संबंध एकक (आई आर यू) अंतर्राष्ट्रीय संस्थाओं के साथ सहयोगात्मक गतिविधियों/कार्यक्रम के समन्वयन के लिए उत्तरदायी है । यह एकक शैक्षिक नवाचारों के लिए राष्ट्रीय विकास दल (एन डी जी) के सचिवालय के रूप में तथा भारत में स्कूली शिक्षा के विभिन्न पहलुओं पर, विभिन्न देशों और अन्तर्राष्ट्रीय एजेंसियों को सूचना देने के लिए एक सूचना प्रसार केन्द्र के रूप में कार्य करता है।

द्विपक्षीय सांस्कृतिक विनिमय कार्यक्रम

1987–88 में परिषद् ने सांस्कृतिक विनिमय कार्यक्रमों के अन्तर्गत अनेक देशों के साथ शैक्षिक कार्यक्रमों का आदान–प्रदान किया । शैक्षिक सामग्रियां आस्ट्रेलिया, स्पेन, नीदरलैंड, यूनेस्को में ईरान के स्थायी प्रतिनिधि मण्डल, संघीय जर्मन गणराज्य और नार्वे को भेजी गई । विशेष अनुरोधों पर, पुस्तकों और अन्य सूचना सामग्री सहित शैक्षिक सामग्रियां कोरिया शैक्षिक विकास संस्थान, सिओल (कोरिया); इस्लामिक ईरान गणराज्य दूतावास, भारत; सचिव, शिक्षा एवं सांस्कृतिक मामलों का मंत्रालय, थाईलैंड; स्टैनफोर्ड यूनिवर्सिटी, केलिफोर्निया, यू० एस० ए०; अंतर्राष्ट्रीय शिक्षा ब्यूरो, यूनेस्को, जेनेवा; भारतीय दूतावास, ओस्लो; अंतर्राष्ट्रीय अध्ययन संगठन, माल्टा विश्वविद्यालय; भारतीय दूतावास, तोक्यो, जापान; जार्डन हाशिमी राज्य; राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान, श्रीलंका और विदेश के कुछ अन्य व्यक्तियों को भी भेजी गई ।

शैक्षिक सामग्रियां तुर्की, इराक, हंगेरी, और बहराइन से, उनके दूतावासों/उच्चायोगों के माध्यम से प्राप्त की गई । इस अवधि में सांस्कृतिक विनिमय कार्यक्रमों के अन्तर्गत कोई भी प्रतिनिधि मण्डल नहीं भेजा गया।

एन०सी०ई०आर०टी० में विदेशी निरीक्षक (आगंतुक)

एन०सी०ई०आर०टी० में, विभिन्न देशों से, नीचे दिए गए विवरण के अनुसार, शिक्षाविद् आए । श्री एम० वी० ओदेथीन, सार्वजनिक सूचना कार्यालय, यूनेस्को मुख्यालय, पेरिस के नेतृत्व में एक 4 सदस्यीय दल एन०सी०ई०आर०टी० में भारत पर एक फिल्म बनाने के लिए 2 अप्रैल, 1987 को आया । पूरे विश्व में टेलीविज़न के माध्यम से इसका प्रदर्शन होगा ।

पाकिस्तान के एक फैलो, श्री मुहम्मद इक़बाल को एन सी ई आर टी के कार्यशाला विभाग में अटैचमैंट कार्यक्रम के अंतर्गत, स्कूल शिक्षा के विभिन्न स्तरों के लिए कम लागत के वैज्ञानिक उपस्कर बनाने से संबंधित कौशल विकसित करने के लिए , 6 अप्रैल 1987 से तीन सप्ताह के लिए रखा गया ।

बंगला देश के श्री अब्दुल कुतर सरकार 5 मई, 1987 को एन सी ई आर टी आए और डी ई एस एस एच के शिक्षा व्यावसायीकरण विभाग तथा सी आई ई टी ने संकाय के साथ विचारों का आदान–प्रदान किया।

श्रीलंका के श्री जी०ई० विजेसूरिया, 8 मई 1987 को एन सी ई आर टी आए और डी ई एस एम में, माध्यमिक शिक्षा में विज्ञान अध्ययन के कार्यक्रम पर तथा कार्यशाला विभाग में विज्ञान किट आदि सहित चल प्रयोगशालाओं के बारे में चर्चा की ।

पूर्वी केन्चुकी यूनिवर्सिटी के 16 शिक्षकों का एक दल 1 जून, 1987 को एन सी ई आर टी में आया और उन्होंने संयुक्त निदेशक, एन सी ई आर टी, अध्यक्ष, पी सी ई यू तथा अध्यक्ष डी पी एस ई ई के साथ भारत की नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति – 1986 पर चर्चा की ।

अदिस अबाबा के वरिष्ठ कार्यक्रम अधिकारी डा० कैबैब्यू डाका 13 जुलाई, 1987 को एन०सी०ई०आर०टी० आए और डी पी एस ई ई संकाय से चर्चा की ।

मालदीव से दो यूनेस्को फैलो श्री सईद अहमद और श्री मुहम्मद नसीर ने एन सी ई आर टी के स्कूल पूर्व प्राथमिक शिक्षा विभाग में 17 से 31 जुलाई, 1987 तक एक अध्ययन दौरा कार्यक्रम में भाग लिया ।

जापान के प्रो० कजुकिको हिरोनेका 31 जुलाई, 1987 को एन सी ई आर टी आए और डी वी ई के संकाय सदस्यों के साथ, प्राथमिक तथा माध्यमिक स्कूल, दोनों ही स्तरों पर कार्य अनुभव पर विचार–विमर्श किया।

10 अमरीकी विद्यार्थियों का एक दल 3 अगस्त, 1987 को एन सी ई आर टी आया ।निदेशक, एन सी ई आर टी, संयुक्त निदेशक, एन सी ई आर टी, संयुक्त निदेशक, सी आई ई टी और डी ई एस एम के संकाय सदस्यों के साथ उनकी बैठक हुई । उन्होंने भारत की शिक्षा प्रणाली से संबंधित मामलों पर चर्चा की । भारत की वैज्ञानिक उपलब्धियों की छाप उन पर छोड़ने के लिए उन्हें "रामन" फिल्म भी दिखाई गई ।

जिम्बाबवे यूनिवर्सिटी के प्रो० एफ० जेवियर केरेल्से, विज्ञान शिक्षा के लिए कम लागत के उपस्करों के उत्पादन पर किए जा रहे काम में गहरी पैठ प्राप्त करने के लिए 27 से 28 अगस्त 1987 तक के लिए एन सी ई आर टी आए ।

अफगानिस्तान के एक यूनेस्को फैलो श्री सैयद उमर असरार ने राज्य शैक्षिक प्रौद्योगिकी संस्थान, रामनाथपुर, हैदराबाद में ए आई बी डी और टी बी पर, 2 नवंबर, 1987 से चार सप्ताह के एक फैलोशिप प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लिया ।

अफगानिस्तान के श्री असदुल्ला साकेब ने क्षेत्र शिक्षा कालेज, भोपाल में, प्राथमिक स्कूलों में अध्यापन के तरीकों पर, दो सप्ताह (16 से 28 नवंबर, 1987) की अवधि के एक अटैचमैंट कार्यक्रम में भाग लिया ।

1987-88

जायरे का एक 5 सदस्यीय प्रतिनिधि मण्डल 8 दिसम्बर, 1987 को एन०सी०ई०आर०टी० आया । इन्होंने, निदेशक, एन०सी०ई०आर०टी०, संयुक्त निदेशक, एन सी ई आर टी और एन सी ई आर टी के संकाय सदस्यों से मिल कर शिक्षा नीतियों आदि पर चर्चा की ।

कोरिया गणराज्य के प्रो० नाम सू किम, शैक्षिक अनुसंधान और श्रव्य-दृश्य सामग्रियों के विकास के क्षेत्र में एन०सी०ई०आर०टी० के कार्यकलाप की पूरी जानकारी पाने के विचार से 11 दिसम्बर, 1987 को एन सी ई आर टी आए ।

ओन्टारियो शैक्षिक अध्ययन संस्थान, टोरंटो, कनाडा के प्रो० स्टेसी चर्चिल 1 से 2 जुलाई, 1987 तक के लिए एन सी ई आर टी आए । प्रो० चर्चिल, बाहरी मूल्यांकक के रूप में एपीड (यूनेस्को) के मूल्यांकन के लिए भारत आए थे । एन०सी०ई०आर०टी० ने उनके इस दौरे का, आई एन सी, मानव संसाधन विकास मंत्रालय की तरफ से समन्वय किया और उन्हें विभिन्न संस्थानों (नीपा, एन सी ई आर टी, निदेशक,प्रौढ़ शिक्षा, मानव संसाधन विकास मंत्रालय और दिल्ली विश्वविद्यालय) के संबंधित संकाय सदस्यों के साथ विचारों के आदान-प्रदान का अवसर प्रदान किया । प्रो० चर्चिल ने एन सी ई आर टी में विभिन्न मामलों पर विस्तृत चर्चा की और निदेशक, एन सी ई आर टी, संयुक्त निदेशक, एन सी ई आर टी, संयुत निदेशक, सी आई ई टी और कुछ वरिष्ठ संकाय सदस्यों ने उन्हें, एन सी ई आर टी द्वारा एपीड कार्यक्रम के अंतर्गत किए जा रहे कार्यकलापों की प्रकृति और इन कार्यक्रमों के बारे में एन सी ई आर टी के विचारों से अवगत कराया । उन्होंने कुछ मुख्य चिन्ताओं की ओर भी इशारा किया । जैसे कि एपीड परियोजनाओं को जारी रखना तथा राष्ट्रीय प्राथमिकताओं व कार्यक्रमों के साथ परस्पर संबंध । (प्रो० चर्चिल ने, सचिव, आई एन सी (श्री बलदेव महाजन) , सचिव, मानव संसाधन विकास मंत्रालय (श्री अनिल बोर्दिया), विशेष सचिव, मानव संसाधन विकास मंत्रालय (श्री किरीट जोशी) तथा श्री वीराराघवन, सचिव, मानव संसाधन विकास मंत्रालय से भी भेंट की ।

क्यूंग पुक नेशनल यूनिवर्सिटी, वाइगु, कोरिया के डा० युन ली, भारत में जनसंख्या शिक्षा और परिषद् की सामान्य गतिविधियों पर चर्चा करने के लिए 30 दिसम्बर, 1987 को एन सी ई आर टी आए ।

विनिपेग यूनिवर्सिटी, कनाडा के प्रो० वारिस शेयर 4 जनवरी, 1988 को एन सी ई आर टी आए । उन्होंने एन सी ई आर टी के निदेशक और कुछ संकाय सदस्यों के साथ एक बैठक में भाग लिया । प्रारंभिक बाल्यकाल शिक्षा में सुधार तथा भारत में संस्थाओं की धारिता बढ़ाने के प्रशिक्षण कार्यक्रमों पर चर्चा की ।

बर्कले स्थित केलिफोर्निया विश्वविद्यालय के शैक्षिक टेलीविजन और रेडियो के निदेशक श्री पीटर करनेर और उनके सहायक बाब क्रेयर 15 जनवरी, 1988 को एन सी ई आर टी आए । उन्होंने सी आई ई टी के संयुक्त निदेशक और कुछ संकाय सदस्यों के साथ एक बैठक में भाग लिया और शैक्षिक टेलीविजन प्रोग्रामन तथा वीडियो अभिलेखागारों (आर्काइव्स) के क्षेत्र पर चर्चा की ।

अंतर्राष्ट्रीय मामलों के आस्ट्रेलियाई संस्थान, न्यू साउथ वेल्स शाखा के 20-25 व्यक्तियों का एक दल एन सी ई आर टी आया । उन्होंने आस्ट्रेलिया में शिक्षा नीतियों पर चर्चा की और भारतीय शिक्षा नीति पर भी आम चर्चा की ।

राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान, महारागाम, श्री लंका के निदेशक (योजना) डा० सुबासिंघे 18 जनवरी, 1988 को एन सी ई आर टी आए । उन्होंने एन सी ई आर टी के संयुक्त निदेशक और कुछ संकाय सदस्यों के साथ एक बैठक में भाग लिया । राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान, महारागाम, श्री लंका के संकाय के लिए एन सी ई आर टी द्वारा तथा की जा रही प्रशिक्षण कार्यक्रमों की रूपात्मकताओं के बारे में चर्चा हुई ।

नीपा के शैक्षिक नियोजन एवं प्रशासन में अंतर्राष्ट्रीय डिप्लोमा कार्यक्रम के 24 प्रतिभागी 4 फरवरी, 1988 को एन सी ई आर टी आए। उन्होंने एन सी ई आर टी के संयुक्त निदेशक तथा वरिष्ठ संकाय सदस्यों के साथ एक बैठक में भाग लिया । उन्होंने एन सी ई आर टी की कार्य प्रणाली और देश में शिक्षा प्रणाली के क्षेत्र में इसके योगदान के बारे में चर्चा की।

पर्यावरणीय शिक्षा विभाग, यूनेस्को, पेरिस के कार्यक्रम विशेषज्ञ श्री ए० गफूर 17 फरवरी, 1988 को एन सी ई आर टी आए । संयुक्त निदेशक, एन सी ई आर टी से, उनके ही कक्ष में, एन सी ई आर टी में यूनेस्को की परियोजनाओं पर आम चर्चा हुई ।

नेपाल के यूनेस्को फैलो श्री नारायण प्रसाद बांसकोटा ने स्कूल पूर्व और प्रारंभिक शिक्षा विभाग, एन सी ई आर टी में, प्राथमिक शिक्षा के क्षेत्र में अपना प्रशिक्षण 30 दिसम्बर, 1987 से 29 जनवरी, 1988 तक की अवधि में पूरा कर लिया ।

यूनेस्को, बैंकाक से श्री प्रेम कसाजू और श्री नाके शिमा 3 मार्च, 1988 को एन सी ई आर टी आए । उन्होंने शिक्षा के पहलुओं पर, एन सी ई आर टी के संयुक्त निदेशक/निदेशक के साथ चर्चा की ।

राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान, महारागाम, श्री लंका के आठ संकाय सदस्यों के लिए एन सी ई आर टी में 15 मार्च, 1988 से 28 अप्रैल, 1988 तक एक प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया ।

मारीशस के यूनेस्को फैलो श्री एम० पी० काली ने एन सी ई आर टी के स्कूल पूर्व और प्रारंभिक शिक्षा विभाग में, ग्रामीण इलाकों में शिक्षा के विस्तार और सुधार के क्षेत्र में अपना 3 मास 28 दिसम्बर, 1987 से 23 मार्च, 1988 की अवधि का प्रशिक्षण पूरा कर लिया है ।

त्रिनिदाद के कार्यक्रम अधिकारी (कला), श्री इसैया जेम्स बुधु 29 मार्च, 1988 को एन सी ई आर टी आए । उन्होंने भारत में कला शिक्षा और परिषद् की आम गतिविधियों पर चर्चा की ।

नेपाल की दो अध्यापिकाओं, श्रीमती सविता भट्टाराय और श्रीमती पुष्पा सिंह ने, स्कूल पूर्व और प्रारंभिक शिक्षा विभाग के अंतर्गत, कक्षा कक्ष में श्रव्य-दृश्य सहायताओं के जरिए विज्ञान व गणित कैसे पढ़ाएं पर तीन सप्ताह के एक प्रशिक्षण कार्यक्रम में 3 दिसम्बर, 1987 से भाग लिया ।

त्रिभुवन विश्वविद्यालय शैक्षिक नवाचार एवं विकास अनुसंधान केन्द्र, नेपाल के पांच शोधकर्ता एन सी ई आर टी आए और एन सी ई आर टी में प्रो० बाकर मेहदी, प्रो० ए० बी० एल० श्रीवास्तव तथा प्रो० के० जी० रस्तोगी से, 11 से 19 अक्तूबर, 1987 तक, अपनी परियोजनाओं पर चर्चा की ।

सोमालिया की श्रीमती मुहम्मद अली ने, केन्द्रीय शिक्षा प्रौद्योगिकी संस्थान (एन सी ई आर टी) में एक मास के फैलोशिप स्थापन कायक्रम में 28 दिसम्बर, 1987 से भाग लिया ।

मैरीलैण्ड विश्वविद्यालय, यू० एस० ए० ने शिक्षा सलाहकार और अनुदेशी प्रौद्योगिकी विशेषज्ञ डा० जैनी जान्सन, एन सी ई आर टी (सी आई ई टी) में एक संगोष्ठी में भाग लेने के लिए 15 अक्तूबर, 1987 को आए ।

स्वीडन के प्रो० अर्ने लिंडग्वीसी, शिक्षा नीति और भारत की समस्याओं पर चर्चा करने के लिए अगस्त, 1987 में एन सी ई आर टी आए ।

अफगानिस्तान के डा० एफ० एम० याकूबी, यूनेस्को कार्यक्रमों के बारे में एन सी ई आर टी के अधिकारियों से चर्चा करने के लिए 22 अप्रैल, 1987 को एन सी ई आर टी आए ।

एल०ए०ओ०, पी०डी०आर० के शिक्षा मंत्रालय का एक 5 सदस्यीय अध्ययन दल 31 अक्तूबर से 14 नवंबर, 1987 तक के लिए भारत आया और एन सी ई आर टी के संकाय सदस्यों के साथ, पूर्व प्राथमिक, प्राथमिक, माध्यमिक और प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रमों के बारे में चर्चा की ।

एन०सी०ई०आर०टी० के संकाय सदस्यों की विदेशों में प्रतिनियुक्ति

डा० वी० पी० गुप्ता, रीडर, डी०पी०एस०ई०ई० ने पैनांग, मलेशिया में 15 से 27 जून, 1987 तक, कठिन शैक्षिक संदर्भों में प्राथमिक शिक्षा कार्यकर्ताओं के प्रशिक्षण पर हुई एक उप-क्षेत्रीय कार्यशाला में भाग लिया।

डा० एम० सेनगुप्त, रीडर, डी वी ई ने बैंकाक में, शिक्षा के समाकलन के लिए संयुक्त नवाचार परियोजना पर योजना नामिका की बैठक में 23 जून से 2 जुलाई, 1987 तक भाग लिया ।

डा० (श्रीमती) नीरजा शुक्ला ने, मनीला (फिलीपीन्स) में 6 से 10 जुलाई 1987 तक, ग्रामीण इलाकों में शिक्षा के सभी प्रकार के स्तरों तक पहुंच को सुगम बनाने वाली राष्ट्रीय नीतियों पर हुई उपक्षेत्रीय संगोष्ठी/कार्यशाला में भाग लिया ।

श्री जी० डी० ढल०, रीडर, डी ई एस एम ने तोक्यो, जापान में 23 जून से 13 जुलाई, 1987 तक हुई, एशिया और प्रशान्त क्षेत्र में स्कूल गणित और माइक्रो कम्प्यूटरों की क्षेत्रीय प्रशिक्षण कार्यशाला में भाग लिया।

प्रो० सी० जे० दासवानी, अध्यक्ष, नारी शिक्षा सैल ने इस्लामाबाद (पाकिस्तान) में 22 से 27 अगस्त, 1987 तक, गैर पारंपरिक शिक्षा पर हुए सम्मेलन में भाग लिया ।

डा० वी० पी० गोयल, लेक्चरर, डी ई एस एम ने, बार्बेडोस में 31 अगस्त से 9 सितम्बर, 1987 तक, प्राथमिक स्कूल अध्यापक पर हुई अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी में भाग लिया ।

प्रो० ए० के० जलालुद्दीन, संयुक्त निदेशक, एन सी ई आर टी, ने तोक्यो, जापान में 15 से 25 सितम्बर, 1987 तक हुई, शिक्षा प्रौद्योगिकी की एशिया व प्रशान्त क्षेत्रीय संगोष्ठी में भाग लिया ।

प्रो० पी० एन० दवे, डीन (अकादमिक), एन सी ई आर टी, ने च्योगमाई (थाइलैण्ड) में 14 से 21 अक्तूबर, 1987 तक, प्राथमिक शिक्षा में बच्चों के सीखने और उपलब्धि पर हुई, विशेषज्ञों की बैठक में भाग लिया।

प्रो० आर० पी० सिंह, अध्यक्ष, पत्रिका कक्ष, एन सी ई आर टी, ने बैंकाक में 10 से 16 नवंबर, 1987 तक, "शैक्षिक सुधारों के लिए नीति अनुसंधान" पर हुई उप-क्षेत्रीय कार्यशाला में भाग लिया ।

प्रो० एल० सी० सिंह, अध्यापक शिक्षा और विशेष शिक्षा विभाग, ने थाईलैंड में 17 से 25 नवंबर, 1987 तक, अध्यापक शिक्षा पर हुई, योजना दल की बैठक में भाग लिया ।

प्रो० अर्जुन देव, सामाजिक विज्ञान और मानविकी शिक्षा विभाग, ने तोक्यो (जापान) में 12 नवंबर से 8 दिसम्बर, 1987 तक, "एशिया व प्रशान्त क्षेत्र में माध्यमिक शिक्षा के अध्ययन" पर हुई दूसरी क्षेत्रीय कार्यशाला में भाग लिया ।

डा० बी० एन० गुप्ता, रीडर, कार्यशाला विभाग, एन सी ई आर टी, ने काठमांडू में 8 से 14 फरवरी, 1988 तक, "स्कूल विज्ञान और प्रौद्योगिकी के लिए कम लागत के उपस्करों" पर हुई क्षेत्रीय परामर्शदात्री कार्यशाला में भाग लिया ।

प्रो० सी० जे० दासवानी, प्रभारी, महिला अध्ययन एकक, एन सी ई आर टी, ने पुणे में 24 फरवरी से 2 मार्च, 1988 तक, "सार्वजनिक प्राथमिक शिक्षा के संदर्भ में बालिका शिक्षा की प्रोन्नति" पर हुई उप-क्षेत्रीय कार्यशाला में भाग लिया ।

प्रो० आर० एम० कालरा, प्रभारी (अध्यक्ष), आई. आर. एकक, ने पेरिस (फ्रांस) में 4 अगस्त से 12 अगस्त, 1987 तक हुए चौथे अंतर्राष्ट्रीय विज्ञान सम्मेलन में भाग लिया ।

श्रीमती शुक्ला भट्टाचार्य, रीडर, स्कूल पूर्व एवं प्रारंभिक शिक्षा विभाग, एन सी ई आर टी ने, राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान, महारागाम, श्रीलंका में 22 फरवरी से 4 मार्च, 1988 तक वास्तविक जीवन की आवश्यकताओं, वैज्ञानिक क्षमताओं, सर्जनात्मकता और प्रासंगिकता पर केन्द्रित पाठ्यक्रम सामग्री के विकास पर हुई क्षेत्रीय कार्यशाला में भाग लिया ।

प्रो० आर० एम० कालरा, प्रभारी (अध्यक्ष) आई आर एकक ने वियतनाम में 3 से 5 फरवरी, 1988 तक हुई, विज्ञान में चल प्रशिक्षण कार्यशाला में भाग लिया ।

प्रो० पी० एन० दवे, अध्यक्ष, स्कूल पूर्व एवं प्रारंभिक शिक्षा विभाग, एन सी ई आर टी ने बैंकाक में 8 से 11 मार्च, 1988 तक हुई एपीड कृतक बल बैठक में स्रोत व्यक्ति के रूप में भाग लिया ।

डा० पी० एल० मल्होत्रा, निदेशक, एन सी ई आर टी ने ब्रेसिलिया में 23 से 27 नवंबर, 1987 तक हुई अन्तरक्षेत्रीय संगोष्ठी में भाग लिया।

डा० (श्रीमती) शकुंतला भट्टाचार्य, रीडर, गणित एवं विज्ञान शिक्षा विभाग, एन सी ई आर टी ने, पेनांग, मलेशिया में 15 से 24 मार्च, 1988 तक, स्कूल से बाहर वैज्ञानिक गतिविधियों के लिए वितरण प्रणाली के सुधार पर हुई क्षेत्रीय प्रशिक्षण कार्यशाला में भाग लिया ।

डा० के० एन० तंत्री, रीडर, क्षेत्रीय शिक्षा कालेज, मैसूर ने इस्लामाबाद में 19 से 29 अक्तूबर, 1987 तक, रसायन पढ़ाने के लिए अध्यापकों के प्रशिक्षण के लिए हुई क्षेत्रीय कार्यशाला में भाग लिया ।

प्रो० बी० गांगुली, अध्यक्ष, विज्ञान एवं गणित शिक्षा विभाग, एन सी ई आर टी, ने काहिरा में 26 सितम्बर से 1 अक्तूबर, 1987 तक, गैर औपचारिक पर्यावरणीय शिक्षा के विकास पर हुई अन्तर्राष्ट्रीय परामर्शदात्री बैठक में भाग लिया ।

1987-88

प्रो० आर० मुरलीधरन, स्कूल पूर्व और प्रारंभिक शिक्षा विभाग, एन सी ई आर टी, ने कोलंबो में 15 से 21 दिसम्बर, 1987 तक, अभिभावक शिक्षा पर हुई क्षेत्रीय कार्यशाला में भाग लिया ।

डा० पी० एल० मल्होत्रा, निदेशक, एन सी ई आर टी, ने जापान में 30 सितम्बर से 4 अतूबर, 1987 तक एन आई ई आर द्वारा आयोजित कार्यक्रम में भाग लिया ।

यूनेस्को/एपीड परियोजनाएं

एशिया और प्रशांत के विभिन्न देशों के बीच बहुपक्षीय सहयोग के लिए एक महत्वपूर्ण यंत्र एपीड (विकास हेतु शैक्षिक नवाचारों संबंधी एशिया और प्रशांत कार्यक्रम) है ।

राष्ट्रीय विकास की समस्याओं के साथ सम्बद्ध शैक्षिक नवाचारों को हाथ में लेने हेतु तथा साथ ही सदस्य देशों के लोगों के जीवन में गुणवत्ता सुधार लाने के लिए एपीड का मुख्य ध्येय राष्ट्रीय सक्षमताओं के निमार्ण में योगदान करना है । 1987–88 में एन सी ई आर टी ने निम्नलिखित परियोजनाएं/अध्ययन, सारणी 15.1 में दर्शाए अनुसार, हाथ में लेने के लिए, यूनेस्को के साथ अनुबंधों पर हस्ताक्षर किए ।

राष्ट्रीय विकास दल (एन०डी०जी०) के अंतर्गत गतिविधियां

एपीड (विकास के लिए शैक्षिक नवाचारों के एशिया व प्रशान्त क्षेत्रीय कार्यक्रम) के संदर्भ में शैक्षिक नवाचारों के लिए भारत सरकार ने एक राष्ट्रीय विकास दल (एन डी जी) स्थापित किया है । एन डी जी ने, विकास के लिए शैक्षिक नवाचारों में अंतरा आंचलिक सहयोग को बढ़ावा देने के लिए कुछ कदम उठाने शुरू किए हैं । एन डी जी के कार्यक्रमों और गतिविधियों का एक संक्षिप्त विवरण नीचे दिए अनुसार है :–

एन० डी० जी० बैठक

एन डी जी की आम सभा की एक बैठक मानव संसाधन विकास मंत्रालय (शिक्षा विभाग) के सचिव श्री अनिल बोर्दिया की अध्यक्षता में 11 जुलाई, 1987 को हुई । इस बैठक में एन डी जी ने कुछ महत्वपूर्ण निर्णय लिए। अन्य बातों के साथ–साथ, एन डी जी ने सुझाव दिया कि तुलनात्मक शिक्षा और शांति शिक्षा के अध्ययन भी शुरू किए जाएं । इसके अतिरिक्त, एन डी जी ने सुझाव दिया कि शैक्षिक प्रयासों में अंतराआंचलिक सहयोग के भी कुछ मॉडल तैयार किए जाएं । प्रस्ताव किया गया है कि अंतरा आंचलिक सहयोग के माडल तैयार करने के लिए, सामान्य शिक्षा, गैर औपचारिक शिक्षा, प्रौढ़ शिक्षा, तकनीकी शिक्षा, स्वास्थ्य और परिवार कल्याण शिक्षा, कृषि शिक्षा और ग्रामविकास जैसे विकास अंचल साथ मिल कर काम करें ।

राज्य विकास दल (एस डी जी)

भारत सरकार ने प्रत्येक राज्य और संघशासित प्रदेश को, राष्ट्रीय विकास दल के प्रतिपक्ष संगठन के रूप में, शैक्षिक नवाचारों के लिए एक राज्य विकास दल स्थापित करने की सलाह दी है । यह सुझाव दिया गया है कि प्रत्येक एस डी जी में विभिन्न विकास क्षेत्रों को (शिक्षा, स्वास्थ्य, कृषि, ग्राम्य विकास, समाज कल्याण, सूचना और प्रसारण आदि) की कुछ शीर्षस्थ संस्थाएं शामिल हों । एस डी जी के लिए निम्नलिखित भूमिकाओं और कार्यों का सुझाव दिया गया है :

1. राज्य में नवाचारी प्रक्रियाओं की पहचान और उनमें गति लाना।

2. राज्य में शैक्षिक नवाचारकर्ताओं के लिए एक ऐसा मंच उपलब्ध कराना जहां वे मिल बैठ कर विचार–विमर्श कर सकें और अन्य राज्यों के एस डी जी, एन डी जी व भारत में एपीड के संबद्ध केन्द्रों से सम्पर्क बनाए रह सकें ।

सारणी 15.1

यूनेस्को द्वारा प्रायोजित अध्ययन/परियोजनाएं

क्र० सं०	शीर्षक	परिषद् में स्थित
1	2	3
1.	ग्रामीण इलाकों में विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी शिक्षा पर माड्यूल/अनुबंध सं० 179, 647.7	क्षेत्रीय शिक्षा कालेज, मैसूर तथा आई आर एकक
2.	सार्वत्रिक प्राथमिक शिक्षा के संदर्भ में बालिका शिक्षा की प्रोन्नति पर कार्यशाला/अनुबंध सं० 180, 882.7	स्कूल पूर्व एवं प्रारंभिक शिक्षा विभाग (डी०पी०एस०ई०ई०)
3.	अंतर्राष्ट्रीय समझ से संबंधित शिक्षा की प्रायोगिक गाइड तैयार करना ।	सामाजिक विज्ञान एवं मानविकी शिक्षा विभाग (डी. ई. एस. एस. एच.)
4.	माध्यमिक शिक्षा में नई प्रवृतियों और प्रक्रियाओं पर एपीड फोरम बैठक की अनुवर्ती कार्रवाई के रूप में सामान्य माध्यमिक शिक्षा के समाकलित संतुलन और प्रासंगिकता से संबंधित अध्ययन/राष्ट्रीय कार्यशाला	सामाजिक विज्ञान एवं मानविकी शिक्षा विभाग (डी. ई. एस. एस. एच.)

सारणी 15.2
अंतराआंचलिक संगोष्ठियां/कार्यशालाएं

क्र० सं०	कार्यक्रम का शीर्षक	अवधि	स्थान	प्रतिभागियों की संख्या
1.	शैक्षिक नवाचारों के लिए राष्ट्रीय विकास दल की बैठक	11 जुलाई 1987 (1 दिन)	एन सी ई आर टी, नई दिल्ली	12
2.	संयुक्त नवाचारी अंतराआंचलिक परियोजनाओं के माडल विकसित करने के लिए कार्यशाला	22 से 25 सितम्बर, 1987	टी टी टी आई, मद्रास	31
3.	विकास के लिए शैक्षिक नवाचारों पर क्षेत्रीय (पश्चिम क्षेत्र) संगोष्ठी	17 से 20 नवंबर, 1987	एस आई ई आर टी, उदयपुर	28
4.	विकास के लिए शैक्षिक नवाचारों पर क्षेत्रीय (पूर्वी क्षेत्र) संगोष्ठी	22 से 25 मार्च, 1988	डी पी आई कार्यालय, गुवाहाटी	40

3. सामान्य शिक्षा, गैर औपचारिक शिक्षा, प्रौढ़ शिक्षा, तकनीकी शिक्षा, स्वास्थ्य व परिवार कल्याण शिक्षा, कृषि शिक्षा, ग्राम्य विकास और समाज कल्याण जैसे विभिन्न विकास अंचलों की नवाचारी संस्थाओं/संगठनों के बीच समन्वय और विचार-विनिमय को बढ़ावा देना।

4. विकास से संबंधित शैक्षिक नवाचारों की सूचनाओं के प्रसार और विनिमय को सुगम बनाना।

अभी तक सात राज्यों (हिमाचल प्रदेश, उत्तर प्रदेश, हरियाणा, उड़ीसा, कर्नाटक, महाराष्ट्र व राजस्थान) तथा संघशासित प्रदेश चण्डीगढ़ में एस डी जी स्थापित कर लिए हैं। अन्य राज्यों को, मानव संसाधन विकास मंत्रालय के जरिए कहा जा रहा है कि वे एस डी जी की स्थापना के लिए तत्काल कदम उठाएं। एन डी जी ने राज्यों व संघशासित प्रदेशों को, एस डी जी के ढाँचे, भूमिका, कार्य व स्थापना से संबंधित अन्य मामलों के बारे में निर्देश व स्पष्टीकरण भेज दिए हैं।

विकास कार्यक्रम/गतिविधियां

एन डी जी के तत्वावधान में एन सी ई आर टी ने अंतराआंचलिक संगोष्ठियां/कार्यशालाएं आयोजित कीं। इनका विवरण सारणी 15.2 में दिया गया है :

एपीड की उपक्षेत्रीय बैठक की सिफारिशों पर अनुवर्ती कार्रवाई

एन डी जी भारत ने एपीड पर, दक्षिण एशियाई देशों की एक उप क्षेत्रीय बैठक 20 से 23 जनवरी, 1987 तक आयोजित की। बैठक में, राष्ट्रीय शिक्षा योजनाओं व नीतियों की रोशनी में, चौथे प्रोग्रामन चक्र (1987–91) के लिए एपीड की कार्य योजना का, इसके कार्यान्वयन के लिए नीतियां तैयार करने और सामान्य समस्याओं व मामलों पर केन्द्रित उपक्षेत्रीय सहयोग के लिए कार्रवाई की दृष्टि से गहन अध्ययन किया गया। यूनेस्को क्षेत्रीय कार्यालय, बैंकाक से उपक्षेत्रीय बैठक की सिफारिशों पर, जिनमें अन्य बातों के साथ-साथ दक्षिण एशियाई देशों की कुछ संयुक्त परियोजनाएं/कार्यक्रम भी शामिल हैं, अनुवर्ती कार्रवाई करने को कहा जा रहा है।

अंतरा आंचलिक नवाचारी परियोजनाओं के लिए वित्तीय सहायता की योजना

राष्ट्रीय विकास के संदर्भ में अंतरा आंचलिक नवाचारों के संचालन की आवश्यकता महसूस करते हुए, एन डी जी सचिवालय, "अंतरा आंचलिक नवाचारी परियोजनाओं के लिए वित्तीय सहायता योजना" विकसित कर रहा है। फिलहाल, नवाचारी परियोजनाओं के लिए अनुदान सामान्यतः आंचलिक आधार पर उपलब्ध है। एन डी जी इस बात पर विचार कर रहा है कि कुछ आवश्यकता आधारित अंतरा आंचलिक नवाचारी परियोजनाएं, वैज्ञानिक पद्धति से चलाई जाएं, जिनमें और बातों के अलावा सामग्रियों व तरीकों की आजमाइश, नियंत्रण एवं निरीक्षण और विस्तृत प्रसार की योजना का प्रावधान हो।

पृष्ठभूमि एन०डी०जी०

एन डी जी की भूमिका व कार्यों तथा कार्यक्रमों व गतिविधियों की सूचना के प्रसार के लिए एन डी जी सचिवालय ने एक पृष्ठभूमि विवरणिका तैयार की है और इसे मुद्रित करवाया है। इस विवरणिका में अन्य बातों के अलावा, एन०डी०जी० कार्यक्रमों और गतिविधियों के संदर्भ में किए गए विचारों के अनुरूप विकास के लिए शैक्षिक नवाचारों की धारणा पर संक्षिप्त सूचना भी शामिल है।

इसके अतिरिक्त एन०डी०जी० सचिवालय ने कुछ प्रदर्शनियाँ भी तैयार की हैं जिनमें अन्य बातों के साथ-साथ एपीड, एन०डी०जी० एपीड और एस डी जी के संबद्ध केन्द्रों की भूमिकाओं और कार्यों तथा कार्यक्रमों और गतिविधियों की संक्षिप्त सूचना भी शामिल हैं।

एन०डी०जी० समाचारपत्र "शैक्षिक नवाचार"

एन०डी०जी० सचिवालय, एन०सी०ई०आर०टी० ने "शैक्षिक नवाचार" नामक छमाही समाचारपत्र का प्रकाशन जारी रखा। आलोच्य अवधि में एन०डी०जी० समाचार पत्र के जुलाई-दिसम्बर, 1986 अंक की और जनवरी-जून, 1987 अंक की पांडुलिपियां तैयार की गईं और प्रकाशन के लिए भेजी गईं। एन०डी०जी० समाचारपत्र अन्य बातों के साथ-साथ, विभिन्न विकास अंचलों में चलाए जा रहे महत्वपूर्ण शैक्षिक नवाचारों पर भी संक्षिप्त सूचना उपलब्ध कराता है।

1987-88

सौलह

प्रशासन और कल्याण कार्यकलाप तथा वित्त

परिषद् के नियमों, विनियमों और प्रक्रियाओं के अनुसार एन. सी. ई. आर. टी. के सचिवालय ने अपना कार्य करना जारी रखा ।

प्रशासनिक और कल्याण कार्यकलाप

1987–88 में, के. लो. नि. वि. द्वारा 104 स्टाफ क्वार्टरों के निमार्ण से संबंधित गतिविधियां जारी रही । शापिंग काम्प्लैक्स तथा समुदाय केन्द्र का निर्माण कार्य के. लो. नि. वि. द्वारा इस वर्ष में शुरू किए जाने की संभावना है । इससे, कैम्पस के निवासियों को काफी लाभ होगा ।

स्टाफ कल्याण के एक उपाय के रूप में परिषद् ने अपने कर्मचारियों को खेल सुविधाएं उपलब्ध कराना जारी रखा ।

सातवां अन्तरा क्षेत्रीय शिक्षा कालेज, एन आई इ व सी. आई. ई. टी. स्टाफ टूर्नामेंट, क्षेत्रीय शिक्षा कालेज, अजमेर, में 21 से 23 दिसम्बर, 1987 तक आयोजित किया गया ।वालीबाल, फुटबाल, बास्केटबाल, टेनिस, बैडमिन्टन और टेबल टेनिस प्रतियोगिताएं हुई । प्रत्येक क्षेत्रीय शिक्षा कालेज, एन आई ई और सी आई ई टी में से प्रत्येक की एक–एक टीम ने प्रतियोगिता में भाग लिया ।इन खेलों में लगभग 160 खिलाड़ियों ने भाग लिया । खिलाड़ियों ने काफी रुचि दिखाई और बंधुत्व की भावना से खेल खेले ।

हिन्दी प्रकोष्ठ के कार्यकलाप

परिषद् के हिन्दी प्रकोष्ठ ने कार्यालय के कामों में हिन्दी के अधिक से अधिक प्रयोग के लिए निम्नलिखित कार्य किए :

"राष्ट्रीय भाषा के रूप में हिन्दी" पर एक संगोष्ठी 18 व 19 फरवरी, 1988 को आयोजित की गई जिसमें हिंदी के प्रचार–प्रसार के लिए संवैधानिक निर्देशों के कार्यान्वयन, एन. सी. ई. आर. टी. में हिन्दी को लोकप्रिय बनाने और कर्मचारियों को हिंदी में काम करने के लिए प्रेरित करने पर विचार किया गया । उद्देश्य यह था कि हिन्दी को लोकप्रिय बनाने के लिए अनुकूल वातावरण बनाया जाए । संगोष्ठी में 20 व्यक्तियों ने भाग लिया ।

सितम्बर, 1987 से फरवरी, 1988 की अवधि में एन. सी. ई. आर. टी. के आठ अधिकारियों को हिंदी टंकण पाठ्यक्रम में प्रशिक्षित किया गया ।

हिन्दी के प्रचार–प्रसार के लिए 1987 में निम्नलिखित साम्ग्री वितरित की गई :

1. प्रशासनिक हिन्दी शब्द कोश
2. कार्यालय दीपिका

1987-88

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् 1987–88 वर्ष की प्राप्तियां और भुगतान का समेकित लेखा
(अंक पूरे रुपये में)

प्राप्तियां			भुगतान		
रोकड़ जमा			बजट खर्च		
रोकड़ और बैंक में	11,24,74,767		अधिकारियों के वेतन		
संचालन निधि	6,70,000				
जी० पी० एफ०/सी० पी० एफ०	85,88,722		गैर–योजना	2,39,69,296	
बचत खाते में बजट खर्चे के			योजना	3,50,418	2,43,19,714
लिए मानव संसाधन विकास मंत्रालय			स्थापना का वेतन		
से प्राप्त अनुदान			गैर योजना	3,45,39,466	
गैर योजना	7,60,20,383		योजना	6,53,077	3,51,92,543
योजना	3,30,16,952	10,90,66,336			
विशिष्ट योजनाएं (सूची संलग्न)			भत्ते और मानदेय		
अनुदान और वापसी	19,02,67,878		गैर योजना	3,21,03,725	
			योजना	4,64,790	
परिषद् की प्राप्तियां					3,25,68,515
परिषद् के भवनों का किराया	12,41,532		यात्रा भत्ता		
			गैर योजना	14,04,003	
ऋण एवं अल्पकालिक			योजना	54,924	
निवेशों पर ब्याज	2,72,106				14,58,927
अन्य भुगतान की वसूली	5,13,988				
विज्ञान किटों की बिक्री	1,71,202		अन्य प्रभार		
शुल्क और प्रभार	6,03,938		गैर योजना	2,11,31,021	
पुस्तकों और प्रकाशनों की बिक्री	1,33,554		योजना	4,32,070	
					2,15,63,091
अवकाश वेतन और पेंशन योगदान	55,576		छात्रवृत्तियां/फैलोशिप		
सी० जी० एच० एस०	1,33,554		गैर योजना	7,24,986	
			योजना	6,09,348	
जी० पी० एफ०/सी० पी० एफ०					13,34,334
निवेश पर ब्याज			कार्यक्रम		
चालू खाते में	3,600		गैर योजना	3,86,33,892	
टी/39 में	33,79,231		योजना	2,75,99,100	
बचत खाते में		33,82,831	उपस्कर और फर्नीचर		
रायल्टी			गैर योजना	15,47,385	
विविध प्राप्तियां		30,19,865	योजना	16,49,559	
(6,96,76,586)			भूमि और भवन		31,96,944
			गैर योजना	55,90,868	
			योजना	74,96,803	
			विविध भुगतान		
			पेंशन और ग्रेजुएटी		47,69,802
			(मुख्यालय आर० सी० ई० एफ० ए०)		
			अवकाश वेतन और		44,669
			पेंशन योगदान		1,60,216
					(–) 24,910
			सी० जी० एच० एस०		6,21,64[illegible]
			मकान भत्ता का भुगतान		10,003
			लेखापरीक्षा शुल्क		24,910
			विज्ञापन		6,59,578
			जमा में जुड़ी बीमा योजना		24,054
			अन्य		2,446
			जी० पी० एफ/ सी० पी० एफ० नियोक्ता शेयर पर ब्याज		70,07,758
					1,33,00,168
			विशिष्ट परियोजनाएं		18,86,68,397

परिषद् के स्टाफ को ऋण और पेशगियों का भुगतान और वसूली

स्कूटर/कार पेशगी	3,40,810	स्कूटर/कार पेशगी		13,96,864
साइकिल पेशगी	79,872	साइकिल पेशगी		70,800
पंखा पेशगी	22,116	पंखा पेशगी		10,400
भवन निर्माण पेशगी	23,89,221	भवन निर्माण पेशगी		38,35,582
त्यौहार पेशगी	5,65,000	त्यौहार पेशगी		5,58,452
बाढ़ पेशगी	5,400	बाढ़ पेशगी		
स्थानांतरण पर यात्रा भत्ता/वेतन पेशगी	36,946	स्थानांतरण पर यात्रा भत्ता/वेतन पेशगी		71,594
स्थायी पेशगी (37,88,701)	200	स्थायी पेशगी (56,87,878)		6,800
	निधि			
जी० पी० एफ०	2,51,33,568	जी० पी० एफ०		
		चालू लेखा	54,79,620	
		टी/39 लेखा	71,41,881	1,01,21,501
सी० पी० एफ०	18,37,005	सी० पी० एफ०		
		चालू लेखा	3,00,342	
		टी/39 लेखा	2,12,739	5,13,081
				(1,31,34,582)
	जमा			
बयाना धन और सुरक्षा जमा	8,10,691	बयाना धन और सुरक्षा जमा		3,27,113
जमानत जमा	1,68,849	जमानत जमा		96,865
अन्य जमा	8,51,259	अन्य जमा		6,84,234
सामूहिक बीमा योजना	12,17,258	सामूहिक बीमा योजना		14,73,719
(30,48,050)		(25,81,931)		
	जी० पी० एफ०/सी० पी० एफ०/निवेश			
निधि का टी/39 खाते में स्थानांतरण	84,00,00	चालू खाता टी 39 खाता		
		जी० पी० एफ०-निवेश		25,00,000
		निधि का टी 39 खाते में स्थानांतरण		84,00,000
उचंत	1,49,680	उचंत		1,50,201
अल्पकालिक निवेश	1,99,00,000	अल्पकालिक निवेश		3,49,00,000
(2,84,49,680)		(4,34,50,201)		
प्रधानमंत्री राहत कोष	21,083	प्रधान मंत्री राहत कोष		1,619
जी० पी० एफ०/सी० पी० एफ० विप्रेषण	2,40,732	जी० पी० एफ०/ सी० पी० एफ० विप्रेषण		2,40,732
पी० एल० आई०/ एल० आई० सी० विप्रेषण	87,537	पी० एल० आई०/ एल० आई० सी० विप्रेषण		96,775
विविध विप्रेषण	56,183	विविध विप्रेषण		70,161
				3,693
उपकार्यालय विप्रेषण	36,58,965	उपकार्यालय विप्रेषण		43,52,966
				10,296
आयकर विप्रेषण	19,59,850	आयकर विप्रेषण		19,24,090
मृत्यु राहत योजना	37,448	मृत्यु राहत योजना		57,595
टी० सी० एस० विप्रेषण	3,79,196	टी० सी० एस० विप्रेषण		3,52,932
आवधिक विप्रेषण	12,94,27,908	आवधिक विप्रेषण		12,94,27,908
(13,58,68,902)		(13,65,38,767)		
		रोकड़ बाकी		
		नकद और आते में	6,86,90,207	
		संचालन में निधि	48,20,000	
			(+) 25,00,000	
		टी 39 में शेष	1,05,13,333	
	68,88,40,194	(8,6523,540)		68,88,40,194

ह०
मुख्य लेखा अधिकारी
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्

ह० सचिव

परिशिष्ट 'क'

व्यावसायिक शिक्षा संगठनों को सहायता की योजना

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् ने शिक्षा और शैक्षिक नवाचारों के क्षेत्र में स्वैच्छिक प्रयासों के महत्व को हमेशा ही मान्यता दी है । देश में शिक्षा रूपान्तरण के संबंध में व्यावसायिक शिक्षा संगठनों का संस्थाओं और अध्यापकों/शिक्षकों के साथ सम्पर्क बनाए रखना एवं उत्प्रेरक का कार्य करता है । इस बात को ध्यान में रखकर परिषद्, शिक्षा एवं समाज कल्याण मंत्रालय में प्रचालित योजना के अनुरूप, पिछले कुछ वर्षो से व्यावसायिक शिक्षा संगठनों को वित्तीय सहायता देने की योजना चलाती आ रही है ।

यह योजना फिलहाल जिस रूप में है, उसके मुख्य मुद्दे इस प्रकार है:–

1.उद्देश्य

योजना के मुख्य उद्देश्य इस प्रकार है :

(i) शिक्षा और विशेषकर स्कूल शिक्षा के सुधार के लिए स्वैच्छिक प्रयासों को न सिर्फ बरकरार रखना बल्कि उन्हें बढ़ावा भी देना ।

(ii) व्यावसायिक किस्म की उच्च कोटि की पत्रिकाओं को प्रोत्साहन देना, जिससे शैक्षिक नवाचारों के प्रचार–प्रसार में सहायता हो सके ।

(iii) स्वैच्छिक संगठनों के माध्यम से शिक्षा में विस्तार कार्य को बढ़ावा देना ।

2. पात्रता की शर्तें

(क) संगठन

(1) कोई भी व्यावसायिक शिक्षा संगठन (पी० ई० ओ०) इस योजना के अंतर्गत एन०सी०ई०आर०टी० अनुदान लेने का पात्र होगा यदि–

(क) सोसाइटी पंजीकरण अधिनियम (1860 का अधिनियम) के अंतर्गत पंजीकृत सोसाइटी है या

(ख) फिलहाल लागू विधि के अंतर्गत पंजीकृत पब्लिक ट्रस्ट है या

(ग) शैक्षिक गतिविधियों के संचालन और प्रोन्नति में रत कोई नामी सरकारी संगठन है ।

राज्य सरकार या स्थानीय निकाय द्वारा काम में लगाया गया या राज्य विधायिका के अधिनियम के अन्तर्गत या राज्य सरकार के प्रस्ताव के द्वारा स्थापित संगठन, इस योजना के अन्तर्गत सहायता का हकदार नहीं है ।

(2) स्कूल शिक्षा के सुधार के लिए राष्ट्रीय/क्षेत्रीय स्तर पर काम कर रहा है । केवल राज्य स्तर पर काम कर रहे पी० ई० ओ० से प्राप्त आवेदनों पर केवल विशेष मामलों में, पर्याप्त निधि उपलब्ध होने पर, गौर किया जा सकता है ।

(3) धर्म, वर्ग, जाति, लिंग और भाषा के भेदभाव के बिना, भारत के सभी नागरिकों के लिए खुला हो ।

(4) अनुदान प्राप्त करने के लिए राज्य सरकार द्वारा मान्यता अनिवार्य होने की स्थिति में यह मान्यता प्राप्त हो ।

(5) इसकी प्रबंध समिति उचित रूप से गठित हो जिसके कर्त्तव्य और भूमिकाएं, लिखित संविधान में स्पष्ट रूप से परिभाषित की गई हों ।

(6) योजना के अन्तर्गत, अनुदान सहायता के लिए आवेदन की तिथि से पहले कम से कम एक वर्ष तक शैक्षिक कार्यकलापों में रत रहा हो ।

(7) आवेदन की तिथि पर इसके कम से कम 50 सदस्य हों ।

(8) किसी व्यक्ति या व्यक्तियों के समूह के लाभ के लिए न चलाया जा रहा हो ।

(ख) गतिविधियां

(1) योजना के अन्तर्गत एन०सी०ई०आर०टी० द्वारा सामान्यतः निम्नलिखित प्रकार की गतिविधियां समर्थित की जाएंगी :

(क) पी० ई० ओ० के वार्षिक सम्मेलन, यदि वे किसी ऐसे राष्ट्रीय शैक्षिक मामले से संबंधित प्रकरण पर हों, जिसमें एन०सी०ई०आर०टी० की रुचि हो या जो एन०सी०ई० आर०टी० की कार्य में सहायक हो और एन०सी०ई० आर०टी० के उद्देश्यों की पूर्ति में लाभकारी हो।

(ख) व्यावसायिक पत्रिकाओं सहित शैक्षिक साहित्य का निर्माण, किन्तु पाठ्यपुस्तक सामग्री को छोड़कर ।

(ग) शैक्षिक प्रदर्शनियां, यदि उनका शैक्षिक नवाचारों या स्थानीय प्रवृत्ति के अन्य शैक्षिक विकासों से संबंध हो ।

(2) निम्नलिखित के लिए कोई अनुदान नहीं दिया जाएगा :

(क) संगोष्ठियां, कार्यशालाएं, विशेषकर इस प्रकार की जैसी कि एन०सी०ई०आर०टी० द्वारा आयोजित की जा सकती हैं या की जा रही हैं ।

(ख) अनुसंधान परियोजनाएं ।

3. अनुदान का परिमाण

संगठनों की, एन०सी०ई०आर०टी० पर अतिनिर्भरता दूर करने के

लिए इस योजना के अंतर्गत वित्तीय सहायता, नीचे दिए अनुसार, साझे के आधार पर ही दी जाएगी :

(1) सामान्यतः एन०सी०ई०आर०टी० का अनुदान, वर्ष में की गई गतिविधियों के व्यय के 60 प्रतिशत से अधिक नहीं होगा।

(2) व्यय का शेष 40 प्रतिशत, संगठनों द्वारा, अन्य संगठनों से प्राप्त अनुदानों या बिक्री से आय, पत्रिकाओं के मामले में चन्दे या विज्ञापनों जैसे अन्य स्रोतों से जुटाना होगा । यदि इन स्रोतों से हुई आय, खर्चे के 40 प्रतिशत से बढ़ जाती है तो परिषद् का हिस्सा उसी हिसाब से कम कर दिया जाएगा ।

(3) यदि किसी कारण से किसी वर्ष में परिषद् का अनुदान, वास्तविक खर्च के 60 प्रतिशत की मान्य राशि से अधिक हो जाता है या अन्य स्रोतों से प्राप्त आय में कमी हो जाती है, इनमें से जो भी कम हो, तो अधिक दी गई राशि वापिस ली जा सकती है या अगले वर्ष के अनुदान में समायोजित की जा सकती है।

उदाहरण

यदि किसी गतिविधि पर वास्तविक व्यय रु० 1,700/– हो और एन०सी०ई०आर०टी० का अनुदान रु० 1,500/– तथा अन्य स्रोतों से आय रु० 900/–

(क)	व्यय का 60 प्रतिशत	रु० 1,020.00
(ख)	व्यय की, अन्य स्रोतों से प्राप्त आय में कमी (1700–900)	रु० 800.00
	वसूली की राशि	रु० 1,500.00–800.00
	(अनुदान– (क) और (ख) में से जो देय है)	रु० 700.00

4. आवेदन की प्रक्रिया

(1) पी० ई० ओ० को अपने आवेदन, इस कार्य के लिए नियत आवेदन पत्रों में पूरी तरह से भर कर, दो प्रतियों में देने चाहिए।

(2) प्रत्येक कार्यक्रम या गतिविधि के लिए अलग–अलग आवेदन दिए जाने चाहिए ।

(3) प्रत्येक आवेदन के साथ निम्नलिखित दस्तावेज़ होने चाहिए :

(क) संस्था/संगठन का प्रोस्पैक्टस या इसके उद्देश्यों और गतिविधियों का संक्षिप्त विवरण ।

(ख) संगठन का संविधान ।

(ग) अद्यतन, उपलब्ध वार्षिक रिपोर्ट की प्रगति ।

(घ) पत्रिकाओं/अन्य सामग्रियों के प्रकाशन के लिए अनुदान के अनुरोधों के मामलों में पत्रिकाओं/पूर्व प्रकाशनों के पिछले अंकों की प्रतियां ।

(ङ) संगठन के पिछले वर्ष के लेखा परीक्षित खातों का ब्यौरा, जिसके साथ नीचे दिए गए प्रपत्र में, संस्था के अध्यक्ष/सचिव तथा लेखा परीक्षक (चार्टर्ड लेखाकार आदि) के हस्ताक्षरों सहित, उपयोग प्रमाण–पत्र भी हो।

मैंने . . . . .के खातों का, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् द्वारा . . . . .के लिए संस्वीकृत रु० . . . . .के अनुदान के संदर्भ में वाउचरों की सहायता से सत्यापन कर लिया है और प्रमाणित करता हूं कि वे सही हैं और जिस कार्य के लिए अनुदान संस्वीकृत किया गया था उसी कार्य के लिए अनुदान का उपयोग किया गया है ।

प्रत्येक गतिविधि, जिसके लिए अनुदान दिया गया है, के लिए ऐसे ही प्रपत्र में अलग–अलग उपयोग प्रमाणपत्र और/या व्यय का विवरण देना होगा।

ऊपर बताए गए दस्तावेजों के अभाव में किसी भी अनुदान की संस्वीकृति नहीं की जा सकती ।

5. सामान्य

(1) पत्रिकाओं के प्रकाशन के मामले में, पी० ई० ओ० के लिए, एन०सी०ई०आर०टी० का विज्ञापन निःशुल्क निकालना अनिवार्य होगा ।

(2) वार्षिक सम्मेलनों के लिए अनुदान के मामले में, संगठन को एन०सी०ई०आर०टी० के किसी प्रतिनिधि को सम्मेलन के साथ सम्बद्ध करना चाहिए ।

(3) पूरी तरह से या काफी हद तक अनुदान की राशि से प्राप्त की गई परिसम्पत्तियों का लेखाजोखा, संस्था/संगठन को रखना होगा। ऐसी परिसम्पत्तियों का, एन०सी०ई०आर०टी० की पूर्व अनुमति के बिना न तो निपटारा ही किया जा सकेगा और न ही किसी ऐसे कार्य के लिए उपयोग किया जा सकेगा जो अनुदान की गई गतिविधि से हट कर हो । यदि किसी संस्था/संगठन का किसी समय वजूद ही खत्म हो जाए तो ऐसी सम्पत्तियां एन०सी०ई०आर०टी० के पास चली जाएंगी ।

(4) लेखा खाते और समर्थक दस्तावेज, भारत के नियंत्रक और महालेखा परीक्षक द्वारा उनको सुविधानुसार नमूना परीक्षण के लिए उपलब्ध होने चाहिए ।

(5) यदि एन०सी०ई०आर०टी० के पास ऐसा विश्वास करने के लिए उचित कारण हो कि संस्वीकृत राशि का उपयोग अनुमोदित कार्य के लिए नहीं किया जा रहा, तो अनुदान की राशि की वसूली की जा सकती है और भविष्य के लिए अनुदान बंद किया जा सकता है ।

(6) एन०सी०ई०आर०टी० द्वारा अनुमोदित और समर्थित कार्यक्रमों के संचालन में संगठन को बेहद कम खर्ची बरतनी चाहिए ।

(7) अनुदान के लिए आवेदन, सचिव, एन०सी०ई०आर०टी० को देने चाहिए ।

पत्रिकाओं के प्रकाशन के लिए 1987–88 में व्यावसायिक शिक्षा संगठनों को दिया गया अनुदान

क्र०सं०	संगठन का नाम	पत्रिका का नाम	स्वीकृत राशि
1	2	3	4
1.	गणित अध्यापन सुधार संघ जगद्बंधु संस्थान कलकत्ता–700019	'इंडियन जर्नल आफ मैथेमेटिक्स टीचिंग'	रु० 4,000.00
2.	भारतीय भौतिकी शिक्षक संघ, 2ए/229, आजाद नगर, कानपुर–208002	'फिज़िक्स टीचर्स'	रु० 4,000.00
3.	शैक्षिक अनुसंधान तथा विकास संस्था, 46, हरि नगर, गौरी रोड, बड़ौदा–390007	'पर्स्पेक्टिव इन एजुकेशन'	रु० 5,000.00
4.	भारतीय गणित अध्यापक संघ, टी नगर, मद्रास–600017	'मैथेमैटिक्स टीचर इंडिया'	रु० 4,000.00
5.	भारतीय खेल वैज्ञानिक एवं शारीरिक शिक्षा संघ, नेताजी सुभाष राष्ट्रीय खेल संस्थान, पटियाला–147001	तीसरे सम्मेलन के कार्यवृत्त का प्रकाशन	रु० 10,000.00
6.	एस० आई० टी० यू० शैक्षिक अनुसंधान परिषद, 3, फर्स्ट ट्रस्ट लिंक स्ट्रीट, मदवैलिफ्फकम, मद्रास–28	'एक्स्पैरीमेंट्स इन एजुकेशन'	रु० 3,000.00

1987–88 में सम्मेलन/संगोष्ठियां/कार्यशालाएं आयोजित करने के लिए परिषद् द्वारा व्यावसायिक शिक्षा संगठनों को दिए गए अनुदान

क्र०सं०	संगठन का नाम	उद्देश्य	स्वीकृत राशि
1	2	3	4
1.	गणित अध्यापन सुधार संघ, जगद्बंधु संस्था, 25, फर्न रोड, कलकत्ता–700019	'राष्ट्रीय शिक्षा नीति के संदर्भ में स्कूलों में गणित शिक्षा सुधार में एन० जी० ओ० की भूमिका पर संगोष्ठी एवं चर्चा'	रु० 5,000.00
2.	डा० जाकिर हुसैन शैक्षिक एवं सांस्कृतिक संस्था, 2, विलिंग्डन क्रीसेंट, नई दिल्ली–110004	'राष्ट्रीय एकता को बढ़ावा देने में अभिनय कलाओं की भूमिका' पर तीन दिवसीय सम्मेलन ।	रु० 5,000.00
3.	भारतीय सामाजिक विज्ञान अकादमी, ईश्वर सरण डिग्री कालेज कैम्पस, इलाहाबाद–211004.	'शताब्दी के मोड़ पर भारतीय समाज–उद्देश्य एवं नीतियों पर बारहवीं सामाजिक विज्ञान कांग्रेस	रु० 10,000.00
4.	भारतीय विज्ञान कांग्रेस संघ, 14, बिरेश गुहा स्ट्रीट कलकत्ता–700017	'विज्ञान लेखन पर कार्यशाला'	रु० 5,000.00
5.	गांधी विद्या मंदिर, सरदार शहर (राज०)	'विकास के लिए ग्रामीण शिक्षा पर राष्ट्रीय कार्यशाला'	रु० 5,000.00
6.	चिकित्सालय प्रशासन अकादमी, चिकित्सालय प्रशासन विभाग, अ० भा० आयुर्विज्ञान संस्थान, अंसारी नगर, नई दिल्ली–110029	'चिकित्सालय में मानव संसाधन विकास पर राष्ट्रीय कार्यशाला'	रु० 5,000.00

परिशिष्ट–ख

राज्यों में क्षेत्र सलाहकारों के पते

		दूरभाष	
		कार्यालय	निवास
1.	क्षेत्र सलाहकार (एन० सी० ई० आर० टी०) 1–बी, चंद्रा कालोनी समर्पण फ्लैट्स के नजदीक, ला कालेज के पीछे, अहमदाबाद–380006	445992	445992
2.	क्षेत्र सलाहकार (एन० सी० ई० आर० टी०) 555–ई, मम्फोर्ड गंज, इलाहाबाद–211002	52212	4039
3.	क्षेत्र सलाहकार (एन० सी० ई० आर० टी०) 621, 80 फुट मार्ग, II ब्लाक, राजाजी नगर, बंगलौर–560010	350006	–
4.	क्षेत्र सलाहकार (एन० सी० ई० आर० टी०) एम आई जी– 161, सरस्वती नगर, भोपाल–462003	64465	76014
5.	क्षेत्र सलाहकार (एन० सी० ई० आर० टी०) होमी भाभा होस्टल, आर सी ई कैम्पस, भुवनेश्वर–751007	50516	52224
6.	क्षेत्र सलाहकार (एन० सी० ई० आर० टी०) पी–23, सी आई टी रोड (स्कीम 55) कलकत्ता–700014	245310	361510
7.	क्षेत्र सलाहकार (एन० सी० ई० आर० टी०) कोठी नं० 23, सैक्टर 8–ए चण्डीगढ़–160008	26923	26923
8.	क्षेत्र सलाहकार (एन० सी० ई० आर० टी०) एनारंगी रोड गुवाहाटी–781001	87003	—
9.	क्षेत्र सलाहकार (एन० सी० ई० आर० टी०) अवंती नगर, बशीर बाग हैदराबाद	235878	234895
10.	क्षेत्र सलाहकार (एन० सी० ई० आर० टी०) बी–55, यश पथ, तिलक नगर जयपुर–302004	40265	40265
11.	क्षेत्र सलाहकार (एन० सी० ई० आर० टी०) 64, 1 एवेन्यू, अशोक नगर मद्रास–600083	428254	459139
12.	क्षेत्र सलाहकार (एन० सी० ई० आर० टी०) कंकर बाग, पत्रकार नगर पटना–800016	53243	53243

13.	क्षेत्र सलाहकार (एन० सी० ई० आर० टी०) 128/2 कोठरुड कर्वे मार्ग पुणे–411029	447314	447314
14.	क्षेत्र सलाहकार (एन० सी० ई० आर० टी०) बायस रोड, लैटुमुखरा शिलांग–783003	26317	–
15.	क्षेत्र सलाहकार (एन० सी० ई० आर० टी०) हिमरस, सर्कुलर रोड, शिमला–171001	4548	4548
16.	क्षेत्र सलाहकार (एन० सी० ई० आर० टी०) 87, रावलपुरा श्रीनगर–190005	31490	31490
17.	क्षेत्र सलाहकार (एन० सी० ई० आर० टी०) एस आई ई कैम्पस डाकखाना–पूजापुरा त्रिवेन्द्रम–695012	64389	64948

1987-88

परिशिष्ट—ग 1987—88 के लिए रा० शै० अनु० और प्र० परिषद् की समितियां

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् के सदस्य (सामान्य सभा)

(परिषद के नियमों के नियम 3 के अंतर्गत)

1. शिक्षा मंत्री अध्यक्ष—पदेन	1. श्री पी० वी० नरसिंह राव, केन्द्रीय मानव संसाधन विकास मंत्री, शास्त्री भवन नई दिल्ली ।
2. अध्यक्ष, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग—पदेन	2. प्रो० यशपाल, अध्यक्ष, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, बहादुर गढ़ जफर मार्ग, नई दिल्ली ।
3. सचिव, शिक्षा—मंत्रालय—पदेन	3. श्री अनिल बोर्दिया, सचिव, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, शास्त्री भवन, नई दिल्ली ।
4. भारत सरकार द्वारा प्रत्येक क्षेत्र के लिए एक के आधार पर मनोनीत विश्वविद्यालयों के चार कुलपति	4. प्रो० वी० जी० भिडे, कुलपति, पूना विश्वविद्यालय, पुणे ।
	5. डा० एन० एस० बोस, कुलपति, 'विश्वभारती' विश्वविद्यालय, शांतिनिकेतन—731235
	6. डा० एम० एस० बाल, कुलपति, गुरु नानक विश्वविद्यालय, अमृतसर
	7. प्रो० वी० सी० कुलंदैस्वामी, कुलपति, अन्ना विश्वविद्यालय, मद्रास
5. प्रत्येक राज्य सरकार/संघशासित प्रदेश का एक—एक प्रतिनिधि विधायक जो राज्य/संघशासित प्रदेश का शिक्षा मंत्री (या उसका प्रतिनिधि) होना चाहिए और दिल्ली का मुख्य कार्यकारी पार्षद (या उनका प्रतिनिधि)	8. शिक्षा मंत्री, आंध्रप्रदेश, सचिवालय भवन, हैदराबाद
	9. शिक्षा मंत्री, असम सचिवालय भवन, गुवाहाटी
	10. शिक्षा मंत्री, बिहार, नया सचिवालय, पटना ।
	11. शिक्षा मंत्री, गुजरात सरकार, ब्लाक नं० 1 सचिवालय, गांधीनगर—382010
	12. शिक्षा मंत्री, हरियाणा सरकार, हरियाणा सिविल सचिवालय, 56/4, चंडीगढ़—160001
	13. शिक्षा मंत्री, हिमाचल प्रदेश, शिमला—171002
	14. शिक्षा मंत्री, जम्मू व कश्मीर सरकार, श्रीनगर
	15. शिक्षा मंत्री, केरल सरकार, अशोका नेथेन्कोएड, त्रिवेन्द्रम
	16. शिक्षा मंत्री, मध्यप्रदेश, भोपाल
	17. शिक्षा मंत्री, महाराष्ट्र सरकार, मुख्य मंत्रालय, बम्बई
	18. शिक्षा मंत्री, मणिपुर सरकार, मणिपुर सचिवालय ।
	19. शिक्षा मंत्री, मेघालय सरकार मेघालय सचिवालय, शिलांग
	20. शिक्षा मंत्री, कर्नाटक सरकार, विधान सौंध, बंगलौर
	21. शिक्षा मंत्री, नागालैण्ड सरकार, कोहिमा
	22. शिक्षा मंत्री, उड़ीसा सरकार, उड़ीसा सचिवालय, भुवनेश्वर
	23. शिक्षा मंत्री, पंजाब सरकार, चण्डीगढ़
	24. शिक्षा मंत्री, राजस्थान सरकार, सचिवालय, जयपुर
	25. शिक्षा मंत्री, तमिलनाडु सरकार, पोर्ट सेंट जार्ज, मद्रास
	26. शिक्षा मंत्री, त्रिपुरा सरकार, सिविल सचिवालय, अगरतला
	27. शिक्षा मंत्री, सिक्किम सरकार, सचिवालय ताशिलिंग, गंगटोक
	28. शिक्षा मंत्री, उत्तर प्रदेश सरकार, लखनऊ
	29. शिक्षा मंत्री, पश्चिम बंगाल सरकार, राइटर्स बिल्डिंग, कलकत्ता
	30. शिक्षा मंत्री, अरुणाचल प्रदेश सरकार, ईटानगर—791111
	31. श्री जगप्रवेश चन्द्र, मुख्य कार्यकारी पार्षद, दिल्ली प्रशासन, दिल्ली
	32. शिक्षा मंत्री, गोआ, दमन और दीव सरकार, सचिवालय, पणजी (गोआ)
	33. शिक्षा मंत्री, मिजोरम सरकार, ऐजाबल
	34. शिक्षा मंत्री, असेम्बली सचिवालय, विक्टर साइमोनल स्ट्रीट, पांडिचेरी
6. कार्यकारिणी समिति के वे सभी सदस्य जो ऊपर सम्मिलित नहीं हैं	35. श्रीमती कृष्णा साही, राज्य मंत्री, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, शास्त्री भवन, नई दिल्ली

36. डा० पी० एल० मल्होत्रा, निदेशक, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् नई दिल्ली
37. प्रो० डी० एस० कोठारी, कुलाधिपति, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नया महरौली मार्ग, नई दिल्ली ।
38. डा० सी० एल० आनंद, शिक्षा प्रोफेसर, उत्तर–पूर्वी पर्वतीय विश्वविद्यालय, लोअर लच्छेमेर, शिलोंग–793001
39. श्री एम० एल० बब्बर, प्रिंसिपल, एन० डी० एम० सी० नवयुग स्कूल, सरोजनी नगर, नई दिल्ली ।
40. श्री डी० पी० सिंह, प्रिंसिपल, सिद्धार्थ स्कूल, पो० रामगढ़ कैंट, जिला हजारीबाग (बिहार) पिन–829122
41. डा० ए० के० जलालुद्दीन, संयुक्त निदेशक, रा० शै० अनु० और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली
42. प्रो० के० एन० सक्सेना, अध्यक्ष, डी० ई० पी० सी० और जी, रा० शै० अनु० प्र० परिषद् नई दिल्ली
43. डा० ए० के० शर्मा, प्रिंसिपल, क्षेत्रीय शिक्षा कालेज, मैसूर–590006
44. डा० जी० एल० अरोड़ा, रीडर, सामाजिक विज्ञान एवं मानविकी शिक्षा विभाग, रा० शै० अनु० प्र० परिषद्, नई दिल्ली
45. श्री वाई० एन० चतुर्वेदी, संयुक्त सचिव, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, शास्त्री भवन, नई दिल्ली
46. श्री एल० एस० नारायणन, वित्तीय सलाहकार, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, शास्त्री भवन, नई दिल्ली

7. (क) अध्यक्ष, केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, नई दिल्ली (ख) आयुक्त, केन्द्रीय विद्यालय संगठन, नई दिल्ली– पदेन
   (ग) निदेशक, केन्द्रीय स्वास्थ्य शिक्षा ब्यूरो (स्वास्थ्य सेवा महानिदेशक), नई दिल्ली–पदेन
   (घ) उपमहानिदेशक, कृषि शिक्षा प्रभारी, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद्, कृषि मंत्रालय, नई दिल्ली–पदेन
   (ङ) प्रशिक्षण निदेशक, प्रशिक्षण तथा रोजगार महानिदेशालय श्रम मंत्रालय, नई दिल्ली–पदेन
   (च) योजना आयोग के शिक्षा विभाग के प्रतिनिधि नई दिल्ली–पदेन

47. अध्यक्ष, केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, 17–बी, इन्द्रप्रस्थ एस्टेट नई दिल्ली
48. आयुक्त, केन्द्रीय विद्यालय संगठन, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली
49. निदेशक, केन्द्रीय स्वास्थ्य शिक्षा ब्यूरो (स्वास्थ्य सेवा महानिदेशालय) निर्माण भवन, नई दिल्ली
50. उप महानिदेशक, कृषि शिक्षा प्रभारी, भा० कृ० अनु० परिषद्, कृषि मंत्रालय डा० राजेन्द्र प्रसाद मार्ग, नई दिल्ली
51. प्रशिक्षण निदेशक, प्रशिक्षण तथा रोजगार महानिदेशालय श्रम मंत्रालय, श्रम शक्ति भवन, नई दिल्ली
52. शिक्षा सलाहकार, योजना आयोग, योजना भवन, संसद मार्ग, नई दिल्ली–110001
53. डा० वी० जी० कुलकर्णी, निदेशक, होमी भाभा विज्ञान शिक्षा केन्द्र टाटा आधारभूत अनुसंधान संस्थान होमी भाभा मार्ग, कोलाबा, बम्बई–400005
54. श्री रज़ा अल्ला बख़्श, मुख्याध्यापक, पंचायत समिति प्रारंभिक स्कूल, प्रकाश नगर, होल्मसपैट, कुडप्पा (आं० प्र०)
55. श्री डेविड सैरिंग लेप्चा, मुख्याध्यापक, नूमपेटैन प्राथमिक स्कूल पो० मायम, उत्तर सिक्किम, सिक्किम ।
56. श्री एस० सी० बैहड़, निदेशक, एस० सी० ई० आर० टी० जहांगीराबाद, भोपाल
57. श्रीमती राधिका हरज़ेरगर, निदेशक, कृषि वैली स्कूल, हार्सेली हिल्स, जिला चित्तूर (आं० प्र०)
58. श्रीमती रजनी कुमार, प्रिंसिपल, स्प्रिंगडैल्स स्कूल, पूसा रोड, नई दिल्ली

विशेष आमंत्रित

59. सचिव, भारतीय स्कूल प्रमाण–पत्र परीक्षा परिषद्, प्रगति हाउस, तीसरा तल 4/7, नेहरू प्लेस नई दिल्ली
60. श्री ओ० पी० केलकर, सचिव, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली ।

कार्यकारिणी समिति के सदस्य

1. परिषद् के अध्यक्ष, जो कार्यकारिणी समिति के पदेन अध्यक्ष होंगे

   1. श्री० पी० वी० नरसिंह राव, मानव संसाधन विकास मंत्री, शास्त्री भवन, नई दिल्ली ।

2. (क) शिक्षा मंत्रालय में राज्य मंत्री जो कार्यकारिणी समिति के पदेन उपाध्यक्ष होंगे

   2. (I) श्रीमती कृष्णा साही, मानव संसाधन विकास मंत्री, शास्त्री भवन, नई दिल्ली ।
   (II) श्री एल० पी० शाही, मानव संसाधन विकास मंत्री, राज्य मंत्री, शास्त्री भवन, नई दिल्ली

   (ख) शिक्षा मंत्रालय में उपमंत्री, रा० शै० अनु० प्र० परिषद् के अध्यक्ष द्वारा मनोनीत

   3.

(ग) परिषद् के निदेशक (घ) शिक्षा मंत्रालय के सचिव–पदेन	4. डा० पी० एल० मल्होत्रा, निदेशक, रा० शै० अनु० प्र० परिषद्, नई दिल्ली 5. श्री अनिल बोर्दिया, सचिव, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, शास्त्री भवन, नई दिल्ली
3. अध्यक्ष, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग–पदेन	6. प्रो० यश पाल, अध्यक्ष, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, बहादुरशाह जफर मार्ग नई दिल्ली
4. स्कूल शिक्षा में अनुभूत रुचि रखने वाले शिक्षाविद् (जिनमें से दो स्कूल अध्यापक होने चाहिए) अध्यक्ष द्वारा मनोनीत	7. प्रो० डी० एस० कोठारी, कुलपति जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली 8. डा० सी० एल० आनंद, शिक्षा प्रोफेसर, उत्तर–पूर्वी पर्वतीय विश्वविद्यालय, लोअर लच्छूमौर, शिलौंग –793001 (मेघालय) 9. श्री एम० एल० बब्बर, प्रिंसिपल, एन० डी० एम० सी० नवयुग स्कूल, सरोजनी नगर, नई दिल्ली 10. श्री डी० पी० सिंह, प्रिंसिपल, सिद्धार्थ स्कूल, पो० रामगढ़ कैंट, जि० हज़ारीबाग (बिहार) पिन–829122
5. परिषद् के संयुक्त निदेशक	11. डा० ए० के० जलालुद्दीन, संयुक्त निदेशक, रा० शै० अनु० और प्र० परिषद्, नई दिल्ली
6. अध्यक्ष द्वारा मनोनीत, परिषद् के संकाय के तीन सदस्य, जिनमें से कम से कम दो, प्रोफेसर तथा विभाग अध्यक्षों के स्तर के होने चाहिए,	12. प्रो० के० एन० सक्सेना, अध्यक्ष, डी० ई० पी० सी० एंड जी०, एन० सी० ई० आर० टी, नई दिल्ली 13. डा० ए० के० शर्मा० अध्यक्ष, डी० टी० एस० एस० ई० एंड एस० एस, एन० सी० ई० आर० टी० नई दिल्ली 14. डा० जी० एल० अरोड़ा, रीडर, डी० ई० एस० एस० एच, रा० शै० अनु० प्र० परिषद्, नई दिल्ली
7. शिक्षा मंत्रालय के एक प्रतिनिधि	15. श्री वाई० एन० चतुर्वेदी, संयुक्त सचिव (स्कूल), मानव संसाधन विकास मंत्रालय, शास्त्री भवन, नई दिल्ली
8. वित्त मंत्रालय से एक प्रतिनिधि, जो परिषद् का वित्तीय सलाहकार होगा	16. श्री एल० एस० नारायणन, वित्तीय सलाहकार, रा० शै० अनु० प्र० परिषद् मानव संसाधन विकास मंत्रालय, शास्त्री भवन, नई दिल्ली 17. श्री ओ० पी० केलकर, सचिव, रा० शै० अनु० प्र० परिषद्, नई दिल्ली ।

वित्त समिति के सदस्य
(परिषद् के नियम 62 के अधीन)
(25–12–1989 तक वैध)

1. निदेशक, रा० शै० अनु० प्र० परिषद्, (पदेन) 2. वित्तीय सलाहकार (पदेन)	1. डा० पी० एल० मल्होत्रा, निदेशक, रा० शै० अनु० प्र० परि० नई दिल्ली । 2. श्री एल० एस० नारायणन, वित्तीय सलाहकार, रा० शै० अनु० प्र० परि०, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, शास्त्री भवन, नई दिल्ली ।
3. संयुक्त सचिव (स्कूली शिक्षा) मानव संसाधन विकास मंत्रालय	3. श्री वाई० एन० चतुर्वेदी, संयुक्त सचिव (स्कूल), मानव संसाधन विकास मंत्रालय (शिक्षा विभाग) शास्त्री भवन, नई दिल्ली । 4. प्रो० एस० के० खन्ना सचिव, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, बहादुरशाह जफ़र मार्ग नई दिल्ली । 5. डा० वी० पी० दत्त, अध्यक्ष, चीनी व जापानी अध्ययन विभाग, कला संकाय भवन, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली ।
4. सचिव, रा० शै० अनु० प्र० परिषद्, सदस्य आयोजक	6. श्री ओ० पी० केलकर, सचिव, रा० शै० अनु० प्र० परिषद्, नई दिल्ली ।

स्थापना समिति के सदस्य
(परिषद् के विनियम 10 के अधीन)

1. निदेशक, रा० शै० अनु० प्र० परि०, अध्यक्ष 2. संयुक्त निदेशक, रा० शै० अनु० प्र० परि०	1. डा० पी० एल० मल्होत्रा, निदेशक, रा० शै० अनु० प्र० परि० अध्यक्ष । 2. डा० ए० के० जलालुद्दीन, संयुक्त निदेशक, रा० शै० अनु० प्र० परि० नई दिल्ली।
3. अध्यक्ष द्वारा मनोनीत, शिक्षा मंत्रालय से नामित व्यक्ति	3. श्री वाई० एन० चतुर्वेदी, संयुक्त सचिव (स्कूली शिक्षा) मानव संसाधन विकास मंत्रालय, शास्त्री भवन, नई दिल्ली ।
4. अध्यक्ष द्वारा मनोनीत चार शिक्षाविद्, जिनमें से कम से कम एक वैज्ञानिक हो	4. प्रो० एन० एस० बोस, कुलपति, विश्वभारती, शांतिनिकेतन (पश्चिमी बंगाल) 5. डा० के० वेंकट सुब्रमनियन, कुलपति, केन्द्रीय विश्वविद्यालय, 212 अन्नासलाई पांडिचेरी–605001

5. अध्यक्ष द्वारा मनोनीत क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय से एक प्रतिनिधि
6. अध्यक्ष द्वारा मनोनीत दिल्ली के राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान के एक प्रतिनिधि
7. परिषद् के शैक्षिक तथा गैर शैक्षिक स्टाफ में से विनिमय के परिशिष्ट में बताए गए अनुसार अपने-अपने वर्ग में से एक-एक चुनकर दो प्रतिनिधि
8. वित्तीय सलाहकार, रा० शै० अनु० प्र० परि०
9. सचिव, रा० शै० अनु० प्र० परि०

6. श्रीमती बी० ए० गांगुली, प्रिंसिपल, फूड क्राफ्ट संस्थान, शिवाजीनगर, पुणे-411005
7. श्री एन० बोहरा, सहायक कार्यक्रम समन्वयक, आर० सी० ई० भुवनेश्वर ।
8. प्रो० के० एन० सक्सेना, अध्यक्ष, डी० ई० पी० सी० और जी, रा० शै० अनु० प्र० परि०
9. श्री जे० एस० सक्सेना, रीडर, क्षेत्रीय शिक्षा कालेज, अजमेर ।
10. श्री एम० एस० बिष्ट, भंडारपाल, ग्रेड-1 रा० शै० अनु० प्र० परि० नई दिल्ली।
11. श्री एल० एस० नारायणन, वित्तीय सलाहकार, रा० शै० अनु० प्र० परि०, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, शास्त्री भवन, नई दिल्ली ।
12. श्री ओ० पी० केलकर सचिव – सदस्य आयोजक रा० शै० अनु० प्र० परि०

भवन एवं निर्माण समिति

(23-12-1989 तक वैध)

1.	निदेशक, रा० शै० अनु० प्र० परि० पदेन	अध्यक्ष	डा० पी० एल० मल्होत्रा, निदेशक, रा० शै० अनु० प्र० परि०
2.	संयुक्त निदेशक रा० शै० अनु० प्र० परि० पदेन	उपाध्यक्ष	डा० ए० के० जलालुदीन, संयुक्त निदेशक, रा० शै० अनु० प्र० परि०
3.	मुख्य इंजीनियर, के० लो० नि० वि० या उनका प्रतिनिधि	सदस्य	श्री बी० डी० तिवारी, मुख्य इंजीनियर (निर्माण) के० लो० नि० विभाग, रामकृष्णपुरम, नई दिल्ली ।
4.	वित्त मंत्रालय (निर्माण) सदस्य का एक प्रतिनिधि	सदस्य	श्री एच० एल० भाटिया, सहा० वित्त सलाहकार (निर्माण) वित्त मंत्रालय (निर्माण), निर्माण भवन, नई दिल्ली ।
5.	रा० शै० अनु० प्र० परि० के परामर्शदाता वास्तुकार	सदस्य	श्री आर० एस० कौशल वरिष्ठ वास्तुकार, के० लो० नि० वि०, एन डी जैड-IV, कमरा नं० 426, ए विंग, निर्माण भवन, नई दिल्ली ।
6.	परिषद के वित्तीय सलाहकार या उनका प्रतिनिधि	सदस्य	श्री एल० एस० नारायणन, वित्तीय सलाहकार, रा० शै० अनु० प्र० परि० मानव संसाधन विकास मंत्रालय
7.	शिक्षा मंत्रालय द्वारा नामित	सदस्य	श्री वाई० एन० चतुर्वेदी, संयुक्त सचिव (स्कूल) मानव संसाधन विकास मंत्रालय, शास्त्री भवन, नई दिल्ली ।
8.	प्रख्यात सिविल इंजीनियर	सदस्य	श्री आर० के० भंडारी मुख्य इंजीनियर, दि० वि० प्रा०, विकास मीनार इन्द्रप्रस्थ एस्टेट, नई दिल्ली ।
9.	प्रख्यात विद्युत इंजीनियर	सदस्य	श्री आर० डी० जान, मुख्य इंजीनियर, अंतरिक्ष विभाग, कावेरी भवन, एफ ब्लाक, नवांतल, केम्पागोडा रोड, बंगलौर-560009
10.	कार्यकारिणी समिति का एक सदस्य (समिति द्वारा मनोनीत)	सदस्य	प्रो० ए० के० शर्मा, अध्यक्ष डी० टी० ई० एस० ई और ई० एस० रा० शै० अनु० प्र० परि० नई दिल्ली ।

एन० सी० ई० आर० टी० की कार्यक्रम सलाहकार समिति

1. निदेशक, एन० सी० ई० आर० टी० — अध्यक्ष
2. संयुक्त निदेशक, एन० सी० ई० आर० टी० — उपाध्यक्ष
3. डा० जे० एन० जोशी, प्रोफेसर एंव डीन, शिक्षा विभाग पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़ ।
4. डा० आर० पी० नायर, प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, शिक्षा में स्नातकोत्तर अध्ययन एवं अनुसंधान विभाग, मैसूर विश्वविद्यालय, मानसगंगोत्री, मैसूर-570006
5. प्रो० आर० पी० पंचमुखी, निर्देशक, भारतीय शिक्षा संस्थान, 128/2, जे० पी० नायक पथ, कर्वे रोड से लगा हुआ, कोठरुड, पुणे-411019.
6. प्रो० आरती सेन, प्रिंसिपल, विनय भवन, विश्वभारती, शंतिनिकेतन-751285 (प० बंगाल) ।
7. प्रो० योगेन्द्र सिंह, सामाजिक तंत्र अध्ययन केन्द्र, सामाजिक विज्ञान स्कूल, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नया महरौली मार्ग, नई दिल्ली-110067.
8. निदेशक, राज्य शिक्षा संस्थान, पूजापुरा, त्रिवेन्द्रम-13 (केरल) ।

9. निदेशक, राज्य शिक्षा संस्थान, रायसड, अहमदाबाद (गुजरात) ।
10. निदेशक, राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, 6 माल एवेन्यू, लखनऊ-216001 (उ० प्र०) ।
11. प्रिंसिपल, राज्य शिक्षा संस्थान, मौलाना आज़ाद रोड, श्रीनगर-190001 (जम्मू कश्मीर) ।
12. प्रिंसिपल, राज्य शिक्षा संस्थान, अरुणाचल प्रदेश सरकार, पो० आ० छंगलैंड-792120, जिला टिरप (अ० प्र०)
13. अध्यक्ष, सामाजिक विज्ञान एवं मानविकी शिक्षा विभाग (डी० ई० एस० एस० एच०), एन० सी० ई० आर० टी०, नई दिल्ली-110016
14. डा० (कु०) एस० के० राम, प्रोफेसर, डी ई एस एस एच, एन० सी० ई० आर० टी, नई दिल्ली-110016
15. अध्यक्ष, विज्ञान एवं गणित शिक्षा विभाग (डी० ई० एस० एम०), एन० सी० ई० आर० टी, नई दिल्ली -110016
16. डा० के० वी० राव, अध्यक्ष, डी ई एस एम, एन० सी० ई० आर० टी, नई दिल्ली-110016
17. अध्यक्ष, स्कूल पूर्व एवं प्रारंभिक शिक्षा विभाग, (डी० पी० एस० ई० ई०), एन० सी० ई० आर० टी, नई दिल्ली-110016
18. डा० सी० जे० दासवानी, प्रोफेसर, डी० पी० एस० ई० ई०, एन० सी० ई० आर० टी, नई दिल्ली-16
19. अध्यक्ष, अध्यापक शिक्षा, विशेष शिक्षा और विस्तार सेवाएं विभाग (डी टी ई एस ई ई एस), एन० सी० ई० आर० टी, नई दिल्ली-16
20. डा० एन० के० जंगीरा, प्रोफेसर, डी० टी० ई० एस० ई० ई एस, एन० सी० ई० आर० टी, नई दिल्ली-16
21. अध्यक्ष, शिक्षा व्यावसायीकरण विभाग, डी० वी० ई, एन० सी० ई० आर० टी०, नई दिल्ली-16
22. डा० (श्रीमती) एस० पी० पटैल, प्रोफेसर, डी० वी० ई, एन० सी० ई० आर० टी, नई दिल्ली-16
23. अध्यक्ष, शिक्षा मनोविज्ञान, परामर्श एवं मार्गदर्शन विभाग, (डी० ई० पी० सी० जी०) एन० सी० ई० आर० टी, नई दिल्ली-16
24. डा० जे० एस० गौड़, प्रोफेसर, डी० ई० पी० सी० जी०, एन० सी० ई० आर० टी, नई दिल्ली-16
25. अध्यक्ष, मापन और मूल्यांकन, सर्वेक्षण तथा आंकड़ा संसाधन विभाग (एम ई एस डी पी), एन० सी० ई० आर० टी, नई दिल्ली-16
26. डा० ए० बी० एल० श्रीवास्तव, प्रोफेसर, डी एम ई एस डी पी, एन० सी० ई० आर० टी, नई दिल्ली-16
27. अध्यक्ष, क्षेत्र सेवाएं विस्तार और समन्वय विभाग (डी पी एस ई सी), एन० सी० ई० आर० टी, नई दिल्ली-16
28. डा० (कु०) इंदु सेठ, रीडर, डी वी एस ई सी, एन० सी० ई० आर० टी, नई दिल्ली-16
29. अध्यक्ष, कार्यशाला विभाग (डब्लू० डी०), एन० सी० ई० आर० टी, नई दिल्ली-16
30. डा० बी० एम० गुप्ता, रीडर, डब्लू० डी०, एन० सी० ई० आर० टी, नई दिल्ली-16
31. अध्यक्ष, प्रकाशन विभाग, एन० सी० ई० आर० टी, नई दिल्ली-16
32. अध्यक्ष, पुस्तकालय, प्रलेखन एवं सूचना विभाग, एन० सी० ई० आर० टी, नई दिल्ली-16
33. अध्यक्ष, नीति अनुसंधान नियोजन एवं प्रोग्रामन विभाग, एन० सी० ई० आर० टी, नई दिल्ली-16
34. संयुक्त निदेशक, केन्द्रीय शैक्षिक प्रौद्योगिकी संस्थान, एन० सी० ई० आर० टी, नई दिल्ली-16
35. डा० सी० एम० के० मिश्र, प्रोफेसर, सी आई ई टी, एन० सी० ई० आर० टी०, नई दिल्ली-16

36. प्रिंसिपल, क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय, मैसूर (कर्नाटक) ।

37. डा० सी० शेषाद्रि, प्रोफेसर, क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय, मैसूर (कर्नाटक) ।

38. प्रिंसिपल, क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय, भुवनेश्वर (उड़ीसा) –571007.

39. डा० एस० टी० वी० जी० आचार्युलु, शिक्षा के प्रोफेसर, क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय, भुवनेश्वर–571007 (उड़ीसा)

40. प्रिंसिपल, क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय, अजमेर (राजस्थान) ।

41. डा० (श्रीमती) अमृत कौर, प्रोफेसर क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय, अजमेर (राजस्थान) ।

42. प्रिंसिपल क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय, श्यामला हिल्स, भोपाल (म० प्र०) ।

43. डा० जे० एस० ग्रेवाल प्रोफेसर, क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय, श्यामला हिल्स, भोपाल (म० प्र०) ।

44. सचिव, एन० सी० ई० आर० टी, नई दिल्ली–16

45. डा० पी० एम० पटेल, प्रोफेसर प्रभारी, कार्यक्रम विभाग, एन० सी० ई० आर० टी, नई दिल्ली–16 संयोजक

शैक्षिक अनुसंधान एवं नवाचार समिति के सदस्य

1. निदेशक, राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, जहांगीराबाद, भोपाल (म० प्र०) ।
2. निदेशक, राज्य शिक्षा संस्थान, एम० एस० सदाशिव पेठ, कंटनोकर रोड, पुणे (महाराष्ट्र) ।
3. डा० एस० एन० सराफ, कुलपति, श्री सत्य साई उच्च अध्ययन संस्थान, प्रशांतिनिलयम–525134
4. डा० इकबाल नारायण सदस्य सचिव, भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद, 3 फिरोजशाह रोड नई दिल्ली–110001
5. डा० जोसेफ पस० जान, निदेशक, विज्ञान प्रौद्योगिकी प्रोन्नति विभाग, नया महरौली मार्ग, नई दिल्ली –16.
6. डा० बी० के० पस्सी, प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, शिक्षा विभाग इंदौर विश्वविद्यालय, इंदौर (म० प्र०) ।
7. डा० बी० एन० मुखर्जी, प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, कम्प्यूटर केन्द्र, भारतीय सांख्यिकी संस्थान, बैरकपुर रोड, कलकत्ता– 700035.
8. डा० वी० ईश्वर रेड्डी, निदेशक, सतत एवं प्रौढ़ शिक्षा विभाग, उस्मानिया विश्वविद्यालय, हैदराबाद (आँ० प्र०)
9. प्रो० के० पी० पाण्डे, प्रोफेसर शिक्षा एवं अध्यक्ष, काशी विद्यापीठ, वाराणसी – 221002.
10. डा० वी० वी० चिपलूनकर, आशीर्वाद, मुकुंद नगर, एपी 1 के सामने, जालना रोड, औरंगाबाद (महाराष्ट्र)– 431003.
11. प्रिंसिपल, क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय, अजमेर –305001.
12. प्रिंसिपल, क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय, श्यामला हिल्स, भोपाल – 460013.
13. प्रिंसिपल, क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय, भुवनेश्वर– 751007.
14. प्रिंसिपल, क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय, मैसूर– 570006.
15. डा० एस० आई० भारोप्पा, क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय, मैसूर – 570006.
16. डा० एस० सी० चतुर्वेदी, क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय, भुवनेश्वर – 751007.
17. श्री आर० के० भारतीय, क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय, अजमेर – 305001.
18. डा० पी० के० खन्ना, क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय, भोपाल – 460013.

एन० आई० ई० की अकादमिक समिति

1. निदेशक, एन. सी. ई. आर.. टी. । अध्यक्ष
2. संयुक्त निदेशक, एन. सी. ई. आर. टी. । उपाध्यक्ष
3. संयुक्त निदेशक, सी. आई. ई. टी., एन. सी. ई. आर. टी. ।

4. डीन (अनुसंधान), एन. सी. ई. आर. टी. ।
5. डीन (समन्वय), एन. सी. ई. आर. टी. ।
6. अध्यक्ष, विज्ञान और गणित शिक्षा विभाग (डी. ई. एस. एम.), एन०सी०ई०आर०टी०, नई दिल्ली– 16. ।
7. अध्यक्ष, सामाजिक विज्ञान और मानविकी शिक्षा विभाग (डी. ई. एस. एस. एच.), एन०सी०ई०आर०टी०, नई दिल्ली – 16. ।
8. अध्यक्ष, शिक्षा व्यावसायीकरण विभाग (डी. वी. ई.), एन०सी०ई०आर०टी० नई दिल्ली– 16. ।
9. अध्यक्ष, मापन मूल्यांकन, सर्वेक्षण और आंकड़ा संसाधन विभाग (डी. एम. ई. एस. व डी. पी.), एन०सी०ई०आर०टी०, नई दिल्ली– 16. ।
10. अध्यक्ष, स्कूल पूर्व एवं प्रारंभिक शिक्षा विभाग (डी. पी. एस. ई. ई.), एन०सी०ई०आर०टी०, नई दिल्ली– 16. ।
11. अध्यक्ष, शैक्षिक मनोविज्ञान परामर्श एवं मार्गदर्शन विभाग (डी. ई. पी. सी. और जी.), एन०सी०ई०आर०टी०, नई दिल्ली– 16. ।
12. अध्यक्ष, अध्यापक शिक्षा, विशेष शिक्षा और विस्तार सेवाएं विभाग (डी. टी. ई. एस. ई. ई. एस.) एन०सी०ई०आर०टी० नई दिल्ली– 16. ।
13. अध्यक्ष, नीति अनुसंधान, नियोजन एवं प्रोग्रामन विभाग (डी. पी. ई. पी. और पी.), एन०सी०ई०आर०टी०, नई दिल्ली – 16. ।
14. अध्यक्ष, कार्यशाला विभाग (डब्ल्यू० डी०), एन०सी०ई०आर०टी०, नई दिल्ली – 16. ।
15. अध्यक्ष, प्रकाशन विभाग, एन०सी०ई०आर०टी०, नई दिल्ली–16. ।
16. अध्यक्ष, क्षेत्र सेवाएं, विस्तार और समन्वय विभाग (डी. पी. एस. ई. सी.), एन०सी०ई०आर०टी०, नई दिल्ली – 16. ।
17. अध्यक्ष, पुस्तकालय, प्रलेखन और सूचना विभाग (डी. एल. डी. आई.), एन०सी०ई०आर०टी०, नई दिल्ली – 16. ।
18. डा० (कु0) एस० के० राम, प्रोफेसर, डी. ई. एस. एस. एच. ।
19. डा० के० वी० राव, प्रोफेसर, डी. ई. एस. एम. ।
20. डा० (श्रीमती) एस० पी० पटेल, प्रोफेसर, डी. वी. ई. ।
21. डा० ए० बी० एल० श्रीवास्तव, प्रोफेसर, डी. एम. ई. एस. और डी. पी. ।
22. डा० सी० जे० दासवानी, प्रोफेसर, डी. पी. एस. ई. ई. ।
23. डा० कुलदीप कुमार, प्रोफेसर, डी. ई. पी. सी. और जी. ।
24. डा० एन० के० जंगीरा, प्रोफेसर, डी. टी. ई. एस. ई. ई. एस. ।
25. प्रोफेसर प्रभारी, कार्यक्रम ।
26. डा० जे० एन० जोशी, प्रोफेसर एवं डीन, शिक्षा विभाग, पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़ ।
27. प्रो० योगेन्द्र सिंह, सामाजिक तंत्र अध्ययन केन्द्र, सामाजिक विज्ञान स्कूल, जे० एन० यू०, नई दिल्ली – 67. ।
28. डीन (अकादमिक), एन. सी. ई. आर. टी. ।
29. अध्यक्ष, आई. आर. एकक ।
30. अध्यक्ष, महिला अध्ययन एकक ।

31. अध्यक्ष, पत्रिका कक्ष ।

32. अध्यक्ष, पी. सी. ई. एकक ।

33. अध्यक्ष, नवोदय विद्यालय सेल ।

विभागीय सलाहकार बोर्ड

1. शिक्षा मनोविज्ञान परामर्श एवं मार्गदर्शन विभाग (डी. ई. पी. सी. जी.)
   1. अध्यक्ष, डी ई पी सी जी संयोजक
   2. डा० कुलदीप कुमार, प्रोफेसर, डी. ई. पी. सी. जी.
   3. डा० वी० के० सिंह, प्रोफेसर, डी. ई. पी. सी. जी.
   4. अध्यक्ष, डी. टी. ई. एस. ई. ई. एस.
   5. अध्यक्ष, डी. एम. ई. एस. डी. पी. ।
   6. अध्यक्ष, डी. वी. ई.
   7. डा० मेहरू डी० बंगाली, कुलपति, बंबई विश्वविद्यालय, बंबई – 400020.
   8. प्रो० (श्रीमती) पूर्णिमा माथुर, अध्यक्ष, मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान विभाग, भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, हौज खास, नई दिल्ली– 110016.
2. अध्यापक शिक्षा, विशेष शिक्षा और विस्तार सेवाएं विभाग (डी. टी. ई. एस. ई. ई. एस.)
   1. अध्यक्ष, डी. टी. ई. एस. ई. ई. एस. संयोजक
   2. डा० एन० के० जंगीरा, प्रोफेसर, डी. टी. ई. एस. ई. ई. एस.
   3. डा० एल० आर० एन० श्रीवास्तव, प्रोफेसर, डी टी ई एस ई ई एस ।
   4. डा० एल० सी० सिंह, प्रोफेसर, डी टी ई एस ई ई एस ।
   5. अध्यक्ष, डी ई एस एस एच ।
   6. अध्यक्ष, डी ई एस एम ।
   7. अध्यक्ष, डी. ई. पी. सी. जी. ।
   8. अध्यक्ष, डी पी एस ई ई ।
   9. संयुक्त निदेशक, सी आई ई टी के नामित व्यक्ति ।
   10. अध्यक्ष, डी एम ई एस डी पी ।
   11. डा० डी० के० मैनन, निदेशक, मानसिक रूप से विकलांगों का राष्ट्रीय संस्थान, सिकन्दराबाद (आंध्र प्रदेश) ।
   12. डा० सी० एल० कुंडु प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, शिक्षा विभाग, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र (हरियाणा) ।
3. सामाजिक विज्ञान एवं मानविकी शिक्षा विभाग (डी ई एस एस एच)
   1. अध्यक्ष, डी ई एस एस एच, संयोजक
   2. डा० (कु०) एस० के० राम, प्रोफेसर, डी ई एस एस एच

3. डा० डी० एन० पाणिग्राही, प्रोफेसर, डी, ई एस एस एच
4. श्री आर० जी० सक्सेना, प्रोफेसर, डी ई एस एस एच
5. श्री अर्जुन देव, प्रोफेसर, डी ई एस एस एच
6. श्रीमती एस० लूथरा, रीडर, डी ई एस एस एच
7. अध्यक्ष, डी पी एस ई ई
8. अध्यक्ष, डी ई एस एम
9. अध्यक्ष, डी टी ई एस ई ई एस
10. संयुक्त निदेशक, सी आई ई टी के नामित व्यक्ति
11. प्रो० रशीदुद्दीन खान, 162, न्यू कैम्पस, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली–110067
12. श्री एम० जी० चतुर्वेदी प्रोफेसर प्रभारी, दिल्ली शाखा, केन्द्रीय हिंदी संस्थान, श्री अरविन्द मार्ग, नई दिल्ली–110016

4. विज्ञान और गणित शिक्षा विभाग (डी ई एस एम)
   1. अध्यक्ष, डी ई एस एम संयोजक
   2. डा० के० वी० राव, प्रोफेसर, डी ई एस एम
   3. डा० छोटन सिंह, प्रोफेसर, डी ई एस एम
   4. डा० आर० डी० शुक्ला, प्रोफेसर, डी ई एस एम
   5. श्री आर० सी० सक्सेना, प्रोफेसर, डी ई एस एम
   6. अध्यक्ष, डी टी ई एस ई ई एस
   7. अध्यक्ष, प्रकाशन विभाग
   8. अध्यक्ष, डी पी एस ई ई
   9. प्रो० मोहन राम, वनस्पति विज्ञान विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली–110007
   10. प्रो० ए० सी० जैन, रसायन विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली–110007

5. मापन और मूल्यांकन, सर्वेक्षण और आंकड़ा संसाधन विभाग (डी एम ई एस डी पी)
   1. अध्यक्ष, डी एम ई एस डी पी, संयोजक
   2. श्री वी० एस० श्रीवास्तव, रीडर, डी एम ई एस डी पी
   3. श्री पी० एन० अरोड़ा, रीडर, डी एम ई एस डी पी
   4. श्री एस० एम० भार्गव, रीडर, डी एम ई एस डी पी
   5. अध्यक्ष, डी० ई० एस० एम०
   6. अध्यक्ष, डी० ई० एस० एस० एच०
   7. अध्यक्ष, डी० वी० ई०
   8. डा० आर० जी० मिश्रा, ए–75/2, साकेत, नई दिल्ली–110017
   9. डा० जैकब थारू, प्रोफेसर, अंग्रेजी एवं विदेशी भाषाओं का केन्द्रीय संस्थान, हैदराबाद (आं० प्र०)

6. शिक्षा व्यावसायीकरण विभाग (डी वी ई)

1. अध्यक्ष डी वी ई, संयोजक
2. डा० (श्रीमती) एस० पी० पटेल, प्रोफेसर, डी वी ई
3. डा० ए० पी० वर्मा, रीडर, डी वी ई
4. अध्यक्ष, डी पी एस ई ई.
5. अध्यक्ष, डी एम ई एस डी पी
6. अध्यक्ष, डी ई पी सी जी
7. संयुक्त निदेशक, सी आई ई टी द्वारा नामित व्यक्ति ।
8. श्री एस० के० गिरि, प्रशिक्षण निदेशक, रोजगार एवं प्रशिक्षण महानिदेशालय, श्रम मंत्रालय, श्रम शक्ति भवन, रफी मार्ग, नई दिल्ली–110001.
9. डा० एस० सी० सक्सेना, डीन, कालेज विकास परिषद, शिवाजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर (म० प्र०) ।

7. स्कूल पूर्व एवं प्रारंभिक शिक्षा विभाग (डी पी एस ई ई)

1. अध्यक्ष, डी पी एस ई ई, संयोजक
2. डा० एम० एस० खापरडे प्रोफेसर, डी पी एस ई ई
3. डा० वी० पी० गुप्ता, रीडर डी. पी. एस. ई. ई.
4. श्रीमती एस० भट्टाचार्य, रीडर, डी पी एस ई ई
5. अध्यक्ष, डी ई एस एम
6. अध्यक्ष, डी ई एस एस एच
7. अध्यक्ष, डी वी ई
8. अध्यक्ष, डी टी ई एस ई ई एस
9. अध्यक्ष, प्रकाशन विभाग
10. संयुक्त निदेशक, सी आई ई टी द्वारा नामित व्यक्ति ।
11. श्री पी० एन० रूसिया, संयुक्त निदेशक, अनौपचारिक शिक्षा, भोपाल, मध्यप्रदेश ।
12. डा० अमिता वर्मा, प्रोफेसर, बाल विकास विभाग, गृह विज्ञान संकाय, एम० एस विश्वविद्यालय, बड़ौदा, बडोदरा–390002

8. क्षेत्र सेवाएं, विस्तार और समन्वय विभाग (डी एफ एस ई सी)

1. अध्यक्ष, डी एफ एस ई सी, संयोजक
2. डा० एस० प्रसाद, रीडर, डी एफ एस ई सी
3. अध्यक्ष, डी टी ई एस ई ई एस
4. अध्यक्ष, डी पी एस ई ई
5. अध्यक्ष, डी ई एस एस एच
6. अध्यक्ष, डी ई एस एम
7. अध्यक्ष, नवोदय विद्यालय सैल

8. संयुक्त निदेशक, सी आई ई टी द्वारा नामित व्यक्ति
9. प्रो० विनय बाला मेहता, प्रिंसिपल, एस एन डी टी कालेज, पुणे
10. निदेशक, राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् भोपाल (म० प्र०) ।

9. **कार्यशाला विभाग (डब्लु० डी०)**

1. अध्यक्ष, डब्लु डी, संयोजक
2. डा० बी० एम० गुप्ता, रीडर, डब्लु० डी०
3. अध्यक्ष, डी ई एस एम
4. अध्यक्ष, डी पी एस ई ई
5. प्रो० एन० के० तिवारी, यांत्रिक इंजीनियरी विभाग, भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, नई दिल्ली–110016
6. श्री पी० के० भौमिक, विज्ञान केन्द्र, विज्ञान संग्रहालय राष्ट्रीय परिषद, खैबर पास, इंस्टीट्यूशनल एरिया, दिल्ली–110003

10. **पुस्तकालय, प्रलेखन और सूचना विभाग का विभागीय सलाहकार बोर्ड**

1. निदेशक, एन० सी० ई० आर० टी०, अध्यक्ष
2. संयुक्त निदेशक (सी)
3. संयुक्त निदेशक (सी आई ई टी)
4. डीन (अकादमिक)
5. डीन (अनुसंधान)
6. डीन (समन्वय)
7. अध्यक्ष, डी ई एस एम
8. अध्यक्ष, डी ई एस एस एच
9. अध्यक्ष, डी पी एस ई ई
10. प्रभारी प्रोफेसर, कार्यक्रम
11. श्री एस० पी० अग्रवाल, निदेशक प्रलेखन केन्द्र आई सी एस एस आर 35, फीरोज़शाह रोड, नई दिल्ली–110001
12. डा० टी० के० दत्ता, प्रभारी वैज्ञानिक, भारतीय राष्ट्रीय वैज्ञानिक प्रलेखन केन्द्र, 14, सत्संग विहार, शहीद जीत सिंह सनसीनवाल मार्ग, स्पेशल इंस्टीट्यूशनल एरिया, नई दिल्ली–110057
13. अध्यक्ष, जाकिर हुसैन शिक्षा केन्द्र, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय (जे एन यू), नया मेहरौली मार्ग, नई दिल्ली–110057 सदस्य
14. पुस्तकालयाध्यक्ष, नीपा, एन०सी०ई०आर०टी०; नई दिल्ली–110016 सदस्य
15. वरिष्ठ व्यावसायिक, डी एल डी आई
16. अध्यक्ष, डी एल डी आई संयोजक

11. **अंतर्राष्ट्रीय संबंध एकक का विभागीय सलाहकार बोर्ड**

1. निदेशक, एन० सी० ई० आर० टी०, अध्यक्ष
2. प्रभारी प्रोफेसर/अध्यक्ष, अंतर्राष्ट्रीय संबंध एकक, संयोजक

3. आई आर एकक का एक संकाय सदस्य
4. डा० सी० शेषाद्रि, प्रोफेसर, क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय, मैसूर (कर्नाटक)
5. संयुक्त निदेशक, सी आई ई टी, एन० सी० ई० आर० टी द्वारा नामित व्यक्ति ।
6. अध्यक्ष, डी ई एस एस एच, एन० सी० ई० आर० टी० ।
7. अध्यक्ष, डी ई एस एम, एन० सी० ई० आर० टी० ।
8. अध्यक्ष, डी टी ई एस ई ई एस, एन० सी० ई० आर० टी० ।
9. प्रो० पी० डी० कुलकर्णी, प्रिंसिपल, तकनीकी ।
10. डा० (श्रीमती) आर० भट्ट, प्रिंसिपल, राज्य शिक्षा संस्थान, मौलाना आजाद रोड, श्रीनगर–190001.

12. महिला अध्ययन एकक का विभागीय सलाहकार बोर्ड
1. निदेशक, एन० सी० ई० आर० टी०, अध्यक्ष
2. प्रभारी प्रोफेसर/अध्यक्ष, महिला अध्ययन एकक, संयोजक
3. महिला अध्ययन एकक से एक संकाय सदस्य ।
4. अध्यक्ष, डी ई एस एस एच, एन० सी० ई० आर० टी० ।
5. अध्यक्ष, डी ई एस एम, एन० सी० ई० आर० टी० ।
6. अध्यक्ष, डी वी ई, एन० सी० ई० आर० टी० ।
7. अध्यक्ष, डी टी ई एस ई ई एस, एन० सी० ई० आर० टी० ।
8. अध्यक्ष, डी पी एस ई ई, एन० सी० ई० आर० टी० ।
9. संयुक्त निदेशक, सी आई ई टी, एन० सी० ई आर० टी० द्वारा नामित एक व्यक्ति ।
10. अध्यक्ष, डी एल डी आई, एन० सी० ई० आर० टी० ।
11. प्रो० (श्रीमती) लतिका सरकार, एन–1/10, हौज़ खास, नई दिल्ली–110016.
12. प्रो० (श्रीमती) सुशीला कौशिक, राजनीति विज्ञान विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली–110007.

13. तकनीकी समिति
1. संयुक्त निदेशक, सी आई ई टी,—अध्यक्ष एन० सी० ई० आर० टी० ।
2. अध्यक्ष, डी ई एस एम, एन० सी० ई० आर० टी०—सदस्य ।
3. इंजीनियर/रीडर (इलैक्ट्रानिक्स) सी आई ई टी, एन० सी० ई० आर० टी०—सदस्य
4. सी ए ओ/आई एफ ए , एन० सी० ई० आर० टी—सदस्य
5. उप सचिव (ई सी), एन० सी० ई० आर० टी—सदस्य
6. अध्यक्ष, कार्यशाला विभाग, एन० सी० ई० आर० टी० ।

14. प्रचार-प्रसार समिति
1. डा० ए० के० जलालुद्दीन, संयुक्त निदेशक अध्यक्ष
2. डा० आर० पी० सिंह, अध्यक्ष पत्रिका कक्ष उपाध्यक्ष एवं संयोजक

3. संयुक्त निदेशक, सी आई ई टी
4. डीन (अकादमिक)
5. डीन (अनुसंधान)
6. डीन (समन्वय)
7. अध्यक्ष, कार्यशाला विभाग
8. अध्यक्ष, प्रकाशन विभाग
9. प्रभारी प्रोफेसर, कार्यक्रम
10. अध्यक्ष, डी ई पी सी और जी
11. अध्यक्ष, डी ई एस एस एच
12. डा० जे० एन० जोशी, प्रोफेसर, शिक्षा विभाग, पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़
13. प्रो० पी० आर० पंचमुखी, निदेशक, भारतीय शिक्षा संस्थान, पुणे
14. पुस्तकालयाध्यक्ष, नीपा, एन० सी० ई० आर० टी० कैम्पस, नई दिल्ली–16
15. डा० एस० सी० विश्वास, निदेशक, केन्द्रीय सचिवालय पुस्तकालय, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, शास्त्री भवन, नई दिल्ली ।
16. सी पी ओ, प्रकाशन विभाग
17. अध्यक्ष, डी एल डी आई, एन० सी० ई० आर० टी०

15. शैक्षिक विस्तार और समन्वय समिति

1. डीन (समन्वय)	अध्यक्ष एवं संयोजक
2. डीन (अनुसंधान)	सदस्य
3. डीन (अकादमिक)	सदस्य
4. अध्यक्ष, डी ई पी सी और जी	सदस्य
5. अध्यक्ष, डी पी एस ई ई	सदस्य
6. अध्यक्ष, डी टी ई एस ई ई एस	सदस्य
7. संयुक्त निदेशक, सी आई ई टी द्वारा नामित व्यक्ति	सदस्य
8. प्रिंसिपल, आर सी ई अजमेर	सदस्य
9. प्रिंसिपल, आर सी ई, भुवनेश्वर	सदस्य
10. प्रिंसिपल, आर सी ई, मैसूर	सदस्य
11. प्रिंसिपल, आर सी ई, भोपाल	सदस्य
12. डा० के० एस० खिंची, एफ० ए० (एन० सी० ई० आर० टी), जयपुर	सदस्य
13. डा० डब्लू ए० एफ० हापर, एफ०ए० (एन० सी० ई० आर० टी०), मद्रास	सदस्य
14. श्री एस० के० गुप्ता० एफ० ए० (एन० सी० ई० आर० टी०), गुवाहाटी	सदस्य
15. डा० आर० पी० कथूरिया, एफ० ए० (एन० सी० ई० आर० टी०), भोपाल	सदस्य

16. शिक्षा निदेशक, उत्तर प्रदेश सरकार 10, पार्क रोड, लखनऊ-1 — सदस्य
17. लोक अनुदेश निदेशक, केरल सरकार डी० पी० आई० कार्यालय, वजुथाकौड़, त्रिवेन्द्रम-695017 — सदस्य
18. निदेशक (प्राथमिक शिक्षा) तथा सचिवालय, बिहार सरकार, पटना-800015 — सदस्य
19. शिक्षा निदेशक (प्राथमिक एवं माध्यमिक शिक्षा), महाराष्ट्र सरकार, केन्द्रीय भवन, पुणे-1 — सदस्य
20. डा० एन० मल्ला रेड्डी, प्रोफेसर-शिक्षा, उस्मानिया विश्वविद्यालय, हैदराबाद (आं० प्र०) — सदस्य
21. डा० सुरेश शुक्ला, प्रोफेसर शिक्षा, जामिया मिलिया इस्लामिया, दिल्ली — सदस्य

16. कला शिक्षा समिति

1. श्री मुल्क राज आनंद 25, कफ परेड, बंबई-400005 — अध्यक्ष
2. श्री राजेन्द्र नाथ, सी-5, प्रैस एन्क्लेव, साकेत, नई दिल्ली-110017 — सदस्य
3. श्री जे० स्वामीनाथन, निदेशक, रूपंकर, ललित कला संग्रहालय, भारत भवन, श्यामला रोड, भोपाल-462002 (म० प्र०) — सदस्य
4. प्रो० देबू चौधरी जे-1852, चितरंजन पार्क, नई दिल्ली-110019 — सदस्य
5. श्री केशव मलिक, डी-5/90, कनाट सर्कस नई दिल्ली-110001 — सदस्य
6. श्री एच० ए० गडे, 70-टी, सैन्ट्रल एवेन्यु, चैम्बूर, बम्बई-400071 — सदस्य
7. श्रीमती मृणालिनी साराभाई, निदेशक, अभिनय कला अकादमी, दर्पण, अहमदाबाद-380013 — सदस्य
8. श्री बी० सान्याल बी-15 पूर्वी निजामुद्दीन, नई दिल्ली-110015 — सदस्य
9. श्रीमती सुमति मुटाटकर, सी-33, छात्र मार्ग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली-110007 — सदस्य
10. श्रीमती उमा शर्मा, 52 कम्युनिटी सेन्टर ईस्ट आफ कैलाश, नई दिल्ली-110063 — सदस्य
11. डा० एल० जी० सुमित्रा, रीडर एवं अध्यक्ष, रेडियो प्रभाग, सी आई ई टी, एन०सी०ई०आर०टी० नई दिल्ली-110016 — सदस्य

1987-88

परिशिष्ट 'घ'

राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान के राष्ट्रीय फैलो

1. श्री अमादू महतार एम्बो
2. श्री पी० वी० नरसिंह राव
3. श्री के० एल० श्रीमाली
4. प्रो० डी० एस० कोठारी
5. डा० मनमोहन सिंह
6. प्रो० एम ०जी० के० मैनन
7. प्रो० राजा रामन्ना
8. प्रो० यशपाल
9. प्रो० सी० एन० आर० राव
10. प्रो० वी० वी० जान
11. डा० पी० एन० कृपाल
12. प्रो० सी० वि० चंद्रशेखरय्या
13. प्रो० रईस अहमद
14. प्रो० शिव के० मित्रा
15. प्रो० (श्रीमती) चित्रा नायक
16. प्रो० (श्रीमती) रजमल पी० देवदास
17. प्रो० वी० के० आर० वी० राव
18. श्री ए० आर० दाऊद
19. प्रो० डी० पी० चट्टोपाध्याय

परिशिष्ट 'ङ'

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्

(वर्गवार स्वीकृत स्टाफ बल की 1-4-88 की स्थिति)
सारांश

क्र०सं०	सूचना स्रोत	अकादमिक			गैर-अकादमिक			गैर-अकादमिक			ग्रुप डी	कुल
		ग्रेड ए	ग्रेड बी	ग्रेड सी	ग्रेड ए	ग्रेड बी	ग्रेड सी	ग्रेड ए	ग्रेड बी	ग्रेड सी		
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13
1.	परिषद मुख्यालय	301	1	3	32	132	614	79	101	272	388	1923
2.	आर० सी० ई० अजमेर	66	27	46	1	6	43	4	4	41	82	320
3.	आर० सी० ई०, भोपाल	62	24	47	1	6	44	4	4	35	78	30
4.	आर० सी० ई०, भुवनेश्वर	84	31	61	1	6	41	4	5	45	89	36
5.	आर० सी० ई०, मैसूर	86	22	50	1	6	48	5	6	39	82	345
6.	एफ० ए० कार्यालय	34	4	–	–	–	56	–	–	18	36	144
	कुल योग	633	105	207	36	156	846	96	120	450	855	3404